ऋग्वेद-भाष्य-कोषः



सम्पादिका

डॉ. शैलजा पाण्डेयः



राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
गङ्गानाथझापरिसरः
प्रयागः
2014

ऋग्वेद-भाष्य-कोषः



सम्पादिका

डॉ. शैलजा पाण्डेयः



राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(मानितविश्वविद्यालयः)

गङ्गानाथझापरिसरः

प्रयागः

2014

Ganganath Jha Campus Text Series No. 71

General Editor
Prof. Shail Kumari Mishra

Rig-Veda-Bhashya-Kosha

(A Dictionary of Rigvadic Words Based on The Commentaries of Skandswami, Udgitha, Venkata-Madhava, Sayan and Mudgal)

Vol. I (अ)

Edited by
Dr. Shailja Pandey



Rashtriya Sanskrit Sansthan
Ganganath Jha Campus
Chandra Shekhar Azad Park
Allahabad

2014

Published by : Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan
Ganganath Jha Campus
Chandrashekhar Azad Park
Allahabad - 211 002 (U.P.) India

First Edition : 2014

ISBN :

Price :

Printed At :
Academy Press
Allahabad

गङ्गानाथझापरिसरमूलग्रन्थमालाप्रसूनम् - ७१

प्रधानसम्पादिका
प्रो. शैल कुमारी मिश्रः

ऋग्वेद-भाष्य-कोषः

(स्कन्दस्वामी-उद्गीथ-वेङ्कटमाधव-सायण-मुद्गल-भाष्यानुसारः)

प्रथमः खण्डः (अ)

सम्पादिका
डॉ. शैलजा पाण्डेयः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
गङ्गानाथ-झा-परिसरः
आजादोद्यानम्, प्रयागः - २११००२
२०१४

सम्पादकमण्डलम्
डॉ. गयाचरणत्रिपाठी
डॉ. माया मालवीयः
डॉ. प्रकाशपाण्डेयः
डॉ. शैलजा पाण्डेयः

प्रकाशक - प्राचार्यः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानित-विश्वविद्यालयः)
गङ्गानाथझापरिसरः
चन्द्रशेखर-आजादोद्यानम्
प्रयागः-२

संस्करणं प्रथमम्

प्रकाशनवर्षम् - २०१४

मूल्यम् :

ISBN :

पृष्ठविन्यासकारः
ब्रह्मानन्दमिश्रः, विकासचन्द्रजैनः

मुद्रणम्
एकेडमी प्रेस
दारागंज, इलाहाबाद-२११००६

पुरोवाक्

भारतीयदर्शने वेदा अनाद्यपौरुषेयाः अत एव "ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः, न तु कर्तार इति सिद्धान्तः स्वीक्रियते। अन्येषां शास्त्राणां कृते वेदाः प्रमाणं, किन्तु अपौरुषेया वेदाः स्वतः प्रमाणम् -

प्रत्येक्षणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एवं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।

भारतीयसंस्कृतेर्मूलस्रोतांसि वेदाः समस्तभारतीयविद्यानां निधिभूताः सन्ति। अत एव वेदा भारतीयज्ञानविज्ञानानां विश्वकोष इति कथने नास्त्यतिशयोक्तिः। इदं विराड्वपुः संहिता-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्रूपं वैदिकसाहित्यं वेदाङ्ग-सूत्र-अनुक्रमणिकासाहित्येन च सह पूर्णतां याति। वेदस्य भागद्वयं वर्तते मन्त्रभागो ब्राह्मणभागश्च "मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्" इति प्रसिद्धमेव वचनम्। यथा मन्त्रभागस्य वेदत्वं तथैव ब्राह्मणभागेऽपि वेदत्वमक्षुण्णम्। अयं मन्त्रभाग एव संहिता नाम्नाप्यभिधीयते।

अस्य अगाधवैदिकसाहित्यस्याध्ययनम् अतीव दुरूहमस्ति। अत एव अस्माकं प्रत्नाः त्रिकालज्ञाः पारदृश्वानो महामनीषिणो महर्षयः नैकानि भाष्याणि व्यरचयन्। यतो हि वेदानामर्थज्ञानं विना अक्षरज्ञानमात्रं स्थाणुरूपवृक्ष इव भवति इति कथयति निरुक्तकारो यास्कः। यद्यपि सन्ति अनेकानि भाष्याणि तथापि बहुविस्तृते भाष्ये कस्यापि शब्दविशेषस्य ज्ञानं नास्ति सरलम् एतदर्थं कोषग्रन्थस्य भवति महत्युपादेयता। वर्णक्रमानुसारेण कोषग्रन्थे शब्दान्वेषणे सौकर्यं भवति। प्रकाश्यमानस्यास्य ऋग्वेदभाष्यकोषस्योद्भावनाऽपि अस्यां दिशि महान् प्रयासो विद्यते। अस्या बृहत्याः परियोजनायाः मूलसंकल्पना तदानीन्तनप्राचार्याणां वेदविद्यामर्मज्ञानां डॉ. गयाचरणत्रिपाठिवर्याणामासीत्। अस्यां बृहत्यां परियोजनायां ऋग्-यजुः-साम-अथर्वणां चतसृणामपि संहितानां शब्दानां प्राचीनपारम्परिकभाष्यकारकृतानर्थाननुसृत्य बृहद्वैदिकभाष्यकोषनिर्माणस्य सङ्कल्पना आसीत्। एतदर्थं प्राथम्येन ऋग्वेदः स्वीकृतः आचार्यत्रिपाठिवर्यैः। यतो हि तत्र सर्वासु संहितासु प्राचीनतमा ऋग्वेदसंहिता विद्यते। भाषाया अर्थस्य चोभयोर्दृष्ट्या वर्तते ऋग्वेदः श्रेष्ठो बहुमान्यश्च।

प्रस्तुतोऽयं कोषग्रन्थः परियोजनायाः प्रथमखण्डोऽस्ति। अस्मिन् ऋग्वेदस्य अकारादिशब्दानामर्थः प्रस्तुतोऽस्ति। अर्थसङ्कलनार्थं प्राच्यभाष्यकाराणां स्कन्दस्वामि-उद्गीथ-वेङ्कटमाधव-सायण-मुद्गलाचायाणां भाष्याणि स्वीकृतानि सन्ति। अन्येषामाचार्याणां नामानि ग्रन्थस्य भूमिकायां निर्दिष्टानि सन्ति। अत्र अर्वाचीनभाष्यकाराणां महर्षिदयानन्दसरस्वती-महर्ष्यरविन्द-डॉ.आनन्दकुमारस्वामिकृतभाष्याणां समावेशो नास्ति। तथा च शब्दस्थापने शब्दानां प्रातिपदिकं

स्वरूपं गृहीतं वर्तते। शब्दानां क्रमस्थापने तु स एव क्रमः स्वीकृतोऽस्ति यः क्रमः वैदिकपदानुक्रमकोषे विद्यते।

डॉ. गयाचरणत्रिपाठिमहोदयानां निर्देशने समारब्धया अनया परियोजनया सह तदानीं डॉ. श्रीमती मायामालवीया डॉ. प्रकाश पाण्डेयः डॉ. शैलजा पाण्डेयश्च संबद्धा आसन्। इदानीं डॉ. श्रीमती मायामालवीया सेवानिवृत्ताः सन्ति तथा डॉ. प्रकाशपाण्डेयमहोदयाः जयपुरपरिसरस्य प्राचार्यपदमलङ्कुर्वन्ति। यद्यपि आचार्यगयाचरणत्रिपाठिवर्याः २००१ ईशव्यां सेवानिवृत्तास्तथापि तेषां मार्गदर्शनं शुभाशंसनं च सततमासीत्।

अस्य प्रथमभागस्य सामग्रीसङ्कलनादारभ्य ग्रन्थपूर्णतां यावत् समस्तमपि कार्यजातं महता श्रमेण मनोयोगेन च डॉ. श्रीमत्या शैलजापाण्डेयमहोदयया सम्पादितम् – "यः क्रियावान् स पण्डितः"। अहमनेकशैहर्दिर्धन्यवादैः सभाजयामि विदुषीं पाण्डेयोपाह्वां श्रीमतीं शैलजां तथा च सुधीजनेषु समादृतो भवेदयं ग्रन्थ इति भगवन्तं प्रार्थये।

। इति शम् ।

प्रो. शैलकुमारी मिश्रः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित विश्वविद्यालयः)
गङ्गानाथझापरिसरः, प्रयागः।

नैवेद्य

वेद भारतीय संस्कृति के मूल हैं। ये धार्मिक एवं आध्यात्मिक ग्रन्थ ही नहीं, ज्ञान के अप्रतिम उद्गम भी हैं। वेद में निहित बीजों से ही कालान्तर में भिन्न-भिन्न दर्शनों, विभिन्न मत-मतान्तरों तथा ज्ञान-विज्ञान का पल्लवन हुआ। जिन प्रश्नों का उत्तर एवं समस्याओं का समाधान प्रत्यक्ष या अनुमान से प्राप्त न हो सके, उसको स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करना वेद का वेदत्व है-

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एतं वदन्ति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदता।।[१]

वेद का महत्त्व **शतपथ ब्राह्मण** के इस कथन से ही स्पष्ट हो जाता है कि धन से परिपूर्ण पृथिवी के दान देने वाला व्यक्ति लोक को जीत लेता है किन्तु तीन वेदों के अध्ययन करने वाला व्यक्ति उससे भी अधिक अक्षय लोक को प्राप्त करता है-

'यावन्तं ह वै इमां पृथिवीं वित्तेन पूर्णां ददन् लोकं जयति त्रिभिस्तावन्तं जयति, भूयांसं च अक्षय्यं च। य एवं विद्वान् अहरहः स्वाध्यायमधीते तस्मात् स्वाध्यायोऽध्येतव्यः।'[२]

किन्तु वेद का अक्षर-ज्ञान मात्र पर्याप्त नहीं होता। यास्क का कथन है कि जो व्यक्ति वेद का अध्ययन तो करता है किन्तु उसका अर्थ नहीं जानता, वह ठूँठे वृक्ष के सदृश है एवं मात्र भार ढोता है। जो वेद के अर्थ को जानता है, वही सम्पूर्ण कल्याण का भागी होता है तथा ज्ञान के द्वारा पापों को नष्टकर स्वर्ग को प्राप्त करता है-

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूत् अधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम् ।
योऽर्थज्ञः इत् सकलं भद्रमश्नुते नाकमेति ज्ञानविधूतपाप्मा।।[३]

अतीत काल के किसी भी ग्रन्थ का आशय काल के प्रभाववश आगे की पीढ़ियों के लिये समझना अतीव दुष्कर होता है। यदि प्राचीनता के साथ-साथ भावों की गहराई तथा भाषा की दुरूहता भी हो तो यह कार्य और कठिन हो जाता है। यह कार्य प्राचीन-काल में भी कठिन था। आचार्य यास्क ने पुरा-काल में भी इस तथ्य को समझा था। उनके अनुसार प्राचीन ऋषियों ने ग्रन्थों का साक्षात् दर्शन किया था, किन्तु पश्चाद्-वर्ती ऋषियों ने ,पहले मन्त्रों एवं उसके अर्थ को उपदेश के माध्यम से श्रवण किया। इसके पश्चात् लोगों के सौकर्य हेतु वेदाङ्गों की रचना की-

---

१. बलदेव उपाध्याय - *आचार्य सायण और माधव*, पृ. १०८, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, १९८४

२. *शतपथ ब्राह्मण*, ११/५/६/१

३. *निरुक्त*

'साक्षात्कृतधर्माण ऋषियो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मेभ्य उपदेशेन मन्त्रान् संप्रादुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणाय इमं ग्रन्थं समाम्नासिषुः, वेदं च वेदाङ्गानि च।"[1]

वेदार्थ के अनुशीलन का प्रयास अत्यन्त प्राचीन है। यास्क के प्रयत्न के पूर्व ही '**निघण्टु**' की रचना हुई थी जिसमें संहिताओं के कठिन तथा सन्दिग्ध अर्थ वाले शब्दों का संग्रह प्राप्त होता है। यह वेदार्थ को समझने का सम्भवतः प्रथम प्रयास है। प्रातिशाख्य-ग्रन्थों की रचना के पीछे सम्भवतः यही धारणा रही होगी। यद्यपि इसमें वैदिक भाषा के व्याकरण, स्वर तथा सन्धियों का विवेचन किया गया है।

वेदार्थ के स्फुटीकरण का प्रथम प्राप्त प्रयास आचार्य यास्क का 'निरुक्त' है। इन्होंने देवों के नामों की तथा मन्त्र में आये अन्य शब्दों का निर्वचन शैली से अर्थ प्रस्तुत किया है। यास्क से पूर्व भी आचार्यों ने वेदार्थ को समझने का प्रयास किया है। यास्क ने निरुक्त में स्थान-स्थान पर आग्रायण, औपमन्यव, शाकटायन, शाकपूणि, शाकल्य आदि अनेक आचार्यों का तथा 'ऐतिहासिक', 'याज्ञिक' आदि विविध संप्रदायों का उल्लेख किया है।[2]

वेदार्थ के ज्ञान हेतु यास्क ने तर्क को भी ऋषि माना है।[3] मीमांसा दर्शन भी वेदार्थ-ज्ञान का सहायक शास्त्र है क्योंकि यह यज्ञानुष्ठान के संदर्भ में वेद के कथनों एवं विधि-विधानों की मीमांसा (स-तर्क चिन्तन) करता है। इसके अतिरिक्त वेदाङ्ग - शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, व्याकरण एवं ज्योतिष भी वैदिक मन्त्रों अर्थानुशीलन में सहायक हैं।[4]

वेद के गूढार्थ को समझने में इतिहास एवं पुराणों का ज्ञान भी अनिवार्य है। इनसे भी वेद के उक्तियों की व्याख्या होती है। महाभारत ने वेदार्थ के उपबृंहण (व्याख्यात्मक विश्लेषण) हेतु इतिहास (रामायण एवं महाभारत) तथा पुराणों की महत्ता को स्वीकार किया है-

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।
बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।।

वेदार्थ के अनुशीलन की परम्परा यास्क के पूर्व से प्रारम्भ होकर आगे तक चलती रही है। यास्क ने वैदिक मन्त्रों का अर्थ जिस प्रकार किया था उसका प्रभाव परवर्ती भाष्यकारों पर भी पड़ा है। स्कन्दस्वामी, वेङ्कटमाधव तथा सायण आदि सभी भाष्यकारों ने यास्क के निरुक्त को मुख्य आधार के रूप में मान्यता देकर, अन्य वेदाङ्ग, मीमांसा, इतिहास तथा पुराणों की सहायता से वेदों का भाष्य किया है।

---

१. *निरुक्त*, १/२०/२, अवरेभ्यः अवरकालीनेभ्यः शक्तिहीनेभ्यः श्रुतर्षिभ्यः। तेषां हि श्रुत्वा ततः पश्चादृषित्वमुपजायते, न यथा पूर्वेषां साक्षात्कृतधर्माणां श्रवणमन्तरेणैव। -उपर्युक्त पर दुर्गाचार्य की टीका।

२. बलदेव उपाध्याय - *आचार्य सायण और माधव*, पृ. १७९

३. *निरुक्त*, १/१६ ऋषिषूत्क्रमत्सु देवान् मनुष्या अब्रुवन् 'को न ऋषिर्भविष्यतीति' तेभ्यस्तर्कमृषिं प्रायच्छन्।

४. बलदेव उपाध्याय - *आचार्य सायण और माधव*, पृ. १८४

पाश्चात्य भाष्यकार

ऋग्वेद के मर्म को समझने में विदेशी विद्वान् भी प्रयत्नशील रहे हैं। ऋग्वेद का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद विल्सन ने किया था। उन्होंने सायण भाष्य के सहयोग से इसका अनुवाद किया था। अपने '**ट्रांसलेशन आफ ऋग्वेद**' में विल्सन ने इस तथ्य को स्वीकार किया है।[1] सायण भाष्य के प्रथम यूरोपीय सम्पादक मैक्समूलर ने भी इसी तथ्य की पुष्टि की है।[2] जर्मन विद्वान् पिशेल तथा गेल्ड्नर ने '**वेदिशे स्टूदियन**' ग्रन्थ में सङ्कलित निबन्धों के द्वारा वेदार्थ के अनुशीलन का प्रयत्न किया है। यह ग्रन्थ तीन भागों में प्राप्त होता है।[3]

अन्य पाश्चात्य विद्वानों में फ्रीड्रिक रोज़ेन, जी. स्टीवेन्सन, ई. एडुअर्ड रोएर, एस. ए. लांगलोइस, रोठ, थ्यूडोर बेनफे, हेरमान ग्रासमान्, अल्फ्रेड लुडविग्, राल्फ टी. एच. ग्रिफिथ, हरमान ओल्डन्बर्ग, कार्ल एफ. गेल्ड्नर, सी. आर. लेनम्, बर्गैन्ये, पीटर्सन, त्स्मिर, ए. ए. मैकडॉनल, इ. जे थामस, हिलेब्राण्ट् आदि ने ऋग्वेद के अनुवाद के ऊपर कार्य किया है।[4]

आधुनिक व्याख्याकारों में श्री अरविन्द ने '**हिम्स टु दि मिस्टिक फायर**' ग्रन्थ में तथा डॉ. आनन्द कुमार स्वामी ने '**ए न्यू एप्रोच टू दी वेदाज़**' ग्रन्थ में वेदों की व्याख्या की है।[5] इनके अतिरिक्त दयानन्द सरस्वती ने भी ऋग्वेद पर भाष्य किया है।

प्रस्तुत कोश में ऋग्वेद के प्राचीन पारम्परिक भाष्यकारों के भाष्य को ही आधार बनाया गया है। उन भाष्यकारों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

ऋग्वेद के भाष्यकार

स्कन्दस्वामी

ऋग्वेद संहिता पर सर्वप्रथम भाष्य स्कन्दस्वामी का प्राप्त होता है। भाष्य के अन्त में दिये गये श्लोकों से इनके स्थान आदि का परिचय प्राप्त होता है। ऋग्वेद भाष्य के प्रथम अष्टक के अन्त प्राप्त श्लोक के अनुसार स्कन्दस्वामी गुजरात के वलभी स्थान से सम्बद्ध थे एवं इनके पिता का नाम भर्तृध्रुव था–

वलभीविनिवास्येतामृगर्थागमनसंहृतिम्।
भर्तृध्रुवसुतश्चक्रे स्कन्दस्वामी यथास्मृति।।

---

१. बलदेव उपाध्याय – *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, पृ. १०३

२. वहीं, पृ. १०३

३. वहीं, पृ. १०३

४. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रज बिहार चौबे – *वैदिक वाङ्मय का बृहद् इतिहास*, खण्ड १, पृ. ६४२–६५३

५. बलदेव उपाध्याय – *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, पृ. १०४–१०५

काल

स्कन्दस्वामी के काल के विषय में विद्वानों का मत है कि ये संभवतः वि.सं. ६८२ (६२५ ई.) के लगभग रहे होंगे।[१] इसके पीछे कारण शतपथ-ब्राह्मण के भाष्यकार हरिस्वामी द्वारा इन्हें अपना गुरु स्वीकार करना है। शतपथ ब्राह्मण के भाष्य के आरम्भ में हरिस्वामी ने स्कन्दस्वामी को अपना गुरु बताया है–

व्याख्यां कृत्वाऽऽध्यापयन्मां श्रीस्कन्दस्वाम्यस्ति मे गुरुः।।

हरिस्वामी के भाष्य का रचना-काल ६३८ ई. (वि.सं. ६९५) बताया गया है। इन्होंने अपने भाष्य की रचना का समय कलियुग के ३७४० वर्ष बीत जाने पर बताया है। कलियुग का प्रारम्भ विक्रम संवत् पूर्व ३०४५, अर्थात् ईसा पूर्व ३१०२ माना जाता है।[२] शतपथ ब्राह्मण के भाष्य में काल सूचक यह श्लोक प्राप्त होता है–

यदाब्दानां कलेर्जग्मुः सप्तत्रिंशच्छतानि वै ।
चत्वारिंशत्समाश्चान्यास्तदा भाष्यमिदं कृतम् ।।[३]

डॉ. लक्ष्मणस्वरूप ने कलि वर्ष का प्रारम्भ ३२०२ ई.पू. माना है। इनके अनुसार हरिस्वामी का काल ५३८ ई.पू. होना चाहिये।[४]

भाष्य

ऋग्वेद पर प्राप्त स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के कुछ भाग पर (१/१/१-१/५६/१, १/६२/१-१/१२१/१५), पञ्चम मण्डल (५/५६/१-५/६१/१), तथा षष्ठ मण्डल (६/२८/१-६/७५/६) पर प्राप्त होता है।[५] इन्होंने अध्याय-क्रम से भाष्य किया है तथा अध्यायों के अन्त में, यथा प्रथम अध्याय के अन्त में 'इति भर्तृध्रुवसुतस्य स्कन्दस्वामिनः कृतौ ऋग्वेदभाष्ये प्रथमोऽध्यायः' प्राप्त होता है।

इस भाष्य के प्रत्येक सूक्त के प्रारम्भ में उस सूक्त के ऋषि एवं देवता का उल्लेख प्राप्त होता है एवं इसके लिये प्राचीन अनुक्रमणियों से श्लोकों को भी उद्धृत किया है। मन्त्रों के सम्यक् अर्थ-बोध के लिये निघण्टु, निरुक्त आदि के भी प्रमाण विविध स्थानों पर प्राप्त होते हैं। साथ ही ब्राह्मणों तथा आरण्यकों से भी मन्त्रार्थ स्फुटित किये गये हैं। भाष्य की भाषा सरल एवं मिताक्षर है

---

१. बलदेव उपाध्याय - *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, पृ. ५६, शारदा मन्दिर, वाराणसी, १९६७

२. बलदेव उपाध्याय - *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, पृ. ५६, शारदा मन्दिर, वाराणसी, १९६७

३. वहीं, पृष्ठ ५

४. सम्पादक- बलदेव उपाध्याय, ब्रज बिहारी चौबे - *संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास* (प्रथम खण्ड), पृ. ६३२

५. वहीं, पृ. ६३२

तथा मन्त्र में आये पदों का व्याकरणगत वैशिष्ट्य संक्षेप में वर्णित है। स्कन्दस्वामी के भाष्य को आधार बना कर सायणाचार्य ने भी अपना प्रस्तुत किया है।

स्कन्दस्वामी ने वैदिक मन्त्रों की यज्ञ को प्राधान्य देते हुये व्याख्या प्रस्तुत की है तथा कहीं कहीं निरुक्त के मत को स्वीकार करते हुये भाष्य के अधिदेवपरक व्याख्या भी प्राप्त होती है। स्कन्दस्वामी के अनुसार मन्त्र ५ प्रकार के– प्रैष, करण, क्रियमाणानुवादी, शस्त्राभिष्टवनादिगत एवं जपानुवचनादिगत होते हैं। प्रयोगकाल में अर्थ का प्रतिपादन करते हुये ये मन्त्र कर्म के अङ्गभूत हो जाते हैं।[1]

स्कन्दस्वामी के भाष्यों का प्रकाशन

स्कन्दस्वामी के भाष्य के कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसका प्रथम सम्पादन पं. साम्ब शिव शास्त्री ने किया एवं प्रकाशन दो खण्डों में त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सिरीज नं. ९६ तथा नं. ११४ से सन् १९२९ तथा १९३५ में हुआ। इस भाष्य का दूसरा संस्करण डॉ. कुन्हन राजा ने किया एवं प्रकाशन मद्रास विश्वविद्यालय संस्कृत सिरीज नं. ८ में सन् १९३५ में हुआ। तदनन्तर रवि वर्मा ने इसका सम्पादन किया एवं त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सिरीज नं. १४७ में सन् १९४२ में त्रावनकोर से इसका कुछ अंश प्रकाशित हुआ।[2] इसका सर्वाधिक अर्वाचीन संस्करण विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर, पंजाब से सन् १९६५ में प्रकाशित हुआ। इसके ७ भाग हैं तथा इसमें स्कन्दस्वामी के साथ-साथ उद्गीथ, वेङ्कटमाधव एवं मुद्गल का भाष्य भी समाहित है। इसके सम्पादक विश्वबन्धु हैं।[3] यह संस्करण पूर्ववर्ती संस्करणों की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक एवं सबसे अधिक सामग्री प्रस्तुत करता है।

नारायण

वेङ्कटमाधव के अपने भाष्य में इनका उल्लेख किया है। ऋग्वेद के अष्टम अष्टक के चतुर्थ अध्याय के प्रारम्भ में प्राप्त श्लोक के अनुसार स्कन्दस्वामी, नारायण एवं उद्गीथ ने सम्मिलित रूप से ऋग्वेद पर भाष्य लिखा–

स्कन्दस्वामी नारायण उद्गीथ इति ते क्रमात् ।
चक्रुः सहैकमृग्भाष्यं पदवाक्यार्थगोचरम् ।।

स्कन्दस्वामी का भाष्य प्रथम ५ अष्टक पर, नारायण का भाष्य षष्ठ तथा सप्तम पर एवं उद्गीथ का भाष्य अष्टम अष्टक पर था स्कन्दस्वामी ने ऋग्वेद १/१/१ की प्रस्तावना पर लिखा है–

ऋग्वेदस्यार्थबोधार्थमस्माभिर्भाष्यं करिष्यते ।

---

१. वहीं, पृ. ६३२

२. वहीं, पृ. ६३३

३. *ऋग्वेद संहिता*, सम्पा. विश्वबन्धु, प्रका.– विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, १९६५

यहाँ 'अस्माभिः' पद से स्कन्दस्वामी के अन्य सहयोगियों का बोध होता है। डॉ. कुन्हन राजा और साम्बशिव शास्त्री के मतानुसार नारायण सामवेद के व्याख्याकार माधवभट्ट के पिता थे जैसा सामवेद की व्याख्या के उपोद्घात में लिखा है–

स्कन्दस्वामिसहचरस्य नारायणपण्डितस्य सुतत्वेन सम्भावितस्य माधवपण्डितस्य...।[१]

नारायण का काल स्कन्दस्वामी के साथ होने के कारण छठी–सातवीं शताब्दी सिद्ध होता है।

भाष्य

उपर्युक्त उल्लेखों के आधार पर नारायण ने ऋग्वेद पर भाष्य तो किया है किन्तु स्वतन्त्र रूप से उनका भाष्य प्राप्त नहीं होता है।

उद्गीथ

उद्गीथ को भी स्कन्दस्वामी का सहयोगी तथा समकालीन कहा गया है। इन्होंने ऋग्वेद के अन्तिम भाग, सप्तम तथा अष्टम अष्टक पर अपना भाष्य लिखा। इनके भाष्य का उल्लेख सायण ने ऋग्वेद के १०/४६/५ के भाष्य में किया है– 'ऊद्गीथस्तु भूर्जयन्तमित्येकपदं मत्वा...।'

इसी प्रकार आत्मानन्द ने अस्यवामीय सूक्त (१/१६४/५२) के भाष्य में 'उद्गीथभास्करादिभिः ..... सूक्तव्याख्याकृता' उद्गीथ का उल्लेख किया है।[२]

उद्गीथ ने ऋग्वेद के प्रत्येक अध्याय के अन्त में अपने विषय में इस प्रकार परिचय दिया है– **'वनवासीविनिर्गताचार्यस्य उद्गीथस्य कृता ऋग्वेदभाष्ये... अध्यायः समाप्तः।'**

'वनवासी' पद के प्रयोग से विद्वान् इनके निवास के विषय में अपना मत प्रकट करते हैं। भगवद्दत्त 'वनवासी' पद को वलभी निवासी का एक पाठ मान कर उद्गीथ को वलभी–निवासी मानते हैं।[३] बलदेव उपाध्याय जी ने इन्हें कर्णाटक प्रदेश का माना है। कर्णाटक का पश्चिमी भाग वनवासी प्रान्त के नाम से प्राचीन काल में प्रसिद्ध था। उद्गीथ शैवमत के अनुयायी थे।[४]

भाष्य

उद्गीथ के भाष्य की शैली स्कन्दस्वामी के सदृश है। इन्होंने भी सूक्तों के प्रारम्भ में ऋषि एवं देवता का उल्लेख किया है। मन्त्रों की व्याख्या याज्ञिक पद्धति से की गई है एवं प्रमाण के लिये निरुक्त, ब्राह्मण एवं आरण्यक के उद्धरण लिये गये हैं। व्याकरणगत टिप्पणी संक्षिप्त हैं तथा भाष्य अध्याय–क्रम से है।

---

१. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रज बिहारी चौबे – *वैदिक वाङ्मय का बृहद् इतिहास*, खण्ड १, पृ. ६३३–६३४

२. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रज बिहारी चौबे – *वैदिक वाङ्मय का बृहद् इतिहास*, खण्ड १, पृ. ६३४

३. वहीं, पृ. ६३४–६३५

४. वहीं, पृ. ६३५, बलदेव उपाध्याय– *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति*, पृ. ५७

भाष्य-प्रकाशन

उद्गीथ के ऋग्वेद-परक भाष्य का प्रकाशन सर्वप्रथम डी. ए. वी. कालेज, लाहौर के अनुसन्धान विभाग से १९३५ ई. में प्रकाशित हुआ था। इसके पश्चात् १९६५ ई. में विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर से आचार्य विश्वबन्धु ने इसका प्रकाशन कराया। इसमें उद्गीथ का भाष्य स्कन्दस्वामी वेङ्कटमाधव तथा मुद्गल के भाष्य के साथ प्रकाशित है।[1]

माधवभट्ट

वैदिक संहिताओं के भाष्यकारों की शृङ्खला में माधव नामक चार भाष्यकार प्राप्त होते हैं। इनमें एक सामवेद संहिता के भाष्यकार हैं, शेष तीन माधवों का सम्बन्ध ऋग्वेद संहिता से है। इनमें एक सायण-माधव, दूसरे वेङ्कटमाधव तथा इनसे पृथक् तीसरे माधव, माधव भट्ट हैं जिनकी ऋग्वेद के प्रथम अष्टक पर टीका है एवं मद्रास विश्वविद्यालय से प्रकाशित है। कुछ विद्वान् वेङ्कटमाधव एवं माधवभट्ट को एक ही स्वीकार करते हैं, किन्तु दोनों के द्वारा किये गये भाष्य दो भिन्न व्यक्तियों के प्रतीत होते हैं। माधवभट्ट वेङ्कटमाधव से प्राचीनतर हैं।[2] इनका उल्लेख वेङ्कट एवं सायण ने किया है। ऋग्वेद के १०/८६/१ के सायणभाष्य में माधव का उल्लेख प्राप्त होता है-

इत्थं व्याख्यात् षष्टितमध्यायं माधवाह्वयः ।
चोलेषु निवसन् कश्चित् सस्यमालिषु सर्वदा ।।

उपर्युक्त श्लोक से तथा डॉ. कुन्हन राजा द्वारा सम्पादित 'ऋग्वेद व्याख्या' के प्रथम अष्टक, द्वितीय अध्याय की समाप्ति पर प्राप्त कारिका के आधार पर माधवभट्ट गोमान् ग्राम के वासी थे। यह ग्राम 'सस्यमाल' पर्वत के समीप चोल राज्य में कावेरी नदी के दक्षिण तट पर है।[3] इनका काल षष्ठ शताब्दी से पूर्व होना चाहिये।

भाष्य

इनका भाष्य संक्षिप्त है। इसमें ब्राह्मण, निघण्टु, निरुक्त आदि उद्धृत हैं। इस भाष्य का अनुसरण सायण एवं वेङ्कटमाधव दोनों ने किया है।[4]

वेङ्कटमाधव

कुल-परिचय

वेङ्कटमाधव कृत भाष्य समग्र ऋग्वेद पर प्राप्त होता है। उन्होंने प्रत्येक अध्याय के अन्त में अपने कुल का परिचय दिया है। उन सूचनाओं के आधार पर उनके पितामह का नाम माधव,

---

१. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रज बिहारी चौबे - पूर्वोक्त, पृ. ६३५

२. बलदेव उपाध्याय, *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, पृ. ५७, ५८

३. 'ग्रामे जातो गोमति व्याचकार' - बलदेव उपाध्याय, ब्रजबिहारी चौबे, वहीं, पृ. ६३५, ६३६

४. वहीं, पृ. ६३६ तथा बलदेव उपाध्याय- *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, पृ. ५९

पिता का नाम वेङ्कट तथा माता का नाम सुन्दरी था। ये विश्वामित्र के कुल में, कौशिक गोत्र में उत्पन्न थे–

विश्वामित्रकुले जातः माधवः सुन्दरीसुतः।
द्वितीयं माधवार्यस्य पौत्र श्रीवेङ्कटात्मजः।।

इस आशय के श्लोक ऋग्वेद के प्रत्येक अध्याय के अन्त में प्राप्त होते हैं।[१] इन्हें 'कुशिकानां कुले', 'गाधिनेयकुले', 'अष्टकस्य कुले' आदि कुलों से भी सम्बद्ध कहा गया है। इनके मातामह का नाम भवगोल था जो वशिष्ठ–गोत्रीय थे। वेङ्कटमाधव का भी जन्म–स्थान चोल राज्य में कावेरी तट पर स्थित गोमान् ग्राम कहा गया है।[२]

काल

निघण्टु के भाष्यकार देवराजयज्वा (१३१३ ई.) ने वेङ्कटमाधव का उल्लेख किया है। अतः वेङ्कटमाधव का काल निश्चित् ही १३वीं शताब्दी से पूर्व का है।[३]

भाष्य

वेङ्कटमाधव का भाष्य विनायक की स्तुति से प्रारम्भ होता है। इन्होंने भाष्य करने में अत्यल्प शब्दों का प्रयोग किया है एवं अपने भाष्य की संक्षिप्तता को 'वर्जयन् शब्दविस्तारं शब्दैः कतिपयैरिति' कहकर स्वीकार किया है। सम्भवतः इसका निर्वाह करने हेतु अपने भाष्य में ऋचाओं के मूल शब्द छोड़ कर उनके स्थान पर पर्यायवाची पदों द्वारा ही मन्त्रार्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया है तथा इनके भाष्य से मन्त्र का अर्थ स्पष्ट हो जाता है।[४] इतना ही नहीं, यदि मन्त्रार्थ का बोध सहजतया मन्त्र से ही हो जाता है तो वह भाष्य में 'निगदसिद्धा' लिखते हैं।

मन्त्रार्थ के स्पष्टीकरण हेतु वे ब्राह्मण–ग्रन्थों से प्रमाण लेते हैं एवं वेदार्थ समझने में ब्राह्मण–ग्रन्थों का ज्ञान उन्होंने अपरिहार्य माना है। वेङ्कटमाधव के अनुसार जो व्यक्ति व्याकरण एवं निरुक्त मात्र का ज्ञान रखता है, वह संहिताओं का चतुर्थांश जानता है। परन्तु जिसे ब्राह्मण–ग्रन्थ स्फुट हो तथा शब्दरीति जानता हो, वही वेद को समग्र रूप से स्पष्ट कर सकता है–

संहितायास्तुरीयांशं विजानन्त्यधुनातनाः।
निरुक्तव्याकरणयोरासीत् येषां परिश्रमः।।
अथ ये ब्राह्मणार्थानां विवेक्तारः कृतश्रमाः।
शब्दरीतिं विजानन्ति ते सर्वं कथयन्त्यपि।।[५]

---

१. ऋग्वेद, १/१९/९, ३२/१५, ४६/१५, ६१/१६, ८०/१६ आदि
२. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रजबिहारी चौबे, वहीं, पृ. ६३६
३. वहीं, पृ. ६३६
४. वहीं, पृष्ठ ५३७ तथा बलदेव उपाध्याय, *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, पृ. ६१
५. बलदेव उपाध्याय, *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, पृ. ६१

भाष्य प्रकाशन

यह भाष्य कई स्थानों से प्रकाशित हुआ है। इसका प्रथम प्रकाशन १९२९ तथा १९३५ में त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सिरीज में दो भागों में हुआ था एवं इसके सम्पादक पं. साम्बशिव शास्त्री थे। इसमें स्कन्दस्वामी तथा वेङ्कटमाधव दोनों के भाष्य एक साथ प्रकाशित थे।

इसका दूसरा प्रकाशन १९३७ तथा १९४७ ई. में दो भागों में आड्यार लाइब्रेरी सिरीज, नं. २३ एवं ६१ के अन्तर्गत हुआ। इसके सम्पादक डॉ. कुन्हनराजा थे। यह प्रथम अष्टक पर लिखा गया भाष्य है।

१९४३ ई. में त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सिरीज १४७, ट्रावनकोर से प्रथम अष्टक के तृतीय अध्याय पर यह भाष्य प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक एल. ए. रविवर्मा थे।

डॉ. लक्ष्मण स्वरूप ने वेङ्कटमाधव के भाष्य को सम्पादित कर चार भागों में मोतीलाल बनारसी दास से प्रकाशित कराया। प्रथम तीन भाग १९३७, १९४०, १९४३ में लाहौर से तथा चतुर्थ भाग १९४५ में वाराणसी से प्रकाशित हुआ।

इसके पश्चात् वेङ्कटमाधव का सम्पूर्ण भाष्य आचार्य विश्वबन्धु के द्वारा सम्पादित होकर १९६५ में विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर से प्रकाशित हुआ। पूर्ण भाष्य होने के कारण यह भाष्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।[१] इसमें स्कन्दस्वामी, उद्गीथ एवं मुद्गल का भाष्य भी प्राप्त होता है।

आनन्दतीर्थ

माध्व सम्प्रदाय के प्रवर्तक माध्वाचार्य ही आनन्दतीर्थ है एवं इन्होंने ऋग्वेद के प्रथम ४० सूक्तों पर अपना भाष्य लिखा। इसी सम्प्रदाय के आचार्य राघवेन्द्रयति ने अपने ग्रन्थ 'मन्त्रार्थमञ्जरी' की भूमिका में इस तथ्य का उल्लेख किया है। माध्वाचार्य का भाष्य श्लोकात्मक है तथा वैष्णवमत के होने के कारण यह भाष्य नारायण–परक है। उनका कथन है–

स पूर्णत्वात् पुमान्नाम पौरुषे सूक्त ईरितः।
स एवाखिलवेदार्थः सर्वशास्त्रार्थ एव च।।

काल– इनका काल १२७८ ई. के लगभग कहा गया है एवं यह ८० वर्ष तक जीवित थे। इन्होंने स्वयं अपने समय का उल्लेख किया है[२]–

चतुःसहस्त्रे त्रिंशतोत्तरे गते संवत्सराणां तु कलौ पृथिव्याम् ।
जातः पुनर्विप्रतनुः स भीमो दैत्ये निगूढं हरितत्त्वमाह ।।

(महाभारत, तात्पर्य निर्णय)

---

१. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रजबिहारी चौबे – *संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास*, खण्ड १, पृ. ६३७

२. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रजबिहारी चौबे – वहीं, पृ. ६३७–६३८

आत्मानन्द

आत्मानन्द ने मात्र अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद १/१६४/५२) पर अपना भाष्य लिखा। इनका भाष्य अद्वैत-मत से प्रभावित है क्योंकि शङ्करमतावलम्बी थे। इनका भाष्य अध्यात्म-परक है तथा इनका कथन इसको पुष्ट करता है–

आधियज्ञविषयं स्कन्दादिभाष्यं निरुक्तमधिदैवतं विषयं। इदन्तु भाष्यमध्यात्मविषयम् ।

काल

आत्मानन्द के भाष्य में भोज, विज्ञानेश्वर तथा चन्द्रिकाकार का उल्लेख मिलता है। पी. वी. काणे के **'धर्मशास्त्र का इतिहास'** में विज्ञानेश्वर का समय १०७०–११०० ई. दिया गया है। इससे स्पष्ट है कि ११०० ई. से पूर्व नहीं थे। सायण का इनके भाष्य में उल्लेख नहीं है, अतः ये सायण से पूर्ववर्ती प्रतीत होते हैं।

प्रकाशन

इनके अस्यवामीय सूक्त पर किया गया भाष्य १९३२ ई. में मोतीलाल बनारसी दास, लाहौर से प्रकाशित हुआ था। इसके सम्पादक श्री प्रेमनिधि थे। इस भाष्य का प्रथम उल्लेख मैक्समूलर के **'संस्कृत साहित्य के इतिहास'** में प्राप्त होता है। डॉ. सुधीर कुमार गुप्त ने इस भाष्य का दूसरा संस्करण भी प्रकाशित कराया।[१]

सायणाचार्य

वेद के भाष्यकारों की परम्परा में आचार्य सायण मणिदीप के सदृश सुशोभित होते हैं। वैदिक साहित्य के अधिकांश ग्रन्थों पर इनके भाष्य प्राप्त होते हैं। इन्होंने प्रथमतः तैत्तिरीय शाखा (कृष्ण यजुर्वेद) की संहिता, ब्राह्मण तथा आरण्यक के भाष्य लिखने के पश्चात् ऋग्वेद पर भाष्य लिखा। ऐसा उन्होंने यागानुष्ठान को दृष्टि में रख कर किया। सायण ने ऋग्वेद के भाष्य के प्रारम्भ में लिखा है–

आध्वर्यवस्य यज्ञेषु प्राधान्याद् व्याकृतः पुरा ।
यजुर्वेदोऽथ हौत्रार्थमृग्वेदो व्याकरिष्यते।।[२]

कुल-परिचय

सायण ने भाष्यों के प्रारम्भ में तथा अन्त में अपना परिचय भी दिया है। इनका परिचय विजयनगर के राजाओं के शिलालेख से भी प्राप्त होता है। ये आन्ध्र में तुङ्गभद्रा नदी के दक्षिण तट पर स्थित विजयनगर राज्य के निवासी थे। इनके पिता का नाम मायण एवं माता का नाम श्रीमती या श्रीमायी था। इनके तीन पुत्र कहे गये हैं– कम्पन, मायण और शिङ्गव। इनका गोत्र भारद्वाज था। इनके अग्रज माधव तथा अनुज भोगनाथ थे।

---

१. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रज बिहारी चौबे, वहीं, पृ. ६३८–६३९
२. बलदेव उपाध्याय, *आचार्य सायण और माधव*, पृ. ९१–९

सायण परम गुरु-भक्त थे। इनके तीन गुरु थे- विद्यातीर्थ, भारतीतीर्थ एवं श्रीकण्ठ। गुरु को ईश्वर-स्वरूप मानते हुये प्रत्येक भाष्य के अन्त में उनका स्मरण किया है-

यस्य निःश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थमहेश्वरम् ।।[2]

राजाश्रय एवं काल

सायण ने ऋग्वेद के भाष्य में अध्याय की समाप्ति पर अपने आश्रयदाता राजाओं का नामोल्लेख किया है-

'इति श्रीमद्राजाधिराजपरमेश्वरवैदिकमार्गप्रवर्तकश्रीवीरबुक्कभूपालसाम्राज्य-धुरन्धरेण सायणाचार्येण विरचिते माधवीये वेदार्थप्रकाशे ऋक्संहिताभाष्ये प्रथमाष्टके प्रथमोऽध्यायः समाप्तः'

सायण के भाष्य, दानपत्रों तथा शिलालेखों से यह ज्ञात होता है कि वे कम्पन, संगम, बुक्क-प्रथम तथा हरिहर द्वितीय के मन्त्री थे। सायण ने बुक्क प्रथम के आदेश से वेदों के भाष्य लिखने का कार्य किया। यह काल १३६३ ई. तक था। बुक्क प्रथम की मृत्यु हो जाने पर उनके पुत्र हरिहर द्वितीय के नृपत्व के भी सायण मन्त्री बने रहे। १३८७ ई. में सायण की मृत्यु हुई। उस समय उनकी अवस्था ७२ वर्ष की थी। इस प्रकार सायण का काल १४वीं शताब्दी है।

ऋग्वेदभाष्य

आचार्य सायण ने ऋग्वेद के अपने भाष्य को 'वेदार्थप्रकाश' नाम दिया है जो उनके गुरु विद्यातीर्थ को समर्पित है-

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थमहेश्वरः ।।[3] (ऋग्वेद भाष्य १/१ पर पुष्पिका)

व्याख्यापद्धति

सायण ने अपने भाष्य में पूर्ववर्ती भाष्यकारों की व्याख्या पद्धति को स्वीकार करते हुये मन्त्रों का अधियज्ञपरक अर्थ किया तथा प्रत्येक सूक्त के प्रारम्भ में उस सूक्त के ऋषि, देवता, छन्द तथा यज्ञानुष्ठान में उनके विनियोग का उल्लेख किया है। यज्ञ परक व्याख्या के साथ ही उन्होंने अधिदेव एवं अध्यात्मपरक भाष्य भी किया है।

प्रत्येक मन्त्र की व्याख्या सायण ने दो भागों में की है। प्रथम भाग में मन्त्र के प्रतिपद का अर्थ किया है तथा दूसरे भाग में शब्दों के व्याकरण एवं स्वर पर विचार किया गया है। यथावसर

---

१. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रज बिहारी चौबे - वहीं, पृ. ६३९

२. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रज बिहारी चौबे - *संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास*, खण्ड १, पृ. ६३९

३. बलदेव उपाध्याय - *आचार्य सायण और माधव*, पृ. २२-३५

पूर्ववर्ती भाष्यकारों के मत, कुछ पदों के विकल्परूप में कई अर्थ, कहीं-कहीं पूरे मन्त्र का विकल्पार्थ दिया गया है।[१]

सायण ने अपने अर्थ की पुष्टि में पुराण, इतिहास, स्मृति तथा महाभारत आदि ग्रन्थों को उद्धृत किया है। इसके साथ ही वेद के षडङ्ग का भी प्रयोग किया है। महत्त्वपूर्ण शब्दों की व्युत्पत्ति, सिद्धि तथा स्वराघात आदि की सिद्धि हेतु पाणिनीय सूत्रों तथा प्रातिशाख्यों का प्रमाण दिया है। यास्क द्वारा की गई मन्त्रों की व्याख्या को अपने भाष्य में यथावत् प्रस्तुत किया है। यज्ञ-विधान की दृष्टि से व्याख्या करते समय कल्पसूत्रों का उपयोग प्राप्त होता है। स्थान-स्थान पर सूक्त-विषयक तथा मन्त्र-विषयक प्राप्त आख्यान-आख्यायिकायें भी सप्रमाण प्रस्तुत की गई हैं।[२]

प्रकाशन

सम्पूर्ण सायण कृत ऋग्वेद के भाष्य का डॉ. मैक्समूलर ने १८४९-७४ ई. में सम्पादन कर ईस्ट इण्डिया कम्पनी से प्रकाशित कराया जो ६ भागों में था। इसके पश्चात् दूसरा संस्करण ४ भागों में प्रकाशित हुआ जो पहले संस्करण की अपेक्षा अधिक शुद्ध था। इसके अतिरिक्त वैदिक संशोधन मण्डल से भी इसके भाष्य का ४ खंडों में प्रकाशन हुआ है।

मुद्गल

ऋग्वेद के भाष्यकारों में मुद्गल की चर्चा प्रायः इतिहास-ग्रन्थों में नहीं प्राप्त हैं किन्तु विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर १९६५ ई. से प्रकाशित स्कन्द, उद्गीथ तथा वेङ्कटमाधव के भाष्य के साथ मुद्गल का भाष्य भी प्राप्त होता है जो सायण के भाष्य के अनुसार है। इनका भाष्य सायण के भाष्य पर आधारित है, अतः ये सायण से परवर्ती भाष्यकार हैं। इनका भाष्य सायण के समान विस्तृत नहीं है।

प्रस्तुत कोश का सम्पादन

ऋग्वेद भाष्य कोश राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के प्रयाग परिसर की एक महत्त्वाकांक्षी योजना रही है, जिसे सन् १९८१ में इस परिसर (पूर्व कालिक विद्यापीठ) के तत्कालीन प्राचार्य डॉ. गयाचरण त्रिपाठी जी ने अपने निर्देशन में प्रारम्भ किया। उन्होंने इस योजना में डॉ. माया मालवीय (रीडर), डॉ. प्रकाश पाण्डेय तथा डॉ. शैलजा पाण्डेय को संयुक्त किया।

इस योजना का उद्देश्य ऋग्वेद के प्राचीन भारतीय भाष्यकारों द्वारा किये गये भाष्य के आधार पर ऋग्वेद के मन्त्रों में आये शब्दों का अर्थ लेकर कोश का सम्पादन करना है। शब्दों का क्रम वैदिक संशोधन मण्डल पूना से प्रकाशित 'वैदिक पदानुक्रम कोश' से लिया गया है। उन

१. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रज बिहारी चौबे - वहीं, पृ. ६४०

२. बलदेव उपाध्याय - *आचार्य सायण और माधव*, पृ. १२१

२. बलदेव उपाध्याय तथा ब्रज बिहारी चौबे - *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, पृ. ७९

शब्दों का अर्थ प्राचीन भाष्यकारों स्कन्दस्वामी, उद्गीथ, वेङ्कटमाधव, सायण तथा मुद्गल के भाष्य से शब्दों का अर्थ ग्रहण कर कोश बनाया गया है। भाष्यकारों का क्रम उनकी प्राचीनता के आधार पर रखा गया है।

सम्पादन विधि

शब्दों के अर्थ को क्रम देने का कार्य करते समय प्रथमतः उस शब्द के प्रधान अर्थ को ग्रहण किया गया है। इसके पश्चात् कम सन्दर्भों में आये अर्थों को रखा गया है। कई बार ऐसे भी अर्थ प्राप्त हुये हैं जो प्रधान अर्थ से संयुक्त होते हुये भी थोड़े अर्थ-विभेद रखते हैं। ऐसा अर्थ-भेद मन्त्रों में प्राप्त प्रसङ्गों के अनुसार हुआ है। इन किञ्चित् पार्थक्य वाले किन्तु प्रधान अर्थ से संयुक्त अर्थों को प्रधान अर्थ के अन्तर्गत रखा गया है, उन्हें कोष्ठक के माध्यम से दर्शाया गया है। उसके साथ ही उस भाष्यकार का नाम भी उल्लिखित है।

कोश में अर्थ-प्रस्तुति की विधि इस प्रकार अपनायी गई है-

१. पहले पदानुक्रम कोश से गृहीत शब्द रखा गया है।

२. इसके पश्चात् शब्द का प्रधान अर्थ दिया गया है।

३. अर्थ के पश्चात् भाष्यकार का नाम तथा ऋग्वेद का सन्दर्भ दिया गया है। यदि एक ही अर्थ कई भाष्यकारों ने किया है, तो सभी भाष्यकारों के नाम एक साथ उस सन्दर्भ से जोड़ दिये गये हैं। भाष्यकारों के नाम उनकी प्राचीनता के अनुसार रखे गये हैं।

४. भाष्यकारों के नाम संक्षिप्तक्षर से दर्शाये गये हैं। यथा- उ०, स्क०, वे०, सा०, मु०।

५. प्रधान अर्थ से जुड़े किन्तु किञ्चिद् भेद लिये अर्थों को कोष्ठक ( ) के अन्दर भाष्यकार के नाम के साथ दर्शाया गया है। प्रायः अर्थ स्वतन्त्र रूप से हैं।

६. प्रायः प्रधान अर्थ-शीर्षक को एकवचन द्वारा दर्शाया गया है किन्तु यदि शब्द का एक सन्दर्भ एक ही अर्थ प्राप्त हुआ है तो उसको भाष्य के प्राप्त भाषा में ही प्रस्तुत किया गया है। वहाँ अर्थ में वचन, लिङ्ग आदि वही है जो कि भाष्य में प्राप्त होता है।

७. यह खण्ड मात्र ह्रस्व अ से प्रारम्भ होने वाले ऋग्वेद के शब्दों का है।



कृतवेदिता निवेदन

मैं सर्वप्रथम भगवान् आशुतोष एवं माता पार्वती के चरणों में ऋग्वेद भाष्य कोश का प्रथम खण्ड रूप पुष्प निवेदित करती हूँ जिनके आशीर्वाद से यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है।

मैं गङ्गानाथ झा विद्यापीठ, अधुना गङ्गानाथ झा परिसर के पूर्व प्राचार्य एवं इस योजना के प्रधान-सम्पादक डॉ. गया चरण त्रिपाठी जी की कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस योजना की उद्भावना की तथा पदे-पदे अपना मार्ग-निर्देशन प्रदान किया। मैं डॉ. माया मालवीय जी एवं डॉ. प्रकाश पाण्डेय जी के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ, जिनका प्रारम्भ से ही योजना में योगदान रहा।

इस परिसर के पूर्व प्राचार्य प्रो. सर्वनारायण झा जी की मैं आजीवन ऋणी रहूँगी क्योंकि उनके अथक प्रयास एवं प्रोत्साहन के बिना इस ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भव ही नहीं था। प्रो. शैलकुमारी मिश्र जी को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। उन्होंने अपने प्राचार्यत्व में इसे प्रेस में भेजने की अनुमति प्रदान की थी। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आपके कार्य-काल में ही इस कार्य का प्रकाशन भी हो रहा है।

मैं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के पूर्व-निदेशकों को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने इस योजना को सञ्चालित किया। इस संस्थान के पूर्व कुलपति प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री जी ने इसे प्रकाशित कराने की प्रेरणा दी, उन्हें मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। इस संस्थान के वर्तमान कुलपति जी के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

अन्त में, मैं इस विद्यापीठ के पुस्तकालय विभाग तथा समस्त कार्यालय को उनके सहयोग के लिये धन्यवाद देती हूँ। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में श्री ब्रह्मानन्द मिश्र एवं श्री विकास चन्द्र जैन जी को अत्यन्त प्रयत्नपूर्वक वर्ण-संयोजन हेतु तथा सुन्दर प्रकाशन हेतु एकेडमी प्रेस को धन्यवाद देती हूँ। मेरा यह लघु-प्रयास विद्वानों के तथा वेद-विद्यानुरागियों के समक्ष प्रस्तुत है। सहज मानवीय त्रुटियों के लिये क्षमाप्रार्थना सहित,

विदुषां वशंवदा

शैलजा पाण्डेय

सङ्केत-सूची

उ०	=	उद्गीथ
स्क०	=	स्कन्दस्वामी
वे०	=	वेङ्कटमाधव
सा०	=	सायण
मु०	=	मुद्गल

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. वैदिक पदानुक्रम कोश

२. ऋग्वेद

क. सम्पादक – विश्वबन्धु, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, पंजाब, १९६५

ख. सम्पादक – मैक्समूलर, वैदिक संशोधन मण्डल पूना

सहायक ग्रन्थ (भूमिका)

१. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, प्रथम खण्ड, प्रधान सम्पादक– आचार्य बलदेव उपाध्याय, सम्पादक– प्रो. ब्रज बिहारी चौबे, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, १९९६

२. आचार्य सायण और माधव, आचार्य बलदेव उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, १९८४

३. वैदिक साहित्य और संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा मन्दिर, काशी, १९६७

ऋग्वेद-भाष्य-कोशः

अंश

१. देवविशेषः,

वे०-५।८६।५ (यथैकस्यांशौ समानाकारौ तथेन्द्राग्नी ... यद्वा अंशश्च भगश्च आदित्यौ द्वौ)। सा०-२।१।४ (सूर्य-मूर्त्यन्तर्भूत एतन्नामको देवः), सा०मु०-५।८६।५ (द्वादशादित्यमध्यवर्ती देवः। ... भगस्याप्युपलक्षकः। आदित्याविव दीप्तावित्यर्थः।

२. भागः,

उ०-१०।३१।३ (हविर्भागाः), वे०-१०।१०६।९ (रिक्थांशम्), सा०-२।१९।५, ३।४५।४, १०।३१।३, सा०मु०- १।१०२।४, ११२।१

३. अवयवः,

सा०-१०।१०६।९ (अंशाविव यथावयवौ, तद्वन्तं यज्ञं भजेते तद्वत्।

अंशु

१. रश्मिः,

स्क०- १।४६।१० (आदित्यरश्मीनाम्), वे०- १।४६।१० (रश्मेरनन्तरमुदय-वेलायाम्), सा०मु०- १।४६।१० (उषः-कालीनरश्मिः)

२. सोमरसः,

वे०-१०।११३।२, वे०सा०-९।६८।४, ७२।६, ९।७४, ९१।३, ९२।१, ९४।९, सा०- ४।२२।८, २६।६, ६।१७।११, ७।९८।१, ९।६२।४, ६८।६, ७४।२ (सोमात्मकः), ८९।६

३. सोमलता, सोमावयवः,

उ०सा०- १०।१७।१२ (रसादितरः सोमः); स्क०-१०।१७।१२ (सोमस्य अवयवाः अंशव उच्यन्ते), वे०-४।१।१९ (सोमलता), ८।९।१९, १०।९४।८ (अन्नस्य), वे०सा०मु०- १।९१।१७ (लतावयवैः), सा०-१।१२५।३ (अंशुमतो वल्लीरूपस्य), १३७।३ (वल्लीरूपं सोमम्), ३।३६।६-७ (लताखण्डरूपः), ९।९६।८ (अभिषूयमाणसोमस्य), १०।१४९।५

अंशुमती

नदी,

सा०- ८।९६।१३,१४ (एतन्नामिका नदी)

अंस

हस्तयोरूर्ध्वभागः,

सा०- १।१६६।९ (तदुपलक्षितभुजेषु), १०।१६३।२

अंसत्र

कवचः,

सा०-४।३४।९, ८।१७।१४ (अंसत्राणम्)

अंसत्रकोश

कवचानि कोशस्थाने,

वे०सा०- १०।१०१।७ (... कवचं यथा कायं रक्षति तद्वदुकस्य कोशं कोश-स्थानीयम्)

अंस्य

१. अंसार्हाः,

सा०- १।१९१।७

२. अंसे भवाः,

सा०- १।१९१।७

३. अंसगाः,

सा०- १।१९१।७

४. अंसाभ्यां खादन्तः,
सा०- १।१९१।७
५. अंसेन प्रहरन्ति,
वे०- १।१९१।७

अंहति

१. आर्तिर्दारिद्र्यम्,
वे०-१।९४।२ (अवर्तिः), सा०मु०- १।९४।२
२. जालम्,
वे०- ८।६७।२
३. पापम्,
स्क०-१।९४।२, वे०सा०मु०-५।५५।१०, सा० ८।६७।२, ६७।२१
४. वधः,
स्क०- १।९४।२

अंहस्

१. पापम्,
स्क०वे०सा०मु०- १।४२।१, स्क०सा०मु०- १।५४।१, उ०सा०- १०।२४।३, ३६।२,३, ६६।५, वे०- २।३३।३, १०।३६।३, वे०सा०- ६।२।११, ८।१८।६, सा०- २।२६।४, ४।५३।६, ५५।५, ६।११।१५, २।४ (आहननशीलं पापम्), ३।१, १६।३०, ७।१५।७, १०।२५।८, १२६।२, १३२।७, १६४।४, सा०मु०- ५।५१।१३
२. दारिद्र्यम् (पापरूपम्),
वे०सा०- ४।५३।६, सा०- ३।३२।१४, ४।२।८
३. आहन्ता (शत्रुः),
वे०- ६।३।१, १०।२४।३, २५।८, ३६।२, ६६।५, १३२।७, १६४।४ (आहन्तुः आयुधात्), सा०- १०।६५।५ (पापरूपाणां शत्रूणाम्)
४. रक्षः,
वे०- ६।१६।३०
५. उपद्रवः,
वे०- १।५४।१, ४।५५।५, ८।२४।२७, वे०सा०- १०।६५।१२, सा०- १०।६५।१२ (पापरूपाद् उपद्रवात्)।

अंहोमुच्

अंहसो मोचकम्,
उ०वे०सा०- १०।६३।९

अंहु

१. पापम्,
स्क०-१।६३।७ (अंहुशब्दस्यांहः पर्यायस्य द्वितीयार्थे षष्ठी अंहः पापम्)
२. आहननशीलः पापः,
सा०- १।६३।६, ८।१८।५
३. आहन्ता हन्ता पापशीलस्य,
वे०- २।२६।४ (आहन्ता), वे०सा०- ८।६७।७
४. पापः स्तोता,
स्क०- १।१०७।१ (पापस्य निकृष्टस्य यष्टुः), वे०- ५।६५।४ (पापस्यभजमानस्य), सा०मु०- ५।६५।४ (पापिनः स्वस्तोतुः) ६७।४।
५. दरिद्रः,
वे०- १।१०७।१ (अत्यन्तपापस्यापि दरिद्रस्य), ५।६७।४, (पापस्य कृशस्य) सा०- २।२६।४ (अवृत्तेर्दारिद्र्यात्); सा०मु०- ८।१८।५, (दारिद्र्यं प्राप्तः पुरुषः)।
६. एतत्संज्ञकः असुरः,
वे०सा०मु०- १।६३।७

अंहुर

पापवान्,
उ०वे०सा०- १०।५।६ (पापवान् पुरुषः)

अंहुरण, रणा

१. कूपः,

स्क०- १।१०५।१७ (उद्वेगकरैस्तृणादिभिरुपेतत्वात् कूपः)

२. वृकः,

स्क०- १।१०५।१७ (पापकर्मकारित्वाद् वृकः)

३. अंहवः आहन्तारो दस्यवः तेषां रमणा रमयित्री

स्क०- ६।४७।२०

४. अभिगन्तव्या,

वे०- ६।४७।२०

५. अंहस्वती पापवती। उद्वेजनीयेत्यर्थः,

सा०-६।४७।२०

६. पापरूपकूपपातः,

सा०मु०- १।१०५।१७ (अंहसः पापरूपादस्मात् कूपपातात्)।

अकनिष्ठ

अविद्यमानः कनिष्ठः येषां ते,

स्क०- ५।५९।६

अकर्मन्

१. अविद्यमानकर्मा, निष्क्रिय इत्यर्थ,

उ०-१०।२२।८

२. निष्क्रियः उपक्षपयिता,

वे०- १०।२२।८

३. अविद्यमानयागादिकर्मा,

सा०-१०।२२।८

अकल्पः

१. इन्द्रः,

स्क०- १।१०२।६ (कल्पनं कल्पः, तद्रहितोऽकल्पः अतिशयवद्देवतामाहात्म्यान्नानारूपप्रतिपत्तेः नियतेनैकरूपेण एवंरूपो नामेन्द्रः)

२. सदृशरहितोऽकल्पः,

स्क० - १।१०२।६

३. अनुपमः,

वे० - १।१०२।६

४. कल्पेनान्येन रहितः, स्वतन्त्र इत्यर्थः,

सा०मु० - १।१०२।६

अकव

१. अकुत्सितः,

स्क०- ६।३।१०७ (कुशब्दस्यायं, कवं चोष्णे [पा० ६।३।१०७] इति कवादेशः छान्दसत्वात्। शब्दान्तरं वा तदर्थं, अकुत्सितैरित्यर्थः। ... अकुत्सितं हि मध्यममपि भवति।), स्क०वे०- ५।५८।५, वे०- (अकुत्सितैरुपायैः शत्रुभिः), वे०सा०- १।१५८।१, ६।३३।४, ६०।३ (अकुत्सितैः महद्भिः), सा०- ३।५४।१६ (अकुत्सितैः शोभनकर्मभिः)

२. अनल्पः,

सा०मु०- ५।५८।५

३. उत्कृष्टः,

स्क०- ६।३३।४

अकवारि,

१. प्रभूतशत्रुकः,

सा०- ३।४७।५

२. अकुत्सितारिः,

वे०सा०- ३।४७।५, सा०- ६।१९।११

३. अकुत्सितगमना,

वे०सा०- ७।९६।३

अकवि

१. अप्रकृष्टज्ञानेषु,

वे०- ७।४।४

२. अक्रान्तदृक्षु,

सा०- ७।४।४

अकामकर्शन

१.कामानामकर्शयिता अतनूकर्ता। यावान् काम्येत ततोऽधिकस्य दातेत्यर्थः,
स्क०- १।५३।२
२. कामानामकर्शिता,
वे०- १।५३।२
३. कामान् कर्शयति नाशयतीति कामकर्शनः। न कामकर्शनोऽकामकर्शनः,
सा० - १।५३।२
४. अकामनाशनः,
मु० - १।५३।२

अकुत्र

अज्ञेयस्थानम्,
स्क०- (यत्र ज्ञायते। किं तदिति चोरस्थानं, तत्राकुत्र अज्ञेये चोरस्थान इत्यर्थः) वे०- १०।२२।१२ (अप्रज्ञाते देशे) सा०मु०- १।१२०।८ (अस्माभिरगम्ये प्रदेशे)

अकुध्यञ्च्

कुत्सितः,
उ०- १०।२२। १२ सामर्थ्यात् कुत्सिताः विफला इत्यर्थः), वे०-१०।२१२ (कुत्सिताञ्चना), सा०-१०।२२।१२ (कुत्सिताः। विफला इत्यर्थः)

अकुमार

१. न कश्चित् कुमारः,
वे० १।१५५।६
२. अनल्पः,
सा०- १।१५५।६ (अनल्पः एवं भूतो महाविष्णुः)

अकूपार

१. आदित्यः,
सा०- (अत्र यास्कः आदित्यो अकूपार उच्यते ... १०।१०९।१, [निरु० ४।१८]... अकुत्सितपारो महागतिरादित्यः।
२. समुद्रः,
वे०- १०।१०९।१
३. कश्यपः,
वे०- ५।३९।२ (अत्र शाट्यायनकम् - अकूपारो वा अयं कश्यपः समुद्रेऽन्तर्महद् यक्षम् ... अकूपरणस्य (या० ४।१८)
४. अकुत्सितः पारोऽन्तो यस्य सः,
सा०- ५।३९।२ (...तादृशस्य अन्नस्य), मु०-५।३९।२ (अकुत्सितः पारो यस्य तस्य द्युम्नस्य)

अकृत

१. विविधं हन्ति,
स्क०- १।६३।४ (विविधं हतवान्) वे०- १।६३।४ (विकृत्तवान्), सा०मु०- १।६३।४ (पराङ्मुखा यथा भवन्ति तथा व्यच्छिन्नः तदानीमुत्सः सर्वं यशः प्राप्नोदित्यर्थः)
२. अनाचरितम्,
उ०-४।१८।२ (विकृतात् विहिताकरणेन च कृतात्), वे०-४।१८।२ (मानसजात्), वे०सा०- ४।१८।२ (इदमेव न केवलं मया क्रियते किन्त्वन्यैः अकृतानि), ६।१८। १५, ८।६६।९, सा०-१०।६३।८ (करचरणादिभिरकृतात्)। सा०मु०-१। १०४।७ (अनिष्पादिते धनशून्ये)
३. असंस्कृतम्,
स्क०- १।१०४।७ (असंस्कृते अयोग्ये)
४. अपर्याप्तम्,
वे०- १।१०४।७

अकृत्तरुच्, क्

अच्छिन्नदीप्तिः,
वे०सा० - १०।८४।४

अकृषीवला

१. कृषिरेषामस्तीति कृषीवलाः कर्षकाः ... तैर्वियुक्तां तादृशीम्,
सा०- १०।१४६।६
२. अकुर्वतीं कर्षणम्,
वे०- १०।१४६।६

अकेतु

प्रज्ञानरहितः,
वे०स्क०-१।६।३ (षष्ठ्यर्थे चतुर्थी प्रज्ञारहितस्य), सा०मु०- १।६।३ (रात्रौ निद्राभिभूतत्वेन प्रज्ञानरहिताय)

अक्र

१. अतिमहार्घस्य पण्यस्य क्रेता,
उ०- १०।७७।२
२. आक्रान्तः,
वे०- १।१८९।७, सा०- १।१४३।७, (ज्वालासमिदादिभिराक्रान्तः)
३. आक्रमिता,
वे०-१०।७७।२ (यास्कः, अक्रः आक्रमणात्, नि० ६।१७), वे०सा०- १०। ७७।२ (आक्रमणशीलाः), सा०- १। १८९। ७, ३।१।१२ (परेषामाक्रमिता), ४।६।३
४. अन्यैरनाक्रान्तः,
वे०- १।१४३।६ (रक्षोभिरनाक्रान्तः परैरनाक्रान्तः), सा०- ३।१।१२ (परैरनाक्रमणीयः)

अक्रतु

कर्मवर्जितः,
उ०वे०-७।६।२ (अविद्यमानत्वद्यागकर्मा), वे०- ७।६।२ (अकर्मणः), सा०-७।६।२ (अयज्ञान्), १०।८३।५ (कर्मरहितः)

अक्रविहस्त,

१. अहिंसितहस्तः,
वे०- ५।६२।६ (क्रविहिंसाकर्मा। अहिंसितहस्तौ)
२. अकृपणहस्तः,
सा०मु०- ५।६२।६ (अकृपणहस्तौ दानशूरावित्यर्थः)

अक्रि

१. आक्रमिता,
स्क०-१।१२०।२ (आक्रमितारौ वशीकर्तारौ)
२. अनाक्रान्तः,
वे०सा०मु०-१।१२०।२ (शत्रुभिरनाक्रान्तौ)

अक्रीळत्

१. विषयेन्द्रियक्रीडनवर्जितः जितेन्द्रियः सन्,
उ०- १०।७९।६
२. अगच्छन्,
वे०- १०।७९।६
३. क्वचिद्देशे अविहरन्,
सा० - १०।७९।६

अक्ष (१)

१. रथाक्षः,
वे०- १०।८५।१२ (रथाक्षः), वे०सा०- १।१६६।९ (रथ्यः अक्षः), ७।३३।४ (रथस्याक्षं), सा०- १।३०।१४ ('अक्षस्यदेवनस्य' फिट् सूत्र ३५। इत्याद्युदात्तत्वम्), १।१६४।१३ (रथाक्षः), ३।५३।१७,१९ (रथ्य अक्षः), ६।२४।३ (रथसम्बन्ध्यक्षो यथा चक्रायां बहिर्गतस्तद्वत्), ८।५।२९ (रथाक्षः), १०।८५।१२ (व्यानो वायुरक्षः। उभयरथचक्रच्छिद्रगामिनी या काष्ठा सा च रथस्य सर्वं भारं वहति। सोऽक्षो व्यानोऽभूत्), ८९।४ (रथाक्षः)

२. अक्षभूतः आदित्यः,
वे०- १।१६४।१३
३. अक्ष इति नामधेयम्,
वे० – ८।४६।२७ (अरट्वादयः पृथुश्रवसः अध्यक्षाः), सा०– ८।४६।२७ (...एते तस्य राज्ञोऽध्यक्षाः यद्वा अरट्वादयोऽन्ये राजानः)

अक्षानह्

अक्षेषु नह्यः,
वे०- १०।५३।७ (अक्षेषु नह्यान् अश्वान्), सा०-१०।५३।७ (अक्षेषु नह्यान् बन्धनीयानश्वान्)

अक्ष (२)

१. देवनसाधनः,
उ०-१०।२७।१७ (द्वयोरेकतरस्यानानुगता भवन्ति), ३४।४ (देवनसाधनः), वे०- १०।२७।१७ (देवनस्थानं प्रतिनिक्षिप्ताः), सा०-१०।२७।१७ (संक्रीडमानयोर्द्वयोरे – कतरस्यानुगता भवति)
२. देवः,
वे०सा० – १०।३४।४
३. इदक्षा,
सा० – १०।३४।७

अक्षन्

१. तेजः,
वे०-१।१३९।२, २।२।४, ९।१०२।८ (अक्षैरिवाश्नुवानैः तेजोभिः), १०।२१।७ (व्याप्तैस्तेजोभिः), वे०सा०-१।१२८।३ (अक्षस्थानीयाभिः ज्वालाभिः), सा०- ९।१०२।८ (अक्षैरिन्द्रियैरिवाश्नुवानैः स्वतेजोभिः)
२. इन्द्रियम्,
वे०सा०- १।१३९।२, ७।५५।६
३. चक्षु,
वे०सा०- ८।२५।९, वे०सा०मु०- १।८९।८ (आत्मीयैः चक्षुभिः)
४. अवयवः,
सा०-२।२।४ (स्वकीयैर्ज्वालारूपैरवयवैः)

अक्ष्णवत्

१. अक्षिमन्तः,
उ०वे०सा० – १०।७१।७
२. ज्ञानदृष्ट्युपेतः,
सा० – १।१६४।१६
३. चक्षुष्मान्,
वे० – १।१६४।१६

अक्षर

१. उदकम्,
स्क०वे०मु०- १।३४।४, वे०सा०- १। १६४।४२, सा०-१।३४।४ (अक्षराण्यु- दकानि। 'अक्षराः स्रोतः तृप्तिः' – नि०, १।२।३२)
२. क्षरणरहितम्,
वे० – १।१६४।३९ (अक्षरणस्वभावात्), सा० – १।१६४।३९ (अदृश्यादिगुणके- क्षरणरहितेऽनश्वरे नित्ये सर्वत्र व्याप्ते ब्रह्मणि ब्रह्मवाचकत्वम्)
३. स्तोत्रम्,
वे०- ७।१।१४ (स्तोत्राणि), सा०- ७।१।१४ (क्षयरहितेन स्तोत्रेण)
४. तेज आदित्याख्यम्,
वे०- ३।५५।१, सा०-३।५५।१ (न क्षरति। इत्यक्षरम्। अविनाश्यादित्याख्यम्)
५. क्षरणरहिते वेद्याख्ये स्थाने,
सा०-६।१६।३५

अक्षरा

१. वाक्,
वे०- ७।१५।९

२. माता,
वे० -७।३६।७
३. गावोऽक्षराणि उच्यन्ते,
वे०- ३।३१।६
४. क्षयरहिता स्तुतिरूपा अस्मदीया वाक्,
सा०- ७।१५।९
५. क्षयरहितानाम्,
सा०- ३।३१।६
६. व्याप्ता,
सा०- ७।३६।७

अक्षिपत्

१. अक्षिपतनम्,
वे०- १०।११९।६
२. अक्ष्णः पातकं भवति, अनवरतं प्रवर्तमानात् न चक्षुः पतति, सन्ततं प्रवर्तत इत्यर्थः,
वे०- ६।१६।१८
३. चक्षुःपतनं दृष्टिसंचारम्,
सा०- १०।११९।६
४. अक्ष्णोः पातकं विनाशकम्,
सा०- ६।१६।१८

अक्षु

१. सम्भक्तुमिच्छन्,
वे०- १।१८०।५
२. चिरकालव्याप्तो दीर्घजीवी,
सा०- १।१८०।५
३. व्याप्तः सन्,
सा० - १।१८०।५

अक्ष्णयावन्

१. दिवि दिग्भ्यो निर्गत्य विदिशो ये गच्छन्ति ते,
वे०- ८।७।३५
२. अक्ष्णं व्याप्तं गच्छन्तः,
सा० - ८।७।३५
३. अक्ष्णश्चक्षुषोऽपि शीघ्रं यान्तीत्यक्ष्णयावानः,
सा० - ८।७।३५

अक्ष्णया-द्रुह्

१. जैह्मयाद् द्रोहं कुर्वन्,
वे०- १।१२२।९
२. वक्रेण मार्गेण द्रुह्यति, अन्यथा - प्रकारेण द्रुह्यति, द्रोहप्रकार उच्यते,
सा०- १।१२२।९

आक्षाण

१. योद्धॄन् व्याप्नुवति तैर्व्याप्यमाने वा त्वयि असाधारणत्वेनावस्थितानि,
उ०-१०।२२।११
२. युद्धं,
वे० - १०।२२।११
३. योद्धृभिर्व्याप्यमाने त्वय्यवस्तितानि,
सा० - १०।२२।११

अक्षत,ता

१. अव्रणः,
सा०- १०।१६६।२
२. सुखम्,
सा०- ५।७८।९
३. सम्पूर्णावयवः,
मु०- ५।७८।९

अक्षित

१. अक्षीणमुदकम्,
स्क०- १।६४।६ (अक्षीणम्। प्रभूतोदकमित्यर्थः), वे०- १०।१०१।६ (अक्षीणोदकम्), सा०- ८।७।१६
२. अहिंसितम्,
स्क०- १।९।७, १।६४।६ (अक्षितमहिंसितपूर्वमन्येन केनचित्)
३. अक्षीणम्,
वे०- १।९।७, ८।७।१६, ९।६८।३, वे०सा०-७।६५।१, ८।७२।१०,

९।२६।२, ३१।५, ७८।३, ११०।५, ११३।७, वे०सा०मु०- १।६४।६, सा०मु०-५।५३।१३, सा०- १०।१०१।६

४. अक्षीणे सामर्थ्यवत्यौ,

सा० - ९।६८।३

५. विनाशरहितम्,

सा०-१।९।७ (अक्षीणमविनश्वरम्), सा०मु०- १।९।७

अक्षीयमाण

न कदापि विच्छिन्नप्रवाहम्,

सा०- ३।२६।९

अक्षेत्रविद्

१. अक्षेत्रज्ञः,

वे०- ५।४०।५, १०।३२।७

२. क्षीयते गम्यतेऽनेनेति क्षेत्रं पन्थाः। पन्थानमजानन् पुरुषः,

सा०- १०।३२।७

३. स्वस्वस्थानमजानन्,

सा०मु० - ५।४०।५

अखिद्रयामन्

अच्छिद्रगमनः,

स्क० - १।३८।११ अखिन्नगामिभिरश्वैः। सर्वदाऽश्रान्तैरश्वैः, वे०-१।३८।११ (अच्छिद्रैर्गमनैः) सा० -१।३८।११ (अच्छिन्नगमनैः ... खिद्रं यान्तीति खिद्रयामानः। न खिद्रयामानः अखिद्रयामानः), मु०-१।३८।११ (अच्छिद्रगमनैः)

अखखलीकृत्य

शब्दानुकरणम्,

वे०- ७।१०३।३ (शब्दानुकरणमाहुः) सा०-७।१०३।३ (अखखल इति शब्दानुकरणम्। अखखलशब्दं कृत्वा)

अगद

१. दोषरहितम्,

सा० - १०।१६।६

२. गदो रोगः। तद्रहितम्,

सा० - १०।९७।२

अगव्यूति

१. गावश्चरन्ति यत्र सा गव्यूतिः, तद्वर्जितं यत्समस्तं क्षुष्टं तद् अगव्यूतिः,

स्क० - ६।४७।२०

२. गोमार्गरहितं, गुप्तम्,

वे० - ६।४७।२०

३. अगोचरं गोसंचाररहितं निर्जनम्,

सा०- ६।४७।२०

अगस्त्य

१. ऋषिः,

वे०-१।११७।११ (खेलपुरोहिते), सा०-१।१८०।८ (एतन्नामा महर्षिः), १८४।५, ८।५।२६, १०।६०।६, सा०मु०- १।११७।११

२. मद्गुरुः,

सा० - १।१७९।६

अगिरौकस्

१. ये पदार्थान्निगिरन्ति तैः सेव्यमाना गिरौकसोऽतादृशाः,

वे० - १।१३५।९

२. गिरा ओकः स्थानं येषां नास्ति ते तादृशाः। भर्त्सनादिना स्थितमलभमाना,

सा० - १।१३५।९

अगृभीत

१. शत्रुभिः अगृहीतः,

वे० - ८।७९।१

२. अन्यैरगृहीतः,

सा० - ८।७९।१

अगृभीतशोचिस्

१. अगृहीतदीप्तिम्,
वे०- ८।२३।१
२. शत्रुभिरगृहीतबलम्,
वे०- ५।५४।१२
३. अन्यैरगृहीतबलाः,
वे०- ५।५४।५
४. रक्षोभिरगृह्यमाणदीप्तिम्,
सा० - ८।२३।१
५. असुरैरनपहृततेजस्कम्,
सा०मु० - ५।५४।१२
६. अगृहीततेजस्काः,
सा०मु० - ५।५४।५

अगो

१. अपशोः,
वे० - ८।२।१४
२. अस्तोतुः,
सा० - ८।२।१४

अगोता

१. अपशुतायै,
वे० - ३।१६।५
२. गवादिपशुसंपत्त्यभावस्य विषय-भूतान्,
सा० - ३।१६।५

अगोपा

१. अगोपनीयाम्,
वे० - ३।५७।१
२. अरक्ष्यमाणः,
वे० - २।४।७, ७।१८।१०
३. गोप्तृरहितां यथाकामं चरन्तीम्,
सा० - ३।५७।१
४. गोपरहितः, नियामकवर्जितः,
सा० - २।४।७
५. गोपालेनारक्षिताः,
सा० - ७।१८।१०

अगोरुध

१. स्तुतिं यो न रुणद्धि,
वे० - ८।२४।२०
२. गाः स्तुती रुणद्धीति गोरुधः। न गोरुधोऽगोरुधः। ता न विनाशयत्यादरेण श्रृणोतीत्यर्थः,
सा० - ८।२४।२०

अगोह्य

१. अत्यन्ततेजस्वित्वात् गूहितुमशक्यं सवितारम् प्रति,
स्क०- १।११०।३, ४।३३।४ (गूहितुम-शक्यस्य सवितुः)
२. अगूहनीयं सर्वजनप्रकाशमित्यर्थः,
उ० - १०।६४।३
३. केनचिदगोपनीयादित्यः,
सा० - १।१६१।१३
४. अग्राह्यस्यादित्यः,
सा० - १।१६१।११
५. गूहितुमशक्यं सर्वैर्दृश्यमानं सवितारम्,
सा०मु० - १।११०।३
६. अगोप्यस्यादित्यः,
सा० - ४।३३।७
७. सविता,
वे० -१।१६१।१३
८. उद्गूहितुमशक्यः,
वे० - १।१६१।११
९. गूहितुमशक्यं सवितारम्,
वे० - १।११०।३, १०।६४।३,
सा० - ८।९८।४,
१०. अगूहितमन्यैर्गन्तुमशक्यम्,
सा० - १०।६४।३

अग्नि

१. अङ्गनादिगुणयुक्तः,
सा०-१।१६१।३ (अङ्गनादिगुणविशिष्टम्), १६४।४६ (अङ्गनादिगुणविशिष्टम्), ३।२।२ (अङ्गनादिगुणयुक्तः), १७।४ (अङ्गनादि-गुणोपेतम्, १९।१ (अङ्गनादिगुणोपेतम्), २३।२ (अङ्गनादिगुणोपेतम्), ५।५।१ (अङ्गनादिगुणयुक्तः), ८।२८।२ (अङ्गनशीला नानाविधा अग्नयः), १०।३।७ (अङ्गनादिगुणयुक्तः), सा०मु०-१।७१।७, ७४।१, ७८।५, ५।३४।९ (अङ्गनादिगुणविशिष्टेन्द्र), ६।१।३ (अङ्गनादिगुणविशिष्टम्), १०।२०।८ (अङ्गनादिगुणविशिष्टम्)

२. अग्रण्यः,
सा०-१।२७।१ (यज्ञेष्वग्रं नीयमानम्), १२७।१ (सर्वासां देवसेनानामग्रण्यम्), १४०।१ (अग्रनयनादिगुणविशिष्टाय), २।१।१ (अग्रणीत्वादिगुणविशिष्टः), ५।२१।४, ७।३।७ (अग्रस्य नेत्रे), ७।१ (अग्रस्य नेत्रे), सा०मु०- ५।२४।२ (सर्वेषामग्रणीः)

३. देवः,
सा०- १।१।१ (अग्निनामकं देवम्), ३६।१७, ९४।८ (सर्वदेवात्मकः), ३।२०।१ (यजनीयं देवम्), ४।५।१, ५।१।४, ५१।१३, ७।४१।१, ४२।६, ४४।३, ८।१८।९, ७१।१३

४. यष्टव्यः,
सा०- ८।६०।१

५. होमनिष्पादकः,
सा०- १०।६४।८

६. होमाधारः,
सा०- १।१७४।३

७. गार्हपत्यादिः,
वे०सा० - ८।१९।७, सा०-१।११३।९ (गार्हपत्यादिरूपम्), ४।४५।५, ५।६।६, १०।१५१।१, सा०मु०- १।१०८।४ (गार्हपत्यादिषु अन्वाधानादिना), मु०-१।११३।९

८. आहवनीयादयः,
उ०सा०- १०।३५।१३, स्क०-१।१०८।४, ११३।९ (आहवनीयाख्यः), स्क०वे०मु०- १।१२।६ (आहवनीयः), सा०-१।१२।६ (आहवनीयाख्यः), १२३।६, १३९।१ (आहवनीयाख्यः), १६४।५१, १७०।४ (आहवनीयादिकम्), ३।३०।२ (आहवनीयः), ३१।१५ (अग्निहोत्रादि-कर्मसाधनभूतम् आहवनीयादि-लक्षणमग्निम्), ४।६।४ (आहवनी-यादिकम्), ७।१।१४ (आहवनीयादिः), १०।११०।१० (देवो दीप्यमान आहवनी-याख्योऽग्निः), सा०मु०- १।२६।१०

९. लौकिका अग्नयः
सा० - ५।६।६

१०. पाकाधारोऽग्निः,
सा० - २।३।१०

११. तुषाग्निः,
सा०मु० - १।११६।८

१२. स्विष्टकृत्,
सा० - १०।२।४

१३. वैश्वानरोऽग्निः,
सा०- ६।९।७, ७।५।१ (वैश्वानर-संज्ञकाय), १०।८८।३, ८८।६, सा० मु० - ६।७।१

१४. सूर्यात्मकः,
वे०सा०-१०।८८।१०, सा०- १०।१८७।५ (सूर्यात्मना), सा०मु०- ६।८।४ (पुरा सूर्य समीपे वर्तमानम्)

१५. सुसमिद्धनामकः,
सा०मु० - १।१३।१

१६. पवमानरूपः,
सा०- ९।६६।१९, ६७।२३ (पवमान-गुणविशिष्टः)।
१७. वैद्युताग्निः,
वे० - १०।४५।४, १२१।७ (विद्युद्रूपम्), सा०- १।१६४।४६ (वृष्ट्यादिकारणं वैद्युताग्निम्), १७४।३ (वैद्युतम्), १०। १८७।५ (विद्युदात्मना), सा०मु० - ५। ८५।२
१८. दावाग्निः,
उ०- १०।४५।४ (दावरूपः), वे०- १। १७४।३ (दावाग्निः), वे०सा०- १०।४५। ४
१९. अरण्योः विद्यमानः,
सा०- ७।१।१, १०।७९।४ (अरणीभ्यामुत्पन्नः)
२०. त्रिस्थानगताः,
सा० - ८।३।२०
२१. अप्सुप्रविष्टः,
वे०- १०।६१।१६ (देवेभ्यो निलीनमप्सु प्रविष्टम्), सा०- १०।६१।१६ (हविर्वोढु-मशक्तं सन्तं पलाय्याप्सु प्रविष्टम्)
२२. और्वः,
सा० - ५।८५।२
२३. निर्मथ्यः,
स्क०वे० - १।१२।६
२४. जुष्टत्वादिविशेषगुणयुक्तः,
सा०मु० - १।४४।२
२५. सर्वदा गमनयुक्तः आदित्यः,
सा०- १।१६४।११
२६. अध्वर्य्वादयः,
सा०- ३।१०।२, २९।४
२७. अग्न्युपलक्षितं सर्वं विपदादिभूत-जातम्,
सा०- १०।१२१।७

अग्निमग्निम्

१. यावान् कश्चिदग्निः सर्वम्,
स्क० - १।१२।२
२. अग्निमेव,
वे० - १।१२।२, ६।१५।६, ८।६०।१७
३. अग्निमेव। नान्यं देवम् ,
सा० - ६।१५।६
४. वीप्सादरार्थौ। अग्निमेव,
सा० - ८।६०।१७
५. यद्यप्यग्निः स्वरूपेणैक एव तथापि प्रयोगभेदात् आहवनीयादिस्थानभेदात् पावकादिविशेषणभेदाद्वा बहुविधत्व-मभिप्रेत्य 'अग्निमग्निम्' इति वीप्सा,
सा० - १।१२।२
६. आहवनीयादिभेदेन वीप्सा,
मु० - १।१२।२

अग्नी

इन्द्राग्नी,
स्क०-६।५९।३ (इन्द्रा अग्नी इति परस्परापेक्षमत्र द्विवचनम्), स्क०वे०-६।६०।१, वे०-६।५९।३, सा०-५।४५।४ (अग्नि परस्परापेक्षया प्रत्येकं द्विवचनम् ... हे इन्द्राग्नी), मु० - ५।४५।४

अग्नायी

अग्नेः पत्नी,
स्क०सा०मु०- १।२२।१२, वे०सा०मु०-५।४६।८

अग्निजिह्व

अग्न्यास्यः,
उ०-१०।६५।७ (अग्निना जिह्वास्थानीयेन हविषामत्तारः), स्क०-१।४४।१४ (अग्निर्जिह्वास्थानीयो येषां ते), ६।५०।२ (अग्निराहवनीयः जिह्वास्थानीयो यत्रे-त्यग्निजिह्वः यज्ञः, स येषामस्ति ते

अग्निजिह्वाः। आहिताग्न्यः), ५२।१३ (अग्निर्जिह्वास्थानीयो येषां ते अग्निजिह्वः। अग्नौ हि प्रक्षिप्तं हविः देवा अश्नन्ति अतः स जिह्वास्थानीयः), वे०- १।४४।१४, ६।२१।११, सा०-१।४४।१४ (अग्निर्जिह्वास्थानीयो मुख्यो येषु मरुत्सु तादृशा... अग्नेर्जिह्वायामवस्थिताः हविर्भाज इत्यर्थः), ३।५४।१० (अग्निर्जिह्वास्थानीयो येषां ते), ६।५०।२ (अग्निर्जिह्वास्थानीयो येषां ते), २१।११ (अग्निर्जिह्वास्थानीयो येषां ते), ५२।१३ (अग्निर्जिह्वास्थानीयो येषां ते), ७।६६।१० (अग्निरेव जिह्वादनसाधनो येषां तादृशाः), १०।६५।७ (अग्न्यास्याः। अग्निना हवींषि लिहन्त्या-स्वादयन्तीति तन्मुखाः), मु०-१।४४।१४ (अग्निर्जिह्वास्थानीयो मुख्यो येषु मरुत्सु तादृशाः)

अग्नितप्

अग्नितप्तः,

स्क०- ५।६१।४ (अग्निना ये तप्यन्ते दह्यन्ते ते अग्नितपः ... अग्निना दह्यमानाः), वे० - ५।६१।४, सा०मु०- ५।६१।४ (अग्निना तप्तास्ताम्रादयः)

अग्नितपस्

अग्निवत्तपनशीलः,

उ०-१०।६८।६ (अग्निवत्सन्ताप-यितृभिः), वे०-१०।६८।६ (अग्निना तपद्भिः), सा०-१०।६८।६

अग्नितप्त

अग्निना संतप्तः,

वे०-७।१०४।५ (अग्निना तप्तास्यैः व्याप्तहननैः तापनशीलप्रहारैः), सा०-७।१०४।५

अग्निदग्ध

अग्निना दग्धः,

उ०-१०।१५।१४ (अग्निना दग्धाः, अग्निना भस्मीकृताः श्मशानकर्म प्राप्ताः इत्यर्थः), वे०- १०।१५।१४, सा०-१०। १५।१४ (अग्निना भस्मीकृताः। श्मशानं प्राप्ताः)

अग्निदूत

अग्नेर्दूतत्वम्,

सा० - १०।१४।१३

अग्नीध्

१. ऋत्विग्विशेषः,

उ०सा० - १०।४१।३, वे०सा०- २।१।२ (आग्नीध्रः)

२. नान्यः कश्चित्,

सा० - १०।९१।१०

आग्नीध्र

अग्नीध्रयागात्,

सा० - २।३६।४

अग्निधान

यज्ञः,

वे० - १०।१६५।३, सा०-१०।१६५।३ (अग्निर्निधीयतेऽस्मिन्निति अग्निसहिते प्रदेशे)

अग्निभ्राजस्

अग्निदीप्तः,

वे० - ५।५४।११ (अग्निदीप्तयः), सा०मु० - ५।५४।११

अग्निमिन्ध

१. आग्नीध्रः,

वे० - १।१६२।५

२. अग्नीत्,

सा० - १।१६२।५

अग्निरूप

१. अग्निकर्मा,
वे०- १०।८४।१, सा०-१०।८४।१ (अग्निवत्तीक्ष्णदाहादिकर्माणः)
२. सन्नद्धाः कवचिनः,
वे०सा० - १०।८४।१

अग्निवत्

१. अग्निना तप्यमानः,
वे० - ७।१०४।२
२. अग्नियुक्तः,
सा० - ७।१०४।२
३. अग्नौ प्रक्षिप्तः,
सा० - ७।१०४।२

आग्निवेशि

१. यजमानानां सम्भक्तारम्,
वे० - ५।३४।९
२. अग्निवेशिसुतम्,
सा०मु० -५।३४।९

अग्निश्री

वैद्युतमग्निं श्रयन्तः,
वे०सा० -३।२६।५

अग्निहोतृ

१. अग्न्याह्वातृकः,
उ० - १०।६६।८, वे० १०।६६।८, (अग्निह्वातृकाः), सा० -१०।६६।८ (अग्निर्होता आह्वाता येषां तादृशाः)
२. अग्निहोतृकाः,
उ० - १०।६६।८

अग्र, ग्रा

१. पुरतः,
वे०-१।१२७।१०(अग्रतः), १६४।८ (अग्रतः), २।१७।३ (अग्रतः), १०।१८।७ (अग्रतः), सा०-१।११२।१८ (सर्वेभ्यो देवेभ्यः पुरस्तात्), १२६।४ (पुरस्तात्), २।१७।३, ४।५।७ (पुरस्तात् पूर्वस्यां दिशि), ७।१५।५ (पुरस्ताद्भागे देवाः), ८०,२, (पुरोदेशे सूर्यस्य पुरस्तात्), ८।६।७,२४, ९।६९।१ (पुरतः), ९६।१ (पुरतः), ९९।१ (पुरस्तात्), सा०मु०- १।२८।६, ५।८०।२ (सूर्यस्य पुरस्तात्)
२. अभिमुखम् ,
वे०- ३।५।५, ९।८६।४२, वे०सा० - १०।७५।२, सा० - ६।६५।२ (मुखम्), ७।९।३, ९।८६।४२ (सर्वेषां सम्मुखम्)
३. पूर्वम्,
उ०सा० - १०।८।४, सा०-१।१६४।८ (ततः पूर्वं पिता), ४।४६।१ (इन्द्रादिभ्यः पूर्वम्), ४७।१२ (इतरेभ्यः पूर्वम्), ७।८०।२ (देवानामग्रे। इतरदेवेभ्यः पूर्वम्), १०।१२१।१ (प्रपञ्चोत्पत्तेः प्राक्), १२९।३ (सृष्टेः प्राक् प्रलयदशायां भूतभौतिकं सर्वजगत्), १२९।४ (अस्य विकारजातस्य सृष्टेः प्रागवस्थायाम्)
४. उपरि,
उ०-१०।४५।५, ६९।१, वे०-१।११२।१८ (उपरिभागम्), सा०- १।१६४।२२
५. श्रेष्ठः,
वे०-४।५।८ (उत्तमम्), सा०-१।१२३।४ (तत्तच्छ्रेष्ठभागम्), १।१२७।१०, ४।५।८, ७।४४।४ (प्रमुखः), १०।८३।७
६. प्रथमः,
उ०-१०।७५।२, १८,७, स्क०सा०मु०- १।३१।५, वे०- ७।३३।१४, वे०सा०- ८।१००।२, १०।६९।१, १०७।५,९, सा०-३।५।५, १०।१८।७ (सर्वेषां प्रथमतः एव)
७. उदयकालः,
सा०-५।१।४, ५, १०।१।१ (उषसामु-

पर्युषः काले), ४५।५ (प्रभातकाले), ११०।४ (पूर्वाह्णे)

८. प्रातः सवनम् ,

सा० - ७।६८।९

९. ग्रहेष्वाद्यमैन्द्रवायवाख्यं ग्रहम्,

सा० - ७।९१।५

१०. पुरोहितो ब्रह्मा सन्,

सा० - ७।३३।१४

११. यमसमीपम्,

सा० - १०।१३५।६

१२. अन्तं समाप्तिम्,

स्क० - ६।६५।२

अग्रजा

अग्रे जातम् ,

वे०सा० - ९।५।९

अग्रणी

१. सेनाग्रम् ,

वे० - २।११।१४

२. अग्रे नीयमानं सोमम् ,

सा० - २।११।१४

अग्रतस्

सर्वसृष्टेः पूर्वम् ,

सा० - १०।९०।७

अग्राद्वन्

अग्राणि श्रेष्ठानि हवींषि, तेषामत्तारौ,

स्क० - ६।६९।६, वे०- ६।६९।६ (सोमस्याभिषुतस्य यज्ञमुखे अत्तारौ), सा०-६।६९।६ (सोमाग्रस्य शुक्रस्य अत्तारौ)

अग्रेग

अग्रे गन्ता,

सा० - ९।८६।४५

अग्रेपा

१. प्रथमपाता,

वे०-४।३४।१० (अग्रे पातारः), सा०- ४।३४।७, ३४।१०

२. स्वकाले पिबन् ,

वे० ४।३४।७

अग्रयावन्

अग्रगन्ता,

उ०-१०।७०।२ (सर्वार्थेष्वग्रतो याता गन्ता), वे०- १०।७०।२, सा०-१०।७०।२ (अग्रे गन्ता)

अग्रिमा

अत्यन्तं श्रेष्ठा अस्मदीया स्तुतिः,

सा०मु० - ५।४४।९

अग्रिय, या

१. अग्रे भवः,

सा०-४।३७।४ (अग्रे भवम् तृतीय सवनम्), ७।९२।२ (अग्रभवं प्रथम-भागम्), १०।१२०।८ (अग्रे भवः। ऋषीणां प्रमुखः श्रेष्ठः इत्यर्थः)

२. अग्रत्वसंपादिनः,

सा० - ४।३४।३

३. अग्रार्हः,

सा०- ४।३४।३ (अग्रार्हा), ९।८६।१२ (अग्रार्हः श्रेष्ठः)

४. मुख्यः,

वे०- ४।३७।४, ७।९२।२, ८।२६।२५, १०।१२०।८, वे०सा०- ९।७।२,३, ६२।२५,२६, ७१।४, सा०- ८।२६।२५ (देवानां मध्ये मुख्योऽग्रतो गन्तासि)

५. प्रधानभूतः,

स्क० - १।१६।७

६. श्रेष्ठः,

सा०मु० - १।१६।७

७. प्रथमपायिनः,
वे० – ४।३४।३
८. अग्रयाग्रे,
सा० – १०।९५।२
९. पूर्वापूर्वा,
वे० – १०।९५।२

अग्रभण

१. ग्रहीतुमपि यस्मिन्न शक्यते सोऽग्रभणः लताशाखादिरहितः,
स्क० – १।११६।५
२. वृक्षशाखादिग्रहणवर्जितः,
वे० – १।११६।५
३. अग्रहणे। हस्तेन ग्राह्यं शाखादिकमपि यत्र नास्ति तस्मिन् इत्यर्थः,
सा०मु० – १।११६।५

अग्रु

१. गमनशीलः,
वे० – ५।४४।७, ७।९६।४
२. उपगन्ता,
सा० – ७।९६।४
३. अग्रगामी,
सा०मु० – ५।४४।७

अग्रू

१. अङ्गुलिः,
वे०–९।६६।९, सा०–१।१४०।८ (अङ्गुलिनामैतत्। अङ्गुलय इव अकुटिलाः), ९।१।८, ६६।९ (अङ्गुलिनामैतत्। अजन्ति प्रक्षिपन्ति हवींष्यग्नाविति)
२. चलनस्वभावा,
वे०–१।१४०।८, ७।२।५ (जिगमिषवः), सा०– ३।२९।१३ (कर्मकरणार्थमग्रमङ्गन्तीति अग्रुवोऽङ्गुलयः), ९।६६।९ (अगेर्गत्यर्थस्य। कर्मकरणार्थमितस्ततो गच्छन्तीति। अग्रुवोऽङ्गुलयोऽस्मदीयाः)
३. अग्रतः स्थिता,
सा० – १।१४०।८
४. नदीः,
वे० – ४।१९।७, सा०–४।१९।७ (अग्रुव इति नदीनामैतत्। अग्रगामिनीः नदीः)
५. अग्रू नाम काचित्,
सा०–४।१९।९, ३०।१६ (एतन्नाम्न्याः)

अघ

१. पापः,
उ०वे०सा० – १०।३५।३, स्क० – १। ४२। २, ९७।१ (इन्द्रातिक्रमजं पापम्), ६।४८।१६, ५९।८, ६२।८, वे०– १। १२३।५, वे०सा० – ८।१८।१४, ४७। १,२,५, वे०सा०मु०– १।९७।१, सा०– २।४१।११, ८।८३।५
२. आहन्ता,
वे०– १।१८९।५, ७।८३।५ (आहन्तॄणि प्रहरणानि), वे०सा०– ६।४८।१६, ७। १९।७, ८।७९।४, वे०सा०मु० – १। ४२।२, सा०–६।५९।८, ६२।८, ७। ८३।५ (आहन्तॄण्यायुधानि)
३. हिंसकः,
सा० – १।१८९।५
४. दुःखम्,
सा० – १।१२३।५ (कश्चिदुःखस्य तदुत्पादकपापस्य वा), ८।४७।२, १०। १०२।१० (दुःखानि शत्रुरूपाणि)
५. उपद्रवः,
वे० – १०।१०२।१०

अघा

मघा,
वे० – १०।८५।१३, सा० –१०।५।१३ (मघासु, मघानक्षत्रेषु)

अघशंस

१. पापाभिलाषः,
वे०-२।४२।३, ४।४।३ (अघायुः), ६। २८।७, सा०-४।४।३ (अघं पापात्मकं शंसनमभिलाषः)

२. पापशंसकः,
स्क०- ६।७१।३ (पापानां शंसिता), वे०- ७।१०४।२ (अघस्य शंसितारम्), सा०- १।१२९।६ (अघानां पापानां हिंसादीनां शंसिता स्तेनः), २।४२।३ (अनर्थकानां शंसकः), ६।७१।३ (अनर्थमाशंसमानः), ७५।१० (पापशंसः शत्रुः), ७।१०४।२ (अघस्यानर्थस्य शंसितारः शत्रुः), ८। ६०।८ (पापशंसकाय), १०।१८२।१ (अनर्थमाशंसमानः), १८५।२, सा०मु०- ६।८।५ (अघस्यानर्थस्य शंसितारः शत्रुः)

३. अघं पापात्मकं ... कीर्तनं यस्य सोऽघशंसः,
सा० - ४।४।३

४. पापः,
वे० - १।१२९।६

५. व्याघ्रादिः शत्रुः,
सा० - ६।२८।७

६. राक्षसः ,
सा०- ७।१०४।२ (हन्तारं राक्षसं), १०। ८७।२० (पापशंसकं राक्षसम्)

७. स्तेनः,
स्क०वे०- ६।७५।१०, ६।७१।३, वे०- ६।८।५, ८।६०।८

अघशंसहन्, हा

१. रक्षोहा,
वे०- ९।२४।७ (रक्षसां हन्ता), ९।६१। १९, सा०-९।२४।७ (अघं पापं शंसन्तीत्यघशंसा असुराः, तेषां हन्ता), ६१।१९ (रक्षसां हन्ता)

२. अघान् शंसन्ति इत्यघशंसाः, तेषां हन्ता,
सा० - ९।२८।६

अघाय

पापमिच्छति,
वे० - १।१३१।७, सा०-१।१३१।७ (अघं पापं दुःखं वा इच्छति)

अघायत्

१. पापमिच्छन् ,
उ०- (पापं कर्तुमिच्छतः)- १०।६३।१२, स्क० वे० - १।९१।८, वे० - ४।२।६, ६।१६।३० (अघमिच्छतः), ७।१५।१५ (अघमिच्छतः), १०।६३।१२, सा०- ४।२।६ (अघं पापमिच्छतः), ६।१६।३० (अघमनर्थकमस्माकमिच्छतः शत्रोः), ७।१५।१५ (पापमिच्छतः शत्रोः), १०।६३।१२ (पापमिच्छतः शत्रोः), सा०मु०-१।९१।८ (अघं पापम्। तद्धेतुकं दुःखमस्माकं कर्तुमिच्छतः)

अघायु

१. पापकामः,
उ०- १०।४२।११ (अघं पापं वधादि-लक्षणमस्माकं कर्तुं कामयमानादित्यर्थः), स्क० - १।२७।३, वे० - १।२७।३ (पापमिच्छतः), १२०।७ (अघमिच्छतः), १४७।४ (अघमिच्छन्), सा०-१।१४७।४ (मारणादिरूपपापेच्छवान्), सा०मु०- १।२७।३ (अघं पापमनिष्टं कर्तुमिच्छतः), १२०।७ (अघं पापफलमस्माकमिच्छतः)

२. पापकाच्छत्रोः,
सा० - १०।४२।११

अघाश्व

१. अघाश्वो नाम राजा ,
स्क०- १।११६।६, वे०-१।११६।६

(अघाश्वो नाम कश्चित्)

२. अहन्तव्याश्वाय पेदुनाम्ने राजर्षये,

सा०मु० - १।११६।६

अघोरचक्षुस्

क्रोधादभयंकरचक्षुः,

सा० - १०।८५।४४

अघ्नत्

अहिंसकः,

वे० - ५।५१।१५, ७।२०।८ (अहन्ता), ८।२५।१२ (अहिंसतः), सा०-५। ५१। १५ (चिरकालविलम्बकोपेन अहिंसता), ७।२०।८ (अहिंसतः), ८।२५।१२ (स्तोतृणां यष्टृणां चाहिंसकाय), मु०-५।५१।१५ (अहिंसतः)

अघ्न, घ्न्या

१. गौः,

वे०- १।१६४।२७ (अहन्तव्या गौः), ७।६८।८, ८।६९।२, ९।१।९, ८०।२, ९३।३, १०।६०।११, १०२।७, वे०सा०- ७।८७।४, ८।७५।८, १०।८७।१६, वे०सा०मु० - ५।८३।८, सा०- १।१६४।२७ (अहननीया गौः), १६४।४०, (गोनामैतत्। अहननीये गौः) ७।६८।९ (अहन्तव्या गौः), ८।६९।२ (अहन्तव्या गौः), ९।८०।२ (अहननीया गौः), ९३।३ (अहन्तव्या गौः), १०। ६०।११ (अहननीया गौः), १०२।७ (अहन्तव्या गौः)

२. अहन्तव्यः,

स्क०-१।३०।१९ (अहन्तव्यात् प्रजापतिरादित्यो वा), ३७।५ (अहन्तव्यं शत्रुभिः हन्तुमशक्यम्), वे०-९।८०।२ (अहन्तव्याः ब्राह्मणाः), वे०सा०मु०-१।३७।५, सा०-९।१।९, सा०मु०-१।३०।१९ (हन्तुं विनाशयितुमशक्यस्य दृढस्य पर्वतस्य)

३. भूमिः,

उ० - १०।४६।३ (यास्क 'अघ्न्या' (२। ११) इति गोनाम। तद्वत् कामनादोग्धृत्वात् अत्र पृथिव्युच्यते), सा०- १०।४६।३

४. पशुः,

वे० - १०।४६।३

५. अदुष्टकारिण्यौ विगतपापे विपाट्छुतुद्र्यौ,

वे० - ३।३३।१३

६. अघ्न्ये न केनापि तिरस्करणीये विपाट्छुतुद्र्यौ,

सा० - ३।३३।१३

अङ्क

१. अङ्गानां लक्षणानि,

वे० - १।१६२।१३

२. हृदयाद्यवयवाङ्कनसाधना वेतसशाखाः,

सा० - १।१६२।१३

अङ्किन्

अङ्कुशी,

सा० - ३।४५।४

अङ्कस्

कुटिलानि,

वे०सा० - ४।४०।४

अङ्कस

१. उभयपार्श्वस्थं कक्ष्यादिकम्,

वे० - ४।४०।३

२. पादाधारम्,

सा० - ४।४०।३

३. उरःप्रदेशम्,

सा० - ४।४०।३

अङ्कुश

१. अङ्कुशवच्छत्रून्नियच्छतीति बाहुः अङ्कुशः,
वे० - ८।१७।१०
२. सृणिराकर्षणसाधनमायुधम्,
सा० - ८।१७।१०

अङ्कुशिन्

अङ्कुशवन्तः,
उ०सा० - १०।३४।७, वे०-१०।३४।७ (तीक्ष्णाग्रः अङ्कुशः)

अङ्कूयत्

अङ्कनं नाम अञ्चनमिच्छन्तः,
वे० - ६।१५।१७, सा०- ६।१५।१७ (कुत्सितमञ्चनं गमनम् अङ्कुः। तदात्मन इच्छन्तं देवेभ्यो निर्गत्येतस्ततः पलायमानम्)

अङ्ग (आद्युदात्त)

१. अवयवः,
स्क०-१।८९।८ (दृढैश्चात्मावयवैः), सा०-१।१४१।८ (ज्वालादिरूपैः अवयवैः), २।३३।९ (अवयवैर्युक्तः), १०।१०३।१२ (अवयवाञ्शिर आदिकान्)
२. तेजः,
सा० - ३।१।५, १०।४।६

अङ्गय

१. अङ्गः,
वे० - १।१९१।७, सा०- १।१९१।७ (अङ्गा अङ्गेन शरीरेण हन्तारो लूतिकादयः)

अङ्गार

अक्षलक्षणाः,
उ०-१०।३४।९, सा०- १०।३४।९ (अङ्गारसदृशा अक्षाः)

अङ्गिरस

१. एतत्संज्ञा ऋषयः,
उ०- १०।१४।४ (अङ्गिरोनामभिः), स्क०-१।१००।४ (ऋषिभिः), स्क० वे०- १।५१।३ (अङ्गिरसामर्थाय), वे०-१०।१४।४ (अङ्गिरोभिः), वे०सा०मु०-१।१२१।१ (ऋषीणाम्), सा० - (ऋषिभिः) ४।१६।८, ८।१४।८ (ऋषिभ्यः), १०।९२।१५ (अङ्गिराः नामर्षिः), १६९।२ (ऋषयः), सा०मु०-१।५१।३ (आङ्गिरसामृषीणामर्थाय), ६२।३ (ऋषीणाम्), ६२।५ (ऋषिभिः), ७१।२, १०७।२, १२१।३ (ऋषीणां स्तोतॄणाम्), ५।११।६ (ऋषयः अङ्गिरसां प्रकृतिभूतः)
२. अङ्गिरसां गोत्रजः,
स्क०- १।१२१।१ (अङ्गिरसोऽपत्यभूतानाम्), वे०-२।२३।१८ (अङ्गिरसां कुले जातः), सा०-१।१२७।२ (अङ्गिरोगोत्रोत्पन्नानां मध्ये), २।२३।१८ (आङ्गिरसः), ५।८।४ (अङ्गिरसः पुत्रः), १०।६७।२ (अङ्गिरसः पुत्राः। अङ्गिरसो ह्यङ्गारेभ्यो जाताः) सा०मु०-१।११२।१८
३. अग्निः,
स्क०-१।७४।५ (अग्निर्ह्यङ्गिरसः कारणभूतः), वे०-४।३।१५, सा०- १।१।६, १३९।९ (अङ्गारः, तद्वत्तेस्वी इत्यर्थः ... यद्वा अङ्गारा एवाङ्गिरसोऽभवन् 'येऽङ्गारा आसंस्तेऽङ्गिरसोऽभवन्'- ऐ०ब्रा० - ३।३४ - इति श्रुतेः। 'अङ्गिरा अङ्गारा अङ्कना अञ्चनाः' - निरु० - ३।१७ - इति निरुक्तम्), ४।३।१५ (अङ्गति हवींषि प्राप्नोतीत्यङ्गिरा अग्निः। यद्वा 'येऽङ्गारा आसंस्तेऽङ्गिरसोऽभवन्' - ऐ०ब्रा० - ३।३४ - इति ब्राह्मणम्। तेषामङ्गिरसां कारणत्वादग्नेरङ्गिरस्त्वम्), सा०- ५।१०।७ (कार्यकारणयोरभेदोपचारादङ्गिरसां प्रकृतिभूतोऽप्यग्नि अङ्गिरा इत्युच्यते),

६।२।१० (अङ्गनादिगुणयुक्त अङ्गाररूप वाग्ने), सा०मु०-१।७४,५ (अङ्गनादि-गुणयुक्ताग्ने),५।२१।१ (अङ्गारात्माकग्ने), मु०- ६।२।१० (अङ्गनादिगुणयुक्तः)

४. गन्ता ,

वे० - १।११२।१८ (गमनशीलौ), सा०- १।१००।४ (अङ्गन्ति गच्छन्तीति आङ्गिरसो गन्तारः), ५।८।४ (सर्वत्र गन्तः), ८।६०।२ (सर्वत्र संगतः), ७४।११ (सर्वत्र गन्तः), ८४।४ (अङ्गाति सर्वत्र गच्छतीत्यङ्गिराः), सा०मु०- १।३१।१७ (अङ्गनशील हविरादाय तत्र तत्र गमन-शील)

५. अङ्गिरसां वरिष्ठः,

सा०- ३।३१।७ (सप्तानामङ्गिरसां मध्ये वरिष्ठोऽङ्गिरा ऋषिः),८।६०।२ (अङ्गिरसां मध्ये एकः), ७४।११ (अङ्गिरसां मध्य एकः), ८४।४

६. पितृविशेषः ,

सा० - १।३१।१, १०।१४।३,४

७. मेघातिथिप्रभृतयः,

सा० - ४।३।११

८. अङ्गिरः सम्बद्धावश्विनौ ,

स्क०-१।११२।१८, वे०सा०- २।२०।५ (अङ्गिरसां सम्बन्धीनि)

आङ्गिरस

१. अङ्गिरसः पुत्रः,

उ०सा०- १०।६८।२ (अङ्गिरसः पुत्रः), स्क०-६।७३।१ (अङ्गिरसः पुत्रः। प्रजापतेर्हि पुत्रोऽङ्गिरास्तस्य पुत्रो बृहस्पतिः, सा० - १०।४७।६ (अङ्गिरोगोत्रोत्पन्नः), १४९।५

२. अङ्गिरोभिः स्तोतृभिः सबान्धवः,

सा० - १०।१६४।४

३. अग्निः,

वे० - १०।१६४।४

अङ्गिरस्तम

१. अङ्गिरसां वरिष्ठः,

वे०-१।३१।२, १००।४, ७।७९।३, ८।२३।१०, ४४।८, ९।१०७।६ (अङ्गिरसां वरिष्ठो नेता), वे०सा०- १।७५।२, सा०-८।४४।८ (अङ्गिरसां श्रेष्ठः), ४३।१८ (अङ्गिरसां श्रेष्ठः), ९।१०७।६ (अङ्गिरसां वरिष्ठः पितृणां नेता), १०।६२।६

२. अङ्गिरसः ऋषेरतिशयेनोत्पत्ति-कारणम्,

स्क०-१।३१।२, ७५।२ (अङ्गिरस ऋषेरतिशयेन कारणभूत)

३. शरीरस्थितिहेतोः अशितपीतरस-स्यातिशयेन कर्ता,

स्क०- १।३१।२, ७२।१ (शरीरस्थिति-हेतोः अशितपीतस्य रसस्यातिशयेन कर्तः)

४. गन्तृतमः,

सा० - १।१००।४ (अङ्गन्ति गच्छन्तीति अङ्गिरसो गन्तारः),७।७५।१ (अङ्गेर्गत्य-र्थादङ्गिराः गन्तृतमा), ७९।३ (गन्तृतमा), मु०- १।१००।४ (अतिशयेन गन्ता)

५. अतिशयेनाङ्गनादिगुणयुक्तः,

सा०- ८।२३।१० (अङ्गिरसां विशिष्ट-मग्निम्), सा०मु० - १।७५।२

६. अतिशयेनाङ्गिरसां स्तुत्यतया सम्बन्धी,

स्क०- १।१००।४

७. उषा,

ऋ० ७।७९।३

अङ्गिरस्वत्

१. अङ्गिरस इव,

स्क०- ६।४९।११ (यथेन्द्रसखा अङ्गिरसो ऋषयस्तद्वत्), वे०सा०-२।१७।१, ३। ३१।१९

२. अङ्गिरसोऽपि,

वे० - ६।४९।११

३. अङ्गिरोभिर्युक्तः,

वे०सा० - २।११।२० (अङ्गिरोभिः सहितः), ६।१७।६, सा०- ८।३५।१४

४. अङ्गिरसो गमनशीला रश्मयः। ते यथा शीघ्रं नभस्तलं व्याप्नुवन्ति तद्वत्,

सा० - ६।४९।११

५. ऋषयः एवाङ्गिरसः। तद्वच्छीघ्रगामिनः,

सा० - ६।४९।११

अङ्ग (अन्तोदात्त पद)

१. क्षिप्रम् ,

उ०- १०।६०।१३, ७९।४, स्क०- १।१। ६ (क्षिप्रार्थो वा सामर्थ्यात्), १।८४।१९, ११८।३, स्क०वे०सा०- ५०।१०, स्क० सा०-६।७२।५, स्क०सा० मु०-१।८४। ७, ८,९, वे०- १।१।६, ३।३३।११, ५८।३, ५।३।११, ६।४४।१०, ८।७।२, १४६।४ (क्षिप्रं...शीघ्रम्), वे०सा०- ७।९१।१, ८।९६।१०, ९।१०८।३, सा०-७।२०।९, ८।९६।११, १२, १०।८६।७

२. सम्बोधनम्,

उ०-१०।४२।३ (अङ्गेति सामान्याह्वानम्), वे०-१।८४।७ (अङ्ग इति कश्चन सम्बोधयति), सा०- ३।५८।३, ५।३।११, ६।४४।१०, ५२।३, ८।६।२६ (अङ्गेत्यभिमुखीकरणे), ८।७।२, १०।४२।३, १०।६४।१३ (अङ्ग इति सम्बुद्धौ), ७९।४, १३१।२, १४६।४, १४९।३ (हे)

३. अङ्ग इत्यामन्त्रणे,

सा० - ३।३३।११

४. अङ्ग इति तु निपातः पदपूरणः,

स्क०-१।१।६ (अङ्ग इति निपातेऽत्र पादपूरणः), ८४।७, वे०-७।५६।२ (एव), वे०सा०- १०।४।४ (अङ्गेति निपात एवार्थे), सा०- ६।५२।३ (किमङ्ग इति प्रसिद्धिद्योतकौ निपातौ), ८।२४।१२,१५ (प्रसिद्धौ), १०।१२९।७ (प्रसिद्धौ)

अचक्र, क्रा

१. चङ्क्रमणवर्जितः,

स्क०-१।१२१।११ (क्रमेरिदं रूपम्। अचङ्क्रमणे स्थिरे), वे०-१।१२१।११ (चङ्क्रमणवर्जिते)

२. अचङ्क्रमणे सर्वत्र व्याप्य वर्तमाने,

उ०- १०।२७।१९ (अचक्रया स्वधया अन्नेन वर्तमानम्), सा०मु०-१।१२१।११

३. चक्ररहितः,

वे०- ४।२६।४, १०।२७।१९, सा०- ४।२६।४ (चक्रवर्जितया), १०।२७।१९ (चक्रवर्जितया), १३५।३

४. चक्रवर्जितया रथहीनया,

सा० - १०।२७।१९

५. चक्ररहितया रथिवर्जितया ,

वे० १०।२७।१९

६. अचक्रैः रथैः,

सा०मु० - ५।४२।१०

७. अङ्गम्,

सा०-५।४२।१० (चक्रशब्देनाङ्गान्युच्यन्ते। पुनः पुनरङ्गरहितैः कैवलैरेव प्रधानैरोहते प्रापयति। साङ्गं हि कर्म देवानभ्येति)

अचरत्

अचलः,
वे०-१।१८५।२ (स्वस्थाने स्थिते), ३।५६।२ (अचलः), सा० - ३।५६।२ (स्थायी अविचले)

अचरम

१. अनिकृष्टाः। सर्वसमा सहैवोत्पन्नाश्चेत्यर्थः,
सा०मु० - ५।५८।५
२. चरमः पश्चिमः स येषां न विद्यते ते अचरमाः, पश्चिमाभावादेव अग्रिमस्याप्यभावः, अनग्रिमपश्चिमा इत्यर्थः,
स्क०- ५।५८।५

अचिकित्वस्

अजानन्नहम् ,
वे०-१।१६४।६, सा०-१।१६४।६ (देवतातत्त्वमजानन्नहम्)

अचित्

१. अस्निग्धान् ,
वे०- ९।९७।५४
२. अज्ञानम् ,
वे० - ७।६१।५ (अप्रज्ञाते), ८६।७ (अज्ञान्), वे०सा० -१०।८७।१२ सा०-७।८६।७ (अजानतोऽस्मान्)
२. अग्निचयनमकुर्वतो नास्तिकांश्च,
सा०- ९।९७।५४

अचित्त

१. चित्तरहितं प्रमुषितचित्तम्,
स्क० - ६।४६।१२
२. चित्तरहितं, अचिन्तितोपनम। झटित्युपस्थितम् ,
वे० - ६।४६।१२
३. चित्तवर्जितम् ,
वे० - १।१५२।५
४. चित्ताविषयम् ,
सा० - १।१५२।५।
५. सत्कर्मण्यनासक्तमनस्कान् पुरुषान्,
सा० - ३।१८।२
६. अस्मास्वपरक्तचित्तान् ,
वे० - ३।१८।२
७. न विद्यते चित्तं यस्मिन् तदचित्तम्। चितोपलक्षितसर्वेन्द्रियोपसंहारो मरणमिति यावत्। तस्मान्मरणात्,
सा० - ४।३।१
८. अचिन्तितागमनात्,
वे० - ४।३।१
९. शत्रुभिरज्ञातम् ,
सा० - ६।४६।१२

अचित्ति

१. अज्ञानम् ,
वे०-४।२।११ (अज्ञातव्यम्), ५४।३, ७।८९।५, वे०सा०-४।१२।४, सा०-४।२।११ (चित्तिं ज्ञानमचितिमज्ञानम्) ५४।३ (अप्रज्ञया), ७।८९।५ (अचित्याज्ञानेन)
२. मान्यामान्यहेतुः,
वे० - ७।८६।६
३. पापम्,
सा० - ४।२।११ (अनुपादेयत्वेनाचेतनीयं पापम्), ७।८६।६ (अज्ञानमविवेककारणम्। अत ईदृशी दैवक्लृप्तिरेव पुरुषस्य पापप्रवृत्तौ कारणम्)

अचित्र,

१. चित्ररहिते,
वे० - ४।५१।३
२. अचायनीये,
सा० - ४।५१।३

३. ओषधिवनस्पतिभिर्निबिडो देशश्चित्रम्। तद्विलक्षणम् ओषध्यादिभिर्वियुक्तमपि देशम् ,
सा० - ६।४९।११
४. अविचित्रम्। सर्वत्रैकरूपमित्यर्थः। सामर्थ्याद् वृष्टिलक्षणम् उदकम्,
स्क०- ६।४९।११
५. पूजारहितम् अयजमानम्,
वे० - ६।४९।११

अचेतस्,

अज्ञः,
स्क०-१।१२०।२ (ज्ञातुमसमर्थः), वे०-१।१२०।२ (चेतो विवर्जितः), ७।१८।८ (अज्ञानाः), ६०।६ (अज्ञम्), ६०।७ (अज्ञम्), सा०-७।१८।८ (मन्दमतयः), ६०।६ (अप्रज्ञानमनुष्ठानविषयज्ञानरहितम्), ६०।७ (अज्ञानम्), सा०मु०-१।१२०।२ (चेतसा ज्ञानेन रहितः)

अचेतान,

१. अविदुषः,
सा० - ७।४।७
२. अचेतयमानस्य तत्प्रमत्तस्य,
सा० - ७।४।७

अचोदत्

२. ओषधिवनस्पतिवचनोऽभिलषितस्य चोदयित्र्या,
वे० - ५।४४।२
१. अप्रेरयितुः,
सा०मु० - ५।४४।२

अच्छ, अच्छा

१. अभिलक्ष्य,
सा०-२।१९।२,३, ३।३५।१, ३९।१, ५४।५, ६१।५, ४।२०।२ (अभिलक्षीकृत्य), ३८।५, ७।५७।७, ९।६६।११, ९७।८, १०।१।७, ११२।४ सा०मु०- १।२।२, ५।४५।१, ७६।१
२. आभिमुख्येन,
सा०-३।४।३, १९।२, ३३।५, ४।१४।१, २९।४, ३४।१, ३, ६।३०।४, ३२।४, ३७।३, ४१।१, ४७।७, ८।२।२८, ५।३३, १६।१०, २२।४, ९।८१।२, सा०मु०-१।४४।४, १०१।८, १०५।१४, १२९।५, १३०।५, १६७।२, ५।१।१, ४, ४२।१५, ६।६।१,
३. आभिमुख्येन प्राप्तुम्,
सा०- १।१३२।५, १३९।१, १६३।१३, १६५।१३, १४, १७३।११ (आभिमुख्येन समीपे वर्तमानम्) ९।९१।१ (अभिमुखीकृत्य)
४. अभि,
स्क० - १।२।२ (अच्छशब्दोऽभेः स्थाने वर्तते), ४४।४, स्क०वे०सा० - ६।५१।३, वे०-१।१६७।२, १८६।६, ३।३३।५, ३५।१, ३९।१, ५४।५, ४।२९।४, ३४।१,३, ७।१।१८, ९०।१, वे०सा०-८।३३।१३, १०।१४३।५, सा०-३।१।१, ४।१।२, २१।४, २४।८, ६।४४।१५, ७।१८।४, ३४।२०, ८।९२।३, ४८।६, १०।३०।१
५. अभिगच्छन्ति,
वे० - १।१३०।१, ३।४।३, ५।४२।१५, १०।२६।१, ३०।१, वे०सा० - ५।५२।१४, ८।१०२।७, ९।१०८।२, सा०-६।१६।१२, ६७।२, ७।९०।१, ९।६६।१२, १०७।१२ (आभिमुख्येन गच्छन्ति)
६. अभिप्राप्तुम्,
उ०-१०।३०।१ (अभि आप्तुम्), स्क०-६।६७।२ (अच्छशब्दः आप्तुमित्यस्यार्थे), सा०- ४।४४।५, १०।३०।५,

सा०मु०- १।१३०।१, १६५।४, १८६।६, ५।५२।१५, ७४।३

७. गुणग्रहणद्वारेण पूषणमभिप्राप्तुम्,

उ०सा० - १०।२६।१

८. प्राप्तुम्,

सा० - ४।४५।७

९. आप्तुम्,

उ० - १०।४५।९ (आप्तुं ... प्राप्तुम्), स्क० - १।१०१।८ (आप्तुम्। अनुभवितुमित्यर्थः), १०५।१४ (आप्तुम्। यष्टुमित्यर्थः), ६।३०।४, ३२।४, ४१।१, ४४।१५, ६७।२ (अच्छशब्दः आप्तुमित्यस्यार्थे (तु० या०- ५।२८) उपाप्तुम्। हविर्भक्षयितुं बर्हिषि च निषत्तुमित्यर्थः) वे० - १।१६३।१३

१०. प्रति,

वे०-१।४४।४, १०५।१४, १३०।५, १३९।१, १६५।४, १३,१४, २।१९।२, ३, ३।१५।५, १९।२, ६१।५, ४।१।२, १४।१, २०।२, २१।४, ३८।५, ४५।७, ५।१।१, ४५।९, ५२।१५, ७६।१ ६।६।१, ३०।४, ३२।४, ४१।१, ९।५७।१, ९७।८, वे०सा०- ८।९३।२३, १०३।२,९, ९।६४।१६, ६८।१, ९५।३, ९७।२५, १०।३२।५, ४५।९

११. आगच्छतम्,

सा० - २।३९।१

१२. प्रत्यागच्छतम्,

वे०- २।३९।१

१३. गच्छ,

सा०- ७।१।१८

अच्छ √द्रु

अभिगच्छताम्,

वे०सा० - ३।१४।३

अच्छ √धन्व्

१. अभिगच्छति,

वे० - ३।५३।४

२. आभिमुख्येन गच्छेत्,

सा० - ३।५३।४

अच्छ √नक्ष्

१. अभिगच्छति,

वे० - ६।२२।५

२. अभिमुखं गच्छति,

सा० - ६।२२।५

अच्छ, अच्छा √नी

१. आभिमुख्येन नयति,

स्क०-१।४०।३ (आप्तुं ... यज्ञमाप्नुवन्तु), वे०- १।४०।३ (अभिनयन्तु), ४।१।१० (नयतु), सा०-१।४०।३ (आभिमुख्येन प्रैतु), ४।१।१० (आभिमुख्येन प्रापयतु), मु०- १।४०।३ (आभिमुख्येन नयन्तु), ५।५५।१० (अभिमुखं नयत)

२. अभिलक्ष्य प्रापयत,

सा० - ५।५५।१०

३. प्रति नयति,

वे०-२।३९।५, ५।५५।१० (प्रति अभिनयत), वे०सा०- ९।८७।१, सा०- ५।५५।१० (प्रति प्रापयत)

अच्छ, अच्छा √या

१. अभिगच्छति,

वे०- १।३१।१७, १२३।४, वे०सा०- ९।९६।२

२. आभिमुख्येन गच्छति,

सा०-१।३१।१७, १२३।४, ३।३३।२, ३३।३ (आभिमुख्येन प्राप्तोऽभूवम्)

३. अभिलक्ष्य याहि,

सा० - २।१८।७

४. प्रति आगच्छ,
वे० - २।१८।७
५. आगच्छ,
वे०-९।९७।६, सा०-९।९७।६ (अस्माकं धनार्थमागच्छ)

अच्छा √गम्
१. अभिगच्छति,
स्क०- १।४१।६ (अभिगच्छति प्राप्नोति), वे०- ५।४३।८, वे०सा० - ४।५।१३
२. अभिमुखं गच्छतु,
सा० - ५।४३।८
३. अभिलक्ष्य गच्छतम्,
सा० - १।१५१।७
४. गच्छथः ... प्रति,
वे० - १।१५१।७
५. आभिमुख्येन प्राप्नोति,
सा०मु० - १।४१।६

अच्छा √गा
१. आभिमुख्येन गच्छति,
वे०- ३।२२।३, सा०- २।२४।१२ (आभिमुख्येन गच्छतम्। आगच्छतमिति), ३।३१।६ (शब्दाभिमुख्येन जगाम), ४२।३, सा०मु०- १।१०४।५ (आभि-मुख्येन गता प्राप्ता)
२. अभि गच्छति,
उ०वे०सा०-१०।४७।६, वे०-१।१०४।५, ३।३१।६।, ५।२५।१, १०।६।४
३. अभिलक्ष्य धूमद्वारा प्राप्नोषि,
सा० - ३।२२।३
४. आप्तुं ...गता प्राप्ता,
उ०सा० - १०।६।४। (आप्तुं गच्छति), स्क० - १।१०४।५
५. अभिगतवानसि,
वे० - ४।१६।९

६. प्रति आगच्छतम्,
वे०-२।२४।१२, ३।४२।३ (प्रति गच्छन्ति)
७. अभिगायत,
सा० - ५।२५।१, मु०-५।२५।१ (अभिप्रगायत)

अच्छा √चर्
१. स्वयमेव आचरन्ति,
वे० - ३।५७।३
२. आभिमुख्येन प्राप्नुवन्ति,
सा० - ३।५७।३
३. अभिप्राप्तुं गच्छन्ति,
सा० - ८।६०।२
४. प्रति चरामः,
वे०सा० - ९।१।५

अच्छा√दी
१. अभिलक्ष्य तदर्थमग्निं दीपयामि,
वे० - ३।५५।३
२. अभिलक्ष्याहं दीपयामि,
सा० - ३।५५।३

अच्छा √नश्
१. अभिव्याप्नुहि,
वे० - ५।२४।२
२. आभिमुख्येन अस्मान् व्याप्नुहि,
सा०मु० - ५।२४।२

अच्छा √नू
१. प्राप्तुं स्तुवन्तः,
सा०मु० - १।६।६
२. आप्तुं ... स्तुवन्ति,
स्क० - १।६।६
३. अभिष्टुवन्ति,
उ०वे०सा०- १०।४३।१, वे०-१।६।६

अच्छा √वच्

१. आभिमुख्येन ब्रवीमि,

सा० १।१२२।५

२. अभिब्रवीति,

वे०– ४।१।१९ (अभिप्रब्रवाणि), ५।४१। १४, ७।९३।७, ८।७५।२, सा०– ७।९३।७ (अभिब्रूयाः। अयमस्मदीयो रक्षणीय इति कथय), सा०–८।७५।२ (अभिब्रूयाः। सम्यगनुष्ठितवन्त इति)

३. अभिप्राप्तुं ब्रवीमि,

सा०मु० – ५।४१।१४

४. भवदर्थं कीर्तयामि,

वे०–१।१२२।५, सा०– १।१२२।५ (यद्वा आभिमुख्यगमनेन स्तौमि)

५. आभिमुख्येन प्राप्तुं मतिरेवा-स्मदीयोच्यते,

सा० – १।१४२।४

६. अच्छ उच्यते,

वे० – १।१४२।४

७. अभिलक्षीकृत्य विशेषेण वच्मि स्तौमि,

सा० – ४।२०।५

८. आभिमुख्येन स्तौमि,

सा०– ३।५७।४, ७।७२।३ (अभिमुखं स्तौमि)

९. अभिलक्ष्य स्तवानि,

सा० – ४।१।१९

१०. प्रति...विविधं वदामि,

वे० – ४।२०।५

११. अभ्युच्चरति,

वे० – ३।५७।४

१२. आभिमुख्येन गच्छसि,

वे० – ३।२२।३

१३. अनुक्रमेण समवेतान्करोषि। समवेता भवतेत्युक्तवान् असीत्यर्थः,

सा० – ३।२२।३

अच्छोक्ति

१. अभिमुखोक्तिभिः,

वे० – १।६१।३

२. स्वच्छैर्वचोभिः,

सा०मु० – १।६१।३

३. आभिमुख्यकरैर्निर्मलवेदवाक्यैः रचिताः,

सा० – १।१८४।२

४. अभिमुखवचनैः,

वे० – १।१८४।२

५. अभिष्टुतिभिः,

वे०सा० – ८।१०३।१३

६. आभिमुख्येन वचने निमित्ते सति,

सा०मु० – ५।४१।१६

७. अभिगन्त्र्युक्तिः स्तुतिर्यस्य तादृशे मयि,

सा०मु० – ५।४१।१६

८. स्तोत्रनिमित्ते सति,

सा०मु० – ५।४१।१६

अच्छा √वद्

१. अपि ...आभिमुख्येन... अभि-वदामः,

सा० – ८।२१।६

२. आभिमुख्येन प्रियं ब्रूहि,

सा० – १०।१४१।१

३. अभिवद,

वे० – ५।८३।१, १०।१४१।१

४. अभिष्टुमः,

वे०सा० – १०।८८।१४

५. अभिप्राप्य प्रार्थय,

सा०मु० – ५।८३।१

६. अपि ... वदामः,
वे०- ८।२१।६

अच्छा √वृत्

१. आवर्तयामः,
वे० - १।१८६।१०
२. आभिमुख्येन अभिवर्तयेयम्,
सा० - १।१८६।१०

अच्छा √सृ

१. अभिसरति,
वे०-९।९२।२, ११०।४ (सरसि...अभि)
२. अभिलक्ष्य ... गच्छसि,
सा० - ९।११०।४
३. अभितः सरति,
सा० - ९।९२।२

अच्छा /ह्वे

आभिमुख्येन हूतः,
वे०सा० - ४।१५।७

अच्छा /इ

१. प्रतिगच्छति,
वे० - ३।२९।९, ५।४५।५, ७।३।३ (प्रति एति)
२. अभिगच्छति,
वे०- ५।४७।६, ८।७१।१०, १०।३०।२, वे०सा०- ७।३६।९, सा०- ७।३।३, १०।३, ९।१०६।१
३. अभिमुखं गच्छति,
सा०- ८।७१।१०, सा० मु० - ५।४५।५, ४७।६ (अस्मदभिमुखं गच्छन्ति प्रसरन्ति)
४. आभिमुख्येन गच्छति,
सा० - २।३६।६ (आभिमुख्येन गच्छति प्राप्नोति), ८।२३।१०, १०।३०।२
५. अग्न्याभिमुखेन प्राप्नुत,
सा० - ३।२९।९
६. प्राप्तुं गच्छति,
उ० - १०।३०।२ (आप्तुं ग्रहीतुं गच्छत),
सा० - १०।३०।६

अच्छिद्रोति

अविच्छिन्नरक्षणः,
वे०सा० - १।१४५।३

अच्छिद्रोध्नी

१. विच्छिन्नोधस्का न भवति सर्वदा दोहनात् या,
वे०सा० - १०।१३३।७
२. निबिडोधस्का,
सा० - १०।१३३।७

अच्छिन्नपत्रा

१. छिन्नं श्रान्तम्। पतत्यनेनेति पत्रं वाहनम्। अश्रान्तवाहनाः,
स्क० - १।२२।११
२. अच्छिन्नपतनाः,
वे० - १।२२।११
३. अच्छिन्नपक्षाः। न हि पक्षिरूपाणां देवपत्नीनां पक्षाः केनचित् छिद्यन्ते,
सा०मु० - १।२२।११

अच्युत

१. च्यावयितुमशक्यः,
सा०मु० - १।८५।४, ६।२।९, ८।२०।५ (च्यावयितुमशक्यानि दृढानि पर्वतादीनि)
२. च्युतिरहितम्,
सा०- ३।३०।४ (च्युतिरहितानि दृढ-मूलान्यपि तव प्रतिपक्षभूतानि रक्षांसि), ६।१५।१ (च्युतिरहितं नित्यमग्निहोत्रादि-साधनभूतं पयः प्रभृतिकं), १०।१७०।३ (च्युतिरहितमविनाशम्)
३. विनाशरहितम्,
सा०मु० - १।५६।५
४. अक्षीणम्,
वे०-१।५६।५, सा०-२।३।३, १०।६१।१०

५. पर्वतादीनि,
वे०-१।८५।४, सा०- ८।९६।४
(च्युतिरहितानामपि पर्वतानाम्)
६. उदकानि,
वे० - १०।६१।१०, सा० - २।२४।२
(अच्युतानि नैश्चल्येन मेघेऽवस्थिता-न्युदकानि)
७. न त्वामन्यतो नयन्ति,
वे० - १०।११५।४
८. शत्रुभिः अच्यवनीयाः प्रभावाः,
सा० - १०।११५।४
९. शत्रुभिरगन्तव्यः,
सा० - १०।१११।३
१०. फलानि,
सा० - १०।६१।१०
११. स्थिराणि,
वे० - १।१६७।८
१२. अच्युतान्यस्त्रावीणि,
सा० - १।१६७।८

अच्युतच्युत्

अच्युतानां च्यावयितः,
वे०-६।१८।५, सा०-२।१२।९ (अच्युतानां क्षयरहितानां पर्वतादीनां च्यावयिता), (अच्युतानामविचलितानां च्यावकः)

√अज्

१. गच्छति,
स्क०-६।६६।७, वे०सा० - १।१७४।३, सा० - ५।६।१०
२. निरगमयः,
वे०सा० - ७।५।६
३. प्रेरयति,
वे०सा० - ६।६६।७, सा० - ९।९१।१
४. व्यज्यसे,
सा०मु० - ६।२।८
५. स्तुवन्ति यच्छन्तीव्याख्यातद्वयज-पदम्,
वे० - ५।६।१०

अज, जा

१. जन्मरहितः,
वे०- १।१६४।४ (अजायमानस्य), सा०-१।६७।३ (न जायते इत्यजः। जन्म-रहितः), २।३१।६ (न जायते इत्यजः), ६।५०।१४
२. ब्रह्मा,
सा० - १।१६४।६ (जननादिरहितस्य चतुर्मुखस्य ब्रह्मणः), १०।८२।६ (जन्म-रहितस्य ब्रह्मणः)
३. अन्तरपुरुषलक्षणः,
उ० - १०।१६।४ (अनुत्पत्तिधर्मकः नित्यः अन्तरपुरुषलक्षणः), सा०-१०।१६।४ (जननरहितः शरीरेन्द्रियादिभागव्यति-रिक्तोऽन्तरपुरुषलक्षणो यः)
४. आदित्यः,
उ० - १०।६५।१३, ६६।११, स्क० - १०।६४।४ (अजातः सततगमनः आदित्यः), वे०सा० - ८।४१।१०
५. सूर्यः,
सा० - १।६७।३ (अजति गच्छति इत्यजः सूर्यः), २।३१।६ (अज एकपात् संज्ञकः सूर्यः)
६. एतन्नामको देवः,
सा० - १०।६४।४, ६५।१३, ६६।११
७. जनपदाः,
वे०सा० - ७।१८।१९
८. छागः,
सा०-२।३९।२, ६।५५।६, १०।१३४।६
९. पूष्णोऽश्वाः,
स्क० - ६।५५।६

१०. प्रेरकः,
वे०सा० - ३।४५।२

अजमायु

१. अजशब्दः,
वे० - ७।१०३।६
२. अजस्य मायुरिव मायुर्यस्य तादृशो भवति,
सा० - ७।१०३।६

आजमीळह

१. अजमीढाः पुरुमीढाश्च,
वे० - ४।४४।६
२. अजमीळहसंबन्धिनः,
सा० - ४।४४।६

अजाश्व

छागवाहनः पूषा,
स्क० - ६।५५।३ (अजा अश्वसदृशाः शीघ्रगामिनो यस्य सोऽजाश्वः), ५५।४, (अजैरश्वसदृशैः शीघ्रगामिभिर्युतम्), ५८।२ (अजाः अश्वाः शीघ्रगमनादिना सादृश्येनाश्वसदृशाः यस्य सः) वे०- १।१३८।४ (यस्याश्वा अजाः), ६।५५।३ (पूष्णोऽजा अश्वा भवन्ति), सा०- १।१३८।४ (पूषन्। 'अजाश्वेति पूषणमाह' - निरु० ४।२५ इति यास्कः, ...अजा एवाश्वस्थानीया यस्य तादृश त्वम्। पूषनामेदम्), ६।५५।३ (अजाश्छागा एवाश्वा अश्वकार्यापन्ना यस्य तादृश पूषन्), ५५।४ (छागवाहनः), ५८।२ (छागवाहनः), ९।६७।१० ('अजाः पूष्णः' इत्युक्त्वादजा एवाश्वा वाहनानि यस्य तथोक्तः)

अजकाव

१. अजशब्दयुक्तम्,
वे० - ७।५०।१
२. अजका नाम रोगविशेषः, तद्वत्,
सा० - ७।५०।१

अजिर

१. क्षिप्रः,
स्क०वे०-६।६४।३, वे०सा०- ४।४३।६
२. क्षिप्रगामी,
सा०-३।९।८ (क्षिप्रं गन्तारं), ६।६४।३, सा०मु० - ५।५६।६ (आशुगमनौ)
३. गमनशीलः,
वे०- ३।९।८, ५।४७।२ (गमनस्वभावाः), ५।५६।६, ७।११।२, वे०सा०- ८।१०१।३, १०।९८।२, सा०- १०। १०२।४ (गमनशीलं शत्रुम्), सा० मु०- १।१४०।४, ५।४७।२
४. ब्रह्मणा वेगवन्तौ,
वे० - ३।३५।२
५. प्रगामिनम्,
सा० - ७।११।२

अजिरशोचिष्

१. गमनशीलतेजसः,
वे०-९।६६।२५, सा०-९।६६।२५ (सर्वत्र गमनशीलतेजसः)
२. गमनशीलरश्मिम्
वे० - ८।१९।१३
३. क्षिप्रगामितेजस्कं तमग्निम्,
सा० - ८।१९।१३

अजिराय

क्षिप्रगामी,
वे०- ८।१४।१० (अजिरम् (निघ० २। १५) इति क्षिप्रनाम। शीघ्रं निर्गच्छति), सा०- ८।१४।१० (अजिरः क्षिप्रगामी। स इवाचरति)

अज्म

१. गमनम्,
स्क०-१।३७।८, वे०सा०मु०- ५।८७।७,
सा०- १।१६३।१०
२. मार्गम्,
वे०-३।२।१२, सा० -१।१६३।१०
(गन्तव्यं मार्गम्)
३. आकाशमार्गम्,
सा० - ३।२।१२
४. क्षेपकेषु,
सा०मु० - १।३७।८
५. उत्क्षेपकेषु ,
वे० - १।३७।८
६. जगतः,
सा० - ४।५३।४
७. गृहस्य,
वे०- ४।५३।४, वे०सा०- ८।४३।२०

अज्मन्

१. गृहनाम,
स्क०वे०- १।११२।१७, सा० -.६।४।४
२. युद्धगृहम्,
वे० - १।१५८।३
३. गमनम्,
स्क०वे० - १।६५।६, वे० - १।१६६।५,
६।३१।२, वे०सा०-८।२०।५ सा०-
१।१६६।५ (गमने निमित्तभूते सति)
४. अभिगन्तव्यम्,
वे० - ६।४।४
५. संग्रामनामैतत्,
सा०मु० - १।६५।६, ११२।१७
६. अन्नम्,
वे०सा० - ८।४६।२८
७. गमनशीलं शत्रुबलम्,
सा० - १०।१०३।६

८. बलैः उदकैः,
वे०-८।४६।१८, सा० -८।४६।१८
(बलैः बलकरैरुदकैः सह)
९. आगमने सति,
स्क०सा० - ६।३१।२

अज्र

१. गमनस्वभाविकाः,
स्क० - ६।६२।२
२. गमनशीलः,
वे० - ८।१५।२, वे०सा० - १०।४४।८
३. गमनशीलः रश्मिः,
वे०-४।१।१७ (गमनपरान् महन्तः रश्मीन्)
६।६२।२ (रश्मीः), सा०-४।१।१७
(गमनशीलान् रश्मीन्)
४. मार्गस्य गन्तॄन्,
सा० - ४।१९।७
५. क्षिप्रगमनान्,
सा० - ८।१५।२
६. गमने,
वे० - ८।२७।१८
७. अजनान् आकाशगामिनः,
उ० - १०।४४।८
८. निरुदकान् देशान्,
वे० - ४।१९।७
९. मेघान्,
सा० - ५।५४।४
१०. वृक्षान्,
वे० - ५।५४।४
११. मार्गान्,
मु० - ५।५४।४
१२. अजरान् पर्वतान्,
सा० - ४।१।१७
१३. सुगमनाः क्षेपणीयाः,
सा० - ६।२४।८

१४. अवक्षेपणीयाः,
वे० – ६।२४।८
१५. स्वकीयान् अश्वान्,
सा० – ६।६२।२
१६. परैरनभिभवनीये परपुरे,
सा० – ८।२७।१८

अज्र्य

१. शत्रून् प्रतिगन्त्र्या,
उ०– १०।६९।६
२. जनार्हाणि,
वे०– १०।६९।६
३. अजन्ति गच्छन्तीत्यज्रयो जनाः तेभ्यो हितानि,
सा०– १०।६९।६

अष्ट्रा

२. आरा,
स्क०– ६।५३।९ (व्यापिनी, काऽसौ ... आरा वा प्रकृतत्वात् रज्जुर्वा कक्ष्यालक्षणा अभीशुलक्षणा, ५८।२ (तोत्रस्याराम्), वे०सा०–६।५३।९, (आरा), सा०–६।५३।९ (आरां स्वहस्तगताम्)
२. प्रतोदम्,
सा०– ४।५७।४

आष्ट्री

१. भूम्याम्,
वे० – १०।१६५।३
२. व्याप्तायामरण्यान्याम्,
सा० – १०।१६५।३

अष्ट्राविन्

१. पूषा,
वे० – १०।१०२।८
२. अष्ट्रा प्रतोदः तद्वान्,
सा० – १०।१०२।८

आजि

१. सङ्ग्रामः,
उ०वे०सा०– १०।७५।९, स्क०वे०सा०मु०– १।८१।१, ३, १०२।१०, ११२।१०, स्क०सा०मु०–१।५१।३, ६३।६, ११६।१५, वे०–१।१०२।३, (स्क० – निघ०, २।१७ संग्रामनाम), १७९।३, ३।३२।६, ४।४१।११, ७।३२।१७, ८३।२, ६, ९८।४, ८।९६।१४, ९।९१।१, ९७।१३, १०।६१।८, वे०सा०–१।१७६।५, ४।१६।१९, १७।९, २०।३, ६।२४।६, १०।६८।२, १०२।१, वे०सा०मु०– ५।३५।७, सा०– २।३४।३, ४।२०।३ (शत्रुसंबन्धिनं संग्रामम्), २४।८, ४१।८, ६।१९।३, ३५।२ ८।९६।१४ (अजन्ति गच्छन्त्यत्र योद्धारः आयुधानि प्रक्षेपयन्ति वाजिः सङ्ग्रामः), १०।१०२।५, १२, १५६।१, सा०मु०–१।५२।१५, ११६।२, ५।४१।४
२. सर्वेषु स्पर्धानिमित्तेषु संग्रामेषु,
सा० – १।१३०।८
३. महासंग्रामेषु,
सा० – १।१३०।८
४. युद्धः,
वे०– १।५१।३, ६३।६, ११६।२, १५, १७६।५, ४।४१।८, ४२।५, ५।४१।४, सा०–३।३२।६, ४।४१।११, ७।३२।१७, ८३।२, ८।४५।७, ९।९७।२०, सा०मु०– १।१०२।३
५. रणम्,
सा० – ४।४२।५
६. यज्ञः,
स्क० – १।५२।१५ (संग्रामस्थानीये दुस्तरे यज्ञे), १०२।३ (संग्रामस्थानीये यज्ञे), सा०– ९।६६।८ (अजन्ति गच्छन्ति

ऋत्विजोऽत्रेत्याजिर्यज्ञः), ९१।१ (अजन्ति कर्मार्थमृत्विज इत्याजिर्यज्ञः), १०।७५।९ (यज्ञः)

७. संघातम्,

सा० - ४।५८।१०

८. संघे,

वे०सा०-१०।६१।१ (सङ्घे यज्ञ इत्यर्थः)

९. गमनशीलमग्निम्,

वे० - ४।५८।१०

१०. गन्तव्यम्,

सा० - ९।३२।५

११. प्राप्तिम्,

सा० - १।१७९।३

१२. अश्वादेर्धावनभूमिराजिरुच्यते,

स्क० - १।११६।२

आजिकृत्

युद्धकृत्,

वे०सा० - ८।४५।७

अजर

१. जरारहितः,

उ०सा०-१०।५०।५, ८८।१, उ०वे०सा०-१०।४६।७, स्क०वे०- ६।७०।१, वे०-४।४५।७, ५।४।२, ६।४, ७।३।३, १८।२५, वे०सा०- १०।५१।७, १४६।२, ३।२।२, ६।१६।४५, ४८।३, वे०सा०मु०-६।५।४, वे०मु०- ६।८।६, सा०- १।१४३।३ (जरारहिताः अजीर्णाः अविरताः), ३।६।४, ८।२ (जरारहितं समृद्धम्), १८।२ (जरारहिता प्रतिबन्धरहिता), २३।१ (जरारहितः प्रत्युत दीप्यमानः सन्), ३२।७, ५।६।२, ६।८।६ (जरारहितमनश्वरम्), १५।५, २१।१, ३८।३ (जरारहितं नित्यम्), ७।१५।१३ (जरारहिता ज्वालाः), ५४।२, १०४।५, ८।६।३५, २३।४, ११।२०, ९९।७, १०।८७।२१, ९१।७, १०६।६ (जरारहितं मरणधर्मरहितम्), ११५।४, १५६।४, सा०मु०-१।५८।२,४, ६७।३, ११३।१३ (जरारहिता सर्वदैकरूपा), १२७।९, ५।२७।६, ४४।३, ६।२।९, ४।३, ८।५

२. जरावर्जितः,

उ०वे०सा०- १०।३१।७, स्क०-१।६४।३, ११२।९, ११३।१३ (जरामरण-वर्जिता), ६।३८।३, ४८।३, वे०- १।११३।१३ (जरामरणवर्जितः), १२७।९, १४४।४, १६४।१४, ३।६।४, ८।२, १८।२, २३।१, ६।२।९, ५।७, ६।२, १५।५, सा०-६।२२।३ (जराहानिरहितः), १०।९४।७ (जराविवर्जितान्)

३. नित्यः,

सा० - २।८।४ (नित्यैः ज्वालासमूहैः), ६।७०।१-(नित्ये)

४. अजीर्णः,

सा० - १।१४४।४ (अजीर्णो जरारहितो वर्तते), १६०।४ (अजीर्णैर्दृढतरैः) ४।४५।७ (अजीर्णो नित्यनूतनोऽजरयिता वा), ५।४।२, ६।४, ७।४

५. अमृताः,

वे० - १।६४।३

६. जरामरणस्वभावम्,

वे० - १०।१०६।६

७. अशिथिलम्,

सा० - ७।१८।२५

८. अक्षीणा,

सा०मु० - ५।३४।१

९. अमरणधर्मकम्,

सा० - १।१६४।२

१०. अनाश्रयम्,

वे० - १।१६४।२

अजरयु

जरारहितः,
स्क०-१।११६।२०(अजरावन्तौ। जरा-रहितावित्यर्थः), वे०-१।११६।२० (जरारहितौ अजीर्णौ सन्तौ), सा०-१।११६।२० (न जरा अजरा तामात्मन इच्छतः), सा०मु०-१।११६।२० (जरा-रहितौ नित्यतरुणौ युवाम्)

अजवस्

सेना,
वे०- २।१५।६ (जवहीनाः सेनाः), सा०-२।१५।६ (जवहीना: दुर्बला: सेनाः)

अजस्र

१. अनवरतम्,
वे०- ३।२६।७, ७।१।३, वे०सा०- ३।१।२१, ७१।१८, वे०सा०मु०- १।१००।१४, सा०-१।१८९।४ (अनवरतैर-विच्छिन्नैः), १०।४५।१, १३९।१

२. सततम् ,
स्क० - १।१००।१४

३. निरन्तरम्,
सा० - ३।५४।१

४. नित्यः,
वे०- २।३५।८, ३।५४।१ (नित्यं समिद्धः), सा० - ३।५४।१ (नित्यः एकरूपेण सदा वर्तमानः), ४।५५।२, ७।५।४, ८।६०।४

५. अनुपक्षीणः,
उ०सा० - १०।६।२, सा० - ३।२६।७ (अनुपक्षीणः ...नैरन्तर्येण), १०।१२।७ (अनुपक्षीणौ सूर्याचन्द्रमसौ)

६. सन्ततगमनौ,
वे० - १०।२।७

७. रश्मयः,
वे० - ४।५५।२

८. अशरणशीलया,
सा० - ७।१।३

९. अविच्छेदेन तेजसा,
सा० - ६।१६।४५

१०. सर्वदाविनश्वरम्,
सा० - ९।११३।७

११. अहिंसितः। न केनचिदनभिभूत इत्यर्थः,
उ०सा०- १०।६।२, सा०-१०।६।२ (अहिंसितः)

१२. अविच्छिन्नम्,
सा० - १०।१८५।३

अजात

देवान्,
सा०मु० - ५।१५।२

अजातशत्रु

१. अविद्यमानशत्रुम्,
वे० - ५।३४।१

२. अनुत्पन्नशत्रुः,
सा० - ८।९३।१५

३. अनुत्पन्नाः शातयितारो यस्य,
सा०मु० - ५।३४।१

अजामि

१. अज्ञातिः,
वे०-१।१११।३, ४।४।५, ६।१९।८, २५।३, १०।६९।१२, सा०-१०।६९।१२ (अज्ञातीन् शत्रून्)

२. अबन्धुम्,
वे०-१।१२४।६, ७।८२।६, सा०-४।४।५, ७।८२।६ (अबन्धुमस्तुतवन्तम्)

३. बान्धवरहितैः,
सा०मु० - १।१००।११

४. अभार्यात्वम्,
वे०-१०।१०।९, १० (अबान्धवभार्यात्वम्)
५. अभ्रातरम्,
उ०सा०- १०।१०।९ सा०- १०।१०।१०
(अभ्रातरं पतिम्)
६. शत्रून्,
सा०- ६।१९।८
७. सहानुत्पन्नं शत्रुम्,
सा० - १।१११।३
८. असहजातं शत्रुम्,
मु० - १।१११।३
९. दोषरहितम्,
सा०मु०- ५।१९।४
१०. विजातीयं मनुष्यादिजातिम्,
सा० - १।१२४।६
११. असमानजातीयान्,
स्क०-१।१००।११, १११।३, ६।४४।१७
१२. दूरदेशे स्थिता,
सा० - ६।२५।३
१३. जामिः भर्तृत्वेन नास्ति यस्य तदजामि, भगिन्या अयोग्यं मैथुन-लक्षणं कर्म,
उ० - १०।१०।१०
१४. अविद्यमानबालिशस्तुतीन् ... तत्त्वतोऽन्वितया स्तुत्या अविद्यमान-समानजातीयस्तुतीन्,
उ० - १०।६९।१२

अजीति

१. यथा न पराजिता भवन्ति,
वे० - ९।९७।३०
२. यथा वयं शत्रुभिरजिता भवेम,
वे० - ९।९६।४
३. अपराभवम्,
सा० - ९।९७।३०

अजुर्

१. अजीर्णम्,
वे० - ८।१।२
२. जरारहितम्,
सा० - ८।१।२
३. अहिंसितम्,
सा० - ८।१।२

अजुर्य

१. जरयितुमशक्यः,
वे०-२।८।२, १६।१, ३।७।४, ८।१३।२३, वे०-५।६९।१, वे०सा०-५।३७।७,
सा०- ६।२२।९, ३०।१, ३९।५
२. जरयितुमनर्हम्,
सा० - ३।७।४
३. अजरणीयम्,
सा० - २।१६।१
४. अजरणीयोऽनभिभाव्यः,
सा० - २।८।२
५. अजराः,
वे०- २।३।५, ३९।५, सा०- ६।१७।१३
६. जराहिताः,
वे०- ४।५१।६, सा०- ८।१३।२३, १०।९४।१२
७. जरावर्जितम्,
वे०-१०।९४।१२, वे०सा०- १०।८८।१३
८. अहिंस्या,
वे० - ६।१७।१३, सा०-२।३।५, १०।८८।१३
९. अजनना,
सा० - २।३।५
१०. अशीर्णा नित्यनूतनाः,
सा० - ४।५१।६
११. क्षयरहितम्,
सा० - ३।५३।१५

१२. अजरणसाधनम्,
वे० - ३।५३।१५
१३. अजीर्णम्,
सा०- ५।६९।१, मु०-५।६९।१
(अजीर्णमचिरन्तनम्)
१४. अविरतम्,
सा० - ५।६९।१

अजुर्यमुः

१. स्तुवन्, अपि वा स्तुवन्ति यच्छन्तीत्याख्यातद्वयजं पदम्,
वे० - ५।६।१०
२. गच्छन्ति। तथा कृत्वा यमयन्ति स्थापयन्ति हविर्भिर्यजन्ति,
सा० - ५।६।१०

अजुष्ट, ष्टा

१. अपर्याप्तम्,
वे० - २।४०।२, ७।७५।१
२. अप्रियम् ,
वे०-७।१।१३, वे०सा० - १०।१६४।३,
सा०-७।१।१३ (अप्रीतिविषयात्), ७५।१
(सर्वेषामप्रियम्), ७८।३, ९।७३।८
३. असेव्यम्,
सा०- २।४०।२, १०।१६४।३,
सा०मु०- ५।७७।२
४. त्यज्यमानम्,
वे० - ५।७७।२
५. अशोभनम्,
वे० - ७।७८।३

अजुष्टि

१. अप्रीतौ,
स्क०वे०सा०मु० - १।६३।५
२. अपर्याप्तिः,
वे० - ६।३।२
३. अप्राप्तिः,
सा० - ६।३।२

अजोषा

सेवितवानसि,
स्क०वे०सा०मु० - १।९।४

अजोष्य

१. अप्रियः,
स्क०- १।३८।५
२. असेव्यः,
वे०सा०मु० - १।३८।५

अज्ञात

१. शरीरशस्त्रास्त्रबलतः परिमाणतश्चापरिज्ञातेषु,
उ०- १०।२७।४, सा०- १०।२७।४
(शरीरवस्त्रास्त्रबलादिभिरपरिज्ञातेषु)
२. अननुभूताः सतीः,
सा०- ४।२३।७
३. अज्ञातगमनाः,
सा०- ७।३२।२७

अज्ञातकेत

१. अज्ञातनिवासस्थानाः,
वे० - ५।३।११
२. अप्रज्ञातचिह्नाः,
सा० - ५।३।११

अज्ञातयक्ष्म

१. अज्ञातव्याधेः,
वे० - १०।१६१।१
२. अयमेतत्संज्ञ इत्यप्रज्ञातः शरीरगतो रोगोऽज्ञातयक्ष्मः, तादृशरोगात्,
सा० - १०।१६१।१

अज्ञास्

१. अकृतज्ञाः,
उ०सा० - १०।३९।६

२. अबन्धुः अज्ञातिः,
वे० - १०।३९।६

अज्येष्ठा

१. अविद्यमानो ज्येष्ठो येषां ते अज्येष्ठाः,
स्क० - ५।५९।६
२. ज्येष्ठरहिताः,
वे० - ५।५९।६
३. परस्परं ज्येष्ठकनिष्ठभावरहिताः सहैवोत्पन्नाः समानबलाः,
सा० - ५।६०।५

√अञ्ज्

१. व्यञ्जयति ,
सा०- १।१५१।८, १५४३।२, १०।७६। १, १००।१०१
२. अभिव्यञ्जयति,
सा० ८।२९।१
३. व्यज्यते प्रकटीक्रियते,
सा० ८।२०।८
४. व्यक्ती करोति,
स्क०सा०मु०- १।९२।१, वे०-१०। १५६।३ (व्यक्तं कुर्वन्), सा०-५।१।३ (व्यनक्ति विश्वं जगत्), १०।३११४ (व्यक्ती कुर्यात् दद्यादित्यर्थः)।
५. सिञ्चति,
वे०- १।९५।६, सा०- ३।८।१ (घृतं सिञ्चन्ति), १४।३, १९।५ (घृतं सिञ्चन्ति घृताहुतिभिरौक्षन्), ४०।६, ६।११।४ (सिञ्चन्ति तर्पयन्ति), ९।३२।३ (सिच्यते स्निग्धीक्रियते), १०।११८।३, १५६।३ (वृष्ट्युदकैः सिञ्च)
६. आर्द्री कुर्वन्ति, तर्पयन्ति,
सा०मु०- १।९५।६
७. सिक्तः भवसि,
सा०- ९।६६।९, ८५।५
८. गच्छति,
उ०- १०।७६।१ (यज्ञाङ्गभावाय व्यञ्जत गमयत वा), स्क०- १।९५।६ (अञ्जति-र्गत्यर्थः होमार्थमुपगच्छन्ति), १०२।१ (गता प्राप्ता), वे०सा०- ४।६।३।
९. आगता,
वे०- १।१०२।१, सा० - १।१५३।२ (हविषा आगच्छति, होमं करोति), ८।६३।१ (आगच्छति)
१०. उपगच्छति,
उ० १०।६८।२
११. सङ्गमयति,
वे०-१०।६८।२, सा०-१०।६८।२ (सङ्गमयति, स्वसामर्थ्येन तत्र स्थापयति)
१२. प्रकाशयति,
सा०- १।१२४।८, १०।१५६।३ (आत्मीयैः तेजोभिः व्यञ्जय, प्रकाशय)
१३. सोमं मिश्रयन्ति तदा स्वयमभि-गच्छति,
सा० ९।१०२।७
१४. अज्यन्ते संस्क्रियन्ते,
सा०- ९।१०।३
१५. वासयामः,
वे०-९।४५।३, सा०-९।४५।३ (वासयामः, संस्कुर्मः)
१६. प्राप्तः,
वे० ८।६३।१
१७. समञ्जन्ति,
वे०- १।१५१।८
१८. संश्लिष्टासीत्,
सा०मु०- १।१०२।१
१९. संयोजयन्ति,
सा०- ९।१०९।२०
२०. प्रेर्यसे,
वे०सा०- ९।७८।२

२१. *सततं हेतुकर्तृत्वेन सोमं पाययते-त्यर्थः,*
उ०- १०।७६।१

अक्त, क्ता

१. *रात्रिः,*
स्क०-१।६२।८ (अनुगता... सामर्थ्या-द्रात्रिः), वे०सा०मु०-१।६२।८
२. *सिक्तो भवति,*
सा०-४।३।१०, २७।५, ६।५।६ (संसिक्तः), मु०- ६।५।६ (सिक्तः)
३. *सम्पृक्तम्,*
वे०- ९।७४।८, सा०- ९।७४।८ (सम्पृक्तं द्रोणकलशम्)
४. *संश्लिष्टः,*
सा०मु०- ६।४।६
५. *व्यक्तमभिव्यक्तम्,*
सा०- १०।१७७।१
६. *मायेति प्रज्ञानाम। प्रज्ञया सम्बद्धं सर्वज्ञम्,*
सा०- १०।१७७।१

अक्तु

१. *रात्रिः,*
उ०वे०सा०- १०।३७।९, ६४।३, स्क०-१।९४।५ (रात्रि नामैतत्... इह तु साहचर्यात् नक्तचरेषु रक्षः पिशाचादिषु वर्तते...रात्रिचरैः सहेत्यर्थः), स्क०वे०- ६।३९।३, स्क०वे०सा०- ६।३८।३, स्क०वे०सा० मु० - १।३४।८, ४६, १४, ५०।२, ७, ६८।१, ११२।२५, वे०- १०।१।२, ४०।५, वे०सा०- ३।३०।१३, ४।१०।५, ५३।१, ६।२४।९, ७।३९।२, ८।९२। ३१, १०।१२।७, १४।९ ८९।१५, ९२।१४, वे०सा०मु०-६।३।५, सा०-३।७।६ (अक्तुशब्दो रात्रिमाचष्टे.... अज्यते सिच्यते नीहारेण जगदस्यामिति व्युत्पत्तेश्च। तस्या रात्रेः), ६।३९।३, (अक्तुरिति रात्रिनाम। अत्र च तत्सम्बन्धात् पक्ष-मासादयो लक्ष्यन्ते), ७।६६।११, ८।५। ८, सा०मु०- ५।३०।१३, ५४।४, ६। ३।३, ४।५(अक्तुरिति रात्रिनाम। तेन तत्र संचारी राक्षसादिर्लक्ष्यते)
२. *शत्रुः,*
वे०- ६।४।५, सा० १०।१।२ (रात्रिवत् कृष्णान् शत्रून्)
३. *तमः,*
वे०-२।१०।३ (अञ्जनेन अन्धकारेण), ६।४।५, सा०-२।१०।३ (अञ्जनादक्तु-स्तमः)
४. *यागकर्म,*
उ०- १०।४०।५ (अहरक्तुशब्देनात्र अहो-रात्रनिर्वर्त्य यागकर्म कथ्यते)
५. *रात्र्यै रात्रिनिर्वर्त्यकर्मणे,*
सा० १०।४०।५
६. *हविः,*
वे०- १।९४।५ (अञ्जनसाधनैः आज्यैः), ३।१७।१ (अञ्जनसाधनैर्हविभिः), ५। ८४।२, ७।६६।११ (आज्यम्), सा०-३।१७।१ (अञ्जनसाधनैर्घृतादिभिः), १०।३।४ (आहुतिभिः सङ्गताः)
७. *सेक्ता,*
वे०- १।१४३।३, ३।७।६ (उदकस्य सेक्ता रात्रेः), ५।४८।३ (सोमाक्तैः), सा०- २।३०।१ (सेचकं स्रोतः)
८. *तेजः,*
वे०- २।१९।३ (अञ्जनसाधनेन तेजसा), सा०- २।१९।३, ६।६५।१ (नक्षत्रादि-तेजांसि), ६९।३, ७।७९।२
९. *अक्तुशब्दोऽयं ज्योतिर्वचनम्,*
स्क०- १।५०।७

१०. अञ्जकैः अस्य रश्मिभिरक्तम् आश्लिष्टम्,
सा०मु०- १।९४।५
११. तमांसि अञ्जन्तः,
वे०-१०।३।४, सा०-१०।३।४ (तमांसि-ऽञ्जन्तोऽपगमयन्तः)
१२. अहनः,
वे०-७।११।३, सा०- ४।५३।१ (एतदह्नामप्युपलक्षण्। सर्वैः दिवसैः), सा०-७।११।३ (अह्नः यद्यप्यक्तुरिति रार्त्रेर्नाम तथाप्यत्राज्यन्ते व्यज्यन्ते रूपादीन्यस्मिन्निति अह्नो नाम)
१३. सोमः,
स्क०- ६।६९।३ (सोमोऽत्र अक्तरुच्यते)
१४. आदित्यः,
स्क०- ६।३९।३ (अक्तुशब्देनात्रादित्य उच्यते), सा०-१०।९२।२ (स्वरश्मिभिरञ्जकमादित्यम्)
१५. अग्निवायुसूर्यान्,
वे०- ८।५।८
१६. अभिव्यक्तिः,
स्क०- ६।६९।३ (अक्तुशब्दोऽभिव्यक्ति-वचनः। ... अभिव्यक्तयः स्तोत्रशस्त्र-लक्षणानां स्तुतीनाम्)
१७. गमनशीलैः स्तोत्रैः,
सा०मु०- ५।८४।२
१८. बिन्दुः,
वे० २।३०।१
१९. आयुधैः,
स्क०वे०सा०मु०- १।३६।१६

अज्यमान, ना

१. निषिच्यमानरेतस्का,
वे०सा०- १०।३१।१०
२. गोभिः सिच्यमानः,
सा०- ९।९७।३५
३. व्यज्यमानः व्यक्तिभवन्।
उत्पाद्यमान इत्यर्थः,
सा०- १०।३१।९

अञ्जत्

१. अञ्जन्ति...अनक्ति संश्लिष्टं करोति,
सा०मु०- १।९२।५
२. श्रयति,
स्क०- १।९२।५

अञ्जस्

१. ऋजुः,
स्क०- १।३२।२, वे०- १।१३२।२ (ऋजुतमे), सा०- ६।१६।३ (आर्जवेन), ६।५४।१ (ऋजुमार्गेण)
२. अकुटिलेनैव,
सा०- १०।७३।७
३. मुख्ये महति संग्रामे,
सा०-१।१३२।२
४. अभिव्यक्तिमति कपटादिरहिते,
सा०- १।१३२।२
५. व्यञ्जकः,
सा०- १।११०।२
६. सम्यक्,
सा०मु०- १।३२।२
७. मुख्यत्वेन प्रकृष्टम्,
सा०- १।१३९।४

अञ्जस्पा

१. अञ्जसा रक्षकम्,
सा०- १०।९२।२
२. अञ्जसा पान्ति रक्षन्तीत्यञ्जस्पा,
सा०- १०।९४।१३
३. अञ्जसा गच्छन् रथः,
वे०- १०।९४।१३

अञ्जि

१. आभरणम्,
उ०- १०।७७।२ (रूपाभिव्यक्तिकरान् अलङ्करणविशेषान्), स्क०- १।६४।४ (अञ्जिस्सामर्थ्यादिह भूषायां द्रष्टव्यः। विविधं भूषयन्ति आत्मानमित्यर्थः), ८७।१ (रत्नप्रायैराभरणैः सम्बद्धाः), वे०-१। ६४।४, ८५।३, ८७।१, २।३४।१३, वे०सा०- ८।२९।१, १०।७७।२, ७८। ७, सा०-१।८५।३ (रूपाभिव्यञ्जन-समर्थैराभरणैः), ६४।४, ४।५८।९, ८।२९।१ (अभिव्यज्यते प्रकाश्यते अनेन इत्यञ्जि आभरणम्। अभिव्यक्तिसाधनं कुण्डलमुकुटादिम्), १०।९५।६ (आभरणोपेताः), सा०मु०-१।८७।१ (रूपाभिव्यञ्जकैराभरणैः), ५।५३।४, ५६।१, मु०- १।८५।३ (रूपाभिव्यञ्ज-कैराभरणैः)

२. अञ्जकम्, तेजः,
वे०- १।१२४।८ (अञ्जनसाधनं तेजः), सा०- १।१२४।८ (व्यञ्जकम् तेजः), ४।५८।९ (अञ्जकम्) ७।७८।१ (व्यञ्जका रश्मयः), सा०मु०- १।११३। १४ (व्यञ्जकैः प्रकाशकैः तेजोभिः)

३. फलस्य व्यञ्जकैर्मरुद्भिः,
सा०मु०- ५।५२।१५

४. व्यक्तानि,
सा०- १।१६६।१०

५. व्यक्तं जगत्,
सा०- १।१२४।८

६. कवचानि,
वे० -१।१६६।१०

७. छन्दांस्यत्र अञ्जय उच्यन्ते,
स्क०- १।३६।१३

८. ज्योतिः,
स्क०- १।११३।१४ (अञ्जिशब्दो व्यक्तिरूपत्वात् ज्योतिर्वचनः), वे०- १।११३।१४ (अञ्जसाधनैः ज्योतिर्भिः)

आनजान

१. अञ्जेर्गत्यर्थस्येदं रूपम्। आगत-वन्तौ,
स्क०- १।१०८।४

२. व्याप्रियमाणौ,
वे०- १।१०८।४

३. हवींष्याज्येनाञ्जन्तौ,
सा०मु०- १।१०८।४

अण्वी

अङ्गुलयः,
स्क०-१।३।४ (अण्व्यत्यङ्गुली, नाम), वे०-९।१।७ (अङ्गुलयः) वे०सा०- ९।१४।६, १५।१, २६।१, वे०सा०मु०- १।३।४, सा०- ९।१।७ (अण्व्योङ्गुलयः)

अण्व

१. अणूनि,
वे०- ९।१०७।११

२. अणूनि लोमानि,
सा०- ९।८६।४७

३. सूक्ष्माणि,
सा०- ९।१०७।११

४. सूक्ष्माणि लोमानि,
वे०- ९।८६।४७

५. सूक्ष्मच्छिद्रं पवित्रम्,
वे०सा०- ९।९९।३

६. शब्दम्,
वे०सा०- ९।२०।५

७. अङ्गुलीषु,
वे०सा०- ९।१६।२

आणि

१. चक्रस्य अक्षन्निर्गमननिरोधार्थः कीलः, आणिरुच्यते,
स्क०- १।३५।५
२. रथाक्षान्ते निहितम् रथाङ्गानि,
वे०- १।३५।६
३. सङ्ग्रामनामैतत्,
स्क०सा०मु०- १।६३।३
४. युद्धे,
वे०- १।६३।३
५. अक्षच्छिद्रे प्रक्षिप्तः कीलविशेषः,
सा०मु०- १।३५।६, ५।४३।८

अतत्

१. सततं गच्छन्,
स्क०सा०- ६।६१।९
२. गच्छन् सन्ततम्,
वे०- ६।६१।९

अतमान

१. तन्तुवायाः,
वे०- ६।९।२
२. गच्छन्,
वे०-२।३८।३ सा०- २।३८।३ (सततं गच्छन्तमपि जनम्)
३. सततं चेष्टमाना ऋत्विजः,
सा०मु०- ६।९।२

अतस

१. काष्ठेषु,
वे०- १।५८।२, सा०- १।५८।२ (प्रभूतेषु काष्ठेषु) ४।४।४, ८।६०।७
२. उन्नतेषु वृक्षेषु,
सा०मु०- १।५८।४
३. वृक्षसंघेषु,
सा०- ४।७।१०
४. वृक्षं शुष्कम्,
वे०- ८।६०।७
५. संततानि नीरसानि वा तरुगुल्मादीनि,
सा० -२।४।६
६. सततगमनस्य,
वे०सा०- ३।७।३

अतसी

१. अतन्तीनां स्तुतीनाम्,
वे०- ८।३।१३
२. अतन्तीनां सततगामिनां स्तुतीनाम्,
सा०- ८।३।१३

अतसाय्य, य्या

१. अनुपक्षीणा,
स्क०- १।६३।६
२. सन्ततगामिनी,
स्क०- १।६३।६
३. अस्मद्रक्षणाय,
वे०- १।६३।६
४. तत्प्राप्तिहेतुभूतः सन् समाश्रयणीयः,
सा०- २।१९।४
५. समाश्रयणीयः,
वे०- २।१९।४
६. योद्धृभिः प्राप्तव्या,
सा०मु०- १।६३।६

अतिथि

१. अतिथिवत्पूज्यः,
सा०- १।१२७।८, १२, ८।४, २।२।८, ४।१, ४।१।२०, २।७, ५।१।८, ३।५, ७।१, ८।२, ६।१५।४, ७।३।५, ८।४, ९।३, ८।२३।२५, ७४।७, १०।१।५, १२२।१, सा०मु०-१।५८।६
२. अतिथिः इव पूज्यः,
सा०- ३।२।२

३. अतिथिवत्सर्वदा पूज्यः,
सा०- ४।४०।५
४. तद्वत्पूज्यान् देवान्,
सा०- ५।५०।३
५. अतिथिवत्प्रियः,
सा०- ८।४४।१, १०३।१२
६. अतिथेयपूजार्हतया यदृच्छया प्राप्तम्,
सा०- ३।२६।२
७. दर्शादितिथिमपेक्ष्य आगन्तारम्,
सा०-१।१२७।८
८. सततगमनक्षमम्,
सा०- ६।१५।१ (सततगन्तारम्), सा० मु०- १।४४।४
९. देवयजनदेशेषु सततं गन्तारम्,
सा०- १।५८।६
१०. हविर्वहनाय सततगामी,
सा०- ६।२।७, सा०मु०- ६।४।२
११. हविर्वहनाय सततगन्तारम्,
सा०- १०।१२२।१, सा०मु०- ६।७।१
१२. सततगामिनं सूर्यम्,
सा०- १०।१२४।३
१३. अभ्यागतः,
सा०- ८।१०३।१०
१४. सर्वेषामतिथिभूतोऽग्निः,
सा०- ७।४२।४
१५. यजमानानां गृहान्प्रति तिथिष्व-भ्येतीत्यतिथिः,
सा०मु०- ५।१८।१
१६. पूज्यः,
सा०- ५।१।९, ८।७४।१
१७. अतिथिस्थानीयं यजमानानाम्,
स्क०-१।४४।४, वे०-६।७।१ (अतिथि-स्थानीयं)
१८. सुखासने उपवेशितः अर्घपाद्या-दिभिः सत्कृतोऽतिथिः,
सा०मु०- १।७३।१

आतिथ्य

१. अतिथीनां योग्यम् अन्नादिकम्,
वे०- ५।२८।२
२. अतिथियोग्यां पूजाम्,
सा०- ४।४।१०
३. अकस्मादागतोऽतिथिः। तदुचितं सत्काररूपकर्म आतिथ्यम्,
सा०- ४।३३।७
४. अतिथ्यर्हं सत्कारम्,
सा०मु०- १।७६।३
५. अतिथिरूपस्य तव योग्यं हविः,
सा०मु०- ५।२८।२

अतिथिग्व

१. दिवोदासस्य,
वे०-६।२६।३, ७।१९।८,
सा०-२।१४।७
२. एतत्संज्ञस्य राज्ञः,
सा०- १।५३।८
३. अतिथिग्वम् नाम राजानम्,
उ० १०।४८।८
४. अतिथिगोः पुत्रं दिवोदासमृषिम्,
सा०- १०।४८।८
५. अतिथीनामभिगन्तारम्,
सा०- ४।२६।३, ६।१८।१३, २६।३ (अतिथीनामभिगन्तारं दिवोदासम्)
६. अतिथिभिर्गन्तव्यम्,
सा०मु०- १।११२।१४
७. अतिथीन् प्रति गन्तारं तान् परिचरन्तम्,
वे०- १।११२।१४, ४।२६।३ (अतिथीन् प्रति गन्तारम्)

८. अतिथीनां परिचारकम्,
स्क०- १।११२।१४
९. अतिथीन् प्रति परिचारकतया गच्छतीत्यतिथिग्वो दिवोदास इहोच्यते ...अतिथीनां परिचारितुर्दिवोदास-नाम्नो राज्ञोऽर्थायेत्यर्थः,
स्क०- १।५३।८
१०. अतिथीन् प्रति परिचारकतया गच्छतीति अतिथिग्वो दिवोदासः,
स्क०- १।५१।६
११. अतिथिभिर्गन्तव्याय दिवोदासाय,
सा०मु०- १।५१।६
१२. अतिथीन् प्रति गच्छते दिवोदासाय,
वे०- १।१३०।७
१३.पूजार्थमतिथिं गच्छते दिवोदासाय,
सा०- १।१३०।७
१४. पूजयातिथीन् गच्छतीत्यतिथिग्वः। तस्मै सुदासे दिवोदासाय वास्मदीयाय,
सा०- ७।१९।८
१५. अतिथीनामभिगन्त्रे दिवोदासाय,
सा०- ६।२६।३

अतिथिग्व

१. अतिथिग्वपुत्रे इन्द्रोते,
वे०- ८।६८।१७
२. इन्द्रोते,
सा०- ८।६८।१६

अतिथिनी

१. सर्वस्यातिथिभूताः,
उ०- १०।६८।३
२. अतिथिमतीः,
वे०- १०।६८।३
३. सततं गच्छन्तीः,
सा०- १०।६८।३

अत्क

१. आच्छादके पवित्रे,
वे०सा०- ९।१०१।१४
२. रूपे पवित्रे,
वे०सा०- ९।१०६।१३
३. कवचम्,
स्क०वे०सा०मु०- ५।५५।६, ७४।५, सा०- ९।६९।४ (आत्मीयं कवचम्)
४. आयुधानाम् अन्यतमं कवचम्,
उ०- १०।४९।३
५. आत्मीयं रूपम्,
वे०- १०।९५।८
६. स्वकीयं रूपम् अत्क इति रूप नाम,
सा०- १०।९५।८
७. स्वरूपम्,
वे०- १०।९९।९
८. आत्मीयं व्याप्तं रूपम्,
सा०- १०।१२३।७
९. सततगमनशीलमात्मीयं रूपम्,
सा०- ६।२९।३
१०. रूपम्,
स्क०- १।९५।७ (अत्कशब्दोऽत्र रूप-वचनः), वे०- १।९५।७, ४।१६।१३ (अत्क इति रूपनाम), ६।२९।३, सा०- १०।९५।८ (स्वकीयं रूपम्। अत्क इति रूपनाम), ९९।९, १२३।७ (आत्मीयं व्याप्तं रूपम्)
११. वयोविशेषं रूपम्,
सा०-४।१६।१३
१२. अतनशीलैः सततगन्तृभिः स्वकीयै रूपैः,
सा०- २।३५।१४
१३. आच्छादकं शत्रुपुत्रम्,
सा०- १०।४९।३

१४. आच्छादकं शत्रुपुरम्,
वे०- १०।४९।३
१५. आत्मीयैरायुधैः,
उ०- १०।४९।३ (आयुधानामन्यतमं कवचम्) सा०- ६।३३।३
१६. आयुधैः,
वे०- ६।३३।३।
१७. तेजोरूपम्,
वे०-४।१८।५, सा०- ४।१८।५ (तेजः)
१८. सारभूतं रसम्,
सा०मु०- १।९५।७
१९. संततम् रूपम्,
सा०- १।१२२।२
२०. वर्णनम्,
वे०- १।१२२।२
२१. अक्तम्,
सा०- १।१२२।२

अत्य

१. अश्व,
उ०-१०।६।२, स्क०- १।५२।१, स्क० वे०- १।६५।३, ६।३२।५, वे०- १।५८।२, १२६।४, १९०।४, २।४।४, ३।२।३, ७।९, ७।३।५, ९।४३।५, वे०सा०-१।६४।६, ५६।१, १२९।२, १७७।२, ३।२।७, ३२।६, ३४।९, ७।२४।५, ९।६।५, ३२।३, ४३।१, ७६।१, ७७।५, १०।९६।१०, वे०सा० मु०- ५।३३।९, वे०मु०- ५।२५।६, सा०-३।३८।१, ४।२।३, ९।४३।५ (अतनशीलोऽश्व इव), ८१।२, ८२।२, ८५।५, ८५।७ (अतन्वन्तम् अश्वस्थानीयं वा सोमम्), सा०मु०- ५।५९।३
२. सततगमनशीलः अश्वः,
सा०- १।१२६।४, सा०मु०- १।५८।२
३. सततगामी जात्यश्वः
सा०- १।६५।३ (सततगमनशीलो जात्यश्वः), सा०- ६।२।८, सा०मु०- ६।४।५ (शीघ्रगामी जात्यश्वः)
४. सततगामिनमश्वम्,
सा०-१।१३०।६, ७।५६।१६, १०।१४४।१
५. अतति सततं गच्छतीत्यत्योऽश्वः,
सा०-५।२५।६
६. सततगमनयुक्तं वोढारमश्वम्,
सा०- ७।३।५
७. अश्वैः सततगामिभिस्तेजोभिर्वा,
सा०- ६।३२।५
८. सततगमनसमर्थोऽश्वः,
सा०- १०।६।२
९. धृतोऽश्वः,
सा०- १०।७६।२
१०. अतनशीलः,
वे०- १।१३०।६, १४९।३, ३।३८।९, ४।२।३, ५।३०।१४, ६।२।८, ४४।१९, ९।८०।३, १०।६।२, वे०सा०- १।१६३।१०, १८१।२
११. अतनशीलः आदित्यः,
वे०- १।१८०।२, सा०- १।१९०।४
१२. अतनशीलस्य सततसंचारिणः,
सा०- १।१८०।२
१३. अतनाः,
वे०- १।१६३।१०
१४. वेगवशात् अतनशीलम्,
सा०- ३।२२।१
१५. अतनशीलम्,
वे०- ३।२२।१
१६. अतनशीला आगमापायिधर्मोपेताः,
सा०- ३।५६।२
१७. अतनकुशलः,
सा० ९।८०।३

१८. *अपेक्षितदेशं प्रति अतनशीलः,*
सा०- १।१४९।३
१९. *गमनसाधनम्,*
सा०मु०-१।५२।१
२०. *वेगवन्तम्,*
स्क० १।५२।१
२१. *सततं गन्तारम्,*
सा०- १।१३५।५
२२. *सततगमनेन,*
वे०- २।३४।१३
२३. *सततगामिना शीघ्रं व्याप्नुवता,*
सा०- २।३४।१३
२४. *सततगामिनस्तुरगान्,*
सा०- २।३४।३
२५. *गमनस्वभावाः,*
वे०- ३।५६।२
२६. *सततगामी,*
सा०मु०- ५।३०।१४, ६।४४।१९
२७. *देवान् सततं गन्ता भवति,*
सा०- ९।६६।२३
२८. *सततं गन्ता,*
वे०- ९।६६।२३
२९. *गमनसाधनम्,*
सा०- १।५२।१
३०. *व्यापिनम्,*
वे०- १।१३५।५
३१. *वाजी,*
सा०-२।४।४
३२. *भारसहमश्वम्,*
सा०- ३।२।३
३३. *सर्वानप्यतिक्रम्य वर्तमानाय,*
सा०- ३।७।९
३४. *सततमतनार्हम्,*
सा०- ५।४४।३, मु०-५।४४।३ (सतत-गमनार्हम्)
३५. *पार्थिवाल्लोकाद्देवान् प्रति गमन-हितम्,*
वे०- ५।४४।३
३६. *अतनवन्तमश्वस्थानीयं वा सोमम्,*
सा०- ९।८५।७

आति

आतिभूताः,
वे०सा०- १०।९५।९

अतथा

१. *तनु विस्तारे। आगमनविषयश्चात्र विस्तारोऽभिप्रेतः ...गमनविस्तारः,*
स्क०- १।८२।१
२. *असत्यम्,*
वे०- १।८२।१
३. *पूर्वं यथाविधस्त्वं तद्विपरीतः,*
सा०मु०- १।८२।१

अतन्द्र

१. *अनलसः,*
स्क०वे०- १।९५।२, वे०- १।७२।७, वे०-४।४।१२, ८।२।१८, वे०सा०-८।६०।१५
२. *अनलसः उत्साहीत्यर्थः,*
स्क०- १।७२।७
३. *अनलसाः सर्वदोद्युक्ताः,*
सा०- ४।४।१२
४. *अनलसाः देवाः,*
सा०- ८।२।१८
५. *पुनः पुनर्हविर्वहनेऽप्यनलसः,*
सा०मु०- १।७२।७
६. *स्वकार्ये जगतः पोषणेऽनलसाः आलस्य रहिताः। जागरूका इत्यर्थः,*
सा०मु०- १।९५।२
७. *तन्द्रारहितः,*
सा०- ७।१०।५

अतप्ततनू

पयोव्रतादिना असंतप्तगात्रः,

सा०- ९।८३।१

अतप्यमाना

१. अबाध्यमाने,

वे०- १।१८५।४

२. अनीश्वरे। तपेः ऐश्वर्यकर्मणः इदं रूपम्। अन्यैरपीड्यमाने,

सा०- १।१८५।४

अतव्यस्

१. अवृद्धः,

वे०- ५।३३।१

२. अतवीयानवृद्धतरोऽहम्,

सा०- ७।१००।५

३. अत्यन्तमिव दुर्बलः सन्,

सा०मु०- ५।३३।१

अति

१. अतीत्य,

वे०- १।१३५।६

२. अत्यन्तम्,

वे०- १।१४१।१३, २।२८।१, ८।२४।२,

वे०सा०- १०।८६।२

३. अतिशयेन,

सा०- १।१३५।६, २।२८।१, ६।२०।५, १६।२०, ८।२।३४ (अतिशयितः)

४. अतिक्रम्य,

सा०- १।१३५।६, १४३।३, ३।९।४, १०।७, ८।१।३३, २४।२, ९।१५।६, १७।५, ८६।४७, १०।३३।९, ७५।१

५. अतिहाय,

सा०- ७।३३।२

६. अभि,

सा०- ९।८।५, ६३।४ (अभिगच्छति)

७. अभिपूजयन्ति,

उ०- १०।७७।२

८. पराभावयन्ति,

सा०- १०।७७।२

अति √कृ

१. अभिपूजितम्,

उ०- १०।१२।५

२. प्रीणनं कर्म नाऽनुतिष्ठामः,

वे०-१०।१२।५

३. अतिपूजितं परिचरणाख्यं कर्म वयं क्रियास्म,

सा०- १०।१२।५

अति √क्रम्

१. अतिक्रमयितव्यः। प्रथमं स्तोतव्य इत्यर्थः,

स्क०- १।१०५।१६

२. अतिक्रमितुं ...शक्यः,

वे०- १।१०५।१६ (अतिक्रमितुं शक्यते)

सा०मु०- १।१०५।१६

३. अतिक्रम्य पात्राणि गच्छति,

सा०- ९।६९।४

४. अति गच्छति,

सा०- ९।४५।४

५. अतिरेम ... उत्तीर्णा भवेम,

सा०मु०- १।१०५।६

अति √क्षर्

१. क्षारयन्ति,

वे०- ५।६६।५

२. अतिक्रम्य धारया क्षरन्ति,

सा०- ९।६३।१२

३. अव्यर्थं वर्षतः,

सा०मु०- ५।६६।५

अति √ख्या

१. अतीत्य पश्य,

वे०- ८।६५।९

२. ब्रूतम्,

सा०- ८।२२।१४

३. पराब्रूतम्,

वे०- ८।२२।४

४. द्राक्षीः,

वे०- १।४।३

५. अतिक्रम्य पश्य,

सा०- ८।६५।९

६. अतिक्रम्य ...प्रकथय,

सा०मु०- १।४।३

अति √गा

१. अत गच्छति,

वे०- ९।१४।६

२. अंशुमतिक्रम्य गच्छति,

सा०- ९।१४।६

अति √गाह्

१. अतिक्रम्य द्रोणकलशं प्रविशति,

सा०- ९।६७।२०

२. अतिक्रम्य गच्छति,

सा०- २।७।३, ९।८६।२६

अति √चित्

१. अतिक्रम्य ज्ञायेमहि,

सा०- २।२।१०

२. प्रकाशयेम,

सा०- २।२।१०

अति √तॄ

१. अतिक्रामेत्,

सा०- ८।१३।२१, १९।१४

२. उत्तीर्णा भवेम,

सा०- ३।२७।३

अति √दघ्

१. अतीत्य ... दत्तम्,

वे०- १।१८३।४

२. अतिक्रम्य ...दत्तम्,

सा०- १।१८३।४

अति √दीव्य

१. अभिपूजितं गमयित्वा, दृढं प्रहृत्येत्यर्थः,

उ०- १०।४२।९

२. अभिपूजितं गमयित्वा,

उ०सा०- १०।४२।९

अति √द्रु

१. अति गच्छ,

वे०- १०।१४।१०

२. अतिक्रम्य गच्छ,

सा०- १०।१४।१०

अति √धा

तिरोहितम् ,

वे०सा०- १०।१८१।२

अति √धाव्

हन्तुमभिगच्छति,

सा०- ९।३।२

अति √नी

१. अतीत्य ... प्रापयथ सर्वत्र प्रवर्तयथ,

उ०- १०।६३।१३

२. अभिमतं देशं प्रापयन्ति,

सा०- १०।१२६।१

३. अतीत्य नयथ, अभीष्टं प्रापयथ,

सा०- १०।१२६।२

४. अस्मान्नयसि तारयसि,

सा०- ६।४५।६

५. अतिनयनं नाम विनाशः उपशमनं वा,

स्क०- ६।४५।६

६. *अस्मानतिक्रम्य अन्यत्र प्रापय,*
सा०मु०- १।४२।७
७. *अतिशयशोभनम् नय प्रापय अभिप्रेतं देशम्,*
स्क०- १।४२।७
८. *अतिशयेन नय,*
वे०- १।४२।७
९. *अतीत्य सन्मार्गेनयथ,*
सा०- १०।६३।१३

अति √नॄ

१. *नेतरः ...अति नयन्तु,*
वे० १०।१२६।६।
२. *नयनकुशला ...अति नयन्तु,*
सा०-१०।१२६।६

अतिनेनीयमान

१. *अति शब्दः पूजायाम्। शोभनं नयन्। ...स्तोतारश्चात्मनः समृद्धं कुर्वन्,*
स्क०- ६।४७।१६
२. *अत्यन्तं अतिगच्छन्,*
वे०- ६।४७।१६
३. *अत्यन्तं पुनः पुनर्नयन्,*
सा०-६।४७।१६

अति √पश्

१. *तमोऽतीत्य पश्यसि यस्य ते तमसा दर्शनशक्तिः न प्रतिबध्यते,*
स्क०- १।९४।७
२. *विनाशयसि,*
वे०- १।९४।७
३. *अतीत्य प्रकाशसे,*
सा०मु०- १।९४।७

अति √पू

१. *अतीत्य पवस्व,*
वे०- ९।३६।२, ९७।४ (अति पवते)
२. *पावयन्ति,*
वे०-९।६०।२ (अति पावयन्ति),
सा०- ९।६०।२
३. *अतीत्य गच्छति,*
सा०- ९।१०६।१३
४. *अति गच्छति,*
वे०- ९।१०६।१३
५. *अति क्षर,*
वे०सा०- ९।२।१
६. *द्रोणकलशं प्रति क्षर,*
सा०- ९।३६।२

अतिपवमान

१. *पूयमानः,*
वे०- ९।३०।४
२. *पावमानः ...अतिक्रम्य दशापवित्रम्,*
सा०- ९।३०।४

अति √पॄ

१. *अतीत्य पारयति,*
स्क०- १।९७।७ (अतीत्य ...पारय। सर्वाभिप्रेतानां पारं नयेत्), सा०- ८।९७। १५, ९।७०।९ (अतीत्य पारं गमय), ७०। १० (दुरितान्यतीत्य पारय)
२. *अतिक्रामयति,*
सा०-१।१८९।२ (कर्म समापय्य अतिपारय अतिक्रामय), ६।४७।७ (शत्रूनतिक्रामय), सा०मु०-१।९७।८ (शत्रून् अतिक्रमय्य पालय। शत्रुरहितं प्रदेशमस्मान् प्रापयेत्)
३. *अतिक्रमयति,*
स्क०- १।९९।१, सा०-२।३४।१५
४. *अतीत्य संक्लेशयतम्। हतमित्यर्थः,*
सा०-८।२६।५
५. *पारं समाप्तिं रक्षणैर्गमयत,*
सा०-८।८३।३

६. अतिनीय कामैः पूरयथ,
उ०सा०- १०।३५।१४
७. अतिपारयतु। अतिक्रम्य तद्रहितं देशं प्रापयतु,
सा०- २।२७।७
८. अतिक्रम्य पारं नयतु,
सा०- ३।२०।४
९. अतिनयतु,
वे०- ३।२०।४
१०. अतिक्रमय्य दुःखरहितं सुखं प्रापयतु,
सा०मु०- १।९९।१
११. अतितरतु,
वे०- १।९९।१
१२. सुष्ठु पारय,
स्क०-१।९७।८
१३. अतिक्रम्य पूरयसि,
सा०-१।१७४।९

अति-प्र √कित्
१. सुष्ठु प्रज्ञायते,
स्क०-१।५५।३
२. अतिशयित इति प्रकर्षेणास्माभि-र्ज्ञातो बभूव,
सा०मु०-१।५५।३

अति-प्र √क्षर्
१. दशापवित्रमतीत्य कलशं प्रति प्रकर्षेण क्षरति,
सा०- ९।६६।२८
२. प्रक्षरति,
वे० - ९।६६।२८

अति- प्र √क्ष्
१. प्रकर्षेण तनूकुर्वन उपक्षपयन्नि-त्यर्थः,
उ०- १०।४४।१
२. प्रकर्षेण तनूकुर्वन् अति गच्छति,
वे०सा०- १०।४४।१

अति- प्र √नी
१. प्रकर्षेण अति नयसि,
वे०-१।१७४।९
२. अतिक्रम्य पूरयसि,
सा०- १।१७४।९

अति - प्र √रिच्
१. अतिरिच्येथे,
स्क०- १।१०९।६
२. अतिरिक्तौ भवतः,
वे०- १।१०९।६
३. अतिरिच्येथे सर्वाधिकौ भवथः,
सा० मु०- १।१०९।६
४. अतीत्य अधिकौ भवथः,
सा०मु०- १।१०९।६

अति-प्र √शृध्
१. अत्यन्तं प्रशर्धयति,
वे०- ८।१३।६
२. अतिशयेन प्रशर्धयित्रीरकरोत्। शत्रूणां, प्रसहनसमर्थाः,
सा०- ८।१३।६

अति-प्र √श्रु
१. सर्वाँल्लोकानतीत्य प्रकर्षेण श्रूयते,
उ०- १०।११।७, सा०- १०।११।७
(सर्वाँल्लोकानतीत्य प्रकर्षेण श्रूयते। प्रख्यातो भवति)
२. अत्यन्तं प्रस्तूयते,
वे०- १०।११।७

अति-प्र √सृ
१. अतीत्य भृशं प्रसरति पौत्रमपि पश्यन् चिरकालं जीवेत्,
सा०- २।२५।१

२. अतिप्रसरिष्यति,
वे०- २।२५।१

अति-प्र √स्था

१. अतीत्य प्रगच्छ,
सा०- ८।६०।१६
२. प्रतिष्ठ ... अतीत्य (हवींष्यादाय देवान् प्रति),
वे०- ८।६०।१६
३. अतीत्य प्रतिष्ठितो भवति,
सा०मु०- १।६४।१३
४. अतीत्य प्रकर्षेण तिष्ठति,
स्क०- १।६४।१३
५. प्रकर्षेण अभितिष्ठति,
वे०- १।६४।१३

अति-प्र √स्यन्द्

१. प्रस्यन्दते,
वे०- ९।३०।४
२. अतिक्रम्य दशापवित्रं प्रस्यन्दते,
सा०- ९।३०।४

अति-प्र √इ

अतिक्रामसि,
सा०-५।१।९

अति √मन्

१. स्तुमः,
वे०- ९।४१।२ (अतिस्तुमः), सा०- ९।४१।२
२. विसृज्य गच्छति,
वे०सा०- १०।९१।२
३. अतीत्य स्वस्याधिकं मन्यते, अस्मत्तोऽपि स्वयमधिक इति बुध्यते,
सा०- ६।५२।२
४. अवमतिं ... करोमि,
सा०- १।१३८।४
५. अतिमननमुपेक्षा,
वे०- १।१३८।४
६. अतिक्रम्य मनुषे। अपलपसि,
सा०- १।१७०।३

अति-मति

१. अतिमानम्,
वे०- १।१२९।५
२. अतिक्रान्तमननं विरुद्धमनस्कं शत्रुम्,
सा०- १।१२९।५

अति-याज

ऋजिश्विनोऽप्यतिशयेनाहं देवान् यजामीति बुद्ध्या युक्तस्य ऋषेः,
सा०- ६।५२।१

अति √या

१. अति गमयत,
वे०- ६।६२।२
२. अतिगच्छथः,
वे०- ५।७७।३
३. अतिक्रम्य गच्छथः,
सा०मु०- ५।७७।३
४. अतीत्य गच्छ,
वे०- १।१३५।७
५. अतिक्रम्य उपेक्ष्य अस्मद्यज्ञं गच्छ,
सा०- १।१३५।७
६. अतीत्य यायाम्,
वे०- २।२७।१६
७. अतीत्य प्रयतेयम्। अतितरेयम्,
सा०- २।२७।१६
८. अतीत्य यापयथ,
स्क०- ६।६२।२
९. अतिक्रामयथः,
सा०- ६।६२।२

अति-ययिवस्,

१. अति गच्छन्,
वे०- ९।१५।६
२. अतिक्रम्य गच्छन्,
सा०- ९।१५।६

अति √राज्

१. अतिक्रम्यारण्यं प्राप्य राजते,
वे०- ६।१२।५
२. अतिक्रम्य राजते,
सा०- ६।१२।५
३. आक्रम्य राजते,
सा०- ६।१२।५

अतिरात्र

रात्रिमतीत्य वर्तते इत्यतिरात्रः,
सा०- ७।१०३।७

अति √रिच्

१. अतिरिक्तः अस्ति,
वे०- १०।९०।५, सा०- ८।९२।२२ (अतिरिक्तोऽस्ति। सामर्थ्यवांस्त्वत्तोऽधिको ...अस्तीत्यर्थः), १०।९०।५ (अतिरिक्तोऽभूत्)
२. अतिरिक्तः समर्थः च अस्ति,
सा०- ८।९२।१४

अति √रुच्

१. सुष्ठु दीप्यसे,
स्क०- १।९४।७
२. रोचसे,
वे०- १।९४।७
३. अतिक्रम्य प्रज्वलति,
सा०- १०।१८७।२
४. अतिशयेन दीप्यसे,
सा०- १।९४।७
५. दीप्यसे,
मु०- १।९४।७

अति-रोचमान

१. अतीत्य एकादशे निवासे उषित्वा दीप्यमानम्,
उ०- १०।५१।३
२. अतीत्य रोचमानम्,
वे०- १०।५१।३
३. अतीत्य प्रकाशमानम्,
सा०- १०।५१।३

अति √रुह्

१. अति वर्धत,
वे०- १०।९०।२
२. स्वकीयां कारणावस्थामतिक्रम्य परिदृश्यमानां जगदवस्थां प्राप्नोति,
सा०- १०।९०।२

अति - रोहत्

अतिक्रम्य उपरिस्थम्,
सा०- ९।१७।५

अति √रेज्

१. अत्यन्तमितस्ततश्चरन्तः कम्पन्ते,
वे०- १।१४३।३
२. अतिक्रम्य ... कम्पन्ते,
सा०- १।१४३।३

अति √वह्

१. वोढुमिच्छति,
स्क०- १।१०२।८ (सुष्ठु वहसि, धारयसीत्यर्थः), सा०- १।१०२।८ (अतिशयेन वोढुमिच्छसि), ३।९।३ (अतिशयेन वोढुमिच्छसि), सा०मु०- १।८१।५ (अतिशयेन वोढुमिच्छसि। सर्वस्य जगतो निर्वाहको भवसि), मु०- १।१०२।८ (अतिवोढुमिच्छसि)
२. अतीत्य सर्वास्त्वं महान् भवसि,
स्क०- १।८१।५

अति √री

अतिगच्छति,

वे०सा०मु०- ५।४४।७

अति √व्यध्

१. अति क्षिपति,

वे०- ४।८।८

२. अतिशयेन नाशयतु,

सा०- ४।८।८

अति-विद्धा

अतिविद्धानि। अतीत्य ताडितानि,

सा०- ८।९६।२

अति-विधे

१. अतिविधातुं शक्यम्,

वे०- ५।६२।९

२. अतिवेद्धुं शक्यम्,

सा०- ५।६२।९

अति-व्रजत्

१. सुष्ठु गच्छद्भिः,

स्क०- १।११६।४

२. अतिगच्छद्भिः,

वे०- १।११६।४

३. अतिक्रम्य गच्छद्भिः,

सा०मु०- १।११६।४

अति √शो

१. सुष्ठु तनूकरोति ... सुष्ठु निश्यतीत्यर्थः,

स्क०- १।३६।१६

२. अत्यन्तं तनूकरोति,

वे०- १।३६।१६

३. तनूकरोति अस्मान् प्रहरति,

सा०मु०- १।३६।१६

अति √स्क-स्कन्द

१. अति गच्छन्ति,

वे०- ५।५२।३

२. अतिक्रम्य गच्छति नित्या इत्यर्थः,

सा०मु०- ५।५२।३

अतिष्कदस्

अतिष्कन्दनादतिक्रमणाज्जातेन,

सा०- १०।१०८।२

अतिष्कदे

अतिस्कन्दनाय,

वे०सा०- ८।६७।१९

अतिष्ठत्

१. शीघ्रम्,

वे०- १०।८९।२

२. शीघ्रं गच्छन्तम्,

सा०- १०।८९।२

अतिष्ठन्ती

१. अनवस्थायिनीनाम् चलानाम्,

स्क०- १।३२।१०

२. अस्थानानाम्,

वे०- १।३२।१०

३. स्थितिरहितानाम्,

सा०- १।३२।१०

अति √स्था

१. अतिक्रम्य व्यवस्थितः ... सर्वतो व्याप्यावस्थितः,

सा०- १०।९०।१

२. अतिक्रम्य तिष्ठति, पराभावयति,

सा०- १०।६०।३

अति √सृज्

अतीत्य सृज्यन्ते,

सा०- ९।१०७।२५

अति √सृप्

अति गच्छति,

सा०- ८।१०२।२१

अति √तॄ

१. अतितरेम,
वे०- ६।११।६
२. अतिगच्छेम। अतिक्रामेम,
सा०- ६।११।६

अतिहाय

१. अतिक्रम्य,
वे०- १।१६२।२०
२. न्यूनातिरेकभावेन तत्तदङ्गमतिक्रम्य,
सा०- १।१६२।२०

अति √हृ

१. अत्यन्तं बिभर्षि,
वे०- ९।८६।२९
२. बिभर्षि,
सा०- ९।८६।२९

अति √इ

१. अतिगच्छति,
वे०-५।५३।१४, ६।४।५, ८।३२।२२ (इहि ... अतीत्य), ९।७२।३, ८५।९, ८६।७, ९६।१७, वे०सा०-८।३२।२१, ९।९६।६, १०।३१।९, ८५।३२
२. अतीत्य गच्छति,
सा०- ९।९६।१७, ९७।३१
३. अतिक्रामति तद्गतमन्धकारं तिरस्करोति,
सा०मु०- ६।४।५
४. अतिक्रम्य गच्छेम, तिरस्कुर्मः,
सा०मु०- ५।५३। १४
५. तद्वद् गमनप्रतिबन्धकानतीत्य शीघ्रमागच्छ,
सा०- ३।४५।१
६. अतिक्रम्य गच्छति,
सा०- ९।७२।३, ८५।९, ८६।७

अत्येतवै

१. अतीत्य गन्तुम्,
वे०- ५।८३।१०
२. अतिक्रम्य गन्तुम्,
सा०मु०- ५।८३।१०

अतीर्ण

धनम्,
सा०- ८।७९।६

अतूतुजि

१. अप्रयच्छन्तम्,
वे०- ७।२८।३
२. अदातारमयजमानम्,
सा०- ७।२८।३

अतूर्त

१. शत्रुभिरतीर्णः,
वे०- १।१२६।१
२. अतीरे,
वे०- १०।१४९।१
३. शत्रुभिरहिंसितम्,
वे०सा०मु०- ५।२५।५
४. केनाप्यहिंसितेऽत्वरमाणे वा नभसि,
सा०-१०।१४९।१
५. केनाप्यहिंसितः,
सा०- १।१२६।१

अतूर्तदक्ष

१. अहिंसितबलौ,
वे०- ८।२६।१
२. परैरहिंसितबलौ,
सा०- ८।२६।१

अतूर्तपथिन्

१. अतीर्णमार्गः,
वे०- ५।४२।१
२. अहिंसितगतिः,
सा०मु०- ५।४२।१

अतृदिल

स्वयमन्येनाभिन्नाः,
वे०सा०- १०।९४।११

अतृप

१. तृप्तिः रहिताः राक्षसाः,
वे०- ४।५।१४
२. अतृप्ता जनाः,
सा०- ४।५।१४

अतृषित

१. अपिपासवः,
वे०- १०।९४।११
२. तृष्णारहिताः,
सा०- १०।९४।११

अतृष्णुवत्

१. निन्द्रायाम् अनुपरतश्रद्धम्,
वे०- ४।१९।३
२. भोगेषु अतृप्यन्तम्,
सा०- ४।१९।३

अतृष्णज

१. असञ्जाततृष्णाः,
वे०- १०।९४।११
२. अनिस्पृहाः,
सा०- १०।९४।११

अतृष्यन्ती

१. तृषाऽत्र कारणभूतः श्रमो लक्ष्यते। अश्राम्यन्त्यः,
स्क०- १।१७।३
२. पूर्णकामाः,
वे०- १।७१।३
३. विषयान्तरतृष्णारहिताः,
सा०मु०- १।७१।३

अति √अर्ह्

१. उदारोऽप्यत्त्यन्तं पूजयति,
वे०- २।२३।१५
२. सर्वान् कामानतीत्य ... पूजयेत्,
सा०- २।२३।१५

अत्यवि

१. दशापवित्रमतिगच्छन्,
वे०- ९।१३।१
२. अतिदशापवित्रम्,
वे०- ९।६।५
३. अतिक्रान्तं दशापवित्रम्,
वे०- ९।४५।५ (अतिक्रान्तदशापवित्रम्), १०६।११ (अतिक्रान्तपवित्रम्), सा०- ९।४५।५, १०६।११ (अविशब्देन तद्रोमकृतं पवित्रमभिधीयते। अतिक्रान्त-पवित्रम्)
४. अविलोमभिर्निष्पादितं दशापवित्र-मित्यर्थः। तदतिक्रम्य गच्छतीत्यत्यविः,
सा०- ९।१३।१
५. दशापवित्रमतिक्रम्य,
सा०- ९।६।५

अति √अस्

१. अभिभवतु,
वे०- ७।१।१४
२. अतिभवतु,
सा०- ७।१।१४

अति-आ √या

१. सर्वान् आगमनप्रतिबन्धान् अतीत्यास्मद्यज्ञं प्रत्यागच्छतु,
उ०- १०।४४।१
२. अति गच्छति,
वे०- ५।७५।२ (अत्यागच्छतम्), १०।४४।१
३. अस्मद्यज्ञं प्रत्यागच्छतु,
सा०- १०।४४।१
४. अतिक्रम्यागच्छति,
सा०- ३।४३।२, सा०मु०- ५।७५।२

५. अतिक्रम्य अस्मान् प्रति आ याहि,
वे०- ३।४३।२
६. अतिक्रम्य सोमपानार्थं शीघ्रमागच्छ,
सा०- ३।३५।५
७. अतीत्यास्मानागच्छ,
वे०- ३।३५।५

अति ऋष्

अतिगच्छति,
वे०सा०- ९।१०७।१७

अत्यूर्मि

१. प्रवृद्धः,
वे०- ९।१७।३
२. अतिक्रान्ता ऊर्मयो यस्मात् सोऽत्यूर्मिः। अतिप्रवृद्धः
सा०- ९।१७।३

अथरी

१. अथर्यः स्त्रियः, मैथुनेऽधरा भवन्तीति स्त्रियः
वे०- ४।६।८
२. स्त्रियः,
सा०- ४।६।८

अथर्यु

१. अतनवन्तम्,
वे०- ७।१।१
२. आगम्यमतनवन्तं वा,
सा०- ७।१।१

अथर्वन्

१. अथर्वा नाम ऋषिः,
स्क०- १।८०।१६, ८३।५, वे०- ६।१६।१३ (अथर्वा ऋषिः), वे०सा०- ८।११।२ (अथर्वा ऋषिः), सा०- १।८०।१६, ८३।५, ६।१६।१३ (एतत्संज्ञकः ऋषिः), १०।१४।६ (अथर्वानामकाः), (एतन्नाम्नर्षिणा) १०।२१।५, (अथर्वा नामर्षिः) ९२।१०
२. अथर्वगोत्रेभ्य ऋषिभ्यः,
सा०- ६।४७।२४
३.आथर्वणकर्मकारिभ्यः। पुरोहितेभ्यः,
स्क०- ६।४७।२४
४. अचरेभ्यः अचञ्चलेभ्यः स्थिरभावेभ्यः,
स्क०- ६।४७।२४
५. अथर्वकुलजातेभ्यः,
वे०- ६।४७।२४
६. अथर्वपुत्रः,
उ०- १०।४८।२ (अथर्वऋषेः पुत्राय दधीच इति), वे०- १०।१२०।९, सा०- १०।४८।२ (अथर्वणः पुत्रस्य दधीचः), सा०- १०।१२०।९ (अथर्वणः पुत्रो बृहद्दिवाख्य ऋषिः)

अथ

१. अनन्तरम्,
उ०-१०।१६।२, उ०सा०- १०।१५।११, स्क०सा०-६।४०।१, ४, ५३।५, ६, स्क०सा०मु०- १।१०।३, १६।७, २४।१५, २६।९, ५४।९, ७६।३, ९२।१५, ९३।७, ९४।९, १०८।१, ११९।९, वे०सा०- ७।९८।५, सा०- १।१६३।१३, २।३६।३, ३७।५, ३।६।६, १७।३, ५, २८।५, २९।१०, ३१।७, ३२।१०, ३४।१०, ४७।२, ५३।३, ११, ४।१८।५, ११, २४।१०, ८।१०।५, ८९।२, ९६।७, ९।४।१, १०।१।७, १४।१०, १५।४, १०८।८, १२७।६, १४३।३, १४५।३, १८२।१, सा०मु०-१।४।३, ४७।३, ५९।२, ७५।२। ८१।८, ८७।४, १०२।१०, ६, १०८।११, १०९।२, ११४।९, ५।३०।९

२. आनन्तर्ये,
स्क०- १।४।३, ४७।३, ७५।२
३. अपि,
स्क०- ३।१३।३, वे०- ४।३५।४ (अपि च), १०।१०७।३ (अपि च), सा०- १।८७।४ (अपि च), १।१३६।१ (अपि च), २।३।९ (अपि च), ३।८।१, ३।१३।३ (किं च), ४।२०।९, वे०सा०- ४।३६।४ (अतः कारणात्), ७।११।४, ८।९।१४ (अपि च), ९।८१।२ (अपि च), ८६।२८ (अपि च), सा०मु०- १। ११७।१९ (अपि च)
४. सम्प्रति,
वे०- १।४।३, ८।१०।५, ९।८७।६
५. तथा
वे०-१।९३।७ (तथा सति), २।३८।१, ३।३।१, ८।९।१४
६. ततः,
वे०- १।७६।३, ११९।९, १३६।१, ६।१६।१८
७. एतस्मात्कारणात्,
स्क०- १।८१।८, १०२।१०, १०९।२, ११४।९, ११७।१९, वे०- १०।२७।२२
८. अतः कारणात्,
सा०- १।१३६।२, ३।३।१, ६।१६।१८, सा०मु०- १।१०२।६
९. अत ऊर्ध्वम्,
वे०- १।२४।१५
१०. किञ्च,
सा०- ३।१३।३
११. खलु,
सा०- ४।३५।३
१२. अधुना,
सा०- ४।३५।४, ८।४८।६
१३. एवं सति,
सा०- ६।५४।७, १०।१२९।६
१४. तथा कृत्वा,
वे०- ६।५४।७
१५. एतादृक्,
सा०- ८।१०२।१९
१६. इदानीम्,
सा०- ९।८७।६
१७. तदानीम् ,
सा०- १०।१६।१, २, २३।३, २७।२२

अथो

१. अनन्तरम्,
सा०मु०- १।२८।६, १।११३।१३
२. तथा सति,
वे०- १।२८।६
३. एतस्मात् कारणात्,
स्क०- १।११३।१३
४. अपि च,
वे०- १।१९१।१ (अपि वा), ३।६०।४, ६।७५।१५, वे०सा०- १।१५७।६, १०।६०।८, ८५।२, १३६।५, १३७।४, १५९।३, वे०सा०मु०-१।५०।१२, सा०- १।१६४।४६, १९१।१, २, ८।९१।६ (अथापि च), ९।३९।५, ६०।२, १०। ३९।५, ८५।४१, ९७।१६
५. च,
स्क०- १।५०।१२ (अथो शब्दश्चार्थे),
वे०- ९।३९।५
६. किञ्च,
सा०- ६।७५।१५
७. अतः,
सा०- १०।९७।९
८. तथा,
वे०- १०।९७।९

९. इत्थम्,
सा०- १०।१९०।३
१०. सर्वम्,
वे०- १०।१९०।३

√अद्

१. भक्षयति,
उ०सा०-१०।२८।३, ११, स्क०वे० सा०मु०-१।९४।३, वे०सा०-३।५२।७, १०।१५।११, सा०- १।१६४।२०, ४०, २।११।१३, १३।४, ३५।७, ३।३५।३, ८।१०२।२१, १०।१५।८, १५।१२, ६८।६, ७९।२, ४, ८६।१४, ८७, ९५।१४, ११०।११
२. भक्षयति उपयुङ्क्ते स्वीकरोति,
उ०- १०।२७।१३
३. अभक्षयत् अवधीत्,
सा०- १०।६८।६
४. खादति,
वे०- १।१४३।५, ३।३५।३
५. अशनम् कृतवान्,
वे०- १०।१५।१२
६. अशितवन्तः,
उ० १०।१५।१२

अत्तवे

१. अदनाय,
उ०-१०।१६।१२, वे०सा०- ८।४३।२९, सा०- ८।७७।८
२. अत्तुम्,
वे०- ८।७७।८, वे०सा०- १०।१६।१२
३. अशनाय,
वे०- १०।९२।३
५. भक्षणार्थम्,
वे०सा०- ३।३५।७, सा०- १०।९२।३ (भक्षणाय)

अत्र

१. अदनशीलैः,
वे०- १।१२९।८
२. भक्षकैः अस्मद्विरोधिभिः,
सा०- १।१२९।८
३. अमत्रम् अमात्रं परिमाणरहितम्,
सा०मु०- ५।३२।८

अत्रि

१. अत्रिकुलजातः,
वे०- ५।७।१०, ७४।१
२. अत्रिगोत्रस्य,
वे०- ५।२।६, (अत्रेः वृशस्य), सा०- ५।२।६ (अत्रिगोत्रस्य वृशस्य), ७।१० (अत्रिः तद्गोत्रस्य)
३. महर्षये,
सा०-१।१८०।४, (एतन्नाम्ने महर्षये) ८।७३।३, १०।८०।३, सा०मु०१।५१।३
४. ऋत्विज्,
सा०- ८।३८।८
५. अत्रिपुत्राः,
सा०मु०-५।२२।४, ७४।१ (अत्रेः पुत्रः)
६. अत्रिगोत्राः,
सा०मु०- ५।३९।५, ६७।५
७. अत्रिम् ऋषिम्,
उ०-१०।८०।३, स्क०- १।११८।७, वे०- १।११२।७, २।८।५, वे०सा०- ५।१५।५, ७।६८।५ (एतन्नामकादृषेः), सा०-१।११२।१६, ११९।६, ६।५०।१०, ८।५।२५, १०।१४३।३
८. अस्मत्पिता ऋषिः,
सा०- ५।७३।७ (अस्मत्पिता) ७८।४ (अस्मत् पिता), सा०मु०- ५।७३।६
९. शत्रूणामन्नानां वा भक्षकम्,
सा०- २।८।५

१०. *भक्षयित्रे अग्नये,*
सा०- १।११९।६

अत्रिवत्

१. *अत्रेरिव,*
स्क०- १।४५।३, वे० ५।५१।८
२. *अत्रिरिव,*
सा०- ५।७।८, (अत्रिरिव यजमानः),
सा०मु०- ५।२२।१
३. *अत्रेर्यथा,*
सा०- ५।४।९
४. *यथा ... अत्रि,*
वे०- ५।२२।१, ७२।१
५. *अत्रिणेव,*
वे०- ५।४।९
६. *अत्रिरिव। अत्रेर्यज्ञे यथा तथेत्यर्थः,*
सा०- ५।५१।८
७. *अत्रिर्यथा यज्ञे रमते तद्वत्,*
सा०- ५।५१।८
८. *अत्रेरिव, अत्रेर्यज्ञे यथा तथा,*
मु०- ५।५१।८
९. *अस्मद्गोत्रप्रवर्तकोऽत्रिरिव,*
सा०मु०- ५।७२।९

अत्रिन्

१. *अदनशीलः राक्षसः*
वे०-१।२१।५, ९४।९, ७।१०४।१ (अदनशीलान्), ९।१०५।६ (अदनशीलाः), वे०सा०-९।१०४।६ (अदनशीलान्), १०।३६।४ (अदनशीलान्), सा०-१।६।५१ (अदनशीलं राक्षसादिकम्), ७।१०४।१ (अदनशीलान् तान् राक्षसान्), १०४।५, ९।१०५।६ (अदनशीलाः राक्षसाः)
२. *अदनशीलमसुरम्,*
वे०- ६।५१।१४
३. *अदनशीलं सरीसृपश्वापदप्रेतपिशाचादिकम्,*
उ०-१०।३६।१४
४. *भक्षकाः राक्षसाः,*
सा०मु०- १।२१।५
५. *भक्षयितारो हिंसितारोऽस्माकम्,*
स्क० - १।२१।५, ६।५१।१४ (भक्षयितारम्। स्वभोगप्रधानमित्यर्थः)
६. *अत्तारो राक्षसादयः,*
सा०- ६।१६।२८, ८।१२।१, १९।१५,
सा०मु०-१।९४।९ (अत्तारं राक्षसादिकम्)
७. *अत्तारं शत्रुं तमोरूपम्,*
सा०- १०।११८।१
८. *राक्षसाः,*
वे०- ८।१२।१, १९।१५, १०।११८।१,
सा०- ७।१०४।५
९. *अत्तारः भक्षयितारः। विनाशयितारोऽस्यामित्यर्थः,*
स्क०- १।९४।९

अदत्

१. *मोदकादिकठिनं भक्षयत्,*
उ०- १०।३७।११
२. *दंशनं कुर्वते,*
वे०- १।१८९।५
३. *भक्षयन्,*
उ०-१०।७९।६ (भक्षयन् देवपितृमनुष्यभोजी च सन्नित्यर्थः।), वे०-१०।४।४
४. *अदन्तकाय शृंगादिभिर्घातिने,*
सा०- १।१८९।५
५. *भक्षणीयं भक्षयत् ,*
सा०- १०।३७।११
६. *हवींषि भक्षयन्,*
सा०- १०।४।४

अदान

अद्यमानम्,
वे०सा०- ४।१९।९

अद्मन्

१. अन्नं तृणगुल्मादिकम्,
वे०- १।५८।२
२. अदनीयं तृणगुल्मादिकम्,
सा०मु०- १।५८।२

अद्मसद्

१. अद्यते इति अद्म अन्नम्। तस्य पाकाय गृहे सीदति इति अद्मसत् पाचिका योषित्,
सा०- १।१२४।४
२. अद्मेति गृहनाम ... तत्र सीदतीत्यद्मसत् जननी,
सा०- १।१२४।४
३. सूदस्त्री इवान्ने सीदन्ती,
वे०- १।१२४।४
४. हविषि सीदन्,
वे०सा०- ८।४४।२९
५. अद्मन्यन्ने हविषि सीदन्तीत्यद्मसद ऋत्विजः,
सा०- ७।८३।७
६. हविषि सीदताम्,
वे०- ७।८३।७
७. स्वस्थाने सीदन्तः,
वे०- ६।३०।३
८. अद्म अदनीयमन्नम् तदर्थं सीदन्तः पुरुषाः,
सा०- ६।३०।३
९. अद्म अन्नं तत्र ये निषण्णाः औदारिका आत्मरम्भयः,
स्क०- ६।३०।३
१०. अन्नस्य भजनाय,
वे०सा०- ८।४३।१९

अद्म-सद्मन्

१. अन्नेषु सीदन्,
वे०- ६।४।४
२. अद्मसु अदनीयेषु हविःषु सीदन् हविःस्वीकरणायोपविशन्,
सा०मु०- ६।४।४

अद्रि

१. ग्रावाणः,
उ०-१०।७६।८, उ०वे०सा०- १०।७६। ७, वे०- १।८८।३, १०९।३, १३५।२, ९।३०।५, १०।७६।२, ९४।१३, १०४।२, वे०- १।१३७।१, ३, १४९।१, २।१६।५, ३।१।१, ६।४०।२, ७।६८। ४, ८।८२।५, ९।११।५, वे०सा०- १।१३५।५, २।३६।, ४।४५।५, ६। ४८।५, ६३।३, ७।२२।१, ४, ८।११७, ४।१३, ६३।२, ९।२४।५, २६।५, ३२।२, ३८।२, ३९।६, ५०।३, ६३।१३, ६५।१५, ६६।२९, ६७।३, ६८।९, ७१।३, ७५।४, ७९।४, ८०।५, ८६।२३, ३४, १०१।३, ११, १०७।१०, १०९।१८, १०।९४।८, ११, वे०सा० मु०- ५। ४०। १, ४३।४, सा०- ३।४४। ५, ५३।१०, सा०मु०- १।१२१।८
२. अभिषवग्रावाणः,
उ०- १०।७६।४, स्क०- १।८८, ११८। ३, ६।६३।३, स्क०वे०- १।१२१। ८, वे०- ३।४१।२, ५३।१०, ७।६८।४, ९।११।५, ३०।५, १०।७६।२, सा०- १।१४९।१, २।१६।५, सा०मु०- ५। ४३।४, ४५।७

३. अभिषवसाधनैर्ग्रावभिः,
सा०- १।१३०।२, १३५।२ (अभिषवसाधनैः), १३७।१, ३, १३९।१०, ८। ८२।५
४. अभिषूयमाणं ग्रावभिः,
वे०- १।१३०।२
५. सोमाभिषवे प्रवृत्तं ग्रावाणम्,
सा०मु०- १।८८।३
६. अभिषवसाधनभूता ग्रावाणः,
सा०- १।१०९।३
७. अभिषवार्थं ग्रावाणम्,
वे०- ३।४१।२, सा०- ६।४०।२ (अभिषवार्थो ग्रावा)
८. ग्रावसमूहः,
उ०- १०।७६।२
९. पर्वतः,
उ०- १०।२८।९ (पर्वतं हिमवदादिकम्), ४५।६, स्क०- १।७३।६ (मेरुनामा पर्वतः), ९३।६, ६।४८।५, स्क०वे० सा०मु०- १।११७।१६, स्क०सा०मु०- १।७०।२, वे०- ७।३५।३, सा०- ४।१। १४ (पणिभिरपहृतानां गवां निरोधकं पर्वतम्), ४।१।१५, ३।११, ६।१७।५, ३२।२ (गवामदर्शनाय वलेन स्थापितं पर्वतम्), ६२।७ (मार्गे स्थितं पर्वतम्), ८।८८।३, १०।२८।९ (हिमवदादिकं पर्वतम्), ८९।६, सा०मु०- १।७३।६, ५।८५।२
१०. पर्वताभिमानिनो देवाः,
सा०- ६।६२।७
११. पर्वतप्रमुखं सर्वं जगत्,
सा०मु०- १।७।३
१२. दुर्गं पर्वतम्,
स्क०- १।६२।३, ४, ७१।२

१३. शिलोच्चयम्,
वे०- १।७१।२, ३।३१।६, ३२।१६, ४। १।१४ (गवामावरणं शिलोच्चयम्), १।१५ (शिलोच्चयं दृढम्), २।१५, ३।११, १६। ८, २१।६, ६।३९।२, ६२।७ (शिलोच्चयं मार्गस्य निरोधकम्), ७।७९।४, ८।८८।३, सा०- ६।३९।२ (वलेन गोपिधानाय निर्मितं शिलोच्चयम्), १०।६।११ (वलेनाधिष्ठितं शिलोच्चयम्), ६८।११
१४. शैलः,
वे०-१।६२।३ (गवावरणं शैलम्), सा०- ३।३२।१६
१५. वज्रः,
उ०- १०।७८।६, स्क०- १।५१।३ (अद्रिविकारत्वात् अद्रिर्वज्रः अत्राभिप्रेतः। पाषाणमयं वज्रम्।), ६।३९।२ (अद्रिरादरणात् अद्रिविकारत्वाद् वा वज्रोऽत्राद्रिरुच्यते), वे०सा०मु०- १।५१।३, सा०- १।५१।३ (अत्ति भक्षयति वैरिणम् इति अद्रिः वज्रः), १०।७८।६ (वज्राद्यायुधानीव)
१६. आयुधानि,
वे०- १०।७८।६
१७. आद्रियमाणस्य,
वे०-१।११८।३, वे०सा०- ८।७२।११
१८. आदरं कुर्वतः स्तोतुः,
सा०-३।५८।३ (आद्रियन्तौ पत्नीयजमानौ), ७।३९।१ (आद्रियन्तौ श्रद्धावन्तौ पत्नीयजमानौ), सा०मु०- १।११८।३
१९. आद्रियते सर्वैरित्यद्रिः स्तोताः,
सा०- ३।५८।३
२०. आदरणीयाः,
वे०- १०।९४।१, सा०- १०।९४।१ (आदरणीया दृढाः)

२१. आदरणीयं वज्रेण छेत्तव्यम्,
सा०मु०- १।६२।४
२२. आदरयितारौ,
स्क०- १।१०९।३
२३. आदृणाति अमित्रान्,
वे०- १।७३।६
२४. शत्रूनादृणन्तौ हिंसन्तौ विदारयन्तौ ताविन्द्राग्नी,
सा०मु०- १।१०९।३
२५. आदरणं कुर्वतः,
वे०- १।१३९।१०
२६. आदर्तारौ,
वे०- ७।४२।१
२७. अत्तारमसुरम्,
सा०मु०- १।६२।३
२८. अद्यतेऽस्मिन् पटलादिकम्,
सा०- १।६२।४
२९. ग्राववन्तो यजमानाः,
सा०- १।१४९।१
३०. मेघम्,
उ०-१०।४५।६, स्क०- १।११७।१६, ६।६२।७

अद्रिजा

अद्रावुदयाचले जातः। एवं महानुभावः आदित्यः,
सा०- ४।४०।५

अद्रि-जूत

१. शिलोच्चयेनाकृष्टः,
वे०- ३।५८।८
२. स्तोतृभिराकृष्टः,
सा०- ३।५८।८

अद्रि-दुग्ध

१. अभिषवग्रावभिः क्षारिताः,
स्क०- १।५४।९
२. ग्रावदुग्धः,
वे०- १।५४।९, ९।९७।११
३. ग्रावभिर्दुग्धोऽभिषुतः सोमः,
सा०- ९।९७।११
४. अद्रिभिर्ग्रावभिरभिषुता,
सा०मु०- १।५४।९

अद्रि-बर्हस्

मेघैः परिवृद्धाः,
उ०- १०।६३।३, वे०सा०- १०।६३।३ (परिवृद्धमेघाः), सा०- १०।६३।३ (मेघैः परिवृढा, प्रवृद्धाः)

अद्रि-बुध्न

१. अद्रिर्बन्धको यस्य तादृशः,
सा०- १०।१०८।७
२. मेघबद्धो, मेघाकारेण बलासुरेण निहितः,
वे०- १०।१०८।७

अद्रि-भिद्

१. मेघानां भेत्ता,
स्क०- ६।७३।१, सा०- ६।७३।१ (मेघानां विदारकः)
२. शिलोच्चयभित्,
वे०- ६।७३।१
३. पणिभिर्विरचितानां शिलोच्चयानां भेत्ता,
सा०- ६।७३।१

अद्रि-मातृ

१. मेघमातरम्,
वे०- ९।८६।३
२. अद्रिर्मेघः। तेन तज्जन्यमुदकं लक्ष्यते। तस्य निर्मातारम्,
सा०- ९।८६।३

अद्रि-वत्

१. वज्रवन्,

स्क०- १।८०।१४ (अद्रिविकारत्वाद-द्रिर्वज्रः तद्वन्), १२१।२० (वज्रोऽत्राद्रि विकारत्वादादरणाद्वा अद्रिरुच्यते, तद्वन्), ६।४६।२ (आदरणाद् अद्रिविकाराद्वा अद्रिर्वज्रः तद्वन्), ४५।९ (अद्रिर्वज्रः तद्वन्), वे०- १।१०।७ (अद्रिरादृणात्य-मित्रानिति वज्रः तद्वन्), ६।४५।९, वे०सा०मु०- ५।३६।३, सा०- १।१३३। ६ (अद्रिर्वज्रः तेन तद्वन्), ३।३७।११ (अत्ति भक्षयति शत्रूनिति अद्रिर्वज्रः), ४।३२।५, ६।४५।९ (आदृणात्यनेने-त्यद्रिर्वज्रः), ४६।२ (आदृणात्यनेने-त्यद्रिरशनिः तद्वन्), ८।१।५, १३, २।४०, ६।२२ (आदृणात्यनेनेत्यद्रिर्वजः। तद्वन्), १३।२६, १५।४, २४।६, ११, ४६।२ (अत्ति शत्रुमित्यद्रिर्वजः। तद्वन्) ४६।११, ६१।४ (अद्रिर्वज्रः तेन तद्वन्), ६२।११, ६४।१, ६८।११, ७६।८, ८०।४, ९२।१८ (अद्रिर्वज्रः तेन तद्वन्),९२।२७, ९७।९, १०।१४७।१, सा०मु०- १।८०। १४, ५।३५।५, ३८।३, ३९।१, ३, मु०- १।१२१।१०

२. वज्रिन्,

स्क० १।१०।७, (अद्रिरिति पर्वतनाम ... पर्वतविकारो वज्रोऽप्यद्रिरुच्यते, आदरणाद्वा मेघानामसुराणां च वज्रिन्), स्क०वे०- १।११।५, वे०- १।८०।१४, १२९।१०, १३३।२, ६, ४।३२।५, ५।३५।५, ३८।३, ७।२०।८, ८।१।५, १३, २।४०, १३।२६, १५।४, २४।६, ३६।६, ४६।११, ६१।४, ६२।११, ६४।१, ६८।११, ७६।८, ८०।४, ९२।१८, २७, ९७।९, १०।१४७।१, वे०सा०- ३।४१।१, ८।९८।८, २१।७, ४५।११

३. अद्रिवः,

वे०- ५।३९।३, सा०- ७।२०।८, ८।६। २२

४. अद्रिमन्,

सा०- ८।३६।६

५. आयुधवन् वरुण,

वे०- ६।४६।२ (आदृणाति अमित्रानिति तद्वन्। आयुधवन्) वे०सा०- ७।८९।२

६. वैरिणां भक्षकः,

सा०- १।१३३।२

७. अद्रेः मेघस्य आदर्तः इन्द्र,

सा०- १।१३३।२

८. आदर्तः ... शत्रूणाम्,

सा०- १।१२९।१०

९. भक्षकः ... शत्रूणाम्,

सा०- १।१२९।१०

१०. वज्रयुक्तेन्द्र,

सा०मु०- १।११।५

११. पर्वतोपलक्षितवज्रयुक्तेन्द्र,

सा०मु०- १।१०।७

१२. ग्राववन्,

वे०सा०- ९।५३।१

१३. वाहनरूपमेघयुक्तः,

सा०मु०- १।८०।७

१४. सोमाभिषवग्रावाणः, तद्वन्,

स्क०- १।८०।७

१५. मेघानां हन्तः,

स्क०- १।८०।७

१६. अद्रिरादृणात्यनेन अपि वा अत्तेः स्यात्,

वे०- ५।३९।१ (या०- ४।४)

१७. इन्द्र,

वे०- ३।३७।११

अद्रि-षुत

ग्रावभिरभिषुतः,
वे०सा०- ९।७२।४

अद्रि-संहत

१. ग्रावभिः संहतम्,
वे०- ९।९८।६
२. ग्रावभिरभिषुतम्,
सा०- ९।९८।६

अद्रि-सानु (नो)

१. अद्रयः अभिषवग्रावाणः ते सानवस्ते-समुच्छ्रिताः सोमाभिषवार्थमुत्क्षिप्ताः यस्याः साद्रिसानुः, या त्वं सोमैरिज्यस इत्यर्थः,
स्क०- ६।६५।५
२. आद्रियमाणसमुच्छ्रितदेशे,
वे०- ६।६५।५
३. आदृतसानो,
सा०- ६।६५।५

अन्न

१. अदनीयम्,
उ०सा०-१०।६९।२, सा०- १।१४०।१२ (आज्यपुरोडाशसोमरूपेण त्रिप्रकारमन्न-मदनीयम्), १०।९१।५ (अदनीयं स्थावर-लक्षणम्), ९१।७ (अदनीयानि वनस्प-त्यादीनि स्थावराणि)
२. भक्ष्यम्,
सा०- २।३५।११
३. सोमलक्षणम्,
वे- ६।४१।३ (सोममात्मनोऽन्नम्), सा०- २।३५।५ (सोमाख्यम्), ३।३६।८ (भक्षणीयानि सोमादीन्यन्नानि), ५०।१
४. हविर्लक्षणम्,
उ०- १०।२९।५ (पुरोडाशाद्यन्नैः), १०।७९।५ (हविरूपम्), वे०-१।६१।७ (चरुपुरोडाशादीनि), १०।२९।५, वे० सा०- १०।५९।२, सा०- २।१०।४, ३५।७, १०, १२, ४।२।७ (हविर्लक्षणं पुरोडाशादिकम्, ११।१ (पुरोडाशादिरूपं हविः), १२।१, ५।८।५ (चरुपुरोडा-शादीनि), १०।२९।४, ५।४ (पुरोडा-शादिभिः), २९।५ (पुरोडाशादिहविर्भिः), ६१।४, सा०मु०- १।६१।७ (धाना-करम्भादिहविर्लक्षणान्यन्नानि), ६।४।५
५. घृतान्नानाम् अवयवभूतैः स्वांश-लक्षणैः,
उ०- १०।५।४
६. आहारे शरीरस्थितिनिमित्ते,
उ०- १०।२९।४
७. आज्यौषधसोमरूपम्,
वे०- १।१४०।२
८. प्राणिनां भोग्येनान्नेन,
सा०- १०।९०।२
९. सोमाख्यैः,
उ०सा०- १०।२८।११
१०. दन्तैः,
वे०- १०।२८।११
११. अदनैः,
वे०- १०।२८।११
१२. तज्जन्येनोदकेन संपादितमन्नम्,
सा०- १०।११३।८
१३. घासम्,
वे०- २।२४।१२ (घासलक्षणमन्नम्),
सा०- २।२४।१२
१४. आज्यमध्वादीनि दशविधान्यन्नानि,
सा०- १।१२२।१३
१५. अन्नानि व्रीह्यादीनि,
सा०- १।१२७।४
१६. अन्नानि काष्ठादीनि,
वे० ९।१२७।४, ४।१।१० (ककाष्ठा-

दीन्यन्नानि), सा०- ४।७।१० (अन्न-रूपाणि काष्ठादीनि) ७।११ (काष्ठा-दीनि), ३।४ (काष्ठादीनि)

अन्न-काम

अन्नं याचमानाय,
सा०- १०।११७।३

अन्न-वृध्

अन्नस्य वर्धकम्,
वे०सा०- १०।१।४

अन्नियत्

अन्नमिच्छते,
वे०सा०- ४।२।७

आदन

१. भक्षणस्थाने,
स्क०- ६।५९।३
२. घासेऽदनीये,
वे०- ६।५९।३
३. भक्षणीये घासे,
सा०- ६।५९।३

अदक्षिण

१. दक्षिणावर्जिताः,
वे०- १०।६१।१०
२. दक्षिणारहिताः,
सा०- १०।६१।१०

अदत्रया

१. जिह्वा,
वे०- ५।४९।३, सा०- ५।४९।३ (अत्तीत्यदत्र जिह्वा)
२. अदनीयानि,
सा०मु०- ५।४९।३

अदब्ध

१. अहिंसितम्,
स्क०- १।९५।९, स्क०वे० - १।२४।१३, ७६।२, ८९।५, स्क०वे०सा०- ६।४८।१०, ५१।१, ७६।५, ७१।३, स्क०वे०सा०मु०- १।२४।१०, ८९।१, वे०- २।९।६, २७।१३, ३।१।६, ५४।१६, ४।२।१२, ५५।३,७।३६।२, ८।६७।१३, ८७।५७, ९।७७।५, वे०सा०- १।१२८।१, १४३।८, २।२७।३, २७।९, ४।४।३, ५०।२, ५।१९।४, ६।५१।४, ७।६०।५, ६६।६, ८।१८।२, ४४।२०, ७८।६, १०१।६, ९।८५।३, ९७।१९, १०७।२, १०।७५।७, ८७।२४, १२८।६, वे०सा०मु०- ६।७।७, ८।७, सा०-१।१७३।१, ३।५४।१८, ६।५१।९
२. अहिंसितः वरुणः,
सा०- ७।३६।२, सा०मु०- १।२४।१३
३. अहिंसितः पूषा,
सा०मु०- १।८९।५
४. अहिंसिता मातृभूता अपोऽग्निः,
सा०- ३।१।६
५. कैश्चिदप्यहिंसिता देवाः,
सा०- ९।९७।५७
६. अनुपहिंसितैः,
स्क०- ६।५१।४, वे०- १।९५।९, १७३।१, ३।५४।१८, ६।५१।९
७. केनचिदपि हिंसितुमशक्यैः,
स्क०-६।४८।१०, ७१।३ (केनचिद्धिंसितुं न शक्यते)
८. केनाप्यतिरस्कृतः,
सा०- २।९।६, ३।५४।१६, ४।२।१२
९. महत्त्वादिगुणैरनभिभूता,
उ०- १०।७५।७
१०. अहिंस्यः,
सा०- ९।७७।५, सा०मु०- १।७६।२
११. अहिंसकाः,
सा०- ८।६७।१३

१२. अदम्भनीये,
सा०- ४।५५।३
१३. सपत्नैरबाधितः,
सा०- २।२७।१३

अदब्ध-धीति

१. अनुपहिंसितकर्मणः,
स्क०वे०- ६।५१।३
२. अहिंसितकर्मणः,
सा०- ६।५१।३

अदब्धव्रत-प्रमति

१. स्तोतॄणां हिंसितानि व्रतानि कर्माणि प्रमतयश्च येन स दब्धव्रतप्रमतिः अनेवंविधः,
वे०- २।९।१
२. अहिंसितानि व्रतानि कर्माणि यस्याः सा अदब्धव्रता प्रमतिः प्रकृष्टा बुद्धिर्यस्य सः,
सा०- २।९।१

अदभ

१. हिंसारहितौ,
वे०- ५।८६।५
२. अहिंस्यौ,
सा०मु०- ५।८६।५

अदभ्र

अनल्पं धनम्,
वे०सा०- ८।४७।६

अदय

निर्दयः,
वे०- १०।१०३।७ (दयारहितः),
सा०- १०।१०३।७

अदस्

१. इदम्, एतत्,
स्क०- १।२३।१७ (इमाः), १०।९।२, ६।५६।३ (इदम्), वे०-१।१०५।३ (एतत्), १।१०, ६।५६।३ (एतत्), ८।२६।१७ (अमुष्मिन्), ५।१६ (अयम्), १०।१५५।३ (एतत्), वे०सा०-९।६५।२२ (अस्मिन्), १०।८५।३०, ८९।१४, १३५।२ (अनया), वे०सा०मु०- १।२९।५ (अनया)
२. अमुत्र,
वे०- १०।१८६।३
३. त्वम्,
वे०सा०- १०।१४७।१ (त्वम्), सा०- ८।९१।२ (त्वम्), १०।१३२।४ (अमुं नभसि दृश्यमानं त्वाम्), सा०मु०- १।१०५।५ (यूयम्)
४. अस्मदीयम् ,
सा०मु०- १।१०५।३

अमुतस्

१. अज्ञाताद् देशात्,
वे०- १।१७९।४
२. वसन्तादिकालात्,
सा०- १।१७९।४
३. द्युलोकात्,
सा०- ९।८१।२
४. दिवः,
वे०- ९।८१।२
५. भर्तृगृहे,
सा०- १०।८५।२५
६. पतिकुले,
वे०- १०।८५।२५
७. अमुष्मादपि लोकात्,
सा०- १०।१५५।२

अदाभ्य

१. अहिंस्यः,
उ०- १०।११।१, २५।१, स्क०- १।३४।

१०, स्क०वे०- १।२२।१८, वे०- १।
१५५।१, ३।११।५, ४।५३।४, ८।७।१५,
९।२६।४, वे०उ०सा०- १०।२६।७,
वे०सा०- ५।५।२, ८।६१।१२, ८५।५,
१०१।१२, ७०।३, ९।८५।६, सा०-
२।३४।१०, ५४।४, ११८,६, ७, ७।
१५।१५, १०४।२०, ८।५।१२, सा०मु०-
५।७५।८, मु०- ५।७५।७

२. अहिंस्योऽग्निः,
सा०- १०।११।१

३. अहिंस्यौ पूज्यौ,
सा०- ५।७५।७

४. अहिंसितः,
वे०-२।३४।१०, ३।२६।४, ५।७५।७,
८, ७।१५।१५, ६६।१७, ३७।५, १०।
११।१, २५।७, ५४।४, वे०सा०- ९।
१०३।४, ९३।२, सा०- ४।५३।४

५. अदम्भनीयौ,
सा०- ७।६६।१७, ९।२६।४, २८।६,
३७।५

६. अदम्भनीयौ परैरनभिभाव्यौ,
सा०- १।१५५।१

७. हिंसितुमशक्यः,
वे०- ६।६२।६, वे०सा०- ९।७५।२
(रक्षोभिर्हिंसितुमशक्यः) सा०- ८।७।१५
(केनापि हिंसितुमशक्यस्य मरुद्गणस्य),
सा०मु०- १।२२।१८

८. अहिंसनीयः,
सा०मु०- १।३१।२०

९. शत्रुभिः अभिभवितुमशक्यम्,
वे०- ७।१०४।२०, वे०- ८।५।१२
(अनभिभवनीयम्)

१०. केनाप्यतिरस्कार्याः,
सा०- ३।२६।४, ६२।६ (केनाप्यतिर-
स्करणीयम्)

११. अंशुभ्यः,
वे०- ९।५९।२

अदामन्

१. अदातारो हविषामयज्वानः,
स्क०- ६।४४।१२

२. शोभनदानः,
वे०- ६।२४।४

३. स्वयमन्यैरबद्धाः,
सा०- ६।२४।४

४. हविषामदातारः,
सा०- ६।४४।१२

५. अदातारोऽयजमानः,
वे०- ६।४४।१२

अदाशु

१. अदानशीलान् यजमानान्,
वे०- १।१७४।६

२. अदातॄन्,
सा०- १।१७४।६

अदाशुरि

अदानशीलः,
वे०सा०- ८।४५।१५

अदाश्वस्

१. अयजमानस्य,
वे०सा०- ७।१९।१

२. अप्रयच्छतः,
वे०सा०- ९।२३।३

अदाशूष्टर

१. अत्यन्तमदातुः,
वे०- ८।८१।७

२. अत्यन्तमदातृतमस्य,
सा०- ८।८१।७

अदिति

१. अखण्डनीया,

वे०- १।१५२।६ (दीनम्), ४।१।२० (अक्षीणः), २।११ (अदेयम्) ८।४८।२, वे०सा०- ८।१९।१४ (अग्निः), सा०- १।१५२।६ (अखण्डितमन्यूनम् एतत्कर्म), १८५।३ (अखण्डनीयायाः पृथिव्याः तादृशस्य अन्तरिक्षस्य च सम्बन्धि), २। १।११ (अखण्डयिता परिपालयिता यद्वा अदीना भूमिरसि।), २७।७, ४।२।११ (अदातुः), ५५।१, ५।६२।८, ६।५०।१, ७।८८।७, ८।४७।९ (अखण्डनीया देवमाता), १०।११।२ (अखण्डनीयोऽग्निः), १००।१-११, १३२।६, सा० मु० - १।२४।१५, ८९।३, ९४।१५ (अखण्डनीयं तमेवाग्निम्।) (वे०- १।९४। १५ अखण्डितः), ९४।१६, ५।४९।३

२. अदीना,

उ०- १०।११।२७ (अदीनोऽग्निः), ३९। ११, ६३।१० (अनुपक्षीणान्) (अदीनौ अदीनाकारौ अनुपक्षीणौ), उ०सा०- १०। ११।१ (अक्षीणयागक्रियस्य), स्क०- १।२४।१। (महते अदीनत्वाय), ४७।२ (अनुपक्षयवचनः), ८९।१० (अदीनानि अनुपक्षीणानि नित्यानीत्यर्थः), ९४।१५ (अदीनः क्षयवर्जितः), ११३।१९ (अदीनत्वात् समग्रज्योतिरुच्यते), वे०- १।१५२।६ (दीनम्), ४।३।८ (अदीनाय वायवे), ५।४४।११, ६२।८, ९।९६।१५ (पशोः), १०।११।१, वे०सा०-७।८७।७ (अदीनस्य वरुणस्य), १८।८, १०।९२। १४, वे०सा०मु०- १।७२।९, ८९।३, सा०- १।९८।३, १६६।१२, १३६।३ (अदीनां सम्पूर्णलक्षणाम्), २।१। ११ (अदीना भूमिः), २७।७, ४।३।८ ४।५५। ३, ७, ५।४६।६, ६।५१।३, ११ (अदीनां देवमातरम्), ७।३९।५ (अदीनां पृथिवीम्), ४०।४ (अदीना देवमाता), ८२।१० (अदीनायाः देवमातुः), ८३।१० (अदीनां देवमातरम्), १०१।१५, ८।२७।५ (एतन्नामिके देवि), ९।६९।३ (अदीनायाः पृथिव्याः उत्पन्ना ओषधीः), ७४।५, ९६।१५ (गोनामैतत्। अदीनायाः गोः), ९७।५८ (एतन्नामिके देवि), १०। ६३।२ (अदीनात् द्युलोकात्), ६३।३,१०, १३२।६ (अदीना अखण्डनीया वा), सा०मु०- ५।३१।५, ५९।८, ४४।११ (अदीनोऽतिसमृद्धः)

३. पृथिवी

उ०- १०।७०।७ वेदिलक्षणा पृथिवी), ११०।४ (वेदिलक्षणा पृथिवी), उ०सा०- १०।५।७, वे०- १।४३।२, १३६।३ (वेदि लक्षणां भूमिम्), ४।१२।४, ५। ८२।६, ५९।८, ९।६९।३ (भूमिः), १०। ११०।४, वे०सा०- १।१६६।१२, ९। ७४।३, वे०सा०मु०- १।२४।१, सा०- १।२४।२, ४।१।२०, १२।४ (भूमिः), ५।५९।८ (भूमिः), ७।३९।५ (अदीनां पृथिवीम्), ८८।७, ९।२६।१, ६९।३ (अदीनायाः पृथिव्याः), ७१।५ (भूमिः), ७४।५, १०।६४।५, ७०।७ १३२।६ (अदितिः अदीना अखण्डनीया वा भवति। सैव भूमिः), सा०मु०- १।२४।५, ४३।२ (भूमिः), ८९।१०, ५।६२।८ (भूमिः), ८२।६ (भूमिः)

४. देवता

उ०- १०।६३।२,३,५,१७, ६४।५ (प्रातस्तनीसंध्या-नैरुक्त), १०।७२।४,

उ०सा०- १०।६५।९, ६६।३, स्क०- १।२४।१, १५ (वाङ्नाम), ७२।९, ६।६७।४, स्क०सा०मु०- १।८९।१०, स्क०-१।९४।१५ (तच्छब्देनेदं सोऽयमित्यभिसम्बन्धात् पुत्रस्य अग्नेः अभिधानम्। अदितेः पुत्र इत्यर्थः), वे०सा०मु- १।११३।१९, सा०- १।१६६।१२ (अग्निः), ४।१।२० (अदितिर्देवमाता तद्वत् देवानां पोषकः। यद्वा विश्वेषां देवानां भूस्थानीयः आधारभूतः इति यावत् (अग्निः)), ३।८ (देव्यै), २५।३, २५।५ (इन्द्रमाता), ५५।३, ७, ६।५१।३,४,११, ६७।४ (देवी), ७।४०।४, ८२।१०, ८३।१०, ८।६७।१०, १०।१२।८, ३६।३ (देवी), ६४।१३, ९२।१४, सा०मु०- १।८९।३, ९४।१७, ९८।३, ५।४२।२ (देवता), ४६।६, ५१।१४ (देविः), ६९।३, मु०- १।१०६।७

आदितेय

अदितेः पुत्रम्,

सा०- १०।८८।११

आदित्य, त्या

१. अदितेः पुत्रः,

उ०वे०सा०- १०।७७।२, उ०- १०।६५।९, स्क०- १।५०।१३ (अदितेः पुत्रः सूर्यः), स्क०वे०सा०मु०- १।२४।१३, १५, स्क०सा०मु० - १।९४।३ (अदितेः पुत्रान् सर्वान् देवान्), वे०- २।२८।१, ३।५४।१०, ५९।२,३, ८।२७।६ (इन्द्रादयः), ९।११४।३, वे०सा०- १।१३६।६, ४।१।२, ७।८४।४, ८।६७।१८, १०१।११, सा०- १।१४।३ (आदितेरपत्यानि आदित्याः), १८८।४, २।१।१३ (अदितेः पुत्राः इन्द्रादयः), २७।१-५, २७।१३ (अदितेः पुत्राणां मित्रादीनाम्), २८।४ (अदितेः पुत्रो वरुणः), २९।१, ४१।६, ३।५४।२० (अपत्यभूतैः आदित्यैः), ६।५१।४, ७।५१।१ (अदितेः पुत्राणामेतत्संज्ञकानां देवानाम्), ५१।३, ६०।४ (अदितेः पुत्राः देवाः), ८५।४ (अदितेः पुत्राविन्द्रावरुणौ), ८।९।१२ (अदितेः पुत्राणां मित्रादीनाम्), १८।१, १८, २७।६ (अदितेः पुत्राः मरुदादयो देवाश्च), ३१।१२ (अदितेः पुत्राः देवाः), ९।११४।३ (अदितेः पुत्राः धात्रादयो मार्तण्डवर्जिताः), १०।६३।३ (अदितेः पुत्राः देवाः), ६३।५, ८५।१, ८५।२ (अदितेः पुत्राः इन्द्रादयः), १२६।५ (अदितेः पुत्राः वरुणादयो देवाः), १४१।३ (अदितेः पुत्राणां मित्रादीनाम्), १५७।२, १५७।३ (अदितेः पुत्राणां मित्रादीनाम्), सा०मु०-१।१०६।२,१०७।२ (स्वपुत्रैः), ५।५१।१२ (अदितेः पुत्रान् सर्वान् देवान्)

२. वरुणः,

सा०मु०- १।२५।१२

३. द्वादशादित्याः,

सा० - २।३१।१ (धात्रर्यमादिभिर्द्वादशभिः), ३।८।८, २०।५ (द्वादशादित्याः), ५।५१।१२ (अरुणादयो द्वादशः)

४. देवाः,

सा०- ४।२५।३, ७।१०।४, ३५।६, ५१।२, ५२।१, १०।३५।९, ६६।३

५. दिव्याः,

सा०- ७।३५।४, १४

६. आदित्याः मासाः संख्यासाम्यात्,

सा०- ३।५६।४

७. आदित्यसङ्क्रमणनिमित्तत्वादादित्याः मासाः,

सा०- ३।५६।४

८. विषोदकादीनामदनशीलः,
सा०- १।१९१।९

आदित्य-जूत

१. आदित्यप्रेरितः,
वे०सा०- ८।४६।५
२. आदित्यानुगृहीतः,
सा०- ८।४६।५।

अदिति- त्व

१. अखण्डत्वे,
वे०- ७।५१।१
२. अदीनत्वे,
सा०- ७।५१।१

अदित्सत्

अदातुमिच्छन्तम्,
स्क० - ६।५३।३, सा०- ६।५३।३
(दातुमनिच्छन्तमपि पुरुषम्)

अदुच्छुनः

रक्षोवर्जितः,
वे०सा०- ९।६१।१७

अदुर्मख

अदुष्टयज्ञस्य,
वे०- ८।७५।१४, सा०- ८।७५।१४
(अदुष्टयागस्य)

अदुष्कृत्

१. अदुष्टकारिण्यौ,
वे०- ३।३३।१३
२. कल्याणकर्मकारिण्यौ,
सा०- ३।३३।१३

अदू

१. अपरिचारकाः,
वे०- ७।४।६
२. परिचरणहीनाः,
सा०- ७।४।६

अदृपित

१. जागरूकैः,
वे०- १।१४३।८
२. अपरिभूतैः,
सा०- १।१४३।८
३. अदृप्ताय,
सा०- ४।३।३
४. अप्रमत्ताय,
सा०- ४।३।३
५. दर्परहिताय,
वे०- ४।३।३

अदृप्त

१. अमूढः,
स्क०- १।६९।२
२. दर्परहितः,
सा०- १।६९।२

अदृप्त-क्रतु

१. अमूढप्रज्ञम्,
स्क०वे०सा०- ६।४९।२
२. अमुग्धप्रज्ञानम्,
वे०- ६।४९।२
३. अप्रमत्तज्ञानः,
वे०- ८।७९।७, सा०- ८।७९।७
(अप्रमत्तप्रज्ञः)
४. दर्परहितकर्माणम्,
सा०- ६।४९।२

अदृप्यत्

१. गर्वरहितेन,
वे०- १।१५१।८
२. अनभिभववता,
सा०- १।१५१।८

अदृष्टः, ष्टा

१. अदृश्यमानाः विषधराः,
सा०- १।१९१।१ (अदृश्यमानरूपा

एतत्संज्ञकाः केचिद्विषधराः एवमुक्तप्रकाराः ये सन्ति ते), १९१।२ (अदृश्यमानान् विषधरान्), १९१।८ (अद्रष्टव्यान् विष-राक्षसादीन्)

२. अदृश्यमानरूपाः,
वे०- १।१९१।५ (अदृष्टाः), सा०- १।१९१।४, १९१।५ (अपरिदृश्यमानाः), १९१।६ (अन्यैरदृश्यमानरूपाः)

३. सर्पाः,
वे०- १।१९१।२ (प्रच्छन्नचारिणः सर्पाः), १९१।४, ८

अदृष्ट-हन्

१. सर्पाणां हन्ता,
वे०- १।१९१।८

२. विषविशेषाः तेषां हन्ता,
सा०- १।१९१।८

३. विषधरविशेषा। तेषां हन्ता,
सा०- १।१९१।८

४. अदृष्टमदर्शनमज्ञानमन्धकारः, तस्य हन्ता,
सा०- १।१९१।८

अदेव

१. असुरः,
वे०-१।१७४।८, २।१९।७, २२,४, १०।१२४।२, वे०सा०- ६।१८।११, २२।११, १०।३७।३, सा०- १०।३८।३

२. तमोरूपमसुरम्,
सा०- २।२२।४

३. देवविरोधिनोऽसुरान्,
सा०- १०।१३८।४

४. अदेवनशीलम्,
वे०- ३।३२।६, वे०सा०- ९।१०५।६, सा०- ९।१०४।६

५. राक्षसः,
स्क०वे०- ६।४८।१० वे०सा०- १०।३७।३, सा०- ३।१।१६

६. देवादन्योऽसुरराक्षसादिः,
उ०- १०।३७।३

७. पिशाचासुरराक्षसादिकः,
उ०- १०।३८।३

८. मनुष्यसंबन्धीनि,
सा०- ६।४८।१०

९. देवादन्यो मनुष्यो वशः,
सा०- ८।४६।२१

१०. मर्त्यादिः,
सा०- ८।७१।८

११. अदातॄन्,
वे०- ३।१।१६

१२. प्रतिभासमानम्,
सा०- ३।३२।६

१३. वृत्रः,
वे०-६।१७।८, सा०-६।१७।८ (वृत्रोऽसुरः)

१४. देवान् इन्द्रादीनजानतः,
सा०- २।१९।७

१५. अस्तुत्यस्य,
सा०- १।१७४।८

१६. देववर्जिताः,
वे०- ८।९६।९, सा०- ८।९६।९ (देववर्जिताः देवद्विषः)

१७. देवानमन्यमानेन,
सा०- २।२३।१२

१८. असमप्रमाणेन,
वे०- २।२३।१२।

१९. इन्द्राख्यदेवरहितः,
सा०- ८।७०।७

२०. अस्तोता,
वे०- ८।७०।७

२१. अद्योतमानस्य,
सा०- १०।१११।६

अदेवी

१. आसुरीः,
वे०- ६।४९।१५, वे०सा०- १।१७४।८, ७।१।१०, ९८।५, ८।११।३, सा०- ५। २।९ (अदेवनशीला आसुरी)

२. आसुरीः प्रजाः,
वे०- ६।२५।९

३. आसुरीः सेनाः,
वे०- ३।३१।९, सा०- ५।२।१० (अदेवनाः आसुर्यः सेनाः), ६।२५।९, ४९।१५ (अदेव-सम्बन्धिनीः आसुरीः सेनाः)

४. देवेभ्यः अन्याः,
स्क०- ६।४९।१५

५. आसुराणि,
वे०सा०- ८।६१।१६

६. अद्योतमानाः। कृष्णरूपा इत्यर्थः,
सा०- ८।९६।१५

७. पापयुक्तत्वादस्तुत्याः,
सा०- ८।९६।१५

८. असुरान्,
वे०- ८।९६।१५

९. तमोरूपत्वेनाद्योतमानान्,
सा०- ३।३१।१९

१०. राक्षसी,
वे०- ५।२।९

११. राक्षस्यः मायाः,
वे०- ५।२।१०

अदेवत्र

१. देवान् यस्त्रायते स देवत्रः ... न देवत्रः अदेवत्रः। ... देवानामस्तोतुः,
स्क०- ५।६१।६

२. देवानामत्रातुः,
वे०- ५।६१।६

३. देवा अनेन त्रायन्ते स्तुत्यादिना सः देवत्रः। न देवत्रः अदेवत्रः,
सा०मु०- ५।६१।६

अदेवयत्

तद्विपरीतं पुरुषम्,
सा०- २।२६।१

अदेवयु

१. अदेवकामम्,
वे०-८।७०।११, ९७।३, वे०-१०।२७। २- ३, वे०सा०- ९।६३।२४

२. देवांश्चानिच्छतः,
वे०-१।१५०।२

३. देवानात्मनोऽनिच्छतः। एतेषां न दातव्यमिति विवोचे,
सा०- १।१५०।२

४. अयजमानम्,
वे०- ७।९३।५

५. अदेवकर्मिणं पापिनम्,
सा०- ८।७०।११

६. देवान् युष्मानकामयमानः,
सा०- ८।९७।३

७. देवान् यष्टुमनिच्छतो देवशत्रून् अयज्वनः,
उ० - १०।२७।२, सा० - १०।२७।२ (देवान् यष्टुमनिच्छतोऽयज्वनः)

८. देवानकामयमानान् देवद्विषो असुरादीन्,
उ०- १०।२७।३, सा०- १०।२७।३ (देवानकामयमानान् देवद्विषो राक्षसादीन्)

अद्धा

१. सत्यम्,
स्क०वे०सा०मु०- १।५२।१३, वे०-३।

५४।५, ८।१२९।६, वे०सा०- ८।११९।९, १०।१११, सा०- ८।१११।७

२. सत्यभूतं तादृशमर्थम्,

सा०- ३।५४।५

३. अत्र न संशयः,

सा०- ८।१०१।११

४. तथाभावम्,

वे०- १०।१११।७

५. पारमार्थ्येन,

सा०- १०।१२९।६

अद्धाति

१. ये परोक्षमपि जानन्ति प्रज्ञानेन,

वे०- १०।८५।१६

२. मेधाविनः,

सा०- १०।८५।१६ (या०- ३।१५)

अद्भुत

१. आश्चर्यम्,

वे०सा०मु०- १।२५।११

२. आश्चर्यभूतः,

वे०- ५।१०।२, ६६।४, ६।१५।२, वे० सा०- १०।१५२।१, सा०- १।१४२।३ (अभूत इव अद्यक्षणे भविता। आश्चर्यभूत इत्यर्थः), २।७।६ (आश्चर्यभूतः। रमणीयः इत्यर्थः), ५।६६।४ (महान्तावाश्चर्यभूतौ सन्तौ), ६।८।३ (महान् आश्चर्यभूतो वा वैश्वानरोऽग्निः), ८।१३।१९, सा० मु०- ५।१०।२ (सर्वेषामाश्चर्यभूतः)

३. आश्चर्यकरम्,

उ०सा०- १।१८।६, सा०- ९।८५।४

४. आश्चर्यरूपोपेतानिन्द्रादीन्,

सा०- ४।२।१२

५. महान्,

स्क०- १।७७।३ (महतो यज्ञस्य), १२०। ४, (अद्भुतम् - निघ०, ३।३ इति महन्नाम), स्क०वे०- १।१८।६, स्क०वे० सा०मु०- १।९४। १२-१३, वे०- १। १२०।४, १४२।३, ७७।३ (महतः), २। ७।६, ८।१३।१९, वे०सा०- १।१४२। १०, २।२६।४, ८।२६।२१, ४३।२४, ९।२०।५ ८३।४, ८५।४, १०।१०५।७, सा०- ६।१५।२, ९।२४।६, सा०मु०- ५।२३।२, ६।८।३, मु०- ५।६६।४

६. अभूतम्,

वे०- १।१७०।१ (अभूतम्), सा०- १।७७।३ (अभूतस्यालब्धस्य धनस्य), १४२।१० (सद्य आविर्भवत् अभूतमिव सत्), मु०- १।७७।३ (अलब्धस्य धनस्य)

७. अन्यस्मै निरूप्य अन्यस्मै दत्तमिति यदस्ति वैपरीत्यम्,

सा०- १।१७०।१

८. भाविकार्यम्,

सा०- १।१७०।१

९. विचित्रकर्मन्,

सा०- ९।८५।४

अद्भुत् - क्रतू

१. अद्भुतप्रज्ञम्,

वे०-८।२३।८

२. बहुविधप्रज्ञम्,

सा०- ८।२३।८

३. आश्चर्यकर्माणौ,

वे०सा०मु०- ५।७०।४

अद्भुतैनस्

१. अभूतपापानाम्,

वे०- ५।८७।७, वे०सा०- ८।६७।७

२. अपापानाम्,

सा०- ५।८७।७

अद्य

१. अस्मिन्नहनि,
उ०- १०।६५।१५, उ०सा०- १०।३६। ११, ३७।५, ४५।९, स्क०- १०।१२०। ३, ६।६५।३, वे०-१।११३।१३, ४।२।२, ५।५६।१ - वे०सा०मु०- १। १००।१०, सा०- १।१२३।८, १३६।४, २।३७।५, ४१।३, २१ ४।१०।१, ९। ४४।६, १०।३५।३, ५, ७, ९, ३८।४, ४०।१४, ८७।१३-१५, सा०मु०- ५। १३।२

२. अहनि,
सा०- १।१६१।११

३. अस्मिन्दिने,
सा०- १।१२५।३, १६७।१०, २।३।३, ४।५१।३, ६।५२।१७, ७।४३।४, ४७।२, ५१।२, ५९।३, ८।२६।८, २७।१४, १९, ९३।४, १०।१८।३, २२।१, ३२।८, ६५।१५, ११०।९, सा०मु०- १।२३।२३, ३४।३, ३५।११, ३६।२-६, ४४।९, ४५।९, ५।५३।१२, ७४।७

४. दिने,
सा०- १०।१४।१२

५. अस्मिन् दिवसे,
सा०-४।२।२, १०।४, २४।७, २५।१, ६।२४।५, ७।५७।२, १०।२२।२

६. अस्मिन्यागदिने,
उ०- १०।३७।५ (याग दिवसे), सा०- १।१४२।१, १८४।१, १८८।१, ४।३७। २, ५१।४, ५।१।११, ८।२२।६, २६।३, २७।५, सा०मु०- ५।४५।५, ५६।१, ७९।१

७. अस्मिन् प्रधानयागदिने,
उ०- १०।३५।५ (प्रधानयागाहनि), सा०- १।१८२।८

८. अस्मिन् यज्ञे,
स्क० - १।११३।७ (अस्मदीये यज्ञे), वे०-१।४५।९, ७६।५, सा०- १०।९२।९ (अस्मिन् यागे) सा०मु०- ६।४।१

९. अस्मिन्काले,
वे०सा०- १।१२३।३, सा०- ३।५३।२१, सा०- ६।१५।१४, ५०।९, ७।६६।४, ७८।५, ९३।१, ८।७३।५, १०।१२७।४, १३५।५, १४२।६, १६०।२, १६४।५, सा०मु०- १।४९।२, ५०।११, ९२।१५, ११३।७, १३, १२०।३, ५।७३।१

१०. अस्मिन्ननुष्ठानकाले,
सा०-७।६०।१, ६६।१२ अस्मिन्यागकाले

११. अस्मिन्प्रभातसमये,
सा०मु०- १।४८।१५, ९२।१४ (इदानीं प्रभातसमये)

१२. इदानीम्,
उ०-१०।१८।३, वे०-१।१२५।३, १६१।११, १८०।१०, २।१३।८, २७। २, ३२।५, ३।१४।५, १७।२, २९।१६, ४।१६।२, ५।५८।३, ६।१।२६, ६१। २१।९, ३७।१, ४०।१, ४७।१, १००।५, ७।१७।५ , ८।१।१०, २।२०, ५।१८, ९।९, ९।१३, १०।५, २७।२१, ९। ६७।२२, १०।३०।३, ५३।४, १०। ५४। २, १६७।३, सा०वे०- ६।११८। १३, सा०मु०- ५।४९।१

१३. अस्मिन्कर्मणि,
स्क०- १।११३।१३ (अस्मदीये कर्मणि), सा०-३।१४।५, १९।४, १०।१५।२, ११०।१, ११३।१०, सा०मु०- १।२८।८, ३४।१, ५८।८, ८४।१६, ९३।२

१४. अत्र,
सा०- ८।६६।७

१५. पुरा,
स्क०- ६।३०।३, वे०- ६।३०।३ (पुरा च। सर्वकालमित्यर्थः।)
१६. साम्प्रतम्,
उ०- १०।३०।३ (सम्प्रति), स्क०- १। १००।१०
१७. अस्मिन्। शत्रुभिः सह युद्धदिवसे,
उ०- १०।३८।४
१८. अस्मिन्सुत्येऽहनि,
सा०- १।१८०।१०

अद्य-द्या

१. अस्मिन्दिने,
सा०-४।२५।३, ७।१०४।१५, १०।६३। ८, ८१।७, सा०मु०- १।१३।२, ६, २५।१९, ४४।१, ३, ४७।३, ५।७९।३,
२. अस्मिन्नहनि,
उ०सा०- १०।३५।२, सा०- ५।२२।२ १०।३५।१, सा०मु०- ५।२६।८
३. वर्तमाने अहनि,
उ०- १०।६३।८
४. अस्मिन् यागदिने ,
उ०- १०।८१।७। यागाऽहनि, सा०- ८। २२।१, ९।६५।२८, सा०मु०- ५।५१। १३, ७४।१, ८२।४, ७
५. प्रधानयागदिवसे,
उ०- १०।३६।२, सा०- १०।३६।२ (प्रधानयागाहनि)
६. अस्मिन् काले,
सा०मु०-१।११५।६, ६।५०।४, ८।३।८
७. इदानीम्,
वे०- १।५४।५, वे०सा०- ६।१८।१३, सा०- १।१६१।१३, २।२९।२-६, ८।२०।२, १०।३०।२
८. सम्प्रति,
उ०- १०।३०।२
९. अधुना,
सा०- ३।३६।३
१०. अद्यतनान्,
वे०- ३।३६।३
११. अस्मिन् समये,
सा०मु०- १।११३।१७
१२. अद्यतनः कश्चित्,
सा०- ४।३०।२३
१३. सुत्याहनि,
सा०- ४।४४।१

अद्यु

१. अद्योतमानम्,
वे०- ७।३४।१२
२. अदीप्तिम्,
सा०- ७।३४।१२

अद्युत्

१. अदीप्तान्,
स्क०- ६।३९।३
२. अव्याकृताः,
वे०- ६।३९।३
३. अद्योतमानान्,
सा०- ६।३९।३

अद्यूत्य

१. दीव्यतिर्विजिगीषार्थः। देवनं द्यूतम् - विजिगीषा यस्मिन् नास्ति तदद्यूतम् अविजिगीषम्। अद्यूतमेवा अद्यूत्यम्,
स्क०- १।११२।२४
२. बलाभावाद् युद्धवर्जिते सङ्ग्रामे,
वे०- १।११२।२४
३. द्योतनरहिते प्रकाशनरहिते रात्रेः पश्चिमे यामे,
सा०मु०- १।११२।२४

अद्रुह्

१. अद्रोग्धा,

उ०वे०सा०-१०।६६।८, स्क०- १।३।९ (अद्रोग्धारो यजमानानां), १९।३, (अद्रोग्धारो स्तोतॄणां यष्टॄणां च), ६।६२।४ (अद्रोग्धा यजमानस्य देवतानां वा), स्क०सा०-६।५१।५, वे०- ४।५६।२, ६।११।२, १५।७, वे०सा०- १।१५९।२, ३।९।४, २२।४, ७।६६।१८, ८।१९।३४, २७।९, १५, ४४।१०, ९७।१२, ९।९।२, वे०सा०मु०- ५।६८।४, सा०-२।१।१४, ४।५६।२ (अद्रोग्ध्यौ द्रोहमकुर्वत्यौ), ६।१५।७ (अद्रोग्धारं सर्वेषामनुकूलम्), ८।६७।१३, ९।७३।७

२. अद्रोग्धव्या,

स्क०- १।१९।३

३. द्रोहरहिताः,

वे०- ८।६७।१३, वे०सा०मु०- १।३।९, १९।३, सा०- ६।११।२

४. द्रोहवर्जिताः,

वे०-३।५६।१, ९।७३।७, वे०सा०- ९।९।४, १०२।५, सा०-२।४१।२१, (द्रोहवर्जिते हे हर्विधाने तद्रूपे द्यावा-पृथिव्यौ), ३।५६।१, ८।४६।४, ९।१००।७ (देवमनुष्यादिषु प्रजासु द्रोहवर्जिते)

५. अहिंस्या,

सा०-८।२७।९,१५, ९।७३।७, १०।६६।८

६. वसतीवर्यः,

वे०- ९।१००।१, ७

७. न द्रुह्यन्ति,

वे०- २।१।१४, ६।५१।५

८. अद्रोहकर्तारः,

सा०- ८।४६।४

अद्रुह्वन् - ह्वाणा

अद्रोग्धारौ,

वे०सा०मु०- ५।७०।२

अद्रोघ

१. द्रोहरहितेन पापशून्येन,

वे०- ६।१२।३, सा०- ३।१४।६

२. पराभिद्रोहरहितेन,

वे०- ३।१४।६

३. द्रोहवर्जितः,

सा०- ३।३२।९

४. हिंसारहितः,

वे०- ३।३२।९

५. अहिंसकम्,

सा०मु०- ५।५२।१

अद्रोघवाच्

१. अहिंसितवाचम्,

वे०- ६।५।१

२. प्रशस्ता स्तुतिरूपा वाक्,

सा०मु०- ६।५।१

अद्वयत्

१. सत्यमनृतं चोभयमकुर्वन्तम्,

वे०- ३।२९।५

२. द्वयमनाचरन्तमद्वैतं कुर्वाणं मनसा वाचा च एकविधमेव कर्म कुर्वाणयत एव,

सा०- ३।२९।५

अद्वयस्

१. अमायया,

वे०- ८।१८।६

२. अमायावी,

वे०- १।१८७।३

३. बाह्याभ्यन्तरभेदेन प्रकारद्वयरहिता सर्वदैकप्रकारा कपटरहिता सा,

सा०- ८।१८।६

४. द्वयरहितः उक्तगुण एव न तु तद्विपरीतो भवेत्यर्थः,
सा०- १।१८७।३

अद्वयाविन्

१. जरामरणरहितस्य,
वे०- १।१५९।३
२. न विद्यते द्वयं यस्य तादृशस्य। स्वजीवनाय युष्मद्व्यतिरिक्तमजानतः इत्यर्थः,
सा०- १।१५९।३
३. द्वयहीनमकुटिलम्,
सा०- ३।२।१५
४. सत्यानृताभ्यामयुक्तं केवलसत्ययुक्तम्,
वे०- ३।२।१५
५. असहायम्,
वे०- ५।७५।५
६. मायारहितम्,
सा०- ७।५६।१८, सा०मु०- ५।७५।५

अद्वयु

१. अद्वयाविनम्,
वे०- ८।१८।१५
२. कापट्यरहितम्,
सा०- ८।१८।१५

अद्विषेण्य

१. द्वेष्यजनवर्जितः,
वे०- १।१८७।३
२. अद्वेष्टव्यम्,
वे०- १०।१२२।१
३. अद्वेष्यरसः प्रियरसः इत्यर्थः,
सा०- १।१८७।३
४. द्वेष्यरहितम्,
सा०- १०।१२२।१

अद्वेष, षा

१. द्वेषरहितः,
उ०- १०।४५।१२, वे०सा०- ९।६८।१०
सा०- १।१८६।१०
२. अशत्रुः,
वे०- १।१८६।१०
३. द्वेषवर्जिते,
वे०- १०।४५।१२

अद्वेषस्

१. अद्वेष्टारः, प्रीता वयं देवानामत्यन्तभक्ताः,
उ०- १०।३५।९
२. अविद्यमानो द्वेषो यस्मिन् सोऽद्वेषः,
स्क०- १।२४।४
३. द्वेष्टृवर्जितः,
वे०- १।२४।४
४. द्वेषवर्जिताः,
वे०- ५।८७।८, १०।३५।९
५. द्वेषवर्जितानादित्यान्,
सा०- १०।३५।९।
६. निन्दायाः पूर्वं स्वकीयत्वेन व्यवस्थिते सति तदानीं द्वेषरहितः,
सा०मु०- १।२४।४

अध्वन्

१. मार्गैः,
स्क०वे०-१।२३।१६, स्क०वे०, सा०मु०- १।४२।१, ७२।७, वे०- १।११३।३, वे०सा०- २।१३।२, ६।५०।५, ५१।१५, ७।४२।२, ६०।४, ८।२७।१७, ९।५२।२, १०।३७।१०, ६१।२६, ११५।३, १८५।२, वे०सा०मु०- १।२७।१३, सा०- १।१७३।११, ६।२९।२, ४६।१३, ५८।३, ७।३१।११, १०।११७।७, सा०मु०- १।४२।८

२. देवयजनमार्गैः,
सा०मु०- १।२३।१६, ५।५४।१०
३. दुर्गात् मार्गात्,
वे०- १।४२।१
४. मार्गार्थम्। पथ्यदनार्थमित्यर्थः,
स्क०- १।४२।८
५. दिव्यान् मार्गान्,
वे०सा०मु०- १।७१।९
६. देवलोकमार्गान्,
स्क०- १।७१।९
७. अनुष्ठानमार्गान्,
सा०मु०- १।१०४।२
८. गमनमार्गः,
स्क० - १।११३।३, स्क० - १।१०४।२ (स्वेनागमनमार्गेण)
९. युद्धमार्गात्,
वे०- १।१०४।२
१०. युद्धे गमनमार्गान्,
वे०सा०- १०।२२।४
११. रथमार्गान्,
उ०- १०।२२।४
१२. मार्गान् अग्नेः प्रान्तप्रदेशान् केशाद्यमेध्यरहितान्,
सा०- १।१४६।३
१३. दीर्घान् मार्गान्,
वे०- १।१४६।३
१४. संचरणसाधनभूतो मार्गः,
सा०मु०- १।११३।३
१५. धनप्राप्तिमार्गस्य,
सा०- ४।५।१२
१६. गन्तव्यान् प्रदेशान्,
सा०- ३।३०।१२, ८।२७।१७ (गन्तव्यान् देशान्)
१७. महामार्गान्,
सा०- ६।१६।३
१८. गन्तव्यान् मार्गान्,
वे०- ३।३०।१२, सा०- ४।१६।२, १०।१७९।२
१९. अन्तरिक्षस्य,
स्क०- ६।५०।५, स्क०वे०- ६।४६।१३, वे०-४।५।१२, सा०- ६।१२।३ (स्वमार्गे अन्तरिक्षे)
२०. गृहे,
स्क०- ६।५१।१५
२१. पन्था,
वे०- ८।३१।११

अध्वग

यथा च पथिकावुदकं गच्छतः तथा वेगेन,
सा०- ८।३५।८

अध्वर

१. यज्ञः,
उ०वे०-१।१।४, १०।३०।४, ७६।३, उ०वे०सा०- १०।३०।८, ११, १५, ४०।१०, ६३।६, उ०सा०- १०।७।५, स्क०- १।१९।१, ४४।२, स्क०वे०- १।१।८, १२।७, १६।३, ४७।२, ४८।११, ५२।१२, ९३।१२, ६।६८।१०, स्क०वे०सा०- ६।४९।२, ६३।४, स्क०वे०सा०मु०- १।१४।११, २७।१, ४५।४, ९४।१३, १०१।८, १२१।१, ७, वे०- १।५७।३, १८।८, २३।१७, २६।१, ४४।१३, ५८।७, ७४।१, २।२।५, ३।३।८, १६।६, २३।१, ५४।१२, ६०।७, ४।६।१, ७।१, ९।४, ६, १५।१, २, २८।६, ३७।१, ५५।१, ७१।१, ५।१।७, ४।१, १४।२, ६।१५।१४, ५०।९, ७।१।१६, ३।१, १०।५, १६।५, ४१।६, ४३।२, ५६।१२, ७२।७, ८४।१, ९२।२, १०४।१८, ८।१२।३३, १३।३०, १९।२,

१०, १९, २७।१, ३५।२१, ६०।२, ६६।१, ७१।१२, ७२।९, ९।४४।४, ६७।१, ८३।५, ९८।३, १०।७७।८, ८५।१८, १२२।७, वे०सा०- १।१३५।३, ५, २।१।१३, ३।८।१,८, १०।१,४, ११।१, १४।७, १७।५, २०।१, ५३।१०, ५७।४, ६२।५, ४।२।१०, ३।१, ७।३, ७, ८, ६।१५।७, १६।२, ४६, ७।७।१, ४, ३९।४, ४२।५, ८२।१, ७, ८।३।५, ८।१८, १२।३१,३२, ३५।२३, ४३।२०, ४४।७, ४६।१८, ६०।३, ९३।२३, ९।७२।५, ८२।३, १०२।६, ८, १०।२।३, ६, ९४।१०, १४, ९८।९, ११०।२, ११४।५, वे०सा०मु०-४।२८।४, ५१।२, ६।७।२, ७।२।३, सा०-३।४।४, ६।१०, १०।७, ६।६६।१०, ७।२।३, १४।२, १६।१२, ४२।१, ८।११।१०, २७।३, ३५।६, १०।१।५, ३२।२, १४०।५, सा०मु०- १।७४।४, ४।२६।३

२. *यागः,*

वे०- ५।४४।५, सा०-१।१६५।२, २।२।५, ३।३।८, ४।७।१, ९।४, ६, ७, १५।१, २, ३७।१, ५५।१, ५।४।१, ६।५०।९, ७।१०।५, १६।५, ४१।६, ४३।२, ५६।१२, ९२।२, १०४।१२, ८।११।२, १२।३३, १९।२, १०, १९, ६०।२, ७१।१२, १०।११।४, २१।६, ३०।४, १०४।६, सा०मु०- १।२३।१७, ४७।२, ५८।७, ९३।१२, ५।२८।६, ४९।४, मु०- १।१।८

३. *क्रतुम्,*

सा०मु०- १।१२।७, ४४।२, १३

४. *हिंसारहितम्,*

वे०-८।६३।६, सा०- १।१।४, ७।९२।५

५. *ध्वरति हिंसाकर्मा। ध्वरणं ध्वरो हिंसा यस्मिन् नास्ति सोऽध्वरः,*

स्क०- १।१।४

६. *अविद्यमानो ध्वरो यस्य सोऽध्वरः। रक्षोभिरहिंसितः,*

स्क०- १।१।४

७. *हिंसारहितमहिंसितम्,*

वे०-१।१।४, ८।६३।६ (हिंसारहितम्)

८. *अहिंसिते,*

वे०- ६।१०।१

९. *रक्षःप्रभृतिभिरहिंस्ये हिंसाप्रत्यवाय-रहिते,*

सा०- ६।१०।१

१०. *हिंसाप्रत्यवायरहितस्य,*

सा०- ८।१०।४

११. *अहिंस्यस्य,*

वे०- ८।१०।४

१२. *अहिंसकम्,*

सा०- ८।६३।६

१३. *हिंसावर्जितः,*

वे०सा०- ९।७।३

१४. *हिंसाप्रत्यवायरहितमग्निष्टोमादि-यज्ञम्,*

सा०- ६।२।३ (हिंसाप्रत्यवायरहिते यज्ञे)

सा०मु०- १।७४।१

१५. *राक्षसकृतहिंसारहितानां यज्ञानाम्,*

स्क०- १।१५।७। (रक्ष आदिभिरहिंसितेषु यज्ञेषु), सा०- १।१।८

१६. *हिंसारहितं यज्ञम्,*

सा०-६।५२।१२, ७।२।१६, ८।१३।३०, २७।१, ९।६७।१, १०२।८

१७. *ध्वरो नास्त्यस्मिन्नित्यध्वरो यागः,*

सा०- ८।७।६

१८. ध्वरो हिंसानिमित्तः प्रत्यवायः। तद्रहिते यागे,
सा०- १०।१२२।७
१९. अहिंसकं यज्ञम्,
सा०- ५।७१।१
२०. अहिंसात्मके यागे,
सा०- १।१४२।१३
२१. हिंसारहितान् यागान्,
सा०मु०-१।४८।११, ५७।३, ७।८४।१, ९।४४।४
२२. न विद्यते ध्वरो हिंसा यस्य तादृशस्य सोमस्य,
सा०- ३।६०।७
२३. अहिंसितान् रक्षोभिः अविहतान् सोमान्,
उ०- १०।७६।३
२४. अकुटिलम् यज्ञम्,
सा०- ७।२।७ (कौटिल्यरहिते यज्ञे), ३।१
२५. ज्योतिष्टोमादेः,
सा०-३।२३।१, २९।७ (ज्योतिष्टमादि-यज्ञेषु)
२६. अग्निष्टोमे प्रकृतिरूपे,
सा०-१।१५।७ (अग्निष्टोमे यज्ञे), ३।१६।६ (अग्निष्टोमादिकर्मणि)
मु०- १।१५।७
२७. सोमयागे,
सा०- ८।६६।१, सा०मु०- १।१६।३
२८. अग्निहोत्रादिषु,
सा०- ३।२७।८
२९. अनुपहतं हविर्लक्षणमन्नम्,
सा०- ४।२।१०
३०. यज्ञसाधनं सोमम्,
सा०- १०।९२।१५
३१. अविनाशिनम्,
सा०- ३।२८।५
३२. प्रवर्ग्यम्,
सा०- ८।७२।९
३३. हिंसारहितस्य धनस्य,
वे०- १०।१०४।६
३४. अहिंस्यानां बलानाम्,
सा०- ८।१०२।७
३५. अहिंस्यानाम् बलिनाम्,
वे०- ८।१०२।७

अध्वरश्री

१. यागसेविनम्,
सा०मु०- १।४७।८, मु०- १।४४।३
२. यज्ञं ये श्रयन्ति,
वे०- १।४७।८
३. यज्ञश्रियम्,
वे०- १०।३६।८
४. यज्ञस्य विभूतिम्,
उ०- १०।३६।८
५. अङ्गभावप्रतिपत्याश्रयितारम्,
उ०- १०।३६।८
६. यज्ञस्याश्रयितारो भवन्ति,
सा०- १०।७८।७
७. यज्ञानां सेवित्र्यः,
उ०- १०।७८।७
८. यज्ञस्य सेवितारः,
वे०- १०।७८।७
९. योऽध्वरं श्रयति,
वे०- १।४४।३
१०. अहिंसिता श्रीर्येन सोऽध्वरश्रीः,
स्क०- १।४४।३
११. अध्वरं श्रयते इत्यध्वरश्रीः,
सा०- १।४४।३

१२. *अध्वरं संश्रयन्ति इत्यध्वरश्रियः। यज्ञसम्बद्धा इत्यर्थः,*
स्क०- १।४७।८
१३. *अनुपहिंसिता श्रीर्येषां तेऽध्वरश्रियौ लक्ष्मीवन्तः। दर्शनीया इत्यर्थः,*
स्क०- १।४७।८

अध्वरे-ष्ठा

१. *पुनः यज्ञे स्थाता सन् अव्यवच्छिन्न-यज्ञसन्तानः सन्नित्यर्थः,*
उ०- १०।७७।७
२. *अध्वरे स्थितः,*
वे०- १०।७७।७
३. *यागे सीदन्,*
सा०- १०।७७।७

√अध्वरीय

१. *अध्वरं चेच्छसि, यथाऽध्वर्युरध्वरं कामयते,*
वे०- २।१।२
२. *अध्वरं यज्ञं कामयसे। अध्वर्युर्भवसि,*
सा०- २।१।२
३. *अध्वरं यज्ञं कर्तुमिच्छसि,*
सा०- १०।९१।१०
४. *अध्वर्युरिवाचरसि,*
सा०- १०।९१।११
५. *यज्ञं कर्तुमिच्छसि,*
सा०- १०।९१।११

अध्वरीयत्

१. *यज्ञमात्मन इच्छताम्,*
उ०- ६।२०।१०
२. *यज्ञकामान्,*
स्क०- १।२३।१६
३. *यज्ञमिच्छताम्,*
सा०- ४।९।५
४. *अध्वरमात्मन इच्छताम्,*
सा०मु०- १।२३।१६
५. *अध्वरमीच्छताम् जनानाम्,*
वे०- ४।९।५
६. *अध्वरमिच्छताम्,*
वे०- ६।२।१०
७. *अध्वरं यज्ञमात्मन इच्छताम्,*
सा०- ६।२।१०

अध्वर्यत्

१. *अध्वरमिच्छतौ,*
वे०- १।१८१।१
२. *अध्वरं पारयितुमिच्छन्तौ युवाम्,*
सा०- १।१८१।१

अध्वर्यु

१. *अध्वरस्य नेता,*
सा० - १।१६२।५ (यास्क, १।८), २।१४।१, ४।६।४, ६।४१।२, ८।४।११, सा०मु० - १।९४।६ (अध्वरस्य यागस्य नेता)
२. *अध्वरस्य नेतृभिर्ऋत्विग्भिः,*
सा० - ७।९०।१, ९८।१, १०३।८, ८।२४।१
३. *अध्वरमिच्छन्,*
वे०- ३।५।४, (यास्क, १।८ अध्वरं कामयते), सा०-२।१४।१ (अध्वरं यजमानायेच्छन्तः), ३।३५।१० (अध्वरं कामयति), ४६।५ (अध्वरं यजमाना-येच्छन्तः)
४. *प्रतिप्रस्थाता,*
वे०सा०- २।१६।५
५. *अध्वरं युनक्ति,*
सा०- २।१४।१।
६. *देवान्प्रति प्रेरयिता,*
सा०मु०- १।९४।६

७. आध्वर्यवस्य कर्ता,
सा०- १।९४।६
८. अध्वर्य्वादिकर्मकारित्वादग्नेरय-मध्वर्य्वादिव्यपदेशः,
स्क०- १।९४।६
९. अभिषुण्वतोध्वर्योर्हस्तात्,
सा०- १०।१७।१२
१०. अध्वर्युः हविर्धानात्,
वे०सा०- ८।१०१।१०
११. अध्वरं भजते,
वे०- ८।७२।१
१२. अध्वरं युञ्जानाः,
सा०- ५।४३।३
१३. एतन्नामक ऋत्विग्रूपोऽध्वरम्,
सा०- २।५।६
१४. कामयमानः अयमग्निः,
सा०- २।५।६
१५. अध्वरमिच्छन् अग्निः,
वे०- २।५।६

आध्वर्यव

भवद्यामनुज्ञातव्यम्,
सा०- १०।५२।२

अध, अधा

१. अनन्तरम्, अथानन्तरम्,
उ०-१०।२२।६ (अथ यज्ञसमाप्त्यनन्तरम्), १०।२५।३ (अथ त्वद्यागकरणानन्तरम्), उ०सा०-१०।३०।१०, स्क०- १।१०२।७ (उत्तेजनानन्तरम्), वे०-१।३८।१० (ध्वनेर्गजनरूपादनन्तरं), ९४।११, १५१।२, १५६।१, १६९।६, (गमनध्यानानन्तरमेव), ३।५५।१, ४।२७।३, ५।९।५ (धमनानन्तरमेव), ७।१८।१२, ८।१।२८, १०।११।४, वे०सा०-९।१०२।२, वे०सा० मु०- १।५७।२, सा०- १।७२।१० (आज्यभागानन्तरम्), १२२।११ (अथ श्रवणानन्तरम्), १४०।१० (अथानन्तरम्), १८६।९ (अथ प्रयोगानन्तरम्), २।२२।२ (सोमपानानन्तरम्), ३।४।९, ४।१८।९, १३ (अथानन्तरम् ५।१७।४, (उत्पत्त्यनन्तरमेव), ४०।६ (अथ जगन्मौढ्यानन्तरमेव), ६।१०।४, ७।३।२, ९१।५ (अथ तादृशस्य सोमस्य पानानन्तरम्), ८।१२।१९, १३।२४, ६९।१६ (तवारोहणानन्तरम्), ८३।८ (अथ अस्मत्प्रत्यागमनानन्तरम्) ८३।९ (अथानन्तरम्), ८४।६, ९।९७।११ (अथानन्तरम्), ९९।२, ११०।९, ११३।८ (वृत्रहननान्तरम्), १०।६।७, १०।१४ (अथ परस्परवशवर्तित्वानन्तरम्), सा०मु०- १।३८।१०, ४२।६ (पूर्वोक्तास्मदीय प्रार्थनानन्तरम्), ५५।५, ९४।११ (दग्धुं वनप्रवेशानन्तरम्), १०१।९ (अथानन्तरम्), १०२।७ (स्तुत्यनन्तरम्), १३९।१, ५।८५।८, मु०- १।७२।१०

२. तदनन्तरम्,
वे०- १।१७०।५, ४।१६।१७, २२।६, ३१।६, ५।४०।६, ६।६।४, ७।३४।२, ९०।३

३. अथ,
वे०- १।४२।६, ५५।५, १०१।९, १०२।७, १३९।१, १८६।९, २।२२।२, ३।४।९, ४।१८।९, १३, ६।१०।४, ७।३।२, ९१।५, ८।१२।१९, ८३।९, ८४।६, ९।९९।२, १०।६।७, वे०- १०।२२।६, २५।३ (अथापि)

४. अपि,
स्क०- १।३८।१०, ४२।६, ११४।१०, वे०- १०।३०।१०, सा०- १।१६९।६, १७०।५, ४।२२।६, ७।१८।१२, ३४।२, ८।१।२८, मु०- ५।९।५ (अपि च)

५. सम्प्रति,
वे०- १।१२२।११, ८।१३।२४, ६९।
१६, ९।११०।९, १०।१३२।३
६. तदानीम्,
सा०- ३।५५।१, ४।१६।१७, २७।३
७. अधशब्दः पदपूरणः,
स्क०- १।३८।१०, ४२।६
८. एतस्मादित्यस्यार्थे एतस्मात्,
स्क० - १।५५।५, स्क० - १०१।९,
१०४।५ (एतस्मात् कारणात्)।
९. अस्मिन्काले,
सा०मु०- ६।६।४
१०. वा,
वे०- ४।३१।६
११. तथा सति,
वे०- १०।१०।१४
१२. यथा,
वे०- १०।१३३।५
१३. च,
वे०- ८।८३।८
१४. अतः,
वे०- ५।८५।८
१५. ततः,
वे०- ५।१७।४
१६. ततः प्रभृति,
स्क०- १।७२।१०
१७. अस्मात्,
सा०- १।१५६।१
१८. अतः कारणात्,
सा०- १।१५१।२
१९. तदा,
स्क०- १।९४।११
२०. हेतु निर्देशे,
उ०- १०।६।७

अधस्

अधस्तात्,
वे०सा०- ७।१०४।११, १०।११९।११,
१२९।५, १६६।२

अधस्तात्

मूलतः,
वे०सा०- ३।३०।१६

अधस्पद

१. पादयोरधस्तात्,
सा०- ८।५।३८
२. पादयोरधस्ताद्वर्तमानम्,
सा०- १०।१३४।२, १६६।५
३. पादस्याधस्ताद्वर्तमानम्,
सा०- १०।१३३।४

अधो-अक्षा

१. अक्षस्य अधोभूता,
वे०- ३।३३।९
२. रथाङ्गस्याक्षस्याधस्तात्,
सा०- ३।३३।९

अधम, मा

१. अवमम्,
वे०- १।२४।१५
२. अधः,
वे०- ५।३२।७
३. हीनान् ,
सा०- ४।२८।४
४. मदीयान् पादगतान् पाशान्,
सा०मु०- १।२५।२१
५. निकृष्टं पादेऽवस्थितं पाशम्,
सा०मु०- १।२४।१५
६. नीचम्,
सा०मु०- ५।३२।७

अधर, रा

१. अधोवर्ती बाहुजङ्घान्तरस्थायी,
स्क०- १।३२।९
२. अधः,
उ०- १०।४२।११ (अधस्तात्), वे०- १।३२।९
३. अधोवर्तीनि,
स्क०- १।३३।१५
४. अधोवर्तिनोऽपि न्यूनानित्यर्थः,
स्क०- १।१०१।५
५. अधोभागस्थितः,
सा०-१।३२।९, मु०- (अधोभागे स्थितः)
६. दक्षिणभागात्,
सा०- ६।१९।९
७. दक्षिणतः,
सा०- १०।८७।२१
८. दक्षिणतः। उत्तरादिदिक्समभिव्याहारादधरशब्दोऽत्रदक्षिणदिक्पर इति विज्ञायते,
सा०- १०।८७।२०
९. दक्षिणार्धात्,
वे०- १०।२७।१५
१०. अधस्तनाद्देशाद्दक्षिणतः,
सा०- ७।७२।५
११. प्रजापतेरधःकायात्,
उ०सा०- १०।२७।१५
१२. अधो वर्तमानं पार्थिवम्,
सा०- १०।९८।५
१३. अवाच्याः,
सा०- ७।१०४।१९
१४. निकृष्टम्,
सा०- २।१२।४, ३।५३।२१, १०।१५२।४, सा०मु०- १।३३।१५, १०।१।५
१५. निकृष्टतरा,
सा०- १०।१४५।३, १०।१६६।३ (निकृष्टतरम्)

अधरात्तात्

१. अधरतः स्थितः। एवम् उपरिष्टात् दक्षिणतश्च स्थितः,
उ०- १०।३६।१४
२. उत्तरतः स्थितः,
सा०- १०।३६।१४

अधराञ्च्

१. अधोमुखान्,
वे०- १०।१३३।२
२. अधरदेशमधोभागमञ्चतश्च अधस्तनानपि शत्रून्,
सा०- १०।१३३।१
३. अधरमधोमुखमञ्चतो गन्तॄन्,
सा०- १०।१३३।२

अधराचीन

१. अवाङ्मुखम्,
वे०- २।१७।५
२. अधः प्रदेशमञ्चति गच्छतीत्यधराचीनम्,
सा०- २।१७।५

अधि

१. अधिकम्, अधिकः,
सा०- १।२९।६, १२३।४, १३९।४, १४६।३, १५५।३, १६४।५, २।१६।२, ३।५३।१६, ४।४।५, ५।९, १८।१२, ३०।१५, ६।३४।१, ३५।२, ३८।३, ७।१८।१४, ८।३०।३, ९२।२०, ९१।६६।९, ७३।५, ७५।२, ८६।२५, ९२।४, ९६।१३, ९७।४०, ५३, १०७। १४, सा०मु०- १।४६।७, ४८।७

२. अधिकं सर्वोत्कृष्टम्,
सा०मु०- १।८५।२
३. अधिकमाकल्पान्तम्,
सा०- १।१२५।५
४. अधिकं प्रभूतम्,
सा०- १।१६४।४२
५. अधिकतरः,
स्क०- ६।३८।३
६. आधिक्येन,
सा०- १।६।१०, १६४।१८, सा०मु०- १।१६।६, २१।६, २५।१८, ४३।७
७. उपरि,
उ०- १०।४३।२, ६४।२, १२, ६५।११, ७१।२, ७३।५, उ०सा०- १०।७५।२, स्क०-१।१६।६, २१।६, २९।६, ३३।३, ४६।३, ८०।६, ८३।३, ८५।७, ८८।३, ५। ५७।६, ६२।५, ६।३४।१, ४५।३१, १०।१०। १, ४२।२, स्क०सा०- ६।४८। ५, ७५। ३, स्क०सा०मु०- १।१९।६, ३२।७, ३३।४, ३९।४, ४९।१, ८०।४, वे०- १।१२५।५, ३।३५।८, ५।६२।५, ८।२०।११, ६९।५, वे०स्क०- १।२५। १८, २८।९, ६५।११, वे०सा०- ३।२१।५, ८।७।१४, ९। ४१।४, सा०- १।१३९।४, ११, १४०। ११, १६४।२२, २।३।७, ३।२९।४, ४।५।७, २७।४, ३०।१४, ३८।७, ७।१०३।५, ८।४।१३, ७।७, १०।४,९।६६।२९, १०।९०।५, सा०मु०- ५।३६। ३, ६।६।४,५।६०।७, मु०- १।७३।१०
८. उपरिभागे,
सा०- ४।४५।१
९. सप्तम्यर्थानुवादी,
सा०- १।१६६।१०, २।२९।५, ४।५।९, ६।७५।३, ७।३६।१, ८।२।८, ८।१४, ९।१४, १०।३, १२।१७, ४५।३२, ६९। ५, ७२।२, ७, ९।८।८, १२।३, १९।३, २६।१, ५, ३७,४, ५७।४, ७९।४, ९१। १, १०।४।३, १३।३, ८२।६, ९८।६, १०४।९, सा०मु०-१।८०।६,५।५२।१७, ५७।६
१०. सप्तम्यर्थं स्फुटीकरोति,
वे०- ८।१०।३
११. सप्तम्यर्थद्योतकः,
सा०- १०।६४।२, ७१।२
१२. कर्मप्रवचनीयसंज्ञायां 'कर्मप्रवचनीययुक्ते' इति सप्तम्यर्थे द्वितीया,
सा०- ७।३६।१
१३. पञ्चम्यर्थानुवादी,
सा०- ५।५६।१, ६।५९।८, ८।१।१८, १०।१।२ (पञ्चम्यर्थद्योतकः)
१४. कर्मप्रवचनीयः पदपूरणः,
स्क०- १।४२।३, ४३।७, ४६।७, ४८।७, ५१।५, ७३।१०, ६।३५।२, ५९।८
१५. पादपूरणः,
स्क०- १।६।९।, ६।१० (पदपूरणः)
१६. मध्ये,
उ०- १०।४९।९, वे०- २।३।७, सा०- १०।१२१।८
१७. अत्यन्तम्,
सा०- ९।७५।२, सा०मु०- १।४२।३
१८. प्रति,
वे०-१।१४६।३, वे०सा०- ९।२६।३, सा०- ८।३२।४
१९. आश्रित्य,
सा०- १।१६४।२, ३९
२०. धात्वर्थानुवादी,
स्क०- १।६।९
२१. अनन्तरम्,
सा०- १।१३९।२

२२. अधिशब्दोऽनर्थको धात्वर्थ-मात्रानुवादी,
सा०- १।१४४।५
२३. अधीति चोपसर्गश्रुतेर्योग्य-क्रियाध्याहारः,
स्क०- १।३६।११
२४. अधिशब्दः सामर्थ्याद्वाऽर्थे,
स्क०- १।६।९
२५. अपि,
वे०- २।१६।२
२६. समीपम्,
वे०- १।२९।६, ५।५२।१७
२७. अन्तिके,
वे०- १।४६।७
२८. सकाशात्,
वे०- १।३३।४

अधि √क्षि

१. अधिवसन्ति,
वे०- १।१५४।२
२. अधिनिवसतः,
वे०- १०।९२।१४, वे०सा०- ८।४०।३
३. अधिवसतः,
वे०सा०- ८।२५।५, ४१।९
४. आश्रित्य निवसन्ति,
सा०- १।१५४।२
५. अन्तर्निवसन्तम्,
सा०- १०।९२।१४
६. अभिनिवसन्तम्,
वे०- १०।९२।१४
७. अधि गच्छन्ति,
वे०सा०- ७।९६।२

अधि √गम्

१. अभिगच्छ,
वे०- ९।७२।९
२. आगच्छ,
सा०- ९।७२।९

अधिगर्त्य

१. रथे स्थितम्,
वे०- ५।६२।७
२. गर्तस्याधि रथस्योपरि,
सा०- ५।६२।७
३. गर्तस्य, गर्तं रथमं,
सा०मु०- ५।६२।७

अधि √गा

१. अधिगच्छत, शृणुतेत्यर्थः,
उ०- १०।७८।८
२. अधि गच्छत,
वे०- ८।२०।२२, वे०सा०- १०।७८।८
३. अधिब्रूत अस्मत्पक्षपातवचना भवत,
सा०- ८।२०।२२

अधि √चर्

उपरि ... वर्तावहै,
सा०- ७।८८।३

अधि √दिश्

१. अधिपूर्वो दिशिः याच्ञार्थः,
वे०- १०।९३।१५, सा०- १०।९३।१५
(अधिपूर्वो दिशिः याचनार्थः)
२. ययाचे,
सा०- १०।९३।१५

अधि √धन्व्

अधि गच्छ,
वे०सा०- ९।८७।१६

अधि √धा

१. दतवन्तौ स्थः,
स्क०- १।११७।८
२. आधिक्येनाधारयन्,
सा०मु०- १।८५।२

३. दतवन्तौ स्थः। उषसो विज्ञानार्थम-धिककुरुतम्,
साoमुo- १।११७।८
४. ददुः,
स्कo- ६।६५।६, वेo- १।११७।८, साo- ५।३।७
५. अत्यधिकमनुगृह्णीथ,
साo- १।१५७।६
६. धारयति,
स्कoसाo- ६।३५।४, वेo- १०।२१।३, साo- २।८।५
७. अधिकं निधेहि,
साo- ३।१९।५
८. अधि निधेहि,
वेo- ३।१९।५
९. अधिकत्वेन धेहि,
साo- ४।१७।२०
१०. अधिनिहितम्,
वेoसाo- १०।९६।४, साo- ४।३६।७
११. अधिकं प्रयच्छ,
साo- ६।६५।६
१२. अस्मासु ... धेहि,
साo- ७।२५।३
१३. परस्परमधिकं दधिरे,
साo- ८।२८।५
१४. अवतिष्ठत,
साo- ९।७१।९
१५. अत्यन्तं धारयति,
साo- ९।७५।२
१६. अधिकं यथा भवति तथा धारयसि,
साo- १०।२१।३
१७. धारयन्त्यौ,
साo- १०।११०।६
१८. आत्मनि निधत्ते,
वेo- १०।१२७।१

अधि - नि √धा

१. निहितवन्तः,
स्कo- १।७२।१०
२. उपरि निदधति। जुह्वति,
स्कo- १।७३।४
३. स्थापितवन्तः,
साoमुo- १।७२।१०, ७३।४

अधिनीयमान

शत्रूणामुपरि प्राप्यमाणो भवति,
साo- १०।८९।६

आधिपत्य

अधिपतित्वमीश्वरत्वम्,
साo- १०।१२४।५

अधि-पा

१. रक्षकः,
वेo- १०।८४।५
२. अधिकं पाता,
साo- ७।८८।२
३. अधिकं पाता रक्षिता,
साo- १०।८४।५

अधि √ब्रू

१. उपरि आज्ञापय,
स्कo- १।११४।१०
२. आज्ञापय,
स्कo १।३५।११
३. अधिकत्वेन कथय,
साoमुo- १।३५।११
४. अधिवचनं पक्षपातेनवचनम्,
साoमुo- १।८४।१७, ११४।१०
५. ज्ञापयति,
स्कo- १।८४।१७

६. *अधिवचनम्,*
वे०- १।८४।१७
७. *पक्षपातेन ब्रवीतु,*
सा०- ६।७५।१२
८. *आदरेण कथयन्तु,*
सा०- १।१५।५
९. *धनादिप्रदानेनास्यानधिकं वदन्तु। पूजयन्तु,*
सा०- १०।६३।१
१०. *उपरि भूत्वा वदन्तु आदिशन्तु अस्मान्, इदं दृष्टादृष्टफलं शुभं कर्म कुरुतेति ईश्वरा भूत्वा अस्मान् वदन्त्वित्यर्थः,*
उ०- १०।६३।१

अधि - भोजन

१. *भोजनमिति धननाम। अधिकं धनं येषां मूल्यम्। तादृशानि दशसंख्यकानि वस्त्राणि च,*
सा०- ६।४७।२३
२. *उपरि भोजनं येषां तानि अधि-भोजनानि। समनन्तरभोजनसहिता-नीत्यर्थः,*
स्क०- ६।४७।२३
३. *उपरि भोजनम्,*
वे०- ६।४७।२३

अधि √भूषत्

१. *सम्भवितुमिच्छन्,*
वे०- १।१४०।६
२. *अधिकं भूतान्येव स्वतेजसा भूषयन्निव,*
सा०- १।१४०।६

अधि-मन्थन

अरण्याः उपरि निधेयं मन्थनसाधनभूतं दण्डरज्वादिकम्,
सा०- ३।२९।१

अधि √यत्

१. *आबध्नन्ति,*
स्क०- १।६४।४
२. *अधियातयन्ति,*
वे०- १।६४।४
३. *गमयन्,*
वे०- ६।६।४
४. *उपरि स्वकीयमग्रं व्यापारयन्,*
सा०मु०- ६।६।४
५. *उपरि चाक्रिरे,*
सा०मु०- १।६४।४

अधि √यम्

अधिकं प्रयच्छत,
सा०मु०- १।८५।१२

अधि √या

अधिकं गच्छति,
सा०- ९।१०७।८

अधि-रथ

१. *रथोऽधिकम्,*
वे०- १०।९८।४, सा०- १०।९८।४ (रथमधिकम्), ९८।९ (रथाधिकानि)
२. *रथस्याध्युपरि वर्तमानम्,*
सा०- १०।९८।४
३. *अधिकं रथम्,*
सा०- १०।१०२।२

अधिराज

सर्वेषामधीश्वरम्,
सा०- १०।१२८।९

अधि - रुक्मा

१. *अधिरूढरुक्माभरणा,*
वे०- ८।४६।३३
२. *आभरणा सती,*
सा०- ८।४६।३३

अधि √रुह्

१. अधि तिष्ठ,

वे०- १।५६।२

२. स्तुहि,

सा०मु०- १।५६।२

अधि √वच्

१. अधिवचनं कुरुत,

वे०- २।२७।६, सा०- ८।६७।६

२. अधिकं ब्रूहि,

सा०- १।१३२।१

३. अधिवचनं पक्षपातेन वचनं कुरुत,

सा०- २।२७।६

४. अस्मत्पक्षपातवचनौ भवतम्,

सा०- ७।८३।२

५. चिकित्सते,

सा०- ८।२०।२६

६. अधिकं भवन्तः कर्मकारिणो धनादिमन्तश्च भवन्विति यूयं ब्रूत,

सा०- ८।३०।३

७. विवादपदेषु पक्षपातेन ब्रूत,

सा०- १०।१२८।४

अधि-वक्तृ

१. आज्ञापयिता,

स्क०- १।१००।१९

२. पक्षपातेन वचनम्,

सा०- १।१००।१९

३. पक्षपातेन वक्ता,

सा०- १।१०२।११

४. अधिकं वक्ता बहुमानेन वक्ता भवति.

सा०- ८।९६।२०

५. धनदानेनास्मानधिकं वक्तुमर्हति,

सा०- ८।९६।२०

६. पक्षपातवचनयुक्तः,

मु०- १।१००।१९, १०२।११

अधि-वाक

१. अधिवचनाय,

वे०- ८।१६।५

२. अधिवचनाय पक्षपातवचनाय,

सा०- ८।१६।५

अधि √वप्

१. मुण्डयति,

स्क०- १।९२।४

२. आधिक्येन छिनत्ति,

सा०मु०- १।९२।४

अधि √वस्

१. उपरिभावेनैश्वर्येण आच्छादयति,

उ०- १०।७५।८

२. आच्छादयति,

वे०सा०- १०।७५।८

अधि-वस्त्रा

उपरिनिहितवस्त्रा,

वे०सा०- ८।२६।१३

अधी - वास

१. पृथिव्यां अधिवसन्तमोषधीसङ्घम्,

वे०- १।१४०।९

२. उपर्याच्छादनस्थानीयं तृणगुल्मौषध्यादिकम्,

सा०- १।१४०।९

३. उपरि धार्यमाणं वस्त्रम्,

सा०- १।१४०।९

४. उपर्याच्छादनयोग्यम्,

सा०- १।१६२।१६

५. ओषधिनक्षत्रद्यात्मना निवसन्तम्,

सा०- १०।५।४

६. त्रयाणां लोकानामुपर्यग्निविद्युदादित्यात्मना निवसन्तम्,
सा०- १०।५।४

अधि-विकर्तन

१. यत्त्रिधा वासो निकृतन्ति,
वे०- १०।८५।३५
२. यत्त्रिधा वासो विकृन्तन्ति,
सा०- १०।८५।३५

अधि-वि √राज

अधिकं विशेषेण दीप्यते,
सा०- १।१८८।६

अधि √वृत्

१. अधीत्युपरिभावे ... वर्तन्ते पतन्तीत्यर्थः,
उ०- १०।२७।६
२. उपरि वर्तन्ते,
सा०- १०।२७।६

अधि-वर्तमान

उपरि वर्तमानम्,
सा०- ४।२८।२

अधि-षवण्य

१. ग्रावाणौ,
स्क०- १।२८।२
२. अधिषवणफलके,
वे०सा०मु०- १।२८।२

अधि √ष्ठा

१. आश्रिता,
स्क०- १।३५।६
२. आरोहति,
उ०सा०- १०।४१।२, स्क०- १।८२।४, सा०- १०।१०५।५, १३५।३, सा०मु०- १।५१।११, ५।६३।१
३. अधिगम्य स्थितानि,
सा०मु०- १।६२।६
४. आश्रयन्ते,
सा०- ९।८३।२
५. उपविशथः,
सा०- ८।१०।६
६. वृष्टिं करोति,
सा०- १०।१२३।४
७. आरूढः,
स्क०- १।४९।२ (आरूढवती), ६।६३।५, सा०- ३।३५।४, सा०मु०- १।८२।४

अधि-ष्ठान

आधारः सृष्टिं सृजतः प्रजापतेः,
उ०- १०।८१।२

अधि-सं √वृत्

सम्यगजायत। सिसृक्षा जात्येत्यर्थः,
सा०- १०।१२९।४

अधि √इ

१. अधिगच्छ,
स्क०वे०- १।७१।१०, ८०।१५, वे०- १०।३२।३, वे०सा०-४।१७।१२, ८।९१।३, १०।१००।४
२. स्तुत्यतयाधिगच्छत,
सा०- ८।८३।७
३. संकीर्तनद्वारेणाधिगच्छति,
सा०- १०।३२।३
४. अवगच्छथ,
उ०-१०।३३।७ (अवगच्छ, अवजानीहि), सा०मु०- १।८०।१५, ७।५६।१५
५. जानीथ,
वे०- ७।५६।१५
६. आगच्छतः,
वे०- ८।८३।७, वे०सा०- १०।३३।७
७. बुध्यस्व,
सा०मु- १।७१।१०

८. स्मरामि,
सा०- ३।५४।९, सा०मु०- ५।४४।१३
स्मरति
९. पठामि, उच्चारयामि,
वे०- ३।५४।९

अधीति

स्मरणे,
वे०सा०- २।४।८

अधीर, रा

१. अधृष्टा,
वे०- १।१७९।४
२. कातरा,
सा०- १।१७९।४

अधृष्ट, ष्टा

१. धर्षयितुमशक्यम्,
वे०- ८।६१।३
२. अनभिभाव्यम्,
सा०- ५।८७।२
३. अहिंसिताः,
सा०- ६।५०।४, १५
४. अनभिभूताः,
स्क० - ६।५०।४, १५, ६६।१०,
स्क०वे०सा०- ६।६७।२
५. अनभिभूतपूर्वाः,
स्क०- ६।६६।१०
६. अधर्षिताः,
वे०- ६।५०।४, ८।६६।१०
७. अनाधृष्टाः,
वे०- ६।५०।१५, ६६।१०
८. अधर्षकाणि,
सा०- ८।६६।१०
९. अधृष्याः,
सा०- १०।१०१।८
१०. अप्रधृर्षिताः,
वे०- ७।३।८, सा०- १०।१००।१२
(अप्रधृष्याः)
११. असमर्थः,
सा०- १०।१०८।६
१२. अधर्षणीयम्,
सा०मु०- ५।८७।२

अधेनु

१. अधेनुस्थानीयया कामान् अदोग्ध्र्या वाचा,
स्क०- १०।७१।५
२. द्रोणदुधेति,
वे०- १०।७१।५
३. निवृत्तप्रसवाम्,
वे०- १।११७।२०
४. धेनुत्वविवर्जितयाकामानामदोग्ध्र्या देवमनुष्यस्थानेषु वाक्प्रतिरूपया,
सा०- १०।७१।५
५. अदोग्ध्रीम्,
सा०मु०- १।११७।२०

अध्यक्ष, क्षा

१. अधिद्रष्टा,
वे०- १०।१२९।७
२. अनुसंधातारम्,
वे०सा०- ८।४३।२४
३. प्रत्यक्षम्,
सा०- १०।८८।१३
४. स्वामिनम्,
सा०- १०।८८।१३
५. ईश्वरेण सता,
सा०- १०।१२८।१
६. ईश्वरः,
सा०- १०।१२९।७

अधि-आरुह्

उपरि ... आरोहति,

सा०- ९।७५।१

अधि-आस्

१. सर्वस्योपरि द्युलोके आसते,

स्क०- १।२५।९

२. उपरि तिष्ठन्ति,

सा०मु०- १।२५।९

अध्रिगु

१. अधृतगमनः,

स्क० - ६।४५।२० (अधृतगमनः। सर्वत्राऽप्रतिहतगतिरित्यर्थः), वे०- १।६१।१, ५।७३।२, १०।१, ६।४५। २०, ८।१२।२, २२।११, ९३।११, वे०सा०- ८।६०।१७, ७०।१, ९।९८। ५, सा०- ३।२१।४ (अधृतगमनः सततगमनस्वभावः), ६।४५।२० (अधृतगमनः। अप्रतिहतगतिरित्यर्थः) ८। २२। १०, सा०मु०- १।६१।१, (अधृतगमनाय। अप्रतिहतगमनाय), ५। १०।१ (अधृतगमनः अधृतम् अप्रतिहतं गमनं यस्य), ७३।२ (अधृतगमनकर्माणौ)

२. अधृता अनिवारिता गावो रश्मयो यस्य,

सा०- ५।१०।१

३. अधृतगमनमनिवारितगतिमेतत्संज्ञं चार्षिम्,

सा०- ८।१२।२

४. देवानां शमिता,

सा०- १।११२।२०

५. अधृतगमनः संग्रामे त्वरमाणो वीरः,

सा०- ८।९३।११

६. गवे अधृतत्वादिन्द्र,

वे०- १।११२।२०

अध्रि - गो

१. अधृतगमना परैरनिवारितगतयः,

सा०मु०- १।६४।३

२. गौः द्यौः, तत्राऽधृताः अव्यवस्थातारः अध्रिगावः,

स्क०- १।६४।३

३. अधार्यगमना अध्रिगावः,

स्क०- १।६४।३।

४. अधृतगमनाः,

वे०- १।६४।३

५. अधृतगमनाः कर्मसु त्वरमाणाः,

वे०सा०- ८।२२।११

अध्रिज

१. अत्रिकुलजातः। छान्दसो धकारः,

वे०- ५।७।१०

२. अधृतम् अन्यैरग्निव्यातिरिक्तैः,

सा०- ५।७।१०

३. अधृष्यं जनयिता ऋषिः,

सा०- ५।७।१०

अध्वस्मन्

१. ध्वंसनरहिताः,

वे०- १।१३९।४, सा०- २।३४।५

२. ध्वंसमकुर्वाणाः,

सा०- १।१३९।४

३. ध्वंसनरहितैस्तेजोभिः,

सा०- २।३५।१४

४. ध्वंसनवर्जितैः,

वे०- ९।९१।३

५. ध्वंसनवर्जितैर्हिंसारहितैः,

सा०- ९।९१।३

६. अध्वंसनैः मार्गैः,

वे०- २।३४।५

७. *अशुष्यद्भिस्तेजोभिः*,
वे०- २।३५।१४

अन्

१. *प्राणिति जीवति*,
उ०- १०।३२।८
२. *मथितः*,
वे०- १०।३२।८
३. *मथनेन चेष्टितोऽभवत्*,
सा०-१०।३२।८
४. *प्राणितवत्*,
सा०- १०।१२९।२
५. *अजीवत्*,
वे०- १०।१२९।२

अन्य, न्या

१. *अदृष्टपूर्वा*,
वे०सा०- ८।२७।११
२. *उक्तविलक्षणाम्*,
सा०-८।१।१०

अनत्

१. *प्राणिति जीवति च*,
वे०- १।१६४।३०
२. *प्राणनं कुर्वत्*,
सा०-१।१६४।३०

अनु

मनुष्याः। ऋभवः,
वे०सा०मु०- ५।३१।४

आनव

१. *मनुष्याणां सम्बन्धिनम्*,
वे०-८।७४।४
२. *मनुष्यनाम*,
स्क०-६।६२।९ (अनवः, निघ० २,३ इति मनुष्यनाम। अनोरपत्यम् आनवः), वे०- ६।६२।९ (अनुरिति मनुष्य नाम)
३. *मनुष्यसंबन्धिने*,
सा०-६।६२।९
४. *मनुष्यसंबन्धिनं तेषां हितकारणम्*
सा०-८।७४।४
५. *अनोः पुत्रस्य*,
वे०-८।४।१। (अनोः पुत्रः आनवः), वे०सा०- ७।१८।१३
६. *अनोः संबन्धिनो बलस्य*,
सा०- ७।१८।१३
७. *अनुर्नाम राजा। तस्य पुत्रे राजर्षौ*,
सा०-८।४।१

अनक्ष्

अन्धः,
सा०- २।१५।७

अनक्ष, क्षा

१. *अक्षिवर्जिता दर्शनहीना। अचेतनेत्यर्थः*,
उ०सा०- १०।२७।११
२. *अक्षिवर्जिता*,
वे०-१०।२७।११
३. चक्षुवर्जिताः साधु पदार्थानामद्रष्टारो नराः,
सा०-९।७३।६

अनग्नित्रा

१. *येऽग्निना मनुष्या न रक्ष्यन्ते*,
वे०-१।१८९।३
२. *अग्निना अपालिताः*,
सा०-१।१८९।३

अनग्निदग्ध

श्मशानकर्म न प्राप्ताः,
उ०सा०- १०।१५।१४

अनतिद्भुत

१. यानि त्वद् गुणान् नाऽतिभवन्ति सत्यानि,
वे०-८।९०।३
२.त्वद्गुणान् सर्वानतिक्रम्य न भवन्ति। इन्द्रगुणव्यापकानि। यथार्थभूतानि,
सा०-८।९०।३

अनदती

१. शब्दमकुर्वतीः,
वे०-३।१।६
२. अभक्षयन्तीः,
सा०-३।१।६

अननुकृत्य, त्या

१. अननुकरणीयम्,
उ०सा०-१०।६८।१०
२. अननुकर्तव्यम्,
वे०-१०।६८।१०
३. अनुकर्तुमशक्यानि,
वे०- १०।११२।५
४. अनुकरणरहितेन सत्कृतप्रहारेण शत्रुहननसमर्थेन,
सा०-१०।११२।५

अनन्त

१. अपर्यन्तम्,
वे०-१।११३।३, ११५।५, वे०सा०-४।१।७, ६।६१।८, ७।१०४।१७, १०।७५।३, सा०-६।६१।८, (अपर्यन्तोऽपरिमितः)
२. अवसानरहितः,
सा०मु०-१।११३।३, ११५।५ (अवसानरहितं कृत्स्नस्य जगतो व्यापकम्)
३. अत्यन्तबहुः,
स्क०-१।११३।३, १२२।९
४. बहवः,
स्क०-६।६१।८, वे०-५।४७।२
५. अत्यन्तमहत्,
स्क०- १।११५।५, वे०-१।१३०।३ (महति)
६. निरवधिकैः
सा०,मु०-१।१२२।९
७. अपरिमितः,
उ०- १०।७५।३, वे०- १।१२२।९ (अपरिमितैः), सा०- १।१३०।३, सा०मु०- ५।४७।२

अनन्तशुष्म

१. बहुबलाः,
स्क०-१।६४।१०
२. अनन्तबलाः,
वे०-१।६४।१०
३. अनवच्छिन्नबलाः,
सा०मु०- १।६४।१०

अनपच्युत

१. स्वाधिकारादनपगतः,
उ०सा०- १०।२६।८
२. च्युतिरहितम्,
सा०-१०।९३।१२
३. विनाशरहितः,
सा०-४।३१।१४
४. अनुपक्षीणम्,
सा०मु०-५।४४।६
५. अप्रस्खलितम्,
वे०-५।४४।६
६. अपच्यावनीयौ,
सा०-८।२६।७
७. संग्रामेषु शत्रुभिरहिंसितम्,
सा०-८।९२।८

८. अप्रच्युतः। अनभिगतः,
सा०-८।९३।९
९. अनाहतः,
सा०-९।४।८
१०. शत्रुभिरपराजितौ,
सा०-९।१११।३
११. विच्युतिरहितम्,
सा०-४।१७।४

अनपत्य

१. पुत्राणामयोग्यानि ज्वरादीनि,
वे०-३।५४।१८
२. अपत्यानां पुत्राणामहितानि कर्माणि,
सा०-३।५४।१८
३. पतनकारणं न भवतीत्यपत्यम्। तदन्यान्यपत्यानि पतनकारणानि कर्माणि,
सा०-३।५४।१८

अनपवृज्य

१. अपवर्जितुमशक्यान्,
वे०-१।१४६।३
२. अपवर्जनीयरहितान्,
सा०-१।१४६।३

अनपव्ययत्

१. अनपगच्छन्तः,
वे०-६।७५।७
२. अपलायमानाः,
सा०-६।७५।७

अनपस्फुर

१. अत्यन्तम् अप्रवृद्धोदकाः,
वे०-८।६९।१०
२. प्रवृद्धा एतवर्णा गावः,
सा०-८।६९।१०
३. अनपस्फुर इत्यत्राप्यपशब्दो-ऽनुवादी धात्वर्थस्य। तथा सत्ययमर्थः। .... अनपस्फुरोऽप्रवृद्धोदका,
सा०-८।६९।१०
४.अपस्फुरोऽपस्फुरा अप्रवृद्धाः। अता-दृश्योऽनपस्फुरः अत्यन्तं प्रवृद्धा इत्यर्थ,
सा०- ८।६९।१०

अनपस्फुरन्ती

अनवहिंसिताम्,
सा०-४।४२।१०

अनपस्फुरा

१. अविचालिनीम्,
स्क०-६।४८।११
३. प्रस्फुरन्तीम्,
वे०-६।४८।११
३. स्फुरतिर्वधकर्मा। अनपबाध्याम्,
सा०-६।४८।११
४. अनपबाधनीयम्,
सा०-६।४८।११

अनपावृत्

१. अनवगन्तारम्। सङ्ग्रामेष्व-पलायिनम्,
स्क०-६।३२।५
२. अपनपवरणीयम्,
वे०-६।३२।५
३. अपावर्तनं पुनरागमनं यथा न भवति तथा,
सा०-६।३२।५
४. अपगतिरहितम्,
सा०-१०।८९।३

अनपिनद्ध

१. अबद्धभूतम्,
स्क०-६।७२।४
२. केनाप्यबद्धम्,
सा०-६।७२।४

अनप्नस्

१. *अकर्मणः,*
वे०-२।२३।९
२. *अरूपाः,*
वे०-२।२३।९
३. *कर्महीनान्,*
सा०-२।२३।९
४. *अनप्नसोऽप्न इति रूपनाम*
सा०- २।२३।९ (निरुक्त ३।११)

अनभिम्लातवर्ण

१. *अग्लानवर्णः,*
वे०-२।३५।१३
२. *अभित म्लातो म्लानः क्षीणो वर्णो यस्य तद्विपरीतोऽत्यर्थः दीप्यमानः सन्,*
सा०-२।३५।१३

अनभिशस्ता

१. *अनिन्दिताः,*
वे०- ९।८८।७
२. *अभिशासो निन्दा। अनिन्दिताः,*
सा०- ९।८८।७

अनभीशु

१. *अश्वरश्मिरहितः,*
स्क०- ६।६६।७
२. *अभीशुवर्जितः,*
वे०-१।१५२।५, ६।६६।७
३. *अश्वप्रग्रहाभ्यां वर्जितः,*
वे०-४।३६।१
४. *आलम्बनाधारप्रग्रहस्थानीय रश्मिरहितः,*
सा०-१।१५२।५
५. *प्रग्रहरहितः,*
सा०-४।३६।१
६. *पाशरहितः,*
सा०-६।६६।७

अनमस्यु

१. *सन्ध्यर्थम् अनमनशीलः,*
उ०-१०।४८।६
२. *अनमनशीलः,*
वे०-१०।४८।६
३. *अप्रणतिशीलः,*
सा०-१०।४८।६

अनमीव, वा

१. *अरोगाः मानसदुःखवर्जिताः,*
उ०-१०।१८।७
२. *अरोगाः आरोग्यजननीः,*
उ०-१०।१७।८
३. *अरोगाः,*
उ०वे०-१०।३५।६, ३७।७
४. *रोगवर्जिताः,*
सा०-३।२२।४, (रोगादिवर्जिताः), ५९।३, ६२।१४
५. *रोगरहिताः,*
सा०-१०।३५।६, ३७।७
६. *अरोगकृत्,*
सा०-७।५४।१
७. *रोगाभावम्,*
सा०-१०।१४।११
८. *आरोग्यहेतोः,*
सा०-३।१६।३
९. *आरोग्याणि,*
वे०-३।६२।१४
१०. *अमीवारहितानि,*
वे०-३।२२।४, ७।४६।२, १०।९८।३
११. *अमीवा रोगः। तामकुर्वन्,*
सा०-७।४६।२

१२. *अमीवारहितं स्थानम्*,
वे०-१०।१४।११
१३. *अमीवारहिताम्। वाचोऽमीवा नाम गद्गदादिदोषः*,
सा०-१०।९८।३
१४. *अमीवा रोगः। तद्वर्जितान्यारोग्य-जननानि*,
सा०- १०।१७।८
१५. *अमीवा रोगः। तद्वर्जिताः मानस-दुःखवर्जिता इत्यर्थः*,
सा०-१०।१८।७
१६. *अराक्षसाः*,
वे०-३।५९।३
१७. *रक्षोवर्जितानि*,
वे०-१०।१७।८
१८. *अभिभवितृवर्जितेन*,
वे०-३।१६।३

अनर्व, र्वा

१. *अनाश्रयम्*,
वे०-१।१६४।२
२. *अप्रस्खलितम्*,
वे०-१।१८५।३
३. *अनरणम् अक्षीणम्*,
सा०-१।१८५।३
४. *अशिथिलम्*,
सा०-१।१६४।२

अनर्वन्

१. *अप्रत्यृतम्* ,
वे०-१।३७।१, ९४।२, १९०।१, ७।९७।५, ८।३१।१२, ९२।८, १०।३६।११, ६१।५, ६१।१३, ९२।१४, ९९।३,
सा०- ५।५१।११
२. *अप्रत्यृते शीघ्रगमने सूक्ष्मदर्शने*,
वे०-१।११६।१६
३. *शत्रुभिरप्रत्यृतः सन्*,
वे०-४।१७।२०। (अप्रत्यृतः। केनापि प्रतिकूलेन न प्राप्त इत्यर्थः), सा०मु०-१।९४।२
४. *मर्त्यम् अप्रत्यृतम् अस्खलितम्*,
वे०-१।१३६।५
५. *अप्रत्यृतः। केनापि प्रतिकूलेन न प्राप्तः*,
सा०-४।१७।२०
६. *अप्रत्यृतः केनाप्यतिरस्कृतः*,
सा०-५।४९।४
७. *अप्रत्यृतं शत्रुभिरनभिगतम्*,
सा०-६।४८।१५, (अप्रत्यृतानां शत्रुभिर-नभिगन्तव्यानाम्) १०।६५।३
८. *अप्रत्यृतं केनाप्यप्रतिगतम्*,
सा०-७।९७।५
९. *अप्रत्यृताः परैरप्रतिगताः*,
सा०-८।१८।२
१०. *अप्रत्यृतमनभिगतम्*,
सा०-८।९२।८
११. *अप्रत्यृतानाम् आश्रिततया अन्यं प्रति अगतानां स्वतन्त्राणाम्*,
उ०-१०।३६।११
१२. *अप्रत्यृतानाम् अन्यं प्रति आश्रित-त्वेन, स्वतंत्राणाम्*,
उ०-१०।६५।३
१३. *अप्रत्यृतां पत्युरपत्यान्तत्वेना-प्रतिगताम्*,
सा०-१०।९२।१४
१४. *अर्वा गन्तव्यः। शत्रुभिरगन्तव्यस्य अप्रत्यृतस्य*,
सा०-८।३१।१२
१५. *अशत्रुः*,
वे०-५।४९।४, ५१।११

१६. *अन्यत्र आश्रिततया गन्ता अर्वा। आश्रितः इत्यर्थः। ततोऽन्यः अनर्वा ... अनाश्रितम्,*
स्क०-१।३७।१
१७. *अन्यं वाऽनाश्रिततया गच्छतीत्यनर्वा। अन्यं च अनाश्रित्य स्वस्थाने निवसतीत्यर्थः,*
स्क०-१।९४।२
१८. *अन्यं प्रत्याश्रिततया न गच्छतीत्यनर्वा,*
स्क०- १।९४।३, ११६।६ (अन्यं प्रत्याश्रिततया यो न गतः सोऽनर्वा)
१९. *अन्यं प्रति आश्रिततया नानर्वत्वम्। अनर्वाणम् अन्यत्रानाश्रितं पूषणम्*
वे०-६।४८।१५
२०. *अप्रतिगतानाम्,*
सा०- १०।३६।११
२१. *द्रष्टव्यं प्रति पितृशापात् गमनरहिते,*
सा०मु०-१।११६।१६
२२. *भ्रातृव्यरहितम्*
सा०मु०-१।३७।१
२३. *अभिगन्तृरहितः,*
वे०सा०- ७।२०।३
२४. *युद्धेष्वपराङ्मुखः,*
सा०-७।२०।३
२५. *प्रच्युताः,*
वे०-८।१८।२
२६. *अगन्तारम्। स्तोतुरधीनम्,*
सा०-१।१९०।१
२७. *अविचलमनल्पम्*
सा०-२।६।५
२८. *अस्खलितम्,*
वे०-२।६।५
२९. *तन्तावप्रस्खलितम्,*
वे०-१।५१।१२
३०. *गमनरहितं स्थिरम्,*
सा०मु०- १।५१।१२
३१. *अपापाः,*
सा०-१।१९०।६
३२. *अनश्वाः,*
वे०-१।१९०।६
३३. *अद्वेषिणम्,*
सा०-१।१३६।५

अनर्श-राति

१. *अपापकदानम्। अपापिष्ठस्य दातारम्,*
सा०-८।९९।४
२. *अनर्शरातिमनश्लीलदानमश्लीलम् पापकम्,*
सा०-८।९९।४ (यास्क- ६।२३)

अनवद्य, द्या

१. *अवद्यरहितः,*
वे०-१।६।८, ३३।६, ७३।३, (अवद्यरहिता रूपिणी), २।२७।२, ३।३१।१३, ४।३२।५, ९।६९।१०, वे०सा०मु०-१।७१।८, सा०१०।१४७।२
२. *अवद्येन गर्ह्येण पापेन रहिताः,*
सा०-२।२७।२
३. *दोषरहितैः,*
सा०-३।३१।१३, सा०मु०- १।६।८, ३१।९
४. *अगर्ह्यम्,*
स्क०-१।६।८, ७१।८, सा०-९।६९।१०
(गर्हारहितः)
५. *प्रशस्य,*
स्क०-१।३१।९, ३३।६, वे०-१०।१४७। २
६. *गर्हणीयदोषरहितस्येन्द्रस्य,*
सा०मु०-१।३३।६

७. *अनिन्दिता,*
सा०मु०- १।७३।३
८. *शुद्धा,*
सा०-१।१२३।८
९. *अनिन्दितं यं यजमानं धन-विद्यादिना,*
सा०-१।१२९।१
१०. *कातरत्वानिन्दावन्,*
सा०-१।१७४।२
११. *अनिन्दिताभिः,*
सा०-४।३२।५, ७।५७।५
१२. *अनिन्द्या,*
वे०-६।१९।४
१३. *पापरहिताः,*
सा०-६।१९।४
१४. *रूपवती,*
स्क०-१।७३।३

अनवद्यरूपा

१. *प्रशस्तरूपा,*
उ०-१०।६८।३
२. *प्रशस्यरूपा,*
सा०-१०।६८।३

अनवपृग्ण

१. *अनवपृक्तान्यपतितानि तेजांसि,*
वे०-१।१५२।४
२. *विततानि तेजांसि,*
सा०-१।१५२।४

अनवब्रव

१. *अनवमानां वचनानां वक्ता,*
वे०-१०।८४।५
२. *अनिन्दितवचनः,*
सा०-१०।८४।५

अनवभ्र-राधस्

१. *अविभ्रंशितयजमानधनाः,*
वे०-१।१६६।७
२. *अनपभ्रष्टधनाः,*
वे०-२।३४।४
३. *अभ्रष्टहविरादिधनाः,*
सा०-१।१६६।७
४. *अनवभ्रष्टधनाः*
सा०मु०- ५।५७।५
५. *अवभ्रमिति बिभर्तेर्धारणार्थस्य रूपम्, अव अधः भ्रियते धारितं दृश्यते यत्तद् अवभ्रराधो धनं येषां ते अवभ्रराधसः निकृष्टधनाः न अवभ्र-राधसः अनवभ्रराधसः उत्कृष्टधनाः,*
स्क०- ५।५७।५
६. *अनपभ्रंशितधनाः*
वे०-३।२६।६
७. *अनपभ्रंशितयजमानधनाः,*
वे०-५।५७।५
८. *भ्रंशनरहितं राधो धनं येषां ते,*
सा०-२।३४।४
९. *न विद्यतेऽवभ्रंशो यस्य तदन-वभ्रम्। अनवभ्रं राधो धनं येषां तेऽनव-भ्रष्टधनाः। सम्पूर्णधनाः,*
सा०-३।२६।६

अनवस

१. *अवसं पथ्यदनम्, तद्रहितश्च,*
स्क०-६।६६।७
२. *अन्नवर्जितः,*
वे०-६।६६।७
३. *पथ्यदनरहितः,*
सा०- ६।६६।७

अनवस्यत्

१. *असमापयन्तः सर्वदाऽनुतिष्ठन्तः,*
वे०-४।१३।३
२. *अविमुञ्चन्तः कुर्वन्त एव,*
सा०-४।१३।३

अनवह्वर

१. *कर्मणोऽनपभ्रष्टम्,*
वे०-२।४१।६
२. *अकुटिलं यजमानम्,*
सा०-२।४१।६

अनवाय

१. *अव्यपेयम्,*
वे०-७।१०४।२
२. *अनवयवम्,*
वे०-७।१०४।२
३. *यदन्ये न व्यवेयुः,*
वे०-७।१०४।२
४. *अव्यवायमनवयवं नैरन्तर्येण यथा भवति,*
सा०-७।१०४।२

अनश्रु

१. *अश्रुवर्जिता अरुदत्यः,*
उ०सा०- १०।१८।७
२. *अश्रुवर्जिता,*
वे०-१०।१८।७

अनश्व

१. *अश्ववियुक्तम्,*
स्क०-१।११२।१२
२. *अश्ववर्जितम्,*
स्क०-१।१२०।१०, वे०-१।१५२।५, ४।३६।१, ६।६६।७, वे०सा०मु०-५।३१।५
३. *वाहनाश्वनिरपेक्षः,*
सा०-४।३६।१
४. *अश्वरहितम्,*
स्क०वे०सा० - ६।६६।७, वे०-१।१२०।१०, सा० - १।१५२।५
५. *अश्वरहितम् अश्वराहित्येऽपि सामर्थ्यातिशयेन गच्छन्तम्,*
सा०मु०- १।१२०।१०
६. *अश्वैर्वियुक्तमात्मीयम्,*
सा०मु०- १।११२।१२

अनश्वदा

१. *अश्वस्य अदातारम्,*
वे०-५।५४।५
२. *पणिभिरपहृतानामश्वानामप्रदातारम्,*
सा०-५।५४।५
३. *व्यापकोदकादातारम्,*
सा०मु०- ५।५४।५

अनष्टपशु

१. *यस्मिन् सति न नश्यन्ति पशवः, सर्वेषां भूतानां गोपयिता,*
वे०-१०।१७।३
२.*अविनश्वरपशुयुक्तः। यस्मिन् सर्वे पशवस्तिष्ठन्ति न तु नश्यन्ति,*
सा०-१०।१७।३

अनष्टवेदस्

१. *अनष्टज्ञानम्,*
स्क०-६।५४।८
२. *अनष्टधनम्,*
स्क०वे०-६।५४।८
३. *अविनष्टधनम्,*
सा०-६।५४।८

अनस्

१. *शकटसदृशं मेघम्,*
उ०-१०।७३।६

२. *रथम्,*
वे०-२।१५।६, ३।३३।९, सा०-१०।९५।१०, १०२।६
३. *शकटम्,*
वे०सा०- ४।३०।१०, १०।७३।६, सा०-२।१५।६, ३।३३।९, १०, ४।३०।११, ८।९१।७, १०।५९।१०, ८५।१२, ८६।१८
४. *शकटं रथम्,*
सा०-१०।१३८।५

अनड्डुह्
१. *अनोवहनसमर्थम्,*
सा०-१०।५९।१०
२. *रथस्य वोढारौ,*
सा०-१०।८५।१०

अनर्विश्
१. *अगता विशो यस्य सोऽनर्विद्,*
स्क०-१।१२१।७
२. *अनसा यः कार्येषु विशति,*
वे०-१।१२१।७
३. *अनसा शकटेन इन्धनाद्याहरणाय अरण्यं प्रविशते तथा गन्तव्यं स्थलं प्रति गन्तुमशक्ताय पुरुषाय,*
सा०मु०-१।१२१।७

अनस्-वत्
१. *अनोवहनयोग्यावनड्वाहौ सतां पतिः,*
वे०-५।२७।१
२. *अनसा शकटेन संयुक्तौ,*
सा०मु०-५।२७।१

अनस्थ
१. *अस्थिवर्जितः,*
वे०-८।१।३४
२. *अस्थिरहितः स चावयवः,*
सा०-८।१।३४

अनस्थन्
अस्थिरहिता अशरीरा सांख्यप्रसिद्धा प्रकृतिः वेदान्तप्रसिद्धा ईश्वरायत्ता माया,
सा०-१।१६४।४

अनाकृत
१. *अपराङ्मुखः,*
वे०-१।१४१।७
२. *अनिवारितोऽप्रतिहप्रसरः,*
सा०-१।१४१।७

अनाग, गा
१. *कर्मवैगुण्यजनितापराधवर्जिता,*
उ०-१०।३६।१२
२. *अपापा,*
वे०-३।५४।९, वे०सा०- १०।१२।८
३. *अनागसः,*
वे०-७।८७।७
४. *अनागस्कान्,*
वे०-४।१२।४
५. *अनागसः पापरहितान्,*
सा०- ४।१२।४
६. *अनपराधाः सन्तः,*
सा०-७।८७।७

अनागस्
१. *अपापः,*
वे०-१।१२३।३, ४।३९।३, १०।३५।३, ३६।९, ३७।७, ६३।१०, १६४।५, १६५।२, वे०सा०- ७।६२।२, ८६।७, ८।६७।७, सा०-४।५४।३, ७।६०।१, ८।४७।१८
२. *पापरहितः,*
उ०सा०-१०।६३।१०, सा०-४।३९।३, १०।६३।४

३. *निष्पापः,*
मु०- ५।८३।२
४. *पापहन्ता,*
सा०-७।६६।४
५. *अपापहेतुः,*
सा०-१०।१६५।२
६. *अपगतपापाः,*
स्क०-१।२४।१५
७. *अपापान् यागयोग्यान्,*
सा०-१।१२३।३
८. *अपराधरहितः,*
सा०-१०।३५।३, सा०मु०-१।२४। १५
९. *अनपराधः,*
वे०-५।८३।२, सा०-१०।१६४।५,
सा०मु०- ५।८२।६ (अनपराधिनः)
१०. *अपराधहीनान्,*
सा०-२।२३।७
११. *अनपराधाः निर्दोषाः,*
उ०-१०।६३।४
१२. *अपराधवर्जिताः,*
सा०-१०।३६।९, ३७।७
१३. *कर्मवैगुण्यजनितापराधवर्जितान्,*
उ०-१०।३५।३, ३६।९, ३७।७
१४. *प्रमादरहिताः,*
वे०-१।२४।१५

अनागास्-त्व

१. *अपापत्वं पापराहित्येन कर्माहताम्,*
सा०मु०- १।९४।१५, १०४।६ (अपापत्वे पापराहित्ये)
२. *आगः पापमुच्यते। अपापत्वम् अपुण्यवर्जितम्,*
स्क०-१।९४।१५
३. *अपापवादम्,*
वे०-१।९४।१५
४. *अनागास्त्वम् इति आगश्शब्दः अपराधवचनः ...वैगुण्यलक्षणापराध-वर्जित्वं,*
स्क०-१।९४।१५
५. *अपापत्वार्थं चेत्यर्थः,*
स्क०-१।१०४।६
६. *अदारिद्र्ये,*
वे०-१।१०४।६
७. *सर्वतो निष्पापत्वम्,*
सा०-१।१६२।२२
८. *अनपराधत्वे,*
सा०-६।५०।२, ७।५१।१
९. *अपापान् सत इत्यर्थः,*
स्क०- ६।५०।२
१०. *अभ्युदये,*
वे०-६।५०।२
११. *अपापत्वे,*
वे०-७।५१।१
१२. *अपराधवर्जितवेन,*
सा०-१०।३७।९
१३. *कर्मवैगुण्यजनितपापराहित्यम्,*
सा०-१०।३५।२
१४. *कर्मवैगुण्यजनितापराधवर्जि-तत्वम्,*
उ०-१०।३५।२, ३७।९

अनातुर, रा

१. *अरोगम्,*
वे०-१।११४।१, वे०सा०-१०।९४।११,
सा०-१०।९७।२०
२. *रोगरहितम्,*
वे०सा०- ८।४७।१०
३. *आतुरा रुग्णाः तै रहितं सत्,*
सा०मु०-१।११४।१

४. *अनामयम्,*
स्क०-१।११४।१

अनाथ

नाथरहितम्,
वे०सा०-१०।१०।११

अनाधृष्ट, ष्टा

१. *अतिरस्कृता सर्वेभ्योऽपि प्रबलाः इत्यर्थः,*
सा०मु०-१।१९।४
२. *अनाधर्षिता अनभिभूतपूर्वा,*
स्क०-१।१९।४
३. *अन्यैरनभिभूताः,*
वे०-१।१९।४
४. *शत्रुभिरप्रधर्षितैः,*
सा०-४।३२।५
५. *शत्रुभिरनाधृष्टैः,*
वे०-४।३२।५
६. *अप्रतिधर्षणीयः,*
सा०-७।१५।१४
७. *अनभिभवनीयं धनम्,*
सा०-८।२२।१८
८. *अनभिभूतं धनम्,*
वे०-८।२२।१८
९. *शत्रुभिरप्रधृष्टानि अबाधितान्यसुरबलानि,*
सा०-१०।१३८।४

अनाधृष्य, ष्या

१. *शत्रुभिरनभिभाव्यम्,*
सा०-४।१८।१०
२. *अन्यैरनभिभाव्याः,*
सा०-१०।१०३।१३
३. *आधर्षयितुमशक्यानि,*
वे०- १०।४४।५, सा०-१०।४४।५ (धर्षयितुमशक्यानि)
४. *असुररक्षोभिः अभिभवितुमशक्यानि,*
उ०-१०।४४।५
५. *पापैरप्रधृष्याः,*
सा०-१०।१५४।२

अनानत

१. *आनतिरहिताः सर्वोत्कृष्टाः,*
सा०मु०-१।८७।१
२. *अप्रणतपूर्वाः,*
स्क०-१।८७।१
३. *अप्रणताः,*
वे०-१।८७।१
४. *हे अनानतपूर्वक,*
स्क०-६।४५।९
५. *कदाचिदप्यनवनत इन्द्रः,*
सा०-८।६४।७
६. *कञ्चित् प्रति नमनमकुर्वन्,*
वे०-८।६४।७
७. *अप्रह्वीभूत सर्वोच्छ्रितेन्द्र,*
वे०-६।४५।९ (अप्रह्वीभूत), सा०-६।४५।९
८. *अप्रह्वः,*
वे०- ८।९०।४, वे०सा०- ८।६८।४ (शत्रूणामप्रह्वस्य), सा०-८।९०।४ (केषामप्यप्रह्वः सन्)

अनानुद

१. *आभिमुख्येन मर्यादया वा नोदनं कर्तुं प्रेरयितुं युद्धादपनेतुमशक्यं च*
उ०-१०।३८।५
२. *अनुददातीत्यनुदः, अविद्यमानोऽनुदो यस्य सोऽननुदः। यदीयं दानं प्राभूत्यादन्योऽनुकर्तुमपि न शक्नोति,*
स्क०-१।५३।८

३. अपश्चाद्भावस्य दातेति,
वे०-१।५३।८
४. अनु पश्चाद्ददातीत्यनुदः। ... स नास्ति यस्य स तथोक्तः। प्रभूतधन-दानेन समानः नास्तीत्यर्थः ,
सा०-२।२१।४, २३।११ (अनु पश्चाद्-दातीत्यनुदः। स यस्य नास्तीत्यननुदः। दात्रन्तरशून्य इत्यर्थः)
५. अनुदानवर्जितोऽनपेक्षितबल-प्रदानः,
वे०-२।२१।४
६. सकृदेव दाता,
वे०-२।२३।११
७. अनपेक्षितबलानुप्रदानम्,
वे०सा०-१०।३८।५
८. अनु पश्चात् द्यति खण्डयतीति अनुदः अनुचरः। तादृशोऽनुचररहितः एक एव,
सा०मु०-१।५३।८

अनानुदिष्ट

१. अप्रचोदितः,
वे०-१०।१६०।४
२. अनानुक्तः अप्रार्थितः,
सा०-१०।१६०।४

अनानुभूति

१. अननुभवान्,
स्क०-६।४७।१७
२. आनुकूल्यम् अगच्छन्तीः,
वे०-६।४७।१७
३. अपरिचरणाः प्रजाः,
सा०-६।४७।१७

अनापि

१. अबन्धु,
वे०-८।२१।१३
२. बन्धुवर्जितः,
सा०-८।२१।१३

अनाप्त, प्ता

१. अप्राप्तपूर्वः केनचिच्छत्रुणा,
स्क०-१।१००।२
२. अन्ये न व्याप्नुवन्ति,
वे०-१।१००।२
३. परैरप्रपाप्तः,
सा०मु०- १।१००।२

अनाप्य

१. अन्यैः आप्तुमशक्यम्,
वे०-७।६६।११
२. अन्यैरप्राप्तम्,
सा०- ७।६६।११

अनाभयिन्

१. आभयवर्जितः,
वे०-८।२।१
२. आ समन्ताद्विभेतीत्याभयी ... नाभय्यनाभयी,
सा०-८।२।१

अनाभू

१. अमहतः,
स्क०-१।५१।९, वे०-८।९०।४
२. विपरीतान्,
वे०-१।५१।९
३. तद्विपरीतान्,
सा०मु०- १।५१।९

अनामयित्नु

१. आरोग्यस्य कर्तृभ्याम्,
वे०-१०।१३७।७
२. सम्यगारोग्यहेतुभ्याम्,
सा०-१०।१३७।७

अनामिन्

१. *अनमनशीलम्,*
वे०-३।६२।५
२. *अनतम्,*
वे०-६।८।६
३. *अनमनशीलं परैरनभिभवनीमय्,*
सा०-३।६२।५
४. *अनमनीयमनपहार्यम्,*
सा०मु०- ६।८।६

अनामृण

१. *अहिंस्यः। शत्रुभिर्हिंसितुमशक्यः,*
स्क०-१।३३।१
२. *हिंसकवर्जितः,*
वे० - १।३३।१, सा०मु० - १।३३।१ (हिंसकरहितः)

अनायत

१. *अयमूर्ध्वमाकृष्य,*
वे०-४।१३।५
२. *आयतशब्दो दूरवाची। तद्विपरीतः अनायतः आसीनः सन्,*
सा०-४।१३।५

अनायुध

१. *आयुधवर्जिताः,*
वे०-४।५।१४, ८।९६।९, सा०-८।९६।९ (धनुराद्यायुधवर्जिताः)
२. *आयुधशब्दः साधनं लक्षयति। हविरादि साधनरहिताः,*
सा०-४।५।१४

अनारम्भण

१. *आरभ्यतेऽस्मिन्निति आरम्भण-मालम्बनमुच्यते तत्र। निरालम्बने,*
स्क०- १।११६।५
२. *दण्डकाष्ठाद्यारम्भणवर्जिते,*
वे०-१।११६।५
३. *आलम्बनरहिते,*
वे०-७।१०४।३ (अनालम्बने), सा०-१।१८२।६ (अनालम्बने आलम्बनरहिते), सा०-७।१०४।३, सा०मु०- १।११६।५
४. *अनालम्भने,*
वे०-१।१८२।६

अनाशस्त

१. *ईषच्छंसनं स्तुतिराशस्तम्। अविद्यमानमाशस्तं येषां ते अनाशस्ताः ईषत्स्तुतिवर्जिताः। अत्यन्तस्तुतिपरा भवन्तः इत्यर्थः,*
स्क०-१।२९।१
२. *आशंसारहिता दरिद्रैरप्रार्थिता,*
वे०-१।२९।१
३. *अप्रशस्ता,*
सा०मु०- १।२९।१

अनाशीर्दा

१. *आशीरन्यत्र प्रार्थना इह तु सामर्थ्यात् प्रार्थितं हविरुच्यते। तन्मह्यमदतं जनम्,*
सा०-१०।२७।१
२. *आशीः प्रार्थनोच्यतेऽन्यत्र। इह तु सामर्थ्यात् प्रार्थितं हविरुच्यते। प्रार्थितहविर्मह्यमददतम् अधिकृतं पुरुषम्,*
उ०-१०।२७।१
३. *आशीरिति सोमाभिश्रयणं दध्युच्यते। तस्यादातारम् असोम-याजिनमित्यर्थः,*
उ०सा०-१०।२७।१
४. *आशिरस्याप्रदातारम्,*
वे०-१०।२७।१

अनाशु

१. अशीघ्रः,
स्क०-६।४५।२
२. अत्वरितेन,
वे०-६।४५।२
३. नाशरहिता,
सा०-१।१३५।९
४. अव्याप्ता,
सा०-१।१३५।९
५. आकाशे विलम्बमकुर्वाणा,
सा०-१।१३५।९
६. अन्तरिक्षेऽपि निरालम्बे न नश्यन्ति, न पतन्ति,
वे०-१।१३५।९
७. अक्षिप्रगमनेन,
सा०-६।४५।२
८. अशीघ्रा अत्वरमाणाः,
सा०-८।१।१४
९. आशुत्वोद्गूर्णत्ववर्जिताः,
वे०-८।१।१४
१०. अनशनस्य,
वे०सा०-१०।३९।३
११. अनुष्ठानेनाशीघ्रस्यापि अक्षिप्रकारिणोऽपि,
उ०-१०।३९।३

अनास्

१. शुष्णानुगान् अननशीलान् श्वसतः,
वे०-५।२९।१०
२. आस्यरहितान्। आस्यशब्देन शब्दो लक्ष्यते। अशब्दान् मूकान् ,
सा०-५।२९।१०, मु०-५।२९।१०
(आस्यरहितान् अशब्दान् मूकान्)

अनास्थान

१. यस्मिन्नीषदपि स्थातुं न शक्यते सोऽनास्थानः,
स्क०-१।११६।५
२. आस्थानवर्जिते,
वे०-१।११६।५
३. आस्थीयते अस्मिन् इति आस्थानो भूप्रदेशः तद्रहिते स्थातुमशक्ये जले,
सा०मु०-१।११६।५

अनाहुति

१. अविद्यमानजाठराग्न्याहुतिं विशोषणकरीम्,
उ०-१०।३७।४
२. अनाहुत्या अत्रायज्ञो लक्ष्यते। अयज्ञशीलता,
उ०-१०।६३।१२
३. अहोता,
वे०-१०।६३।१२
४. अहोमम्,
वे०सा०-१०।३७।४,
५. देवानामनाह्वानबुद्धिम्,
सा०-१०।६३।१२
६. देवानां महाशत्रुम्,
सा०-१०।६३।१२

अनितभा

इता प्राप्ता भा यस्याः सा इतभा। न तादृश्यनितभा,
सा०मु०- ५।५३।९

अनिध्म, ध्मा

१. अनिन्धनः,
उ०-१०।३०।४
२. इन्धनरहित एव सन्,
सा०-२।३५।४

३. काष्ठरहितः,
वे०-२।३५।४, वे०सा०-१०।३०।४
(काष्ठवर्जितः)

अनिन

१. ईश्वरवर्जितस्य,
वे०-१।१५०।२
२. अस्वामिनः,
सा०-१।१५०।२

अनिन्द्र, न्द्रा

१. इन्द्रमयजमानाः,
वे०-१।१३३।१
२. इन्द्रविरहितानामाश्रयभूताः,
सा०-१।१३३।१
३. इन्द्रमजानतीं राक्षसीम्,
सा०-४।२३।७
४. इन्द्ररहितां सेनाम्,
वे०-४।२३।७
५. इन्द्रः परमैश्वर्योऽग्निः। तद्रहिता अनिन्द्राः। इन्द्रमयजन्त इत्यर्थः,
सा०-५।२।३
६. यस्य बुद्धाविन्द्रो नास्त्यसावनिन्द्रः,
सा०-७।१८।१६
७. इन्द्रवर्जिताः
उ०-१०।२७।६ (इन्द्रेणेश्वरेण मया वर्जितान्), वे०-५।२।३, ७।१८।१६, सा०-१०।२७।६ (इन्द्रेण मया वर्जितान्)
८. अनीश्वरान्,
उ०-१०।२७।६
९. इन्द्रम् अनीजानान्
वे०-१०।२७।६, वे०सा०-१०।४८।७
(इन्द्रम् अजानन्तः)
१०. इन्द्ररहिता,
सा०-१०।४८।७
११. इन्द्रविरोधिनः,
सा०-१०।४८।७
१२. अविद्यमान इन्द्रो ज्ञेयतया येषां ते अनिन्द्राः मम इन्द्रस्य स्वरूपोऽज्ञातारः,
उ०-१०।४८।७

अनिपद्यमान

१. उच्चैर्गच्छन्तम्। न ह्यसौ कदाचिन्नीचैः पद्यते,
सा०-१०।१७७।३
२. अविषण्णम्,
सा०-१।१६४।३१

अनिबद्ध

१. न तत्र केनचिद् बद्धः,
वे०-४।१३।५
२. केनापि बद्धो न क्रियते ....सूर्यः,
सा०-४।१३।५

अनिबाध

१. बाधारहिते,
वे०-३।१।११, ५।४२।१७
२. असंबाधे,
सा०-३।१।११
३. नितरां बाधरहिते सुखे,
सा०मु०-५।४२।१७

अनिभृष्ट-तविषि

१. अनपभ्रष्टबलः,
वे०-२।२५।४ (अनपभ्रंशितबलः), ५।७।७
२. अनिभृष्टा परैरबाधिता तविषी बलं यस्य तादृशः सन्,
सा०-२।२५
३. अपीडितबलः,
सा०-५।७।७

अनिमान

१. निमानवर्जितः,

वे०-१।२७।११, सा०मु०- १।२६।११ (निमानवर्जितः अपरिच्छिन्न इत्यर्थः)

२. अनियतं मानं यस्य सोऽनिमानः। नियतपरिमाणवर्जितः,

स्क०- १।२७।११

अनिमिष्, षा

अनिमेषेण,

वे०- ३।५९।१, वे०सा०- ७।६०।७, सा०- ३।५९।१ (अनिमेषणानुग्रहदृष्ट्या)

अनिमिष (आद्युदात्त)

१. अनिमेषम्,

वे०- ५।१९।२, ७।६१।३

२. अव्यवधानेन सर्वदा,

सा०- ७।६१।३

३. सर्वदा,

सा०मु०-५।१९।२

अनिमिष (अन्तोदात्त)

१. निमेषवर्जितः,

वे०- २।२७।९, १०।१०३।१, सा०- २।२७।९ (निमेषरहिताः)

२. सर्वदा,

सा०मु०-१।२४।६

३. सततम्,

स्क०वे० - १।२४।६

४. चक्षुर्निमेषरहितः। सर्वदा स्वयज्ञ-गमनयुद्धादिकार्येष्वनलस इत्यर्थः,

सा०- १०।१०३।१

अनिमिषित्

१. निमेषरहितैः अनलसस्वभावैः ईदृशैः लक्षणैः,

सा० - १।१४३।८

२. निमेषमकुर्वद्भिः,

वे०- १।१४३।८, १०।६३।४ (निमेषम-कुर्वाणाः)

३. निमेषमकुर्वाणाः सर्वदा जागरूकाः,

सा०- १०।६३।४

४. अक्षिनिमेषमकुर्वन्तः,

उ०- १०।६३।४

अनिमेष

१. अनवरतम्,

वे०- १।३१।१२, सा०- १।१६४।२१

२. निमेषवर्जितम्,

स्क०- १।३१।१२

३. निरन्तरम्,

सा०मु० - १।३१।१२

अनिर

१. अन्नेना अहविष्केण,

वे० ४।५।१४

२. इरा अन्नं तद्रहितेन,

सा० ४।५।१४

अनिरा

१. अन्नाभावम्,

वे०- ८।६०।२०, वे०सा०- १०।३७।४

२. इरान्नम्। तदभावं दारिद्र्यमित्यर्थः,

सा०-७।७१।२, ८।६०।२० (इरान्नम्। अन्नाभावं दारिद्र्यम्)

३. अनतिः प्राणनकर्मा श्वासकारिण्य-शक्तिरनिरा,

वे०- ७।७१।२

४. प्रेरयितुमशक्याः,

वे०सा० - ८।४८।११

५. अनिरमणाम् अविद्यमानरतिम् अत्यन्ताप्रीतिकरीम्,

उ०- १०।३७।४

अनिवेशना

१. निविश्यते क्षीयते यस्मिन् नदीनदादौ स्थाने तन्निवेशनम्, तद् यासां नास्ति भूयस्त्वात् तासामनिवेशनानाम्। भूयस्त्वादसम्भविव्यस्थानां चलानां बह्वीनां चेत्यर्थः,
स्क०- १।३२।१०
२. अस्थानानाम्,
वे०- १।३२।१०
३. उपवेशनरहितानाम्,
सा०मु० १।३२।१०

अनिवृत

१. अप्रतिहतगतिः,
वे०- ३।२९।६
२. केनाप्यप्रतिबद्धगमनः सोऽयमग्निः,
सा०- ३।२९।६

अनिशित, ता

१. अतीक्ष्णम्,
वे०-२।३८।८, सा०-२।३८।८ (अतीक्ष्णम्। सुखकरम्)
२. असंस्कृतमयुक्तम्,
वे०-९।९६।२, सा०- ९।९६।२ (असंस्कृतमयुक्तमनुगतम्)

अनिशित-सर्गा

अतनूकृतविसर्गाः,
वे०सा०-१०।८९।४

अनिःशस्त

१. न ... निःशस्ता, अपि त्वन्तर्भूताएव,
वे०- ४।३४।११
२. अनिन्दिताः,
सा०-४।३४।११

अनिषङ्ग

१. रक्षसामनन्ववचाराय,
वे०- १।३१।१३
२. न निषज्यतेऽन्यदेवतापरिचर्यायां कामभोगेषु वेत्यनिषङ्गः, तस्मै। त्वत्स्तुतियागपराय अभोगप्रधानाय वेत्यर्थः,
स्क०- १।३१।१३
३. रक्षोभिरसंबद्धाय यज्ञाय,
सा०मु०-१।३१।१३

अनिषव्या

१. असेवितव्याश्चाश्रिकाः,
वे०- १०।१०८।६
२. इष्वर्हाणि न, सन्तु पराक्रमराहित्येन,
सा० - १०।१०८।६

अनिष्कृत

१. असंस्कृतं स्थानम्,
वे०- ८।९९।८ (असंस्कृतम्), ९।३९।२, सा० - ९।३९।२ (असंस्कृतं ... स्थानं वा)
२. स्वयमन्यैरसंस्कृतम्,
सा०-८।९९।८
३. असंस्कृतं यजमानम्,
सा०-९।३९।२

अनिष्टृत

शत्रुभिः न निष्टृतः अनिस्तीर्णः,
वे०-८।३३।९, सा०-८।३३।९ (शत्रुभिरनिस्तीर्णः)

अनीक

१. समूहम्,
उ०- १०।४३।४, स्क०- १।११३।१९ (अनीकशब्दोऽपि ब्राह्मणानीकं क्षत्रियानीकमिति प्रयोगदर्शनात् समूह-वचनः), ११५।१, १२१।४, स्क०वे०- ६।५१।१ (ज्योतिः समूहरूपम्), सा०-१।१२४।११, १६८।९, २।३५।११, (रश्मि-समूहरूपं शरीरम्) ४।५।९ (समूहरूपं

सूर्यमण्डलम्), १०।४१।३ (सेनासमूहम्) सा०मु०-१।११५।१ (समूहरूपम्), ५।४८।८ (रश्मिसमूहम्)

२. सङ्घः,

वे०-१।११५।१, १६८।९, ४।५८।११, ७।१।८ (तेजस्सङ्घात्), १९ (रश्मि-सङ्घम्), १०।७।३ (ज्वालासङ्घम्) वे०सा०-८।९६।९, ७४।४ (ज्वाला-सङ्घम्), १०।६९।३ (रश्मिसङ्घम्), सा०- ७।८८।२ (ज्वालासङ्घम्), सा०मु०-१।१२१।४

३. मुखम्,

उ०- १०।६९।३ (ज्योतिः मुखं वा ज्वालालक्षणम्), ७।३ (मुखम् आह-वनीयाख्यम्), स्क०- १।११३।१९ (ज्योतिषो मुखभूतेत्यर्थः), ६।४७।२८ (मुखसमूहः), वे०-७।४।३, वे०सा०-९।९७।२२, १०।२।६, वे०सा०मु० – ५।७६।१, सा०-८।२०।१२ (सेनामुखेषु) १०।७।३ (आहवनीयाख्यं मुखम्)

४. खड्गस्य मुखम्, अग्रम्,

स्क०-१।११३।१९ (अनीकशब्दः खड्ग-मुखवचः। इहाग्रत्वसामान्यादुषसि प्रयुज्यते), ६।४७।५ (अनीकमिति खड्गस्य मुखमुच्यते। इह प्राथम्य-सामान्याद् अग्रे प्रयोगः। उषसामग्रे)

५. अग्रवचनः,

वे०-४।५।९, वे०सा०-१०।४३।४ अग्रम्

६. तेजोभिः,

वे०-३।१९।४, वे०सा०-३।१।१५, ४।१०।३, सा०-३।५४।१, ४।११।१, १२।२, ६।५१।१, ७।१।८, ९, ८।५

७. सेनारूपतया सर्वत्र प्रसृतानि ज्वालारूपाणि तेजांसि,

सा०-३।१९।४

८. सौरं तेजः,

सा०-३।३०।१३

९. ज्योतिः विद्युल्लक्षणम्,

उ०-१०।४८।३

१०. रूपम्,

सा०-५।२।९

११. समीपे,

सा०-८।१०२।१३

१२. मुख्ये,

सा०-७।४।३

१३. रश्मयः

वे०-२।३५।११, ७।८।५

१४. ज्वालालक्षणम्,

वे०-३।५४।१, ४।५।१५, (ज्वालाग्रम्), ७।८८।२, सा०-७।८८।२ ज्वालासंघम्

अनीड

नीडस्याकर्ता,

वे०सा०-१०।५५।६

अनु -

१. अनुलक्ष्य,

सा०-१।१२८।१, १३६।५, १८१।५, २।२।८, ६।४६।१४, ७।७७।३, ८।१०।६, ११।८, १९।३५, १०।१२४।९, १४५।६, १५९।२, सा०मु०-१।६।४, २५।१६, ३३।११, ३८।११, ४४।१०, ४९।३, ८०।१, ८४।१०, ८८।६, ११३।१३, १२१।७

२. अनुक्रमेण,

वे०-१।१२६।५, ४।२२।७, ६।३६।२, ७।१८।१२, ८७।७, ८।४।२०, वे०सा०-३।८६।३, ९।१०९।७, १०।२।३, ५१।६,

सा०-१।१४१।९, १६६।१०, २।२४।१३, ३।१७।१, ५१।१० (अनेनानुक्रमेण। उद्देशानुक्रमेणेत्यर्थः), ८।१७।५, १०।६८।१२, सा०मु०-१।३७।९, ५०।३, ६

३. लक्षीकृत्य,

उ०वे०सा०-८।४१।१०, ९।७०।३, वे०-१।३८।११, १२८।१, १३६।५, १७६।२, ३।५१।१०, ५।४४।३, ६१।१९, वे०सा०- ३।१२।७, सा०-१।१९१।१५, ३।३३।४, ४३।१, ४।१६।१८, १०।४०।९

४. अनुलक्षीकृत्य,

वे०-१०।१७।११

५. लक्ष्यीकृत्य,

वे०- १।१३८।३, २।३६।६, ३।३३।३, ७।७७।३

६. अभिलक्ष्य,

सा०-२।८।५, ३।३३।३

७. प्रति,

उ०-१०।१४।१, स्क०-१।८४।१०, ६।४६।१४, स्क०वे०-१।२५।१६, ४९।३, ५०।३, ६, ८२।३, १२०।११, वे०-१।१५।३, ११३।१३, १४१।९, १६४।२८, १७५।६, १९१।१५, वे०-२।३८।६, ३।१७।१, ४।५२।६, ५।३३।२, ६।२८।४, ६३।७, ७।३१।९, ८।१०।६, १९।३५, १०।२७।५, वे०सा०-८।१०३।२, ९।६३।६, १०।९१।७, सा०-२।१।१५

८. कर्मप्रवचनीयः,

स्क०-१।३३।११ (अनुशब्दो लक्षणे कर्मप्रवचनीयः) ३८।११ (अनुशब्दोऽपि लक्षणे कर्मप्रवचनीयः प्रतिशब्देन समानार्थः), ४४।१०, ४९।३ (अनुशब्दो लक्षणे कर्मप्रवचनीयः प्रतिशब्देन समानार्थः), ७१।६, १६७।१० (अनु अत्र वीप्सायां कर्मप्रवचनीयः ... दिवसमनु। प्रतिदिवसमित्यर्थः), ८०।८ (अनुशब्दो 'अनुर्लक्षणे' (पा० १।४।८८) इति कर्मप्रवचनीयः प्रतिशब्देन समानार्थः), ११३।१३ (अनुशब्दोऽत्र 'लक्षणेत्थं भूताख्यान' (पा०१।४।९०) इत्येवं कर्मप्रवचनीयः प्रतिशब्देन समानार्थः), सा०-१।११३।१३ ('अनुर्लक्षणे' (पा०सू०-१।४।८४) इति अनोः कर्मप्रवचनीयत्वम्) १०।१२२।२ (लक्षणेऽनोः कर्मप्रवचनीयत्वम्)

९. प्रतिदिनम्,

उ०सा०-१०।२७।५,४५।११ (प्रत्यहम्), सा०- १।१८०।८, सा०मु०-५।८६।५

१०. अनुसृत्य,

वे०सा०-८।६२।७, सा०-१।१२६।५, १३८।३, २।३०।२, ३।५१।११, १०।१४९।३, सा०मु०-१।१०।१२, १५।५, ४६।१४, ५।५३।६, ६१।१९

११. पश्चात्,

उ०-१०।४०।९, स्क०- १।६।४, १५।५, ८८।६, ८९।६, स्क०वे०-१।४६।१४, वे०-२।२४।१३, सा०-१।१६१।३, २।३८।३, ४।५२।६, ८।४।२०, १०।३७।५, १०३।६, १२२।२

१२. अनन्तरम्,

स्क०वे०-६।६४।५, वे०-१।८८।६ (तदनन्तरम्) २।२१।३, ३८।५, ५।२९।२

१३. आनुपूर्व्येण,

स्क०-६।३६।२, सा०-७।८७।७, १०।१८।१

१४. आनुकूल्येन,
सा०-१।१८७।४, सा०मु०-५।३२।१०
१५. अनुकूलम्,
सा०-१।१४८।४, (अन्विति वीप्सार्थे। प्रतिदिनमनुकूलम्) ५।५३।१०, सा०मु०-५।५९।१
१६. क्रमेण,
सा०-८।४८।१३, ६३।५
१७. उद्दिश्य,
सा०-३।४३।१, ६।२८।४, ७।३१।९, सा०मु०-५।५३।५
१८. अनुपलक्ष्य,
सा०-३।१७।५
१९. अनुभूय,
वे०-८।२०।७
२०. प्राप्य,
सा०-१।१६४।२८
२१. अनुशब्दोऽत्र धात्वर्थानुवादी,
स्क०-१।८८।६
२२. अनु इत्येष पदपूरणः। सुशब्दस्य वार्थे,
स्क०-१।१०।१२

अनुकाम-कृत्

१. अभिलषितस्य कर्ता,
वे०-९।११।७
२. अभीष्टस्य कर्ता,
सा०-९।११।७

अनु-काम

१. कामयित्वा तत्पानान्तरम्,
स्क०-१।१७।३
२. कामानभिलाषाननुगतानि। कामोपेतानीत्यर्थः। मनुष्याश्चैतानि कामयन्त इत्यर्थः,
सा०-८।९२।१३
३. कामानुगतानि,
वे०-८।९२।१३
४. कामानुगुणम्,
वे०सा०-९।११३।९
५. यथाकामम्,
वे०सा०-८।४८।८
६. कामस्य पश्चादनुकामम्। अथवा कामे कामेऽनुकामम्। अनुः इह पश्चादर्थे अथवा वीप्सालक्षणे यथार्थे,
सा०-१।१७।३
७. अनुशब्दो वीप्सायां कर्मप्रवचनीयः। कामं काममनुकामं, यदा यदा वयं कामयामहे तदा तदेत्यर्थः,
स्क०-१।१७।३
८. अस्मदीयाभिलाषमनु,
सा०मु०- १।१७।३
९. कामानन्तरम्,
वे०-१।१७।३

अनु√कृप्

१. स्तौति,
स्क० १।११३।१०
२. अनुकल्पते,
वे०-१।११३।१०, वे०सा०-८।७६।११
३. अनुकल्पते समर्था भवति,
सा०मु०-१।११३।१०

अनुक्थ

१. स्तोत्रवर्जिताः,
वे०-५।२।३
२. अस्तुतयः,
सा०-५।२।३

अनु√क्रन्द्

१. अनुक्रमेण क्रन्दते कामानामभिमतानां याचनं क्रन्दनमिति,
वे०-८।३।१०

२. अनुगच्छति,
सा०–८।३।१०

अनु√क्रम्

अनुगच्छति,
वे०सा०मु०–५।५३।११, सा०–९।११४।१

अनु√क्षर्

१. जिह्वायां सर्वदा स्त्रवन्ति,
सा०–८।६९।१२
२. प्रवहन्,
सा०–९।१७।८

अनु√गम्

१. अनुसृत्य ... गच्छथ,
सा०–१।१६१।११, ४।३५।१, सा०मु०–५।४९।४
२. अनुसृत्य ... प्राप्नुथ,
सा०–१।१६१।११
३. प्रवर्षथ,
सा०–१।१६१।११
४. तथेदानीं कुरुथ,
वे०–१।१६१।११
५. आभिमुख्येनान्वगच्छत्,
वे०–३।३९।५
६. अधोमार्गेण गच्छामि,
वे०–४।१८।३
७. चतुर्धाकरणानन्तरं ...जग्मुः,
सा०–४।३३।६
८. उद्दिश्य ... देवयजनं प्राप्ताः,
सा०–६।६३।८
९. युवाभ्यां ये प्रदीयन्ते,
स्क०–६।६३।८, वे०–६।६३।८ (दीयन्त इत्यर्थः)

अनु√गा

१. अन्वगच्छन् ... लब्धवन्तः,
सा०–३।७।७
२. अनुगायन्ति,
वे०सा०–१०।१२।३
३. अङ्गभावार्थम् अनुगच्छति,
उ०–१०।१२।३
४. अनुक्रमेण गच्छत,
वे०–१०।१९।१
५. यजमानं ...गच्छत,
सा०–१०।१९।१

अनु-गायस्

१. स्तोतृभिरनुगीयमानम्,
वे०–८।५।३४
२. स्तोतृभिरनुगातव्यम्,
सा०–८।५।३४

अनु√गृ

१. अनुस्तौति,
वे०–१।१४७।२
२. अनुकूलम् उच्चारयति,
सा०–१।१४७।२

अनुग्र

१. अनुद्गूर्णः,
वे०–७।३८।६, सा०–८।१।१४
२. उद्गुर्णत्ववर्जिताः,
वे०–८।१।१४
३. असमर्थः स्तोता,
सा०–७।३८।६

अनु√ग्रह्

अनुगम्य गृह्णाति
वे०सा०–७।१०३।४

अनु-घुष्य

१. विकथ्य,
वे०–१।१६२।१८

२. *इदमवद्यमिति संशब्द्यैव,*
सा०–१।१६२।१८

अनु √चक्ष्

१. *आनुपूर्व्येण सर्वतः पश्यति।* जानातीत्यर्थः,
स्क०–१।१२१।२

२. *अनुपश्यति,*
वे०–१।१२१।२

३. *अनुब्रवीति,*
वे०सा०–४।१८।३

४. ददर्श,
सा०–५।२।८

५. *अनुगतः पश्चाद्ददर्श,*
सा०–१०।३२।६

६. *अनु पश्चात्पश्यति प्रकाशते, स्वयं प्रौढप्रकाशोऽपि स्वगत्या निष्पादितया रात्रेरुषश्च,*
सा०मु०–१।१२१।२ (उदेतीत्यर्थः)

अनु √चर्

१. चरतिर्गत्यर्थः। गतवानहम्। यदपां माहात्म्यं तत् प्रकाशितम्,
स्क०–१।२३।२३

२. *भक्षयति,*
सा०–३।५५।७

३. *प्रतिगच्छति,*
वे०–३।५५।७

४. *यज्ञकर्माभिलक्ष्य यष्टव्यतया वर्तसे,*
सा०–३।६१।१

५. *यज्ञं लक्ष्यीकृत्य चरसि,*
वे०–३।६१।१

६. *जलान्यनप्रविष्टोऽस्मि,*
सा०मु०–१।२३।२३

७. *अनुसृत्य संचरेम सुखेन,*
सा०–४।५७।३

८. *अनुगच्छामः,*
वे०–५।५१।१५

९. *सङ्गताः,*
वे०–१।२३।२३

१०. *अनुपद्धतौ सञ्चरतः,*
सा०मु०–५।५१।१५

११. *अन्वगच्छः प्राप्तवान्,*
सा०–८।१।२८

१२. *कुर्मः,*
सा०–८।२५।१६

१३. *परिचरामः,*
सा०–८।६१।५

१४. *प्राणिनो लक्षीकृत्य सर्वत्र चरतः,*
सा०–१०।१४।१२

अनु √चित्

१. *अन्वज्ञायि,*
वे०– ४।३७।४। (अनु अज्ञायि), सा०– ४।३७।४

२. *अनुक्रमेण जानीथः,*
वे०–४।४५।६

३. *अनुक्रमेण ... चेतयथः प्रज्ञापथः,*
सा०–४।४५।६

अनु √जन्

१. *पश्चात् जाताः,*
उ०–१०।२।३

२. *तज्जन्मान्तरम् अजायन्त,*
उ०–१०।७२।५

३. *अजायन्त,*
सा०–१०।२।३

अनु √तक्ष्

१. *अनुशब्दो लक्षणे कर्मप्रवचनीयः प्रतिशब्देन समानार्थः। ... प्रति ... तक्षतिः करोतिकर्मान्यत्र। इह तु*

गमनार्थः। लङ्ऽर्थे च लट् गच्छथ,
स्क०-१।८६।३
२. संस्कुर्वन्ति,
वे०-१।८६।३
३. हविष्प्रदानादिना तीक्ष्णीकुर्वन्ति,
सा०मु०-१।८६।३

अनु√तृद्

१. केचित्तु तर्दनं विस्तारणं व्याचक्षते, विस्तारितवानित्यर्थः,
स्क०-१।३२।१
२. अन्वित्यपरभावे। अपरभावः पश्चाद्भावः। तर्दतिर्हिंसार्थः। मेघवधोत्तरकालं तदीया अपो हिंसितवान्। भूमौ पातितवानित्यर्थः,
स्क०-१।३२।१
३. अनुविध्यति,
सा०-५।१२।२, मु०-५।१२।२, (मेघान् विध्यपातय) (सा०-७।८२।३) (अन्वविध्यतं।... निराकृतवन्तावित्यर्थः)
४. पश्चात् ... हिंसितवान्। भूमौ पातितवानित्यर्थः,
सा०मु०-१।३२।१

अनुत्त, त्ता

१. अप्रेरितम्। अनभिभूतपूर्वकेनचिदित्यर्थः,
स्क०-१।८०।७, सा०-१।१६५।९ (अप्रेरितम्)
२. केनचिदहिंसितम्,
वे०-१।८०।७
३. अपरप्रेषितानि स्वभावसिद्धान्येव,
सा०-३।३१।१३
४. अन्यैरबाधितम्,
सा०- ७।३४।११
५. नोत्तुमशक्यानि,
वे०सा०-८।९०।५
६. शत्रुभिरतिरस्कृतम्,
सा०मु०-१।८०।७

अनुत्त-मन्यु

१. अनुत्तक्रोधम्,
वे०-७।३१।१२
२. केनाप्यनुत्तोऽबाधितो मन्युः क्रोधो यस्य सः,
सा०-७।३१।१२
३. अनुत्तोऽप्रेरित परैरनभिभूतो मन्युः क्रोधः यस्य तादृशम्,
सा०-८।६।३५
४. अतिरस्कृतक्रोधः,
वे०-८।६।३५
५. परैरनुन्नक्रोधः शत्रुभिर्नोत्तुमशक्यः तादृशो यः इन्द्रः,
सा०-८।९६।१९
६. अप्रतिनुन्नक्रोधः,
वे०-८।९६।१९

अनुदका

उदकरहिताः,
सा०-७।५०।४

अनु-दक्षि

१. अनु दहसि,
वे०-२।१।१०
२. अनुक्रमेण दहसि काष्ठादीन्,
सा०-२।१।१०

अनु√दह्

१. गच्छन्ति उपलभन्ते ... भस्मीकुर्वन्ति,
वे०-१०।२८।८

२. लक्षीकृत्य दहन्ति उदकनिर्गमनार्थं शोषयन्ति,
सा०–१०।२८।८
३. अनुक्रमेण दह,
वे०–१०।८७।१९
४. अनुक्रमेण .... तेजसा भस्मीकुरु,
सा०–१०।८७।१९

अनु √दा

१. अनुक्रमेण प्रतिमन्त्रं ददति,
सा०–१।१२७।४
२. अनुकूलं .... वितरसि,
सा०–१।१९०।५
३. अकारि,
सा०मु०–१।६१।१५
४. क्रमेण ददासि,
वे०–१।१९०।५
५. प्रयच्छति,
सा०–२।१२।१०
६. अनुप्रयच्छति,
वे०–२।१२।१०
७. अनु वर्तन्ते, ... हविर्लक्षणमन्नं यजमानाः प्रयच्छन्ति,
सा०–२।१३।१०
८. अनुक्रमेण सवनत्रये अदायि,
सा०–२।२०।८
९. करप्रदानं कृतम्,
वे०–२।२०।८
१०. आनुपूर्व्येण दत्तवन्तः,
सा०मु०–५।२९।५

अनुदेय

अनुदातव्यम्,
वे०सा०–६।२०।११

अनुदेयी

१. योढाया अनुसखी साऽनुदेयी,
वे०–१०।८६।६
२. दीयमानवधूविनोदनायानुदीयमाना वयस्यासीत्
सा०–१०।८५।६
३. अनुदातव्यः
सा०–१०।१३५।५,६

अनुदित, ता

१. परस्परमनुक्ताः,
वे०–१०।९५।१
२. अव्याह्रियमाणः परस्परमसंभाव्यमाणा गुम्फिताः सन्तः,
सा०–१०।९५।१

अनुदृश्य

क्रमेण ज्ञात्वा,
सा०–१०।१३०।७

अनुद्र

१. निरुदके अपि देशे,
वे०–१०।११५।६
२. उदकवर्जिते स्थाने। आपदीत्यर्थः,
सा०–१०।११५।६

अनु √धन्व

१. लक्षीकृत्य ... धारयति अध्वर्य्वादिरूपः,
सा०–२।५।३
२. अनु स्थापयति,
वे०–२।५।३

अनु √धा

१. आनुपूर्व्येण धारयन्ति,
स्क०– ६।३६।२
२. व्यधायि। अकारि,
सा०–६।२०।२

३. पुरो दधिरे,
सा०–६।३६।२
४. उद्दिश्य ... धारयामि करोमीत्यर्थः,
सा०मु०–५।५३।५

अनु√धाव्

अनुगच्छसि,
सा०–९।९७।५५

अनु√धी

१. अनुपूर्वं शास्त्रोक्तेन क्रमेण ध्यायन्त चिन्तयन्ति सततम्,
उ०–१०।४०।१०
२. अनुदधति,
वे०सा०–१०।४०।१०

अनुदीध्यान, ना

दीप्यमानाः,
वे०– ३।४।७ सा०–३।४।७, ३।७।८
(दीप्यमानाः अथवा स्वकर्मभिरग्निं दीपयन्तः ऋत्विजः)

अनुधूपित

शत्रवः धूपायमानहृदयाः,
वे०– २।३०।१, सा०–२।३०।१०
(धूपायमानहृदया मदीयाः शत्रवः)

अनु√ध्मा

१. शब्दापयन्ति,
वे०–८।७।१६
२. अनुगच्छन्ति,
सा०–८।७।१६
३. साकल्येन व्याप्नुवन्ति,
सा०–८।७।१६
४. उच्छ्वसितावयवे कुर्वन्ति,
सा०–८।७।१६

अनु√नश्

१. त्वत्तो दानानन्तरं प्राप्नोति, लभते तदेत्यर्थः,
उ०–१०।७।२
२. अवाप्नोति,
वे०–१०।७।२
३. अग्रतोऽनुप्रापयति,
वे०–१।१६३।७
४. अनुक्रमेण समीपं गमयति,
सा०–१।१६३।७
५. प्राप्नोति, लभते,
सा०–१०।७।२

अनु√नी

१. अनुशब्दोऽत्र धात्वर्थानुवादी, लम्बते प्रलम्बत इति यथा सर्वयजमानान् स्वर्गं नयसि,
स्क०–१।९१।१
२. अन्विति पश्चाद्भावे। नेषीत्यपि लोडर्थे लट्। पश्चान्नय। कस्य पश्चात् सामर्थ्याद् मरणस्य। मरणोत्तरकालं विस्तीर्णं, स्वर्गम् इन्द्रलोकं वाऽस्मान्नयेत्यर्थः,
स्क०–६।४७।८
३. अनुगमय,
सा०–६।४७।८
४.अन्धपङ्गुत्वपरिहारेण अनुनीतवानसि,
सा०–४।३०।१९
५. अस्माननुक्रमेण प्रापयसि,
सा०मु०–१।९१।१
६. अनुक्रमेण नयथ,
सा०मु०–५।५४।६

अनु√ नु, नू

१. अनु स्तुतवन्तः,

स्क०-१।८०।९, वे०-१।८०। (अनु अस्तुवन्)

२. अनुक्रमेण स्तुवन्तः,

वे०-८।९२।३३

३. अनुक्रमेण पुनः पुनः स्तुतिं कुर्वन्तः,

सा०-८।९२।३३, सा०मु०-१।८०।९ (पुनः पुनरस्तुवन्)

अनुपक्षित

१. अनुपक्षीणम्,

वे०-३।१३।७, सा०-३।१३।७ (व्यये क्रियमाणेऽपि अनुपक्षीणम्)

२. अनुपक्षीणोदकम्,

वे०-१०।१०१।५, सा०-१०।१०१।५ (अनुपक्षीणं किञ्चिदुदकोपक्षयरहितम्)

अनुपथ

अनुकूलमार्गाः,

सा०मु०-५।५२।१०

अनु√पश्

अनुक्रमेण पश्यति वर्षतीत्यर्थः,

सा०-१।१६४।९

अनुपूर्व

१. अनुक्रमेण,

उ०-१०।१८।५, वे०-१।११७।३, १०। १३१।२, सा०-१०।१८।५ (पूर्वं पूर्वमनुक्रमेण)

२. आनुपूर्व्येण,

स्क० - १।११७।३ (आनुपूर्व्येण यथा-योग्यमित्यर्थः), सा०-१०।१३१।२, सा०मु०-१।११७।३

३. यथाज्येष्ठम्,

उ०-१०।१८।६ (ज्येष्ठक्रमेण वर्णानुक्रमेण वेत्यर्थः), वे०-१०।१८।६, सा०-१०।१८।६ (अनुपूर्वमानुपूर्व्येण। अव्ययी-भावः। पूर्वो ज्येष्ठः। ज्येष्ठानुपूर्व्य)

अनु-प्र√सृ

प्रसारितवन्तः,

वे०- १०।५६।५, सा०- १०।५६।५ (अनुज्योतींष्युदकानि वा प्रासारयन्तः। प्रसारितवन्तः)

अनुबद्धधान

१. परिगृह्य अनुक्रमेण,

वे०-४।२२।७

२. वृत्रेण बध्यमानाः,

सा०-४।२२।७

अनुब्रुवाण

अनुक्रमेण संकीर्तयन्,

सा०- ५।४४।१३, मु०- ५।४४।१३ (अनुक्रमेण कीतर्यन्)

अनु√भा

अनु दीप्यसे,

वे०-३।६।७

अनु√भू

१. प्रति ... भवेत्,

स्क०-१।५२।११

२. सदृशं भवति,

वे०-१।५२।११

३. अनन्तरमेव भवति,

वे०-१।१७३।८

४. अनुक्रमेण ...भवति,

सा०-१।१७३।८

५. जानाति,

सा०-३।३२।११

६. अनुसृत्य भवतः वर्तते, त्वदधीने अभूतामित्यर्थः,

सा०-१०।१४७।१

७. अनुभवति,
मु०-१।५२।११

अनु√भृ

अनुभरति।करोति,
सा०-९।७२।३

अनुभर्त्री

१. युष्माननुहरन्ती युष्मद्गुणसदृशी,
सा०मु०-१।८८।६
२. अनुशब्दोऽत्र धात्वर्थानुवादी। लम्बते प्रलम्बत इति यथा। बिभर्ति-धारणार्थः। युष्मद्गुणानां धारयित्री। सकलयुष्मद्गुणसङ्कीर्तनयुक्तेत्यर्थः।
स्क०-१।८८।६

अनु√मद्

१. अनु हृष्यति,
स्क०- १।९१।२१ (प्रहृष्टाः स्याम), सा०- ३।३४।८ (हृष्यन्ति। हर्षमनु स्वयं हृष्यन्तीत्यर्थः), ६।७५।१८ (अनुहृष्यन्तु) १०।१२०।१, ४ (पश्चात्हृष्यन्ति) १२०।१ (अनुलक्ष्य... हृष्यन्ति), सा० मु०- १।५२।९ (आनुपूर्व्येण हर्षं प्रापयन्), ५२।१५ (अनुक्रमेण हर्षं प्रापयन्), ९१।२१ (अनुलक्ष्य हर्षयुक्ता भवेम), १०३।७ (पश्चात् हर्षः प्राप्ताः), १२१।११ (हृष्टमकुरुताम्), ५।३६।२ (हृष्यति)

२. अनु मादयति,
स्क०-१।५२।९ (अनु 'तृतीयार्थे', पा० १।४।८५), इत्ययमनुः कर्मप्रवचनीयः। सहार्थश्चात्र तृतीयार्थः। सोमेन मत्ता इन्द्रेण सहेत्यर्थः), ५२।१५ (सोमेन माद्यन्ति मत्ता वा। अनु त्वा 'तृतीयार्थे' (पा०-१।४।८) इत्येवमयमनुशब्दः कर्मप्रवचनीयः) सा०-१।५२।१५ (त्वदीयमदानन्तरं तेऽपि मदं प्राप्ताः), १७३।७ (अनुकूलं मादयन्ति हर्षयन्तीत्यर्थः), १८४।४ (अनुक्रमेण माद्यन्ति), ३।४७।४ (मादयति), ८।१५।९ (अनु मादयति... तव मदमनु-लक्ष्य पश्चान्माद्यति)

३. अनुक्रमेण स्तौति ,
वे०-१।१०२।३ (स्तुमः), सा०-४।३८।३ (स्तौति ... अनुक्रमेण), ९।११०।२, १०।१२०।४ (अनुक्रमेणाभिष्टुमः), सा० मु०-१।१०२।३ (अनुक्रमेण स्तुमः)

४. अनुपूर्वं स्तुहि,
उ०-१०।६३।३

५. लक्षीकृत्य स्तुवन्ति,
सा०-४।१७।५

६. अनुष्टुवन्ति, अनुस्तुवन्ति,
वे०-९।११०।२, वे०सा०-१०।६३।३, ६७।९, ७३।८, सा०-६।१८।१४, ९।८६।२४

७. अनुमन्यते,
स्क०- १।१२१।११ (अनुमोदितवान्), वे०-१।१७३।७, सा०-१।१२१।११, १६२।७ (अनुमोदन्ताम्। सम्यक् कृतमिति परितुष्यन्तु)

८. अनुतर्पयति,
उ०-१०।६३।३ (तर्पय), ६७।९ (अनुतृप्येम)। तत्तृप्त्यनन्तरं सोमेन सदा तृप्येमेत्याशास्महे इत्यर्थः), ७३।८, वे०-१०।१२०।४ (तर्पयन्ति)

९. अनुरभीत्येतस्य स्थाने। मदतिरर्चति कर्मा (तु०निघ० ३।१४) अभिष्टवामेत्याशास्महे,
स्क०-१।१०२।३

१०. मदतिश्चात्र सामर्थ्यान्मोदानार्थो गत्यर्थो वा। अनुमोदितवन्तः अनुगतवन्तो

वा त्वाम्। अथवा मदतिरर्चतिकर्मा (तु० निघ०३।१४)। अनु इत्येष समित्येतस्य स्थाने। संस्तुतवन्तः ...अथवा अनुशब्दोऽत्र 'तृतीयार्थे' (पा० १।४। ८५) इत्येवं कर्मप्रवचनीयः। सहार्थश्चात्र तृतीयार्थः। मद्रतिरपि तृप्त्यर्थः। त्वया सोमपानात् प्राप्तहर्षेण सहातृप्यन्नित्यर्थः,
स्क०-१।१०३।७
११. मदिः सकर्मकश्च भवति,
वे०-१।५२।१५

अनुमद्यमान

१. अनुमाद्यमानः,
वे०-७।६३।३, सा०-१०।९८।८
२. अनुमोद्यमानः,
वे०-१०।९८।८

अनुमाद्य, द्या

१. अनुक्रमेण सर्वे स्तुत्या मादनीया,
सा०मु०-१।११५।३
२. अनुष्टुत्याः,
स्क०-१।११५।३
३. अनुमोदनीयाः,
वे०-१।११५।३ (स्तुत्या अनुमोदनीयाः), ७।६।१, वे०सा०-९।१०७।११
४. स्तोतव्यः,
स्क०-६।३४।२ (मदति (निघ.३।१४) इत्यर्चतिकर्मा) अनुशब्दश्चात्र धात्वर्थानुवादी। स्तोतव्यः)
वे०-९।२४।४, ७६।१
५. स्तुत्यस्य,
सा०- ६।७६।१, ७।६।१, ९।२४।४
६. अनुमदनीयः,
वे०-६।३४।२। सा०-९।७६।१

अनु√मन्

१. अन्वजानन्
सा०मु०-१।११६।१७
२. अनुमोदितवन्तः,
स्क०-१।११६।१७
३. अनुजानामि। इच्छामीत्यर्थः,
स्क०-६।५२।१
४. अनुमननं करोति,
वे०-८।६२।११
५. अनुमतिं करोति,
स्क०-६।७२।३, (अनुमतवती), सा०-४।१७।१, (अन्वमन्यता, अनुमतीचकार) ६।५२।१, ८।६२।११
६. अनुमन्यन्ताम्। अव्याघातेन वर्तन्तामित्यर्थः,
उ०-१०।३७।५, वे०-१०।३७।५ (अनुमन्यन्ताम्)

अनुमति

देवि,
सा०- १०।५९।६

अनु-मन्द्

अहृष्यन्,
सा०- ३।५१।९

अनु-मा

१. हीना मीयते,
वे०- १।५६।५। सा०- ७।२१।७ ('हीने पा०सू० १।४।८६ कर्मप्रवचनीयः। ...हीना ममिर इत्यर्थः)
२. अनुसृत्य ...स्तुत्या भान्ति,
सा०- १।१६३।८
३. अन्वमंस्त...,
सा०मु०- १।५७।५

अनु-मृच्

१. अनुलिम्पतु,
वे०- १।१४७।४
२. अनुमार्ष्टु अनुक्रमेण लुम्पतु,
सा०- १।१४७।४
३. अवलुम्पतु। स्वात्मानमेवावृत्य दहत्वित्यर्थः,
सा०- १।१४७।४

अनु- ममृजान

सर्वं वनं मृजञ्शोधयन्। दहन्नित्यर्थः,
सा०- १०।१४२।५

अनु-मृश्य

१. विचार्य,
सा०- १०।६८।५
२. निश्चित्य,
सा०- १०।६८।५
३. पर्यालोच्य,
उ०- १०।६८।५
४. ज्ञात्वा,
उ०- १०।६८।५

अनु √म्ना

अनुमन्यते ...विसंवाद न कुरुत इत्यर्थः,
सा०- ७।३१।७

अनु, नू-याज

अनु प्रधानात्पश्चाद्यष्टव्यानेतन्नामकान्,
सा०- १०।५१।८

अनु-यम्

१. अनु नियच्छतु,
वे०- ४।५७।७
२. नियमतु,
सा०- ४।५७।७

अनुयच्छमान, ना

१. अनुबध्नन्तः। प्रजोत्पत्त्यादिकर्मसन्तानाविच्छेदार्थमित्यर्थः ,
स्क०- १।१०९।३, वे०- १।१२३।१३
(अनुबध्नती)
२. नियच्छन्तः,
वे०- १।१०९।३।, वे०-७।५६।१३
(अनु नियच्छन्ति)
३. आनुकूल्येन प्रवर्तमाना,
सा०- १।१२३।१३
४. प्रयच्छन्तः,
सा०- ७।५६।१३
५. अनुक्रमेण नियतान् कुर्वन्तु,
सा०मु०- १।१०९।३

अनुयत

१. अनुबद्धं यजमानम्,
वे०- ५।४१।१३
२. अभिगतम्,
सा० मु०- ५।४१।१३

अनु √या

१. अनुगच्छति,
वे०सा०- ३।१।१७। वे०सा०मु०- ६।६।२, सा०- ६।१२।५, ९।१११।३
२. गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति,
सा०मु०- ५।८१।३

अनुरक्षमाण

१. उपरक्षमाणौ,
वे०- ५।६२।५
२. रक्षमाणौ,
सा०- ५।६९।१
३. पालयन्तौ,
सा०मु०- ५।६२।५
४. अनु रक्षमाणौ,
मु०- ५।६९।१

अनु √राज

१. लक्षीकृत्य राजति,
वे०- २।४३।१
२. शृण्वतोऽनुरक्तान् करोतीत्यर्थः,
सा०- २।४३।१
३. प्रकाशयति,
सा०- ९।९६।१८

अनु √री

१. अनुगच्छति,
वे० १।८५।३
२. अनुसृत्य...स्रवति। यत्र मरुतो गच्छन्ति वृष्ट्युदकमपि तदनुसारेण तत्र गच्छतीत्यर्थः,
सा०मु०- १।८५।३

अनु, नू- रुध्

१. अनुरुध्यते,
वे०- ३।५५।५
२. अनुरुन्धन् उत्पत्त्यानुगुण्येनानुतिष्ठन्नग्निः,
सा०- ३।५५।५
३. सूर्यः,
सा०- ३।५५।५

अनु √रुह

१. आरोहामि, भवत्करणेन करोमि,
उ०- १०।१३।३
२. अनुरोहामि,
वे०- १०।१३।३, सा०- १०।१३।३
(अनुरोहामि ... करणं करोमि)
३. अनुक्रमेण आरोहति,
सा०- १।१४१।५
४. उपरि प्रज्वलति,
सा०- १।१४१।५
५. क्रमेणानुतिष्ठति,
सा०- २।५।४
६. स्तुत्या सर्वे गुणास्त्वयि प्ररोहन्ति,
सा०- ८।१३।६
७. आरोहन्ति वेष्टयति,
वे०- ८।१३।६

अनुल्बण

१. उल्बणमिति दुःसहमग्नेस्तेजः। तद्वददुःसहेन,
सा०- ८।२५।९
२. अनतिरिक्तम्,
सा०- १०।५३।६

अनु √वद्

याज्यापुरोनुवाक्याभ्यां देवताः स्मारयति,
सा०- २।१३।३

अनु √वश्

१. अनु कामयते,
वे० १।१२७।१
२. स्वयमपि तदाज्यं ...कामयते स्वीकारोतीत्यर्थः,
सा०- १।१२७।१

अनु √वस्

१. मर्मच्छादनान्तरम् ...आच्छादयतु,
सा०- ६।७५।१८
२. अनु छादयतु,
वे०- ६।७५।१८

अनु √वह्

१. आत्मानं प्रापयन्,
वे०-१०।१५।८
२. आनुपूर्व्येण देवेभ्यश्च पितृभ्यश्च प्राप्नुवन्तः। दत्तवन्तः इत्यर्थः,
सा०- १०।१५।८

अनु√गा

१. अनु गच्छति,
वे०-१।१४८।४, ४।४०।३, १०।१४२।४
२. अनुकूलं ज्वालाः आदाय गच्छति,
सा०- १।१४८।४
३. लक्षीकृत्य गच्छति,
सा०- ४।७।१०
४. प्रेरयति,
वे०- ४।७।१०
५. अनुसृत्य यथा वान्ति,
सा०- ४।४०।३
६. अनुगुणं प्रवर्तते,
सा०- १०।१४२।४

अनु√विद्

१. लब्धवानसि ...पश्चात् ,
स्क०- १।६।५
२. अन्विष्यालभत्,
सा०- २।१२।११
३. अन्विष्य लब्धवानसि,
सा०मु०- १।६।५
४. लब्धवान्,
वे०- २।१२।११
५. अनुक्रमेण अलभथाः,
सा०- ८।९६।१६
६. अलभन्त,
सा०- ४।५८।४, सा०मु०- ५।११।६
७. अन्वेषमाणा लब्धवन्तः,
उ०-१०।७१।३।
८. अनुगम्य अलभत,
सा०- ३।९।४, १०।१०९।५
९. लब्धवन्तो मन्त्रसामर्थ्यात्,
सा०- ७।७६।४
१०. अनु ज्ञायते,
वे०- १।१३२।३
११. अनुक्रमेणेषदीषत्। तमोऽवरुध्य लब्धवन्त इत्यर्थः,
सा०मु०- ५।४०।९
१२. उक्तक्रमेणैव कर्त्ता सन् विन्दते, उदकप्राप्तिप्रकारं जानन्ति,
सा०- १।१३२।३
१३. अभिलक्ष्य...जानन्ति,
सा०- १।३४।२
१४. जानन्ति,
स्क०- १।३४।२
१५. अनु ...अजानन्,
वे०- १।३४।२
१६. उपलक्ष्य यात्रायां जानन्ति,
मु०- १।३४।२
१७. अनुक्रमेण जानाति,
सा०- १।१६४।१८
१८. अनुक्रमेण ज्ञातवानस्मि,
वे०- ४।२७।१
१९. आनुपूर्व्येणाज्ञासिषम्। परमात्मनः सकाशात् सर्वे देवा जाता इत्यवेदिषमित्यर्थः,
सा०- ४।२७।१
२०. आनुपूर्व्येण जानाति। इमाः सुखेन गन्तव्या असुखेनेति वैवमनुक्रमेण जानातीत्यर्थः,
सा०- १०।१७।५
२१. आनुपूर्व्येण जानाति,
उ०-१०।१७।५
२२. अन्वबुध्यत,
सा०- १०।१३९।४
२३. अभिजानान्ति,
सा०- ७।३३।७

अनु- वित्त

१. अनुक्रमेण लब्धः,
वे०- ४।१८।१

२. आनुपूर्व्येण, सर्वैर्जायमानैर्लब्धः,

सा०- ४।१८।

अनु√वी

१. गच्छन्तौ,

वे०- १०।१०४।२

२. स्तुतशस्त्रादीन्यनुकामयस्व,

सा०- १०।१०५।२

अनु√वृत्

१. प्रदीपार्चिवत् आनुपूर्वीं गच्छति,

उ०- १०।३७।३

२. अनुवर्तनं कुर्वन्ति,

वे०- ४।३०।२

३. लक्षीकृत्य ...वर्तन्ते,

सा०- ४।३०।२

४. अनुगच्छति,

सा०मु०- ५।६२।४

५. उदेषि,

सा०- १०।३७।३

अनु√वेन्

१. अनु अकामयत,

वे०-४।१८।११, १०।१३४।१ (अनु-कामयते)

२. अनुक्रमेण कामयते,

सा०- १०।१३५।१

३. अनुग्राह्यत्वेन कामयते,

सा०- १०।१३५।१

४. अनुकामयमानम्,

वे०- १०।१३५।२, सा०- १०।१३५।२ (मामनुगतं कामयमानम्)

५. अयाचत,

सा०- ४।१८।११

अनु- व्रत, ता

१. अस्मदनुकूलव्यापारयुक्ते,

सा०- १।३४।४

२. अनुकूलकर्मणे यजमानाय,

सा०मु०- १।५१।९

३. अनुकूलकर्मा सन्,

सा०- ८।१३।१९

४. अनुकूलाम्,

सा०- १०।३४।२

५. अनुगतकर्माणम् अनुकूलमित्यर्थः,

उ०- १०।३४।२, वे०- १।५१।९ (अनुगतकर्मणे)

६. अनुगुणकर्मा,

वे०- ८।१३।१९

७. अनुव्रतशब्दो भक्तपर्यायः,

स्क०- १।५१।९

अनु√शंस्

१. आशंसितुम् उपतिष्ठन्ति,

वे०- ५।५०।२

२. क्रमेण शंसितुं प्रभवन्ति,

सा०- ५।५०।२

३. शंसितुं प्रभवन्ति,

सा०मु०- ५।५०।२

अनु √शक्

अनुकर्तुं शक्नोति,

उ०वे०सा०- १०।४३।५

अनु√शास्

१. ज्ञेयतत्वम्, अस्मभ्यम् आचष्ट इत्यर्थः,

स्क०- ६।५४।१

२. अनुशास्ति नष्टद्रव्यप्राप्त्युपायमुप-दिशति,

सा०- ६।५४।१

अनु-शासन

१. मार्गोपदेशस्य,

उ०- १०।३२।७

२. मार्गोपदेशरूपस्य,
सा०- १०।३२।७

अनुशिष्ट

१. उपदिष्टः सन्,
सा०- १०।३२।६
२. प्रदर्शितमार्गः, सन्,
सा०-१०।३२।७

अनु √श्रथ्

१. अस्मदीया गा लक्षीकृत्य... विनष्टा मा कार्षीः। गावोऽश्वदर्शनात् विश्लिष्यन्ते,
सा०- ४।३२।२२
२. श्रथतिर्भेदनकर्मा,
वे०- ४।३२।२२

अनु √श्रु

१. अनुक्रमेण श्रृण्वन्ति,
सा०- २।२४।१३
२. अनुशासनं श्रृण्वन्ति,
सा०- २।२४।१३

अनुषज्, क्

१. आनुपूर्व्येण,
उ०- १०।८३।१, (अनुषक्तमानुपूर्व्येण), स्क०- १।१३।५, वे०- ३।११।१। सा०- ४।७।५, ८।१२।१ (अनुषक्तमानुपूर्व्येण संततं यथा भवति तथा) ३।३१।१५।१
२. आनुपूर्व्येणात्मानुगणम्, स्ववशवर्तीत्यर्थः,
स्क०- १।५२।१४
३. अनुक्रमेण,
सा०- २।६।८, ४।४।१०, मु०-१।१३५ (अनुक्रमेण सक्तं परस्परं संबद्धम्)
४. आनुपूर्व्येण सक्तम्,
सा०- ३।११।१
५. आनुपूर्व्येण। यथायोग्यमित्यर्थः,
स्क०- १।७२।७
६. आनुषगिति देवानामानुपूर्व्येण। यो यदा यथा यष्टव्यः तं तदा च यजेत्यर्थः,
स्क०- ६।४८।४
७. आनुपूर्व्येण निसर्गमारभ्य अव्यवच्छेदनेत्यर्थः,
सा०- १०।४९।५
८. आनुपूर्व्येण अन्यव्यच्छेदेनेत्यर्थः.
उ०- १०।४९।६
९. परस्परसंबद्धम्,
सा०- १।१३।५ (अनुक्रमेण संक्तं परस्परं सम्बद्धम्), ३।४१।२
१०. आनुपूर्व्यादनुक्रमेण,
सा०- १०।१७६।२
११. अनुस्यूतम्,
वे०- १।५२।१४
१२. अनुषक्तम्,
वे०-१।१३।५, ७२।७, ६।४८।४ सा०- १।५२।१४ (अनुषक्तम्) ६।४८।४, (अनुषक्तं सततं यथा भवति तथा), १०।४९।५, ६, सा०मु०- १।७२।७, (अनुषक्तं संततं यथा भवति तथा)

अनु √विध्

१. आनुपूर्व्येण साधनयन्,
स्क०- १।२३।१५
२. अनुक्रमेण रुन्धन्,
वे०- १।२३।१५
३. अनुक्रमेण पुनः पुननर्यन् वर्तते इति शेषः,
सा०मु०- १।२३।१५

अनु √ष्टु

१. आनुपूर्व्येण स्तुवन्ति,
सा०- ८।३।८

२. *क्रमेण प्रशंसन्ति,*
सा०- ८।१५।६

अनु-ष्टुभ्

१. *संस्कृतस्य,*
वे०- १०।१८१।१
२. *अनुष्टुप्संबद्धं यागम्,*
सा०- १०।१२४।९
३. *अनुष्टुप्छन्दसा युक्तं स्तुतिविशेषम्,*
सा०- १०।१२४।९
४. *अनुष्टुप्छन्दसा,*
सा०-१०।१३०।४, १८१।१
(अनुष्टुप्छन्दसा युक्तस्य)
५. *अनुष्टोभनीयं स्तोतव्यम्,*
सा०- १०।१२४।९

अनु-ष्ठा

१. *आश्रित्य सर्वदा वर्ततां हर्षयत्वित्यर्थः,*
सा०- १।१३४।१
२. *अनु अधीत्यर्थे...अधि आश्रयथः। तादृशो रथो देवयजनं प्रत्यागत इत्यर्थः,*
सा०- १।१८३।२
३. *आनुगुण्येनाधितिष्ठतु,*
सा०- २।३१।३
४. *अनुकूलास्तिष्ठन्ति,*
सा०- ३।३०।४
५. *उद्दिश्य तिष्ठतु,*
सा०- ४।२०।२
६. *अन्वास्थिताः,*
वे०सा०- ९।११२।३ (या०- ६।५,६)
७. *अनुलक्ष्य स्थिताः बभूवुः,*
सा०मु०- १।५२।४
८. *अनुगतवत्यः,*
स्क०- १।५२।४ (अनुगच्छन्ति)
९. *अनुक्रमेण तिष्ठन्तीः,*
सा०मु०- १।५४।१०
१०. *अनुतिष्ठन्तीः,*
वे०- १।५४।१०
११. *अनुष्ठात्रीः, अनुष्ठाता,*
स्क०- १।५४।१०

अनुष्ठित

१. *निषिक्तम्,*
वे०- १०।६१।५
२. *प्रजापतिनापत्यार्थं निषिक्तम्,*
सा०- १०।६१।५

अनुष्ठु

१. *यागकर्म। यागं करोतीत्यर्थः,*
स्क०- १।९५।३
२. *कल्याणम् ,*
वे०- १।९५।३
३. *अनुक्रमेण,*
सा०- ४।४।१४, सा०मु०- १।९५।३
(सम्यगनुक्रमेण)

अनु-ष्वध

१. *स्वधा इत्यन्ननाम। स्वधायाम्। विभक्त्यर्थे अव्ययीभावः। सोमलक्षणस्यान्नस्य पाने सतीत्यर्थः,*
स्क०-१।८१।४ (अन्विति पश्चादभावे। 'स्वधा' (निघ० २,७) इत्यन्ननाम। सोमलक्षणस्यान्नस्य पश्चत्। सोमपानन्तरम्,
सा०मु०- १।८१।४
२. *सोमपानानन्तरम्,*
वे०- १।८१।४
३. *सोममुद्दिश्य,*
सा०- ३।६।९
४. *प्रतिहविः सर्वेष्वपि हविःषु दीयमानेषु,*
सा०- २।३।११
५. *हविः,*
वे०- ३।६।९

६. *स्वधां स्वधां प्रति देवान्,*

वे०- २।३।११

७. *स्वधया सवनीयपुरोडाशादिरूपेण अन्नेनानुगतम्,*

सा०- ३।४७।१

८. *अनुगतपुरोडाशम्,*

वे०- ३।४७।१

९. *प्रत्यहम्। हविर्लक्षणान्नप्रदानं स्वधा। अनु पश्चाद्वा,*

सा०- ५।५२।१, मु०- ५।५२।१ (प्रत्यहं विर्लक्षणान्न प्रदानम्)

१०. *हविषोऽनन्तरम्,*

वे०- ५।५२।१

११. *बलार्थम्,*

वे०- ९।७२।५ सा०- ९।७२।५ (बलमनु। बलार्थम्)

१२. *अन्नार्थम्,*

वे०- ९।७२।५। सा०- ९।७२।५ (स्वधेत्यन्ननाम)

अनु-ष्वप्

अनुवृत्तस्वप्नम् ,

वे०सा०- ८।९७।३

अनु-सच्, सश्च्

१. *अनुसेवध्वम्,*

वे०- ९।८२।५, वे०सा०- ७।१८।२५

२. *अनुक्रमेण सेवते,*

सा०- १।१४०।९

अनु√सृ

१. *अनुगच्छति,*

वे०सा०- ९।६।४

२. *अन्वसरन्। अन्वगच्छन्। हिता हिताचरणापरा आसन्नित्यर्थः,*

सा०- ७।९०।४

३. *अनुक्रमेण अवतरेयुः,*

सा०मु०- ५।५३।२

अनु√सृज्

१. *विसृजन्ति विक्षिपन्ति वर्षन्तीव्यर्थः,*

उ०- १०।६६।८

२. *अन्वसारयन्,*

सा०- १०।६६।८

अनु√स्पश्

१. *अवगच्छन्तम्,*

वे०- १०।१४।१

२. *अबाधमानम्,*

सा०- १०।१४।१

३. *अनुर्निशब्दस्य स्थाने। स्पशिर्बन्धनार्थः। निबध्नन्तम्। शुभाशुभकर्मप्रवृत्तिलक्षणमार्गं निरूपयन्तमित्यर्थः, जीवितलक्षणमार्गं निरुन्धन्तम्,*

उ०- १०।१४।१

अनुस्पष्ट

१. *दृष्टिगोचरो भवति,*

सा०- १०।१६०।४

२. *प्रस्पष्टकर्मा,*

वे०- १०।१६०।४

अनु √स्पृश्

क्रमेण दह। दहनोपायं दर्शयति,

सा०- ४।४।२

अनु√स्फुर्

१. *अनुस्फुरेयुः,*

सा० ६।६७।११

२. *अनुः कर्मप्रवचनीयः प्रतिना समानार्थः। यत् प्रति...स्फुरान् स्फुरन्ति। यत्र प्रक्षिप्ता आपश्चलन्त्यो दृश्यन्त इत्यर्थः,*

स्क०- ६।६७।११

३. स्फुरतिर्गत्यर्थः। .... गच्छन्तीत्यर्थः,
स्क०- ६।६७।११

अनु√स्मृ

अनुकूलं जानीय,
सा०- १०।१०६।९

अनुस्त्रयामन्

१. ताभ्यां गच्छते मह्यम्,
वे०-४।३२।२४
२. पद्भ्यामेव गच्छते मह्यम्,
सा०- ४।३२।२४

अनु√हा

१. अनुगच्छति,
वे०- ३।३१।१७, वे०- ३।३१।१७,
वे०सा०- ६।१८।१५, ७।३४।२४,
१०।८९।१३
२. अनुगच्छताम्। अनुमन्येताम्,
सा०- ७।३४।२४
३. पुनः पुनरावृत्य वर्तेते,
सा०- ३।३१।१७

अनु√ह्वे

१. अनुक्रमेण कर्मसु आह्वयामि,
सा०- १।३०।९
२. अनुक्रमेण हुवे,
वे०- १।३०।९, ५।५३।१६
३. अनुक्रमेण लक्षणे कर्म प्रवचनीयः प्रति शब्देन समानार्थः। ....आह्वयामि आहूतवान्,
स्क०- १।३०।९
४. आह्वय,
सा०मु०- ५।५३।१६

अनूक

अस्थिसंधेः ... अनूच्यते समवेयत इत्यस्थ्नः संधिरनूक्यः,
सा०- १०।१६३।२

आनूक

आभरणम्,
सा०मु०- ५।३३।९

अनूति

१. अपालयिता इतरेषाम्,
स्क०- ६।२९।६
२. अरक्षणाय,
वे०- ६।२९।६
३. अनागमनेन,
सा०- ६।२९।६

अनूधस्

१. ऊधोवर्जिता माता,
वे०- १०।११५।१
२. ऊधोरहितोऽयं लोकोऽसौ लोकः,
सा०- १०।११५।१

अनून, ना

१. परिपूर्णम्,
वे०- १।१४६।१९, २।१०।६, ४।२।१९
२. सम्पूर्णम्,
सा०-२।१०।६, ३।१।५, ४।२।१९,
७।२७।४,
३. अविकलेन,
वे०- ४।५।१
४. अविकलं सम्पूर्णफलम्,
सा०-१।१४६।१ ४।५।१ (अविकलने सम्पूर्णेन)
५. सर्वगुणैर्न्यूनतारहितम्। सम्पूर्णगुण-मित्यर्थः,
सा०- ६।१७।४
६. अन्यूनम्,
वे०-३।१।५, ७।२७।४, वे०सा०-
८।१६।४, सा०-१।१४६।१

अनून- वर्चस्

१. अन्यूनतेजस्कः,
वे०- १०।१४०।२
२. संपूर्णतेजस्कः,
सा०- १०।१४०।२

अनूप

१. आनुपूर्व्येण वप्तारः प्रकरितारः प्रक्षेप्तारः,
उ०- १०।२७।२३
२. निम्ने देशे,
वे०- ९।१०७।९, सा०- ९।१०७।९, (निम्ने देशे कलशे)
३. क्रमेण अवस्थिता,
वे०- १०।२७।२३
४. वर्षादीनामानुपूर्व्येण वप्तारः प्रभावयितारः। प्रक्षेप्तारः,
सा०- १०।२७।२३

अनूर्ध्वभास्

१. अनुच्छ्रिततेजस्कान् शत्रून्,
वे०- ५।७७।४, सा०- ५।७७।४ (अनुन्नततेजस्कान्)
२. ऊर्ध्वभासोऽग्नयः। अग्निरहितान् अयष्टॄन्,
सा०-५।७७।४, मु०-५।७७।४ (अग्निरहितान् अयष्टॄन्)

अनूर्मि

१. अहिंसकम्। ऊर्मिर्हिंसाकर्मा,
वे०- ८।२४।२२, सा०- ८।२४।२२ (ऊर्मिहिंसाकर्मा कैश्चिदप्यहिंस्यम्)
२. शत्रुभिरगन्तव्यम्,
सा०- ८।२४।२२

अनृक्षर, रा

कण्टकरहितः,
स्क०- १।२२।१५ (ऋक्षरः कण्टकः, तद्वर्जितः), ४१।४ (ऋक्षरः कण्टकः, तद्वर्जितः), वे०-१।२२।१५ (कण्टकवर्जितः), ४१।४ (कण्टकवर्जितः), २।२७।६ (कण्टकवर्जितः), १०।८५।२३ (कण्टकवर्जितः), सा० - २।२७।६ ('ऋक्षरः कण्टक ऋच्छतेः' इति तद्रहितः), १०।८५।२३ (ऋच्छरः कण्टक उच्यते। कण्टकरहिताः), सा०मु०- १।४१।४, २२।१५ (कण्टक- रहिता)

अनृच्

अस्तुतिकानयजमानान्,
सा०- १०।१०५।८

अनृजु

१. कुटिलचित्तस्य,
सा०- ४।३।१३
२. कुटिलस्य,
वे०- ४।३।१३

अनृत, ता

१. असत्यम्,
उ०सा०-१०।१०।४, स्क०- १।१०५।५, सा०-७।१०४।८, ८।६२।१२, १, १०।८७।११
२. असत्यजनितम्,
स्क०- १।२३।२२
३. द्वेष्टविषयमसत्यम्,
सा०- १।१०५।५, मु०- १।१०५।५ (द्वेषविषयमसत्यम्)
४. असत्यानि अप्रियाणि पापानि,
सा०- १।१५२।१
५. मानससत्यरहिताः,
सा०- ४।५।५, ७।८४।४ (सत्यरहितानि)
६. असत्यस्य अविद्यमानसदृशस्य उत्पन्नप्रध्वंसिनो मायाविनो मेघस्य,
उ०- १०।६७।४

७. असत्यभूतं मायामयासुरं चरित्रम्,
सा०- १०।१२४।५
८. निरर्थकस्य,
वे०- ७।८६।६
९. यागरहितस्य,
सा०- ७।६५।३
१०. पापम्,
वे०- ७।६१।५, ६५।३, वे०सा०- ७।६०।५, सा०- ७।८६।६
११. अस्तुत्यविषयाणि स्तोत्राणि,
सा०- ७।६१।५
१२. अनृतकारिणं पुरुषम्,
वे०- १०।१२४।५
१३. तमसः,
वे०सा०- १०। ६७।४
१४. शाठ्यमयजमानविषयम्,
वे०- १।१०५।५
१५. नश्वरं शोषणस्वभावम्,
सा०- १।१३९।२
१६. अनृतभूतान्धकारम्,
वे०- १।१३९।२
१७. उक्तविलक्षणमन्धकारं गमनादिनिरोधं च,
सा०- १।१५२।३
१८. असुरैः कृता माया,
सा०- २।२४।६
१९.गोधनविषयाणि आसुराणां मायाः,
वे०- २।२४।६
२०. रक्षांसि,
वे० - २।३५।६, सा० - २।३५।६ (मायाविनो रक्षांसि)

अनृतदेव

१. असत्येन यः क्रीडति सोऽनृतदेवः,
वे०- ७।१०४।१४
२. अनृता असत्यभूताः देवाः यस्य तादृशो यद्वहम्,
सा०- ७।१०४।१४

अनृतद्विष्

१. अनृतस्य द्रोग्धारः,
वे०- ७।६६।१३
२. अयष्टृद्वेष्टारः,
सा०- ७।६६।१

अनृतुपा

१. सर्वेषु सवनेषु पिबति,
वे०- ३।५३।८
२. न केवलमृतुष्वेव पिबति किन्तु अनृतुष्वपि। बहुशः सोमं पिबन्नित्यर्थः,
सा०- ३।५३।८

अनेद्य

१. प्रशस्यः,
स्क०वे०-१।८७।४ सा०-१।८७।४ (प्रशस्य नामैतत्। सर्वैरनिन्दितः), १६५। १२ (प्रशस्यनामैतत्, तु० निघ० ३, ८, प्रशस्यः)
२. अकुत्स्यः,
वे०- ५।६१।१३
३. अनिन्द्यः
वे०- १।१६५।१२, (अनिन्दनीयः) वे० सा०-६।१९।४, ८।३७।१, सा०मु०- ५।६१।१३
४. सर्वैरनिन्दितः,
सा०मु०- १।८७।४
५. अनन्तिकस्थम्,
सा०- १।१६५।१२

अनेनस्

१. अपापः,
स्क०- ६।६६।७, सा०- ७।८६।४

२. अनुपद्रवः,
वे०- १।१२९।५
३. पापरहितम् ,
वे०सा०- ६।६६।७
४. अपापत्वेन,
सा०- १।१२९।५

अनेहस्

१. अपापम् ,
स्क०- १।४०।४, (अपापाम्) ६।५१। १६ (अपापम् सर्वपापवर्जितम्), स्क०वे०- ६।५०।३, वे०-८।१८। ५,२१, १०। ६३।१०, वे०सा०- ८।३१। १२, १०।६१।२२, सा०- १।१२९।९ (अपापेन। यज्ञगमनमार्गस्य स्तुतिचोदितत्वात्-अनेहस्तत्वम्) ३।५१।३, ६।७५।१०, ८।२२।२, ४७।१, (अपापान्यनुपद्रवाणि) ६७।१२, ६९। १६, सा०मु०-५।६५।५,
२. अपापं दुःखरहितं सुखात्मकम्,
सा०- १।१८५।३
३. पापराहित्यम्,
सा०- ६।५०।३
४. पापरहितम्,
सा०-६।५१।१६, १०।६३।१० (पापरहिताम्)
५. निरवद्याः,
वे०- ३।५१।३
६. अनागस्के,
वे०- ६।७५।१०
७. क्रोधरहितां प्रसन्नचेतसमित्यर्थः,
उ०- १०।६३।१०
८. उपद्रवरहितम्
वे०- १।४०।४ (उपद्रवरहिताम्) सा०- ३।९।१, ८।४५।११
९. अनुपद्रवम्,
वे०- १।१२९।९, १८५।३, ३।९।१, ५।६५।५, ८।२२।२, ४५।११, वे०सा०- ८।४७।१, सा०- ८।२२।२ (कैश्चिदप्यनुपद्रवम्)
१०. केनाप्यहिंस्याम्,
सा०- १।४०।४ (केनाप्यहिंस्याम् न हन्यते इति अनेहाः) मु०- १।४०।४
११. अहिंसितम्,
सा०- ८।१८।२१
१२. अनाहन्तारो रक्षकाः,
सा०- ८।१८।५

अनेहा

अपाप इन्द्रः,
वे०सा०- १०।६१।१२

अन्त, न्ता

१. पर्यन्तम्,
वे०-१।५४।१, ९२।११, ४।५०।१, वे०सा०-१०।११४।१०, सा०-७।८३।३
२. अवसानम्,
सा०-१।१६७।९, ३।६१।४, ६।२९।५, ७।९९।२, १०।१११।८, सा०मु०- १। ५२।१४, ५४।१, १००।१५
३. पर्यवसानम्,
सा०- १।१६४।३५
४. पर्यन्ताः प्रदेशाः,
सा०-७।६७।२, १०।८२।१ (पर्यन्तप्रदेशाः)
५. पर्यन्तादपि प्रवृद्धः,
सा०- १०।८९।११
६. समीपपर्यन्तम्,
सा०मु०- १।३०।२१
७. भूमेः स्थानम्,
सा०मु०- १।३३।१०

८. द्यावापृथिव्योरेकदेशवर्तिनः,
उ०- १०।८२।१ (पृथिव्यादिलोकानां पर्यन्ताः), स्क०-१।३३।१०, वे०- १०।८२।१ (द्यावापृथिव्योः पर्यन्ताः)
९. वृक्षाग्रम्,
सा०मु०- १।३७।६
१०. समीपम्,
वे०- १।३७।६
११. उत्कृष्टां काष्ठाम्। यत्र सर्वा पृथिवी समाप्यते,
सा०- १।१६४।३४
१२. समाप्तिं संपूर्तिम्,
सा०- ५।१५।५
१३. तृतीयसवनगतम्,
सा०- ६।४३।२
१४. निकृष्टम्,
स्क०- ६।४३।२, वे०- ६।४३।२ (नीचरसम्)
१५. हिंसाम्,
सा०- ७।२१।६
१६. पारम्,
सा०- १०।५७।३
१७. दश दिशः,
सा०- ४।५०।१
१८. देशः,
वे०- १।१६४।३५
१९. प्रान्तान्,
सा०मु०- १।९२।११
२०. इयत्ताम्,
सा०- ८।४६।११
२१. समीपपर्यन्तम्,
सा०मु०- १।३०।२१
२२. इयत्ताम्,
सा०- ८।४६।११

अन्तम, मा

१. अन्तिकतमः,
वे०- १।२७।५, १६५।५, ३।१०।८, ५५।८, ७।२२।४, ८।५।१८, १३।३, वे०सा०-६।४५।३०, ४६।१०, ८।३३।१५, ४५।१८, ६४।९, १०।१००।६, वे०सा०मु०- ५।२५।१, सा०- ६।५२।१४
२. अन्तिकतमानामतिशयेन समीपवर्तिनाम्,
सा०- ८।५।१८ (अन्तिकतमः अतिशयेन समीपवर्ती), सा०मु०- १।४।३
३. अन्तिकतमस्य भूलोकस्य संबन्धीनि,
सा०मु०- १।२७।५
४. अन्तिकतमैः अश्वैः,
सा०- १।१६५।५
५. अन्तिकतमः तेषामतिशयेन समीपवर्ती ,
सा०- ३।१०।८
६. अन्तिकतमानि बुद्धिस्थानि,
सा०- ७।२२।४
७ अन्तिकतमः संनिकृष्टतमः,
सा०- ८।१३।३
८. अन्तमशब्दोऽन्तिकनाम (तु०नि० २, १६)। सन्निकृष्टतमम्। अत्यन्तोत्कृष्टमित्यर्थः,
स्क०- १।२७।५
९. सन्निकृष्टः,
स्क०वे०- १।४।३, स्क०- ६।४६।१०, वे०- ६।५२।१४
१०. अतिशयेन सन्निकृष्टः,
स्क० ६।४५।३०, ६।५२।१४
११. समीपे वर्तमानस्य दावाग्नेः,
सा०- ३।५५।८

अन्तक

१. अन्तको नाम राजा,
स्क०- १।११२।६,
२. ऋषिम्,
वे०- १।११२।६
३. शत्रूणामन्तकरम् एतत्संज्ञं राजर्षिम्,
सा०मु०- १।११२।६

अन्तक-द्रुह्

१. अन्तकानां द्रोग्धा। हिंसका अन्तका इति,
वे०- १०।१३२।४
१. अन्तकस्य हननशीलस्य राक्षसादेर्यमस्यैव वा द्रोग्धा,
सा०- १०।१३२।४

अन्तर्

१. मध्ये,
उ०- १०।२७।९, (अन्तरिति च मध्यवचनः), ४२।८ (मध्यतः), ४६।६, ७९।३, ८०।३, उ०सा०-१०।५।५, १०।८।७, २७।१७, ३०।४, ४५।३, ४८।१०, स्क०- १।२४।७, ६।६६।४, स्क०वे० सा०- ६।५८।३, स्क०वे०सा०मु०- १।९६।५, १०५।१, स्क०सा०- ६।७२।४, ४३।३, ४४।२४, स्क०सा०मु०- १।११६।२४, २३।१९,२०, ५४।१०, ६७।५, ७०।२, ९५।१०, वे०- ३।१।३, ४४।३, ५८।१, वे०सा०- १।१६४।१७, १६४।३३, १६८।५, १८२।६, २।१२।३, ३।५५।२, ९, १५, ४।१।७, १३।४, ७।१८।२४, ८।२९।२, ३, १०।१९, ९।६२।७, ८२।४, १०।१७३।९, सा०- १।१३२।३, १५७।५, १५९।४, १६१।४, १६३।४, १६४।९, १६४।३१, १७३।३, १८०।३, सा०-३। १।१४, ६।४, २।२७।८, ३५।७, ४०।२) मध्ये ऊधः प्रदेशे) ३।५४।९, ४।१।१३ (मध्ये स्थिताः), १६।१७, १८।४।२७।४ (मध्ये स्थितं), ६।११।२ (मध्ये वर्तमानः), २७।७, सा०- ७।२।३, ११।३, १२।१, ७१।५, ८७।२, ५, १०४।३, ८।२।४, ८।६८।१८, १००।९, १०१।१३, १४, ९।१२।५,७, १५।३, ६७।२३, ६९।२, ७८।३, ८६।४, १०।४।२, ६१।१, ८६।१५, १२५।७, १७३।१, १७७।१,२,३, १८३।३, १८९।२, सा०मु० ५।३१।३, ५९।२, ६२।५, ६, ६।४।४, ९।५
२. मध्ये प्राणिनां हृदि प्रेरकतया वर्तमानाः सन्तः,
सा०-२।२७।३, ४।५८।६ (हृदयमध्यगतेन चित्तेन। भावनासचिवेनेति यावत्)
३. सङ्के.,
वे०- १०।६१।१
४. अन्तर्हितम्,
सा०- ९।९६।७
५. अन्तर्भूतः,
सा०- ७।८६।२
६. स्थिते,
सा०- ३।५५।१२
७. अन्तराले,
सा०- १।१३५।९
८. स्थापिताः,
सा०मु० १।२४।७
९. गूढम्,
सा०- ३।१।३
१०. अन्तरा,
सा०- १।१७३।३

अन्तः√ख्या

१. अन्तःशब्दोऽत्र तात्स्थात् अन्तस्थे मनसि वर्तते। हि शब्दो यस्मादर्थे। ख्यः इति चष्टेः पश्यतिकर्मणः ख्यादेशः। यस्मादत्यन्तभक्तं मनः अन्तस्थं पश्यसि। भक्ततां जानासीत्यर्थः,
स्क०- १।८१।९
२. अन्तःपूर्वः ख्यातिस्तिरोधनार्थः,
वे०- १।८१।९
३. अन्तः चकार,
वे०- ५।३०।९
४. गृहमध्ये निदधे,
सा०मु०- ५।३०।९
५. मध्ये विद्यमानं... पश्यसि, जानासीत्यर्थः,
सा०मु०- १।८१।९

अन्तः पेय

१. अन्तःस्थितं रसम्,
वे०- १०।१०७।९
२. अन्तः पानम्,
सा०- १०।१०७।९

अन्तराहित

मध्ये वर्तमानः सन्,
सा०- ९।७०।५

अन्तराभर

१. अन्तराहरः,
वे०- ८।३२।१२
२. अन्तराहरश्छिद्राणामापूरकः। छिद्रापिधायीत्यर्थः,
सा०- ८।३२।१२

अन्तर् √ई

१. अन्तः गच्छसि,
वे०- २।६।७, ३।३।२, ३।६, ४।८।४, ९।८६।४२
२. मध्येन गच्छति,
वे०- १।३५।९ (उभयोः मध्येन गच्छति) १।१६०।१, ४।२।२, ७।८
३. मध्ये गच्छति,
सा०- ३।३।२, ४।२।२, (तेषामुभयेषां मध्ये ... गच्छसि), २।३ (षष्ठ्यर्थे द्वितीया। तेषां मध्ये) ७।८। (मध्ये स्थितमन्तरिक्षं...गच्छसि)
४. उभयोर्लोकयोर्मध्ये गच्छति,
सा०मु०- १।३५।९
५. मध्येऽवस्थितः गच्छति। मध्ये स्थितः उभे अपि द्यावापृथिव्यौ ज्योतिषा व्याप्नोतीत्यर्थः,
स्क०- १।३५।९
६. द्यावापृथिव्योर्मध्ये गच्छति,
सा०- ३।३।६, ४।८।४, ९।८६।४२
७. तयोरन्तराले ...सर्वदा गच्छति,
सा०- १।१६०।१
८. जनानां हृदये गच्छसि जानासि,
वा०सा०- २।६।७

अन्तर्√गा

१. अन्तः गच्छति,
वे०-३।३१।२१। ७।४।१। सा०- ७।४।१ (अन्तरा ... गच्छति)
२. अन्तर्धानं विनाशं गमयतु,
सा०- ३।३१।२१

अन्तर् √धा

१. वृष्टिद्वारेण त्वं धारयसि मध्ये,
स्क०- १।६२।९
२. निदधाति ... मध्ये,
स्क०- ६।४४।२३, सा०- ६।४४।२३ (मध्ये ... निहितवान्), सा०मु०- १।६२।९ (मध्ये ... धारयसि)

अन्तर् √यम्

१. अन्तः नियच्छ,
वे०- १०।१०२।३
२. अन्तर्गमय,
सा०- १०।१०२।३

अन्तर्वा-वत्

१. वातेर्गत्यर्थस्य यङ्लुगन्तस्य शतृ-प्रत्यये रूपमेतत्। अन्तरत्यर्थं गतं लीनम् अप्रकाशम्,
स्क०- १।४०।७
२. मध्ये ... आगच्छन्,
वे०- १।४०।७
३. अन्तर्गतम्,
वे०- ६।८।३
४. अन्तःस्थितपुत्रपौत्रादिप्रयुक्तबाहु-विधवागुपेतम्,
सा०- १।४०।७
५. अन्तःस्थितबहुधनोपेतम्,
सा०मु०- १।४०।७
६. अन्तर्हितं तिरोहितम्,
सा०मु०- ६।८।३

अन्तर्-विद्वस्

१. अन्तर्जानन्,
वे०- १।७२।७
२. अन्तरिति वेदिमध्यमभिप्रेतम्। विद्वान्,
स्क०- १।७२।७
३. द्यावापृथिव्योर्मध्ये जानन्,
सा०मु०- १।७२।७

अन्तश् √चक्ष्

१. वर्तमानः पश्यति,
वे०- १०।१९०।७
२.मध्ये स्थित्वा...पश्यति करोतीत्यर्थः,
सा०- १।१९०।७

अन्तश् √चर्

१. द्यावापृथिव्योर्मध्ये ...चरति,
वे०- ३।५५।८
२. अन्तर्धारयति,
सा०- ३।५५।८

अन्तः √स्था

१. मार्गे तिष्ठन्तु,
वे०- १०।५७।१
२. तिष्ठन्तु ...मार्गमध्ये,
सा०- १०।५७।१

अन्तर, रा

१. सन्निकृष्टः,
स्क०-१।३१।१३ (सन्निकृष्टश्च। ज्ञाति-स्थानीयश्चेत्यर्थः) ४४।१२, १०४।६, स्क०वे०- ६।६२।१०, स्क०वे०सा०-६।६३।२, वे०-१।१०।९, सा०-६।१५।३ (अन्तिकतरस्य सन्निकृष्णस्य)
२. सनिकृष्टतमः,
स्क०- १।१०।९
३. अनिकृष्टः,
सा०- ६।६२।१०
४. मध्ये वर्तमानः ,
उ०- १०।३३।१, वे०- १।४४।१२, ६।७५।१९, १०।५३।१, वे०सा०- १०।५३।१, (ऋत्विजां यष्टव्यानां देवानां च मध्ये सञ्चरन्), ८८।१५ (मध्ये) ९१।१३ (मध्ये), सा०मु०-१।४४।१२ (देव-यजनमध्ये वर्तमानः) (मध्ये), ९।८६।१३
५. अन्तर्गतम्,
सा०- ७।१०१।५
६. अन्तरङ्गः,
वे०- १।३१।१३, ७।१०१।५

७. समीपवर्ती सन्,
सा०मु०- १।३१।१३
८. अव्यवहितस्य समीपे वर्तमानस्य च,
सा०- १०।११५।५
९. समीपवर्ती,
सा०- २।४१।८
१०. समीपस्थः,
वे०- ६।५।४
११. अभ्यन्तरवर्ती सन्,
सा०मु०- ६।५।४
१२. अन्तिके वर्तमानः,
सा०- ८।१८।१९
१३. गर्भरूपेण अन्तर्वर्तमानाम्,
सा०मु०- १।१०४।६
१४. आसन्नम्,
सा०मु०- १।१०।९
१५. मार्गे,
सा०- १०।३३।१
१६. अहंप्रत्ययगम्यादतिरिक्तं सर्व-वेदान्तवेद्यमीश्वरतत्त्वम् ,
सा०- १०।८२।७
१७. महान् विशेषो जात इत्यर्थः,
उ०- १०।८२।७
१८. अन्तर्हृदये अस्तीति विश्वकर्माणाम्,
वे०- १०।८२।७
१९. अभिभावकान्,
सा०- ३।१८।२
२०. छिद्रप्रवेशनपरान्,
वे०- ३।१८।२
२१. हिंसकस्य,
वे०- ६।१५।३
२२. शराणां निवारकम्,
सा०- ६।७५।१९

अन्तरा

१. मध्ये वर्तमानः,
वे०- ३।४०।९
२. तयोर्मध्यदेशे,
सा०- ३।४०।९
३. अन्तरालम्,
सा०- १०।१३९।२

अन्तरिक्ष

१. अन्तरिक्षलोकः,
उ०- १०।४४।८ (अनालम्बानपि अन्त-रिक्षलोकान्) स्क० - १।२५।७ (पांसु-वर्जितेनान्तरिक्षेण) सा० - ६।५२।१३, सा०मु०- १। ४८।१२
२. आकाशम्,
उ०-१०।५।५, ८०।५, सा०- ३।२२।२, ८।३।२०
३. अन्तरिक्षदेवता,
सा०- १०।५३।५, ५९।७
४. अन्तरिक्षलोकस्य मध्यमस्थानस्य संबन्धिभ्यः,
सा०मु०- १।११०।६
५. आकाशमार्गः,
सा०मु०- १।२५।७, सा०- ८।७।३५ (आकाशमार्गेण), ९।६५।१६, १०।८७।६
६. नभः,
सा०- ६।५८।३, १०।१६८।३
७. मध्यमस्थानम्,
सा०- १०।१५३।३, १५८।१,
८. गन्धर्वादिभिः सेविते मध्यमे लोके,
सा०- ८।९।२
९. अन्तरिक्षोपलक्षितानि लोकत्रय-स्थानानि,
स्क०सा०- १।३५।७

१०. दशापवित्रे,
सा०- ९।२७।६
११. द्यावापृथिव्योर्मध्ये वर्तमानादन्तरिक्षलोकात्,
सा०मु०- १।६१।९
१२. अन्तरा द्यावापृथिव्योर्मध्ये ईक्ष्यमाणं व्योम -
सा०मु०- १।८९।१०
१३. अन्तरा क्षान्तम्,
सा०- ४।५३।५। (अन्तरा क्षान्तं भवति जगदित्यन्तरिक्षम्), ६।६१।११ (अन्तरा क्षान्तं नमः), ८।६।१५ (अन्तरा क्षान्तानि द्यावापृथिव्योर्मध्ये वर्तमानाः लोकाः), ८।३ (अन्तरा क्षान्तान् मध्यमाल्लोकात्), १२।२४। (अन्तरा क्षान्तानि द्यावापृथिव्योर्वर्तमानानि गन्धर्वादीनां स्थानानि), १०।१४९।१ (अन्तरा क्षान्तं मध्यमस्थानगतम्), सा०मु० - १।५२।१३ (अन्तरा क्षान्तं द्यावापृथिव्योर्मध्ये वर्तमानमाकाशम्)
१४. द्यावापृथिव्योरन्तरा मध्ये क्षियन्ति निवसन्तीत्यन्तरिक्षाणि मध्यस्थितानि,
सा०- १०।६५।४, ६६।११ (द्यावापृथिव्योरन्तरा मध्ये क्षितमुषितम्)

अन्तरिक्ष-प्रा

१. अन्तरिक्षस्य पूरयिताम्,
वे०- १।५१।२, ७।४५।१, ९।८६।१४
२. स्वबलेनान्तरिक्षस्य पूरयितारम्,
स्क०- १।५१।२
३. तेजसान्तरिक्षस्य पूरयित्री,
वे०- १०।९५।१७। सा०- १०।९५।१७ (स्वेतेजसान्तरिक्षस्य पूरयित्रीम्)
४. स्वकीयेन तेजसान्तरिक्षस्य पूरयिता,
सा०- ७।४५।१
५. अन्तरिक्षस्य पूरकः उदकेन तादृशः सोमः,
सा०- ९।८६।१४
६. अन्तरिक्षं द्युलोकं स्वतेजसा प्राति पूरयति इति अन्तरिक्षप्रा,
सा०मु०- १।५१।२

अन्तरिक्ष-प्रुत

१. अन्तरिक्षगामिनीभिः,
स्क०- १।११६।३
२. अन्तरिक्षेण गच्छन्तीभिः,
वे०- १।११६।३
३. अतिस्वच्छत्वादन्तरिक्षे जलस्य उपरिष्टादेव गन्त्रीभिः,
सा०मु०- १।११६।३

अन्तरिक्ष-सद्

अन्तरिक्षसंचारी,
सा०- ४।४०।५

अन्तरिक्ष्य

१. अन्तरिक्षे भवानि,
सा०- ९।३६।५
२. अन्तरिक्षे जातानि,
सा०- ९।६४।६

अन्तस्-पथ

दरीसुषिरादिमार्गाः,
सा०मु०- ५।५२।१०

अन्ति

१. अन्तिके,
स्क०वे०- १।७९।११, ९४।९, वे०- १।८४।१७, ४।२।१८, ४।३, ५।७६।२, वे०सा०- १।१६७। ९, १७६।१, ८। ११।४, ९।१९।७, ६७।२१, वे०सा०मु०-५।४४।११, सा०- ८।७३।१
२. अन्ततः,
वे०- १।८९।९

३. अन्तिके समीपे,
सा०- २।२७।३, ५।७६।२, (घर्मसमीपे) ९।९१।४, सा०मु०- १।७९।११, ८४।१७, ८९।९ (मनुष्याणां समीपे)
४. समीपे ,
वे०सा०- ४।५।१०, सा०- ४।२।१८ (पर्वतस्य समीपे। ...मदन्तिके) ४।३, (अस्माकं समीपे)
५. समीप देशे,
सा०मु०-१।९४।९
६. आसन्ने,
वे०- ८।७३।१
७. सन्निकृष्टस्थम्
स्क०- १।८४।१७, ८९।९ (सन्निकृष्टम्। अल्पम्)

अन्तिक, का

निकटम्,
सा०- १०।१६१।२

अन्तिगृह

१. श्वसुरात् पतिगृहस्यान्तिके यस्य श्वसुरस्य गृहम् तस्माच्छ्वशुराद् आत्मीयं गृहम्,
वे०- १०।९५।४
२. स्वभर्तृभोगगृहान्तिके यत् श्वसुरस्य भोजनगृहं तदन्तिगृहम्,
सा०- १०।९५।४

अन्तितस्

१. आऽन्ताद् यावदवकाशम्,
वे०- १।१७९।५
२. अन्तिकतः,
वे० - ३।५९।२, सा० - ५।१।१० (अन्तिकात्), ८।२७।९ (अन्तिकदेशाद्)
३. अन्ताद्,
वे०- ४।१।१०
४. समीपात्,
वे०- २।२७।१३, सा०-१०।११४।४ (समीपे। अन्तिकशब्दात्तसिः। अन्तिकस्य तसि कादिलोपो भवत्याद्युदातत्त्वं च)
५. अन्तिकात् समीपदेशात्,
सा०- २।२७।१३, ३।५९।२ (समीपात्)

अन्ति-देव

१. अन्तिकस्थदेवं स्तोतारम्,
वे०- १।१८०।७
२. देवानामन्तिके,
सा०- १।१८०।७

अन्ति-वामा

१. सन्निकृष्टधना,
वे०- ७।७७।४
२. अन्ति अस्मदन्तिके वामं वननीयं धनं यस्याः सा अन्तिवामा,
सा०- ७।७७।४

अन्त्यूति

१. अन्तिके यस्य रक्षा भवति,
वे०- १।१३८।१
२. आसन्नरक्षणम् ...स्तुत्यनन्तरमेव वरप्रदमित्यर्थः,
सा०- १।१३८।१

आन्त्र

१. पुरीतन्ति,
सा०- ४।१८।१३
२. पुरीतदन्नपानयोराधानभूतम्। तत्संबन्धिभ्यः स्नायुभ्यः,
सा०- १०।१६३।३

अन्ध, न्धा

१. चक्षुर्विकलस्य,
उ०सा०- १०।३९।३
२. ऋजाश्वम्,
स्क०- १।११२।८, वे०- ४।३०।१९

३. अन्धीभूतम्,
वे०- १।१४७।३
४. चक्षुर्हीनम्,
सा०- ४।३०।१९
५. दृष्टिहीनम्,
सा०मु०- १।११६।१६, ११७।१७
६. दृष्टिरहितं सन्तमृजाश्वमृषिम्,
सा०मु०- १।११२।८ (दृष्टिहीनाय तस्मै ऋजाश्वाय), ११७।१८
७. चक्षुर्हीनं दीर्घतमसम्,
उ०- १०।५५।११। (चक्षुर्विकलमृषिं दीर्घतमसम्), सा०- ४।४।१३, १०।२५। ११ (नेत्रहीनं दीर्घतमसमृषिम्)
८. दर्शनहीनामचेतनाम्,
सा०- १०।२७।११
९. मम दुहितरं प्रकृत्याख्यां मय्येव लीनाम्,
उ०- १०।२७।११
१०. आध्यानरहिते चित्तव्यामोहकरेऽपि संग्रामे,
सा०मु०- १।१००।८
११. ज्ञानशक्तिरहिताः अविद्वांसः,
सा०- १।१४८।५
१२. अतथारूप; स्थूलदृष्टिः,
सा०- १।१६४।१६
१३. अन्धकाररूपाणि निबिडानि,
सा०- ४।१६।४
१४. अन्धीकरणानि,
वे०- ४।१६।४
१५. सोमलक्षणम्,
वे०- ७।८८।२, सा०- ७।८८।२ (सोमलक्षणमन्नम्)

अन्धस

१. तमोऽत्रान्ध उच्यते,
स्क०- १।९४।७
२. अन्धकारम्,
वे०सा०मु०- १।६२।५
३. बहुलमन्धकारम्,
सा०मु०- १।९४।७
४. अन्ननाम,
उ०वे०सा०- १०।५०।७, स्क० १।२८।७, ६२।३, (चरुपुरोडाशलक्षणान्यन्नानि ... हवींषि), ६।६३।३, स्क०वे०सा०- १।५२।३, स्क०वे० सा०मु०- १।९।१, वे०- १।२८।७, २।१४।१, ३।४१।६, ५।४१।३, ५४।८, ६।६८।११, ८।१३। १५, ९५।२, ९।६७।२, ६८।६, १०७।२ (सक्तुभिः), १०।३२।१, वे०सा०- ८।७८।१, ९।१६।२ (श्रयणान्नेन) १८।२, ५१।३, ५२।१, ६२।५, १०।९४।८, ११५।३, १४४।५, सा०- १।१२२।१ (अन्नम् आज्यसोमादिलक्षण), २।१९।१, ४।३२।१४, ७।७३।४, ९२।१, ९।११।४ (धानाद्यन्नेन), ५५।१, २,३, १०७।२ (सक्तुलक्षणेनान्नेन), सा०मु०- १।२८। ७ (चणकादीनि खाद्यानि) १।८०।६
५. सोमः,
वे०- १।५२।५, ८०।६, ८२।६, १३५। ४, २।३६।३, ३७।१, ४।१६।१, ७।५९।५, ९०।१, ९२।१, ८।१।२५, १३।२१, १७।४, ८, ९२।१, ४, वे०सा०- ५।३४।२, ६।४५।२७, ६३। २,३, ७।२०।४, ८।३३।४, ७, ३५।२४, ४६।१४, ६१।३, ६६।२, सा०- ४।२०।४, ३२।१४, ३०।६,
६. सोमलक्षण अन्नम्,
उ०- १०।२५।१ (सोमाख्यस्यान्नस्य), ७६।६ (सोमाख्यस्य अन्नस्य), स्क०- १।८०।६, ६।४३।४, ४५।२७ (अन्नेन सोमाख्येन) ६३।२, ६८।११, स्क०वे०

सा०मु०- १।५२।२, स्क०सा०- ६।४२। ४, स्क०सा०मु०- १।५२।५, ८२।५, ८५।६, वे०- १।१५५।१ (सोमाख्यस्य अन्नस्य), ५।५१।५ (सोममन्तम्), ६।४२।४ (सोमन्नस्य) (सोमस्य अवयवेन येन सोमान्नेन), ७।७३।४ (सोमान्नस्य), वे०सा०- ३।३५।१, सा०- १।१३५।४ (अन्नस्य सोमरूपस्य), १५५।१ (सोम-रूपमन्नम्) २।१४।१, ३६।३,३७।१ (देवानामन्नरूपस्य सोमस्य), ३।४०।१ (अन्नलक्षणं सोमम), ४।१६।१ (अन्नरूपं सोमम्), २३।१, २७।५, ६।४३।४, ७।२१।१ (सोमरूपमन्नम्), ६८।२, ९०। १ (अन्नस्य सोमलक्षणस्य स्वकीयं भागम्), ८।१।२५ (अन्नस्य सोमरूपस्य) २।१, १३।१५, १३।२१ (अन्नस्य सोमलक्षणस्य स्वांशम्), १७।४ (अन्नस्य सोमलक्षणस्य स्वांशलक्षणं भागम्), १७।८ (अन्नस्य सोमात्मकस्य), २४।१६, ८८।१,९२।१, ४, ९।५८।१ (देवानामन्नात्मकस्य सोमस्य), ६८।६, १०।९६।९ (अन्नं सोमम्), ११६।४, १६७।२ (अन्नं सोमम्), सा०मु०- ५।३०।६, ५१।५ (अन्नं सोमलक्षणम्)

७. सोमस्य रसः,

वे०- ४।१।१९ (रसम्), ८।२४।१६, ९।१।४ (रसात्मकेन अन्नेन), वे०सा०- ९।६१।१० (रसम्), १०।७६।६, सा०- ४।१।१९ (रसाख्यमन्नम्), ३१।२ ९।८६।४४ (अन्नं रसात्मकम्), १०।३२।१ (अन्नरूपस्य सोमस्य रसमिति शेषः)

८. उभयविधं दिव्यं पार्थिवं चाग्निम्,

सा०- ७।९६।२

९. ग्रामारण्यम्,

सा०- ७।९६।२

१०. धारया,

वे०- ९।५५।१, ३

११. सारेण,

सा०मु०- ५।५४।८

१२. हविर्लक्षणान्यन्नानि,

वे०- ८।९५।२ (हविः), ९।५५।२, सा०- २।१४।४, ३।४८।१ (हवि-र्लक्षणस्य अन्नस्य सोमस्य), ५।४१।३ (अन्नानि हर्विलक्षणानि हवींषि स्तोत्रंच) ७।५९।५ (सोमलक्षणानि हवींषि), ९।६७।२ (हवीरूपेणान्नेन), सा०मु०- ५।४५।९ (दीयमानं छविः), मु०- ४।४१।३ (अन्नानि, हवींषि स्तोत्रं चेत्यर्थः हविषः)

१३. अन्धोऽन्नम् तेन तत्कारणमुदकं लक्ष्यते,

सा० ८।६५।२

१४. अद्यमानम्,

वे०- २।१९।१, १०।२५।१ वे०सा०- ८।३२।२८,

१५. अदनीयम्,

वे०- ४।२७।५, वे०सा०- ९।६१।१९, १०१।१ (अदनीयस्य सोमस्य), १०१। १३ (अदनीयस्य सोमस्य), सा०- १।१५३।४ (अदनीयमन्नं पयोरूपं पुरोडाशादिरूपं वा)

१६. पयोलक्षणमन्नम्,

वे०- १।१५३।४

अन्य, न्या

१. एकः,

उ०- १०।१४।३, स्क० ६।५२।१६, ६८।३, स्क०वे०सा०-६।५७।२ (अनयोरेकतरः इन्द्रः), वे०- ६।६६।१, वे०सा०- १।१६४। २०, २।४०।४, ७।८२।६ सा०- १।१८१।

४, २।४०।५ ३।३२।११ (एकतरया), ३३।२ (एका), ६।४७।२१, ५७।३, ५८। १, ७।८२।२, ५, ८३।९, ८५।३, १०। १३७।२, सा०मु०- १।१०३।१,५।२९।१०

२. व्यतिरिक्तम्,

वे०- ३।३५।५, सा०- २।१८।३, ३३। ११, ५।१।८, ७।५७।३ ८।५।१३, ८।८, १०।२८।१, ३४।११, १४९।३, सा०मु०- १।५२।१४ (स्वव्यतिरिक्तम्) १।१०९।६

३. अतिरिक्तम्,

सा०- १०।९१।८

४. कश्चित् ,

उ०-१०।१०।१४, ६४।२, उ०सा०- १०।१०।१३, स्क०-१।१०९।६, ६।४८। २२, स्क०वे०सा०मु०- १।५२।१३, (नान्यः कश्चिदतिरिच्यते), वे०- ६।२१। १०, ३०।४, वे०सा०- ८।१५।११, सा०-१०।३४।१४, सा०मु०- १।५७।४, ८४।१९, १०९।१ (केनचित्)

५. अपरः,

सा०- १।१६४।२० १८१।४, (अपरः उत्तमस्थानः), २।४०।४, ५, ३।३३।२ (अपरा), ६।४७।२१। (अपरम्)

६. आगामिनीभिः उषोभिः,

सा० - १।१२३।११ (अतीताः आगा- मिन्यश्च), सा०मु०- १।११३।१०

७. समानः,

सा०- ४।३६।९ (अस्मत् समानान्) ५।१।९ (स्वसमानान्)

८. इतरान् अन्यदीयान्,

सा०- ७।१।१४

९. कार्यान्तरेषु,

सा०मु०- १।३०।६

१०. पूर्वमविद्यमानं तेजोमयम्,

सा०- १।१४०।७

११. तेभ्योऽन्यो यः कोऽपि पुरुषः, अन्यो यः कश्चन पापदेवः,

सा०- १।१२५।७

१२. केचन वेदवादिनः,

सा०- १।१६४।१२

१३. युवयोरन्यतमस्य,

सा०- १।१८१।५

१४. परस्परव्यतिहारेण,

सा०- ६।४७।१५

१५. प्रकृतादस्मद्विलक्षणाः दश- संख्याकाः,

सा० ८।३।२३

१६. अहंप्रत्ययगम्यादतिरिक्तम् सर्व- वेदान्तवेद्यमीश्वरतत्त्वम्,

सा०- १०।८२।७

१७. मरुद्व्यतिरिक्ता देवाः,

सा०- ७।५७।३

१८. त्वत्सदृशेन,

सा०- १०।१०।८

१९. त्वदनुरूपेण,

उ०- १०।१०।८

२०. त्वद्योग्येन पुरुषेण,

उ०- १०।१०।१२ (अन्यतरेण त्वद्योग्येन पुरुषेण) सा०- १०।१०।१२

अन्यक

१. शत्रवः,

सा०- ८।३९।१

२. दुर्धियः शत्रवः,

सा०- ८।४१।२

३. कुत्सितानामन्येषां शत्रूणाम्,

सा०- १०।१३३।१

४. अन्ये ,

वे०- १०।१३३।१ (अन्येषाम्), सा०- ८।२१।१८

अन्य-कृत

१. अन्येन कृतम्,
स्क०वे०- ६।५१।७
२. अन्यप्रयुक्तेन धनेन,
वे०- २।२८।९
३. शत्रुकृतेभ्यः,
वे०सा०- ८।७९।३
४. अन्यैः शत्रुभिः कृतमुत्पादितम्,
सा०- ६।५१।७
५. अन्यैः अर्जितेन धनेन,
सा०- २।२८।९

अन्य-जात

अनौरसम्,
सा०- ७।४।७

अन्य-तस्

अन्यस्मात्,
सा०मु०- १।४।५

अन्यथा

१. अन्येनैव प्रकारेण,
सा०- ६।३५।५
२. प्रकारान्तरेण,
सा०- ४।३२।८

अन्य-रूप, पा

१. जीर्णा दावभूतः,
वे०- १०।११।४
२. रूपान्तरमेव धारयन्,
सा०- ७।१००।६
३. जीर्णा ओषधीर्दावभूतः,
सा०- १०।१।४

अन्य-व्रत

१. इन्द्रादन्यं यो यजते सोऽन्यव्रतः,
वे०- ८।७०।११
२. व्यतिरिक्तकर्माणम्,
सा०- ८।७०।११
३. श्रुतिस्मृतिव्यतिरिक्तकर्मा,
सा०- १०।२२।८
४. श्रुतिस्मृतिविहितकर्मणोऽन्यकर्मा, प्रतिषिद्धकर्मा,
उ०- १०।२२।८
५. विजातीयकर्मा,
वे०- १०।२२।८
६. अवैदिकस्य असुरस्य,
मु०- ५।२०।२
७. यस्य यजमानस्य प्रमादाद् व्रताद् अन्यद् असत्यादिकम् उपनतं सोऽन्य-व्रतः,
वे०- ५।२०।२
८. अन्यद्वैदिकाद्विभक्तं व्रतं कर्म यस्य तस्यासुरस्य,
सा०- ५।२०।२

अन्योदर्य

अन्यस्य उदराज्जातः,
वे०- ७।४।८

अन्वञ्च

१. पृष्ठतश्चानुमुखमागच्छतः,
वे०- ३।३०।६
२. अनुगच्छतः पार्ष्णिग्राहानसुरान्,
सा०- ३।३०।६

अनूची

१. परस्परेणानुगते। परस्परतः संवर्तिन्यौ सम्बद्धे चेत्यर्थः,
स्क०- १।११३।२
२. द्योतमाने अन्योन्यस्य,
वे०- १।११३।२
३. सूर्यगत्यनुसारेण गच्छन्त्यौ,
सा० १।११३।२

४. अन्वञ्चन्त्यौ प्रथमं रात्रिः पश्चादुषा इत्यनेन क्रमेण गच्छन्त्यौ,
सा०मु०- १।११३।२

अनूचीना

अनुक्रमयुक्तानि। पितृपुत्रपौत्रा इत्यनुक्रमः,
सा०- ४।५४

अन्वव्

१. अनु अरक्षन्,
वे०- ८।७।२४।१०।११३।१
२. अरक्षन्,
सा० ८।७।२४, १०।११३।१ (रक्षतां। तस्य बलं पूर्वमस्मान्रक्षतु पश्चादेते अपि रक्षतामिति, भावः)
३. अनुगच्छसि,
सा०- ३।५०।२
४. गच्छसि,
वे०- ३।५०।२

अन्वश्

१. अनुव्याप्नोति,
वे०-१।८४।६ (अनु...गच्छन्तं व्याप्नोति)
सा०- ७।९९।१
२. व्याप्नोति,
वे० - ७।९९।१ सा० - २।१६।३ (व्याप्नोति परिभवितुम्)
३. अनु प्राप्नुवन्ति,
स्क०- १।५२।१४
४. प्राप्तुमसमर्थे बभूवतुः,
सा०मु०- १।५२।१४
५. अनुलक्ष्य ... प्राप,
सा०मु०- १।८४।६
६. अनुशब्दोऽत्र 'उपोऽधिके च' (पा० १, ४, ८७) इत्यनेन कर्मप्रवचनीयेन समानार्थ आधिक्यवचनः। आनशे व्याप्तिकर्मायम्, (तु० निघ २,१८)... व्याप्नोति,
स्क०- १।८४।६

अन्वस्

१. अनुगताः,
उ०सा०- १०।२७।१७
२. प्रति निक्षिप्ताः,
वे०- १०।२७।१७
३. अनुभवतु,
वे०- ३।३९।८, वे०सा०-१।१६७।१०, १८५।४, सा०- १।१८२।८
४. अनुकूलं भवतु,
सा०- १।१६७।१०, १८२।८
५. अभिमतप्रदः भवतु,
सा०- १।१६७।१०

अन्वा √लभ्

१. अन्वारभन्ते,
वे०- १०।१३०।७७
२. अनुक्रमेण आरब्धवन्तः। यागानुष्ठाने प्रवृत्ताः,
सा०- १०।१३०।७

अन्वा √वह

१. लब्धः, ...वहनद्वारेण संसेविता,
उ०- १०।२९।२
२. आवहत्। प्रापितवान्। लब्धवान्,
सा०- १०।२९।२

अन्वा √वृत्

अनुक्रमेण परिभ्रमति,
सा०मु०- ५।६२।२

अन्वि (अनु √इ)

१. अनुगच्छति,
उ०सा०-१०।१३।३ (अनुगच्छामि। यथाकालं प्रयुनज्मीत्यर्थः), उ०वे०सा०-१०।

६।७, स्क०- ६।५४।५ (अनुगच्छतु रक्षणार्थम्), स्क०वे०मु०-५।११३।८, वे०- ४।२६।२, ५।३०।२ (अनुगतवानस्मि), ८०।४, १०।१३।३, वे० सा०- ४।१३।२, ७।६३।५, ८।९९।६, १०।२७।१३, ५३।६, १३६।२, १४२।५, ९५।५, सा०- १।११३।८ (अनुगच्छति। अतीता उषसो यथा व्युष्टा एवमेवैषापि व्युच्छतीत्यर्थः), ६।५४।५ (रक्षणार्थमनुगच्छतु), सा०मु०- ५।३४।१,३०।२

२. अनुक्रमेण ...गच्छति,
सा०- १।१२४।३, मु०- ५।८०।४

३. अनुसृत्य ...सखिभावं गच्छन्ति,
सा०- १।१६३।८

४. गताः,
वे०- १।१६३।८

५. गच्छन्ति,
सा०- १।१६३।१२

६. आनुपूर्व्येण गच्छति ... तिर्यगूर्ध्वमधश्च सर्वरश्मिजालेनाऽऽलोककरणाय व्याप्नोतीत्यर्थः,
उ०- १०।२७।१३

७. प्राप्तम्,
सा०- ४।४।११

८. प्राप्नुवन्ति,
सा०- १०।८५।३१

९. अनुप्राप्नोति,
सा०मु०- ५।३४।१

अन्वेतवे

अन्वेतुम्,
वे०सा०- ७।३३।८

अन्वेतवै

१. अविच्छेदनानुष्ठातुम्,
वे०- ७।४४।५

२. अनुगन्तुं प्रवृत्तानाम्,
सा०- ७।४४।५

३. अनुक्रमेण उदयास्तमयौ गन्तुमेव,
सा०- १।२४।८, मु०- १।२४।८ (अनुक्रमेण उदयास्तं गन्तुमेव)

४. आनुपूर्वेण गन्तुम्,
स्क०- १।२४।८

५. सूर्यस्य पदानि प्रतिधातुम्,
वे०- १।२४।८

अन्वृ

१. अनु गच्छति,
वे०- ५।५२।६

२. अनु ...निरगात्,
सा०मु०- ५।५२।६

अन्वर्तितृ

१. अनुगन्तारौ,
वे०- १०।१०९।२

२. ऋतिः सौत्रो धातुर्घृणायां वर्तते। तस्य तृचि रूपम्। सोममनुमोदयिता,
सा०- १०।१०९।२

अन्वृध्

१. अनुपूर्वो गमनार्थो भवति,
वे०- ८।४८।२

२. अनुगच्छसि...प्रापय। अनुपूर्व ऋधिर्गत्यर्थः,
सा०- ८।४८।२

अन्वृधत्

१. अनुक्रमेण ...वर्धयन्तः,
वे०- ७।८७।७

२. आनुपूर्व्येणर्धतः समर्धयन्तः,
सा०- ७।८७।७

√अप्

१. व्याप्नुवन् ,
वे० - १।८०।८

२. स्तुतिभिर्दीपयन्ति। उत्तेजयन्तीत्यर्थः,
स्क० - १।१००।८
३. आप्नुवन्ति,
सा०मु० - १।१००।८

अप्तुर्

१. अप्छब्दः उदकवचनः । अन्तर्णीतण्यर्थस्य तरतेरप्तुरः। अपां तारयितारः आदित्यं प्रति गमयितारः,
स्क० - १।३।८
२. मेघस्थानमपामुद्गमयितारः,
वे० - १।३।८
३. तत्काले वृष्टिप्रदाः,
सा० मु० - १।३।८
४. आप इव त्वरोपेता,
सा०मु० - १।११८।४
५. आपोऽन्तरिक्षम् । तत्र त्वरितारः त्वारयितारो वा मेघस्य,
स्क० - १।११८।४
६. आपः उदकानि, तत्र त्वरितारः,
स्क० - १।११८।४
७. उदकस्य प्रेरयितारः,
वे० - १।११८।४
८. अपां प्रेरकः,
वे०-२।२१।५ (अपां प्रेरयितुः), ३।२७।११, वे०सा०-९।६३।२१, सा०-२।२१।५, ३।२७।११, ५१।२ (मेघ-भेदनद्वारा अपां प्रेरकम्)
९. उदकस्य प्रेरकः,
वे०सा० - ९।६३।५, सा० - ९।१०८।७ (अन्तरिक्षस्थितानमुदकानां प्रेरकम्)
१०. व्यापनशीलम्,
वे० - ३।२७।११
११. कर्मसु त्वरमाणम्,
वे० - ३।५१।२
१२. वसतीवरीभिः प्रेरितम्,
वे०सा० - ९।६१।१३

अप्सस्

१. दर्शनीयो गजः इव,
सा० - ८।४५।५
२. गजः,
वे० - ८।४५।५
३. रूपम्,
वे०सा०मु० - ५।८०।६
४. दन्तस्थानीयानि रूपाणि नीलपीतादीनि,
सा० - १।१२४।७
५. निरूप्यमाणानि पदार्थजातानि,
सा० - १।१२४।७
६. आत्मीयं रूपम्,
वे० - १।१२४।७

अप्, आप्

१. उदकम्,
उ०सा०- १०।९।५, ६६।९, ८९।४, स्क०- ६।४८।५, ६२।६, स्क०वे० - ६। ७२।३, स्क०वे०सा०- ६।६८।८, स्क० सा०- ६।३०।४,६४।१, स्क०सा०मु०- १।५२।६, वे०-१।८।७, २३।२०, २३।२३, ५५।६, ६४।१, ८०।५, ९१।२२, १००। १८, १०४।६, १०५।१, ११२।५, १२२। ६, १५१।१, १५७।५, २।२७।१३, ४।१६। ६-८, ५।४८।१, ६।२४।६, ३०।५, ३१।१, ४७।१४, ७३।३, ७।३२।२७, ६५।३, ९५।१, १०४।, ८।६।१३, ७।२८, १२।३, ३३।१, ४०।१०,११, ८६।२५, ७६।३, ९।६८।४, ७१।३, ८०।५, ८२।५, ८५।४,१०, ८६।४०, ९४।१, ९६।१०, १३, १०९।२२ १०।१४।९, ३०।४, ५०।२, ६४।८, १२४।७, १२५।७, १३८।१,

१४२।७, वे०सा० – १।१६१।११, १६८।२, १७५।६, १८०।४, १९०।७, २। १४।२, २०।७, ६।२८।७, २९।५, ४९। १४, ४४।१८, ४६।४, २७, ७।६८।८, २१।३, ८।४।३, ३२।२, ८३।३, ९४।७, ९६।३, ९६।१८, ९७।१५, १०९।२१, ९।६२।२६, ६३।७, ७०।२, १०।४।५, ८९।१०, १३, ९२।५, ९८।१२, १०४।९, ५०।३, ६३।१५, ६५।७, ६६।८, ११३।६, १४७।७, १४८।२, वे०सा०मु०– १।८०।३, ५।३१।६,८, ५३।१४, ६०।३, सा०– १।२३।१९, १४४।२, १६१।९, १६४।४७, २।१३।१, ३५।५, ३।३९।६, ४।१८।६, २१।८, २६।२, ३८।१०, ४७।२, ५८।११, ६।१३।१, १७।१२, १९।१२, २०।२, १२, २५।४, ३२।५, ६०।२, ७।१८।१२, ८।९।५, १५।२, ८, १६।२, १८।१६, २५।१४, ६९।११, ८२।३, ८८।३, १०१।२, १०३।४, ८।३।१०, ९।२।५, ४९।१, ७२।७, ७४।३, ८६।८, ८८।७, ९५।३, ९६।१९, ९७।४१, १०७।१८, १०८।५,१०, १०९।१३, १०।१७।१४, ४५।५, ४६।२, ५१।१३, ६५।११, १२१।९, १६८।३, सा०मु०– १।४६।४, ५१।४, ६५।५, १०८।११, १०९।४, ५।१४।४, ३०।६, ४६।७, ८५।२

२. समुद्रनद्यात्मकान्युदकानि,

उ० – १०।३९।४ (सामुद्रीभ्यः), ६३।१५ (उदकेषु सामुद्रनादेयादिषु), वे०सा० – ७।८९।४,१०।३९।४, सा०– १।१३१।४, २।१।१ (समुद्रोदकेभ्यः), ८।१४।१०

३. ह्रदोदकात्,

स्क० – १।११२।५

४. प्रोक्षण्याद्युदकम्,

स्क० – १।१६४।४

५. कूपान्तर्वर्तमानम्,

सा०मु०– १।११६।२४, ११७।४ (कूपस्थेपूदकेषु)

६. अन्तरिक्षस्थितमुदकम्,

वे०– २।१।१, सा०– ३।३२।५, ८।६।१६, ९।६८।४, १०।१२३।१

७. वृत्रेणावृतान्युदकानि,

सा०– ४।१७।३, १०।१३८।१, सा०मु०–५।२९।२ (वृत्रेण निरुद्धान्युदकानि)

८. सर्वाण्युदकानि,

वे०सा०मु० – ५।३०।५

९. प्रभूतेनोदकेन,

स्क० – ६।२९।५

१०. पार्थिवान्युदकानि,

स्क० – ६।३९।५

११. महान्त्युदकानि,

वे०सा० – ९।६१।२२

१२. उदकानि शान्त्यर्थम्,

सा० – १०।४।५

१३. अभ्युक्षणोदम्,

सा० – १०।१४।९

१४. प्रकृतिस्थानां सूक्ष्माणामुदकानाम्,

उ०सा० – १०।२७।१७

१५. प्रवृद्धानामुदकानाम्,

सा० – १०।७७।४

१६. उदकानि अमृतलक्षणानि,

स्क०– १।१०३।५, सा० –१०।१७८।३

१७. वृष्ट्युदकम्, वृष्टिलक्षणोदकम्,

उ० – ८।४३।७, ६५।७, ६६।८, ७८।५, उ०वे०–८।४६।१, उ०सा० – ८।४३।८, ४५।३, ३०।४, स्क०– १।१०४।६, ६४।६, ६।३१।१, ६०।२, स्क०सा० – ६।५७।४, स्क०सा०मु०– १।८०।४, ५, ९१।२२, १००।१८, १०३।२, ५२।८, ५४।१०, ५५।६, वे० – १।१३४।५, २।

३८।२, सा०- १।१२२।३, ६, १५७। ५, १६४।५२, १६५।८, १६९।३, १८१। १, २।१।१, २७।१३, ४।१६।६-८, २८।१, ६।६०।११, ७।१२।३, २२।२८, १०३।५, ८।६।१३, १०।८।१, ५, २७।२०, सा०मु०-१।१०३।५, ५।४८।१

१८. वसतीवरी,

उ०-१०।३६।८, उ०सा०- १०।३०।१, ३०।१५, स्क०- ६।३४।४, स्क०वे० सा०- ६।४०।२, वे०- १।१३५।६, १७८।२, ३।३५।८, १०।१०४।२, वे०सा०- २।३५।३, ६।४८।५, ८।१।१७, ९।२।३, ३।६, ७।२, २४।१, ३०।५, ५९।२, ६२।४, ५, ६५।२६, ६६।१३, ७८।१, ८९।२, ९१।२, ९६।२४, ९७।४५, ९७।४८, ९९।७, १०७।१, १०९।१७, सा०- १।१०७।२, ४, १८, सा०- ६।४७।१४, ९।६५।६, ६८।९, ७१।३, ७४।९, ७९।४, ८२।३, ५, ८५।१०, ९४।१, ९६।१०, ९३, ९७।४७, ९७।५७, १०९।२२, १०। १३९।४

१९. मातृभूताभिः वसतीवरीभिः,

सा० - ९।९३।२

२०. तासामुदकानि सोमाभिषेकार्थम्,

सा० - १०।६४।८

२१. एकधना,

उ०- १०।३०।२, उ०सा० (वसतीवर्ये-वधनाख्या) - १०।३०।३,१५, (वसती-वर्येकधनालक्षणानि) १०।३०।१, स्क०- ६।३४।४, ४०।२, सा० - १०।१०४।२, सा०- ६।६५।६, २६, ९६।१३,

२२. मेघस्थोदकम्,

उ०सा० - १०।३०।४, (वृष्टिलक्षणा), स्क० - ५।५८।६, ६।३२।५, ४७।१४ (उदकानि च मेघोदरान्तर्गतानि),२७ (मेघोदरान्तर्गतानाम्) सा० - ६।७२।३, ८।२६।२५, सा० - १०।५०।२, (मेघे वर्तमानेषूदकेषु), सा० - २।३५।७,८, सा०मु० - १।९५।८

२३. जलम्,

वे०- १।१५१।४, सा० - ३।२२।२, सा०मु०-१।८।७, २३।२०, २३, ३२।१, ५१।११, ५६।६, ६४।१, ६७।५

२४. सलिलम्

सा० - ८।४०।१०, ११

२५. लवणोत्कटस्य सामुद्रजलस्य पानानर्हत्वात्,

सा० - ७।८९।४

२६. अन्तरिक्षम्,

उ०सा० - १०।४५।१, ४९।२, उ०वे०सा०- १०।१०।४, १०।६३।२, ६५।९, स्क०वे०- ६।५२।१५, स्क०सा०मु०- १।९५।३, ९६। २, १८०।२, वे०- १।१६३।४, ३।५६।७, ५।३१।९, ४५।११, ५।७६।४, ६।६४।४, ७।८५।३, ८।७।२२, १५।२, ९।९०।४, १६।३, १०।१६८।३, वे०सा०- १। १८०।५, २।३८।७, ३।१३।४, ४।१३।४, ६।२२।८, ८।८२।८, ९।१६।३, २०।६, ९।४२।१, ७६।५, १०।३६।१, ६५।११, वे०सा०मु० - १।३६।८, ५२।१२, सा०- १।१७३।८, १८४।३, १५१।१, २।३८। ११, ६।२४।६, १०।२।७, ८८।२, ८, मु० - ६।८।४

२७. अग्निमित्ताम्,

सा० - ५।४५।११

२८. आप्नोति सर्वं जगत् इत्यापः अन्तरिक्षम्। नित्यबहुवचनान्तत्वात् बहुवचनम्,

सा० - ३।५६।७, ९।९९।६

२९. अपां कारणादन्तरिक्षात्,
सा०मु० – ५।७६।४
३०. अन्तरिक्षमाकाशम्
सा० – ६।६४।४
३१. कर्म,
उ०सा०– १०।७६।३, स्क० – ६।६२।२, वे०– ३।१।३, वे०सा० – २।२२।४, सा०– १।१३५।६, १५८।६, १८४।३, ३।१।५ (अपस्यतां कर्मवताम्)
३२. यागकर्म,
उ०– १०।३६।१, १०।६५।७ (कर्म... लौकिकं वैदिकञ्च), वे० – १०।७६।३ (कर्म यज्ञम्), ६।३२।५ (कर्म युद्धं यज्ञं वा), सा०–१।१५१।४ (कर्म सोमयगरूपम्) १७८।२ (अप्कार्याणि हवींषि), ३।१।३ (यज्ञवहनरूपे कर्माणि निमित्ते), १०।१२।४ (यज्ञरूपकर्म),
३३. सोमः,
स्क०– १।९५।८ (सोमरसलक्षणाभिश्चाद्भिः), वे०– १।१०९।४ (अभिषूयमाणे सोमे), वे०सा०– १।१२२।९, सा०– ७।७०।४, (अब्विकाराः) ७।८५।३ (सोमाः)
३४. वेगः,
वे०– १।५७।१, ६।६२।२ (वेगवतीनां नदीनां मध्ये), सा०मु० – १।५७।१ (जलानां वेगः)
३५. देवता,
सा०मु० – १।२३।१९, १०।६१।२६
३६. आपः देव्यः,
सा० – ७।४९।३, ४
३७. अब्देवता,
वे०सा०मु०–५।४६।३, सा०– ७।४७।१, २, ८।१९।४, सा०मु०– १।१०४।६, ५।४९।११

३८. उदकदेवता,
सा० – ७।४४।१
३९. गर्भवदन्तर्वर्ती अपांनपात्संज्ञः,
सा०मु० – १।७०।२,
४०. वैद्युतात्मना ह्यग्निः अद्भ्यः उत्पद्यते। अतोऽपां गर्भ उच्यते,
स्क०– १।७०।२
४१. आप्तव्यः,
सा० – १।१७८।१, (आप्तव्यानि। यद्वा। विश्वा सर्वा आपः आप्ताः श्रुतयः), ४। ३।१२ (आप्तव्याः सत्यः), ६।४४।१८ (आप्तव्यानां धनानां वा उदकानां वा)
४२. आप्नुवन्तः,
सा० – ६।६६।११, ७।५६।२४
४३. व्याप्तः,
वे०–६।६६।११, ७।५६।२४, ८।९६।१, १०।९२।५, ९५।१० सा०– ४।३८।४। (व्याप्तस्य स्तोतुः), ५।४४।६ (व्यापिकासु स्तुतिषु अप्सु)
४४. 'आप्लृ व्याप्तौ'। सर्वतो व्याप्ताः,
सा० – ८।९६।११
४५. व्याप्तः कर्मसु कर्मवान् ,
सा० – १०।९५।१०
४६. व्यापनशीलासु धीवृत्तिषु,
सा० – १०।१२५।७
४७. सूर्यमण्डलस्थाः सर्वस्य व्याप्तारो वा रश्मयः,
वे० – १०।३७।२
४८. आन्तरिक्षासु उदकमये मण्डले,
सा०मु० – १।१०५।१
४९. त्रयो लोकाः,
स्क० – १।६७।५
५०. मातृभूता अपः,
सा० – ३।९।२, १०।३२।६

५१. भूमिः,
सा०-१।१६३।४ (भूलोकोऽपि अप्-शब्देनाभिधीयते पृथिव्याम्) १।१७४।९
५२. प्राप्नोषि
सा० - १०।९५।१३, (आप्नोषि), वे०-१०।९५।१३
५३. तटीयदुर्गस्थानानि उदकाश्रयाणि तटाकादीन्,
सा० - १।१७४।२
५४. अब्रूपाः,
सा० - १०।१०४।८
५५. प्रधानभूताः नद्यः,
वे० - १०।१०४।८
५६. सर्वस्य पात्र्यः,
उ० - १०।६४।९
५७. अम्भांसि,
सा०मु० - ५।८३।६
५८. इन्द्रं प्राप्नुवतां पुरुषाणाम्,
सा०मु०- १।१००।११
५९. मेघोदरगता विद्युतात्मना स्थितं जनितवत्यः,
सा० - १०।२।७
६०. आज्यौषधिसोमरूपाः,
वे० - ७।१०१।४
६१. एतदुपलक्षितानि सर्वाण्यपि भूतानि,
सा० - २।२४।१२
६२. पयांसि,
उ० - १०।३६।१

अपां (नपात्)

१. मध्यमस्थानपठितोऽग्निरपां नपादिति,
वे० - २।३५।१
२. अपांनपान्नामधेयोऽपि देवः,
सा० - ७।३५।१३
३. एतदाख्यो देवः
सा० - ७।४७।२
४. वृष्टिकर्मण्यधिकृतं देवम्,
सा० - १०।३०।३
५. मध्यमास्थानोऽग्निः,
सा० - ६।५२।१४
६. मध्यमस्थानवैद्युताग्ने,
सा० - १०।१४९।२
७. रक्षकं वैद्युतमग्निम् ,
सा०मु० - ५।४१।१०
८. अपां पुत्रम्,
स्क० - १।२२।६
९. अपां पौत्रः,
स्क०-१।२२।६, वे०-२।३५।१३, ३।९।१
१०. अपां नप्तारम्,
सा० - ३।९।१
११. अपां न पातयिता वैद्युताग्निरूपेण प्रवर्षकत्वादिति भावः,
सा० - १।१४३।१
१२. उदकानामपातयितारं वर्षकमेतन्नामकम्,
सा० - १।१८६।५
१३. उदकानां नप्तारं तृतीयं पुत्रम्। अद्भ्यः ओषधिवनस्पतयः तेभ्योऽग्निरिति नप्तृत्वम्,
सा० - १।१८६।५
१४. अपां पौत्रीयस्थानीयोऽग्निः। अद्भ्यः ओषधिवनस्पतयो जायन्ते ओषधिवनस्पतिभ्यश्चायमग्निर्जायते इत्यग्नेरपां पौत्रत्वम्,
सा० - २।३१।६

१५. अपां पौत्रस्थानीयः। अद्भ्य ओषधिवनस्पतयो जायन्ते ओषधिवनस्पतिभ्य एषोऽग्निर्जायत इति पौत्रत्वम्,
सा० - २।३५।१

१६. अपां नपाद् अग्निरुच्यते, अपां पौत्रत्वात्। अद्भ्य ओषधिवनस्पतयो जायन्ते, ओषधिवनस्पतिभ्य एष जायते इत्येवमस्यापां पौत्रत्वम् ,
स्क० - ६।५२।१४

१७. वृष्टिलक्षणानामुदकानां पौत्रः अद्भ्यो हि मेघो जायते मेघादग्निर्विद्युद्रूपो जायत इत्यपां पौत्रत्वमुच्यते,
सा० - १०।८।५

१८. वृष्टिलक्षणानाम् अपाम् नपात् मेघः। कथम्। अद्भ्यो हि मेघो जायते मेघात् त्वं विद्युद्रूपो जायसे,
उ० - १०।८।५

१९. अपां मेघस्थानां पुत्रो माध्यमिकोऽग्निः अग्निरपांनपादुच्यते। अद्भ्य ओषधिवनस्पतयो जायन्ते, ओषधिवनस्पतिभ्य एष जायत इति,
स्क० - ६।५०।१३

२०. उदकानां पुत्रभग्निम्,
सा० - ७।३४।१५

२१. वृष्ट्या सह भूमौ निपतितः,
सा० - २।३५।१३

२२. योऽद्भ्यः प्रातरेवोदेति,
वे० - १।२२।६

२३. अपां पुत्रम्,
स्क० - १।२२।६

२४. जलस्य न पालकम्। संतापेन शोषकमित्यर्थः,
सा०मु० - १।२२।६

२५. अपां पौत्रः,
स्क० - १।२२।६

अपां (नप्तृ)

१. न पातयिता पुत्रेण मध्यमस्थानेन वैद्युताग्निना,
सा० - ६।१३।३

२. वृष्टिकर्मसु अधिकृतेन देवेन सह,
सा० - १०।३०।१४

अप्सु-क्षित्

१. अन्तरिक्षायतना रुद्राः,
वे० - १।१३९।११

२. अप्सु अन्तरिक्षे क्षियन्ति निवसन्तीत्यप्सुक्षितः। अन्तरिक्षवासिनो देवाः,
सा० - १।१३९।११

अप्सु-जा

१. अन्तरिक्षजाः,
वे० - ८।४३।२८

२. अन्तरिक्षजातः,
सा० - ८।४३।२८

अप्सुजित्

१. अन्तरिक्षे सम्यग् जेता,
वे० - ८।१३।२

२. अप्सूदकेषु प्राप्येषु सत्सु तद्विघातिनो वृत्रादेर्जेता,
सा० - ८।१३।२

३. आप इत्यन्तरिक्षनाम। अन्तरिक्षे वर्तमानानामसुराणां जेता,
सा० - ८।१३।२

अब्जा

१. अप्सु जातम्,
वे० - ७।३४।१६

२. अप्सु जातमग्निम्,
सा०- ७।३४।१६

३. *उदकेषु जातः,*
सा० – ४।४०।५

अब्जित्

१. *अपां जेता,*
सा० – ९।७८।४
२. *वृत्रेणाक्रान्तानामपां जेत्रे,*
सा० – २।२१।१

अब्द-या

१. *अपां दातारः,*
वे – ५।५४।३
२. *उदकानां दातारः.*
सा०मु० – ५।५४।३

अभ्र

१. *मेघः,*
उ०– १०।७५।३, वे०सा०– ४।१७।१२, वे०सा०मु० – ५।६३।३, ८५।४, सा०– ७।९४।१, सा०मु०– ५।४८।१, ६३।४,६
२. *अद्भिः पूर्णाः मेघाः,*
सा०मु० – १।७९।२
३. *विद्योतमानस्य द्युलोकस्य,*
वे० – ५।८४।३
४. *अन्तरिक्षात्,*
सा० – १०।७५।३
५. *मेघोपलक्षितमन्तरिक्षम्,*
उ० – १०।२०।४
६. *अभ्रोपलक्षितमन्तरिक्षम्,*
उ० – १०।२०।४
७. *तेजः,*
वे० – ५।४८।१

अभ्र-प्रुष्

१. *अभ्राणां मेघानां सम्बन्धिन्यः प्रुषो विप्रुषो वृष्टिविन्दवो यथा भूमिं प्रुषन्ति सिञ्चन्ति,*
उ० – १०।७७।१
२. *मेघात्पतत उदकबिन्दून्,*
वे० – १०।७७।१
३. *मेघान्निर्गच्छन्त उदकबिन्दवः,*
सा०– १०।७७।१

अभ्र-वर्ष

अभ्रैर्वृष्यमाणा, णानि,
वे०सा०– ९।८८।६

अभ्रिय

१. *अभ्रे भवस्य मेघस्य,*
उ० – १०।६८।१
२. *अभ्रसमूहस्य,*
वे०सा० – १०।६८।१
३. *अभ्रसङ्घः,*
वे० – १०।९९।८, सा० – १०।९९।८।
(न भ्राजन्तेऽपो बिभ्रतीति वाभ्राणि मेघाः। तेषां संघोऽभ्रियः)
४. *अभ्रेषु भवायान्तरिक्षाय मध्यमाय बृहस्पतये,*
सा० – १०।६८।१२
५. *अभ्रेषु भवाय अन्तरिक्ष्याय,*
वे० – १०।६८।१२
६. *अभ्रे मेघे हन्तव्ये हन्तृत्वेन भवाय,*
उ० – १०।६८।१२
७ *अभ्रभवाम्,*
सा०– १।१६८।८, २।३४।२ (अभ्रेषु भवा विद्युतः)
८. *अभ्रेभ्यो विनिर्गताः,*
वे०– २।३४।२
९. *अभ्रेषु मेघेषु अवस्थितान्युदकानि,*
सा०मु० – १।११६।१
१०. *अभ्रसमूहान्,*
स्क०वे० – १।११६।१,

अप्य, प्या

१. आप्यो गन्तव्यः,

सा०- १।१४५।५

२. अपः कर्म तत्र साधुः,

सा० - १।१४५।५

३. उदकहितः,

वे० - १।१४५।५

४. अपां संबन्धिनम्

सा० - २।३८।७

५. नभस्या

सा० - ३।५६।५

६. आप्तव्या

सा० - ३।५६।५, ६।४९।६

७. अन्तरिक्षभवाः

वे० - ३।५६।५

८. अन्तरिक्ष्यैः

वे०-४।५५।६, ७।३५।११, १०।११।२, ९५।१०

९. अन्तरिक्षे भवाः,

स्क० - ६।४९।६ (आपः इत्यन्तरिक्षनाम। तत्र भवानि अप्यानि, सामर्थ्याद् उदकानि), ५०।११ (आपः निघ० १।२) इत्यन्तरिक्षनाम। तस्मिंश्च भवाः), वे०- ६। ४९। ६ (अन्तरिक्षस्थानि), ९।१०८।६ (अन्तरिक्षस्थिताः), १०।१०।४ (अन्तरिक्षस्थानि), सा०- ६।५०।११ (अप्सु अन्तरिक्षे भवाः रुद्राः), ७।३५।११ (अप्स्वन्तरिक्षे भवाः) १०।९५।१० (अप इत्यन्तरिक्षनाम। तत्संबन्धीनी व्याप्तानि)

१०. अप्सु संस्कृतः सोमः,

सा० - ९।८६।४५

११. अप्सु भवाः,

वे०- ६।५०।११, वे०सा०- १०।८६।१२ (अप्सुभवाः)

१२. अप इत्यन्तरिक्ष नाम। तस्माद् भवे छन्दसीति यत्। अन्तरिक्षस्था अहिप्रभृतिभिरसुरैरपहृत्य निहिताः,

सा० - ९।१०८।६

१३. अद्भिस्संस्कृता। अप्पूर्वं दत्ता इत्यर्थः,

उ० - १०।१०।४

१४. अद्भिः संस्कृता,

उ०सा०-१०।११।२, वे०सा०- १०। ८६।१२

१५. अप्सु संस्कृतः,

वे० - ९।८६।४५

१६. आपनीयैः,

सा० - ४।५५।६

१७. आप एव अप्यानि ... उदकानीत्यर्थः,

स्क० - ६।४९।६

१८. अपा सम्बन्धीनि पूरकाणि स्त्रोतांसि,

वे० - ६।४९।६

अपस्

कर्म,

स्क०वे०सा० - ६।६७।३

अपस्य

१. कर्म विशसनाख्यम्, तत् कर्तुमिच्छति। पशुं विशसतीत्यर्थः,

स्क० - १।१२१।७

२. पशुविशसनार्थं कर्म,

वे० - १।१२१।७

३. अपः विशसनात्मकं स्वकीयं कर्म कर्तुमिच्छेत्

सा०मु० - १।१२१।७

अपस्या

कर्मेच्छा,

वे०सा० - ७।४५।२

अपस्यु

कर्मेच्छवः,

वे०सा० - ९।१४।२

अपस्यू

१ कर्मेच्छवः,

वे० - ९।२।७, सा० - ९।३८।३

२. कर्मेच्छासंबन्धिन्यः,

सा० - ९।२।७

३. कर्म इच्छन्त्यः,

वे० - ९।३८।३, ५६।२ (कर्मेच्छन्तीः) १०।१५३।१

४. कर्मकामाः,

सा० - ९।५६।२

५. यागकर्मकामाः,

स्क० - १।७९।१

६. अपः कर्म आत्मन इच्छन्त्य इन्द्रमातरः,

सा०मु० - १०।१५३।१

७. कर्मणः कर्तारः,

वे० - १।७९।१

अपस्तम, मा

१. अतिशयेन शोभनकर्मा,

सा० - १०।५३।९

२. अतिशयेन कर्मणः

वे० - १०।५३।९

३. वेगाख्यकर्मवती,

सा० - १०।७५।७

४. अतिशयेन स्वाधिकारकर्मवती,

उ० - १०।७५।७

५. अत्यन्तं वेगवती

वे० - ६।६१।१३, १०।७५।७

६. वेगवत्तमा,

सा० ६।६१।१३

७. कर्मवत्तमः,

सा० - १०।११५।२

८. व्याप्ततमः,

वे० - १।१६०।४, १०। ११५।२

९. वृष्ट्यादिकर्मभिरतिशयेन कर्मवती,

स्क० - ६।६१।१३

१०. कर्मवतां मध्ये प्रकृष्टकर्मा,

सा० - १।१६०।४

अपस्य

१. शीघ्रम्,

वे० - १०।८९।२

२. कर्मण्यम्,

सा० - १०।८९।२

अप्त्य

१. अद्भयो जातस्य,

वे० - १।१२४।५

२. व्यापनशीलस्य, विस्तृतस्य,

सा० - १।१२४।५

अप्न-राज्

१. कर्मणा राजानौ,

वे० - १०।१३२।७

२. अप्नसा कर्मणा, प्रवर्षणप्रकाशनादिना राजमानौ दीप्यमानौ सन्तौ,

सा० - १०।१३२।७

अप्नवान्

भृगुसंबन्धी कश्चिदृषिः,

सा० - ४।७।१

अप्नस्

१. कर्म,

उ०सा०- १०।३६।१३, स्क०वे०- १।११३।२०, स्क०वे०सा०मु०- १।११३।९, वे०सा० - १०।१०६।९

२. यज्ञरूपम्,

उ० - १०।३६।१३

३. कर्मवतः,
वे०सा० – १०।८०।२
४. हविर्वहनदेवाह्वानादिकर्मवतः,
उ० – १०।८०।२
५. आप्तव्यम्,
सा०मु० – १।११३।२०

अप्नस्थ

१. कर्मस्थौ। नित्यमेव तत्कर्म कुर्वन्तौ तिष्ठथ,
स्क० – ६।६७।३
२. कर्मस्थितः,
वे० – ६।६७।३
३. कर्मण्यधिकृतः पुरुषः,
सा० – ६।६७।३

अप्नस्वती

१. यागकर्मवती,
उ० – १०।४२।३
२. देवयागवती,
उ० – १०।४२।३
३. संस्कारवती,
उ० – १०।४२।३
४. रूपवती,
उ० – १०।४२।३
५. सगुणा,
उ० – १०।४२।३
६. कर्मवती,
वे०सा० – १०।४२।३

अपकाम

१. अपगतं कामम्,
स्क०वे० – ६।७५।२
२. कामस्यापायम्,
सा० – ६।७५।२

अप √क्रम्

देशान्तरं गन्तुं पादौ विक्षिप। दूरदेशं गच्छ,
सा० – १०।१६४।१

अपगूर्य

वज्रमुद्यम्य,
सा०मु० – ५।३२।६

अप √गुह्

१. संवृतां कृतवन्तः अपनीतवन्तो देवाः। आश्वं रूपं कृतवतीमुत्तरेषु कुरुषु नाशितवन्तः,
उ० – १०।१७।२
२. अपगूढं संवृतं कुरु,
सा०–७।१००।६
३. संवृतवन्तः। देवा उपनीतवन्तः,
सा० – १०।१७।२

अपगूळह

१. निगूढम्। आच्छादितम्,
स्क० – १।२३।१४, ११६।११ (आच्छादितम्) सा०मु० – १।११६।११ (निगूढम्), ४।५।३ (निगूढम्)
२. गुहायां निहितम्,
वे० – १।२३।१४
३. अत्यन्तगूढम्,
सा० – १।२३।१४
४. अपावृतम्,
मु० – १।२३।१४
५. अत्यन्तं गोपितानि,
सा० – १।१२३।६
६. तिरोहितम,
वे० – १।११६।११, १।१२३।६
७. अत्यन्तरहस्यम्,
सा० – ४।५।३

८. अन्तर्हितम्,
सा० - १०।३२।६
९. अपरोक्षं वर्तमानम्,
वे० - १०। ३२।६
१०, आच्छादितम्,
सा० - १०। ८८।२

अपगूहमान, ना
अपवृण्वती प्रकाशयन्ती,
सा० - ७।१०४।१७

अप-गोह
अपगोहनं तिरोभावम्,
सा० - २।१५।७

अप-जर्गुराण
१. अपबाधमानः,
वे० - ५।२९।४
२. आच्छादनाद्विमोचयन्,
सा०मु० - ५।२९।४

अपचिति
पूजाम्,
वे०सा० - ४।२८।४

अप√च्यु
अपगच्छ,
वे०-१०।१७३।२। सा० - १०।१७३।२
(अपच्युतो भूः। अपगमः)

अपच्यव
१. अपगमनम्,
स्क० - १।२८।३
२. शालायाः निर्गमनम्,
सा०मु० - १।२८।३

अपत्य
१. मनुष्येषु,
स्क०वे० - १।६८।४
२. यजमानस्वरूपायां प्रजायाम्,
सा० - १।६८।४
३. कुलस्यापातयितारं पुत्रम्,
सा० - १।१७४।६
४. पुत्रपौत्रान्,
वे० - १।१७४।६
५. कुलस्यापतनसाधनं पुत्रादिकम्,
सा० - १।१७९।६
६. प्रजायिकम्,
वे० - १।१७९।६
७. अपत्यवत्पालनीयाय यजमानाय,
सा० - ७।५।७
८. पुत्रभूतायास्मै लोकाय,
वे० - ७।५।७
९. अंशुम्,
वे०सा० - ९।१०।८

अपत्यसाच्
१. अपत्यैः सह सचते संगच्छते इति अपत्यसाच्
सा० - १।११७।२३
२. अपत्यानि यत् सचते तदपत्यसाचम्। अपत्यसहितमित्यर्थः,
स्क० - १।११७।२३
३. अपत्यानां सम्भक्तृ,
वे०- १।११७।२३। २।३०।११ (पुत्राणां सम्भक्तृ)
४. अपत्यैः पुत्रादिभिः समवेतम्,
मु० - १।११७।२३
५. अपत्यैः अपतनहेतुभूतैः पुत्रादिभिरुपेतम्,
सा०- २।३०।११
६. संतानयुक्तम्,
सा० - ६।७२।५

७. अपत्यानां सेवितारम्। स्वपुत्र-पौत्रादिभाजम्,
स्क० - ६।७२।५
८. पुत्रपौत्रभाजम्,
वे० - ६।७२।५,

अप√स्
१. अपगच्छति,
वे० - १०।९५।८
२. अपसृत्य ... गच्छन्ति,
सा० - १०।९५।८

अपद्
१. पदं यत्र निधातुं न शक्यते अप्रतिष्ठ-त्वात्, तदपदमन्तरिक्षं तत्र,
स्क० - १।२४।८
२. अनालम्बनेऽन्तरिक्षे,
वे० - १।२४।८
३. पादरहिते अन्तरिक्षे,
सा०मु० - १।२४।८

अपदी
१. पादवर्जिता अपुरुषविधा कर्मात्म-लक्षणेत्यर्थः,
उ० - १०।२२।१४
२. पादवर्जिता,
वे० - १०।२२।१४, सा० - १०।२२।१४
(चरणवर्जिता)
३. स्वयं पादरहिते,
सा० - १।१८५।२

अप√दस्
चौराद्युपहारैः उपक्षीणा नष्टा न भवन्ति,
सा० - १।१३५।८

अपदुष्पद्
१. अपगतदुष्टपतनेन रथेन,
वे० - १०।९९।३
२. अपगतदुष्टपतनेन,
सा० - १०।९९।३

अपदर्द्रत्
अवदारयन्,
वे०-६।१७।५, सा०-६।१७।५
(अपदारयन्)

अप√द्रा
अपगच्छन्तु,
वे०सा० - १०।८५।३२

अपधा
१. तत्कर्तृकान्निरोधान्निरुद्धाः,
सा० - २।१२।३
२. बिलान्तरपिहिताः
वे० - २।१२।३

अप√ध्मा
१. अवघ्नन्ति,
वे० - ९।७३।५
२. अपगतं कुर्वन्ति। अपघ्नन्तीतीत्यर्थः,
सा० - ९।७३।५
३. अपागमयत्,
सा० - ८।८९।२

अप√नुद्
१. अपागमयः,
सा० - १०।१८०।३
२. अपगमय,
सा० - १०।१३१।१
३. अपगतं प्रेरय,
सा० - ६।२१।७

अपपराजित
पराजिताः अपनिलीना भवन्तु,
वे०सा० - १०।८४।७

अप-परा√इ
अपपरागच्छति,
वे०सा० - १०।६१।८

अपपित, त्व

अपगमनम्,

सा० - ३।५३।२४

अप√पृ

अपकृत्य पालयसि,

सा० - १।१२९।५

अप√पृथ्

बाधस्व,

स्क०सा० - ६।४७।३०

अप-प्रोथत्

१. अपप्रोथनं वाचा अपप्रेरणम्,

वे० - ९।९८।११

२. अपप्रोथनं चापप्रेरणम्। अपप्रेरयन्तः शब्देन निराकुर्वन्तः,

सा० - ९।९८।११

अप-प्र, √इ

१. अपप्र गच्छति,

वे० - १०।११७।४

२. अपगच्छेत्। ... परित्यज्य गच्छेत्,

सा० - १०।११७।४

अप√बाध्

१. अपगमय,

उ०सा० - १०।४२।७

२. कर्माङ्गभावं प्रतिपद्यमाना अपनयतु,

उ० - १०।३५।३

३. अपनयतु,

सा० - १०।३५।३

४. अपहन्तु,

सा० - ७।५०।२

५. नाशयत्,

सा० - ७।५६।२०

६. हिंसन्ति,

सा०मु० - १।८५।३

७. सम्यक् निराकरोति,

सा०मु० - १।३५।९

अप-बाधमान

१. अपनयन्,

स्क० - १।३५।३

२. सर्वतो नाशयन्,

सा० - १०।१०३।४

३. विनाशयन्,

सा०मु० - १।३५।३

४. विनाशं प्रारयन्तः

सा० मु० - १।९०।३

अप√भज्

१. भजाम,

वे० - १०।१०८।९

२. अपगमय्य विभजाम। विभागं करवाम,

सा० - १०।१०८।९

अप√भिद्

विदारय,

सा० - ८।४५।४०

अप√भू

१. अपगच्छत। अपरक्ताः ... भवत,

सा० - ४।३४।११

२. अपगता भवत्,

सा० -१।१३१।७, ४।३५।१, ७।५९ १०, १०।१२८।९ (अपगता भवन्तु। स्वस्थानादपगताः प्रच्युता भवन्तु)

३. अपगतो वियुक्तो भवतु,

सा० - ९।८५।१

४. अपभविता अस्मद्यज्ञादपगन्ता,

उ०- १०।११।९। (अपभविता स्यात् अस्मद्यज्ञादपगन्ता स्यात्) सा० -१०।११।९

५. नश्यन्तु,

वे०सा० - १०।६७।११

६. अपहताः सन्तु,
उ० – १०।६७।११

अप√भृ

१. अपहरताम्,
वे०सा० – १०।५९।८,
२. अपनयताम्,
सा० – १०।५९।८
३. अपाहरन्निरसनाय,
सा० – १।१६१।१०

अप-भर्तवै

१. अपहर्तुमपनेतुं शक्यते,
सा० – १०।१४।२
२. अपहर्तुमपनेतुं स्वविज्ञानेनाभि-भवितुं शक्यते,
उ० – १०।१४।२
३. परिहर्तुं शक्यः,
वे० – १०।१४।२

अप-भर्तृ

१. अपहर्ता,
वे० – २।३३।७
२. अपहर्ता विनाशयिता भूत्वा कृता-पराधम्,
सा० – २।३३।७

अपम

१. निकृष्टस्य जात्यादिहीनस्य
उ० – १०।३९।३
२. अपमीयमानस्य,
वे० – १०।३९।३
३. जात्यातिनिकृष्टस्य
सा० – १०।३९।३

अप√म्यक्ष्

अपगमय,
वे०सा० – २।२८।६

अप- म्लुक्त

१. अपक्रान्तम्,
वे० – १०।५२।४
२. अपक्रम्यागतम्,
सा० – १०।५२।४

अप√यु

१. पृथक्करोति,
वे०सा०–८।११।३, १८।८, १०।६३।१२
२. अपनयत्,
उ० – १०।६३।१२
३. संप्रहर,
सा० – ९।१०४।६
४. अप युयोधि,
वे० – ९।१०४।६
५. अपगमयति,
वे० – १।९२।११
६. अपगमय्य पृथक्करोति,
सा० – १।९२।११, मु० – १।९२।११
(अपगम्य पृथक् करोति)
७. अपमिश्रयति। अपनयतीत्यर्थः,
स्क० – १।९३।११
८. दूरे वियोजयत। पृथक्कुरुत,
सा०मु० – ५।८७।८

अपर, रा

१. अन्यः,
उ०सा०– १०।२७।७, उ०वे०सा०– १०।१८।४, वे०– १।१२०।२, ६।४७।१४,
२. अश्विभ्यामन्यः सर्वः,
सा०मु० – १।१२०।२
३. अन्या अद्यतन्युषाः,
सा० – १।१२४।९
४. अन्या आगामिनीः उषसः,
सा०मु० – ५।४८।२

५. अन्ये। अयज्वान इत्यर्थः,
सा० - १०।४४।७
६. पश्चाद्भविनी,
सा० - १।१८५।१, ६।४७।१५
७. आगामिन्यपि वाले,
सा० - २।२८।८,९
८. आगामिन्याः,
उ०सा० - १०।२९।२
९. अपरस्मिन्नकाले,
स्क०-१।३६।६, सा०-१।१८९।४, ६।३३।५
१०. अपरकालभाविना कर्मणे,
सा० - २।२९।३
११. अपरस्मिन्नपि दिने,
सा० - १।१८४।१
१२. श्वः,
वे०- १।३६।६, १८४।१, २।२९।२, ६।३३।५
१३. अद्य च श्वश्च,
वे० - १।१८९।४
१४. सन्निकृष्टकालवचनः,
स्क० - ६।३३।५
१५. परस्याः,
वे० - १०।२९।२
१६. ऊर्ध्वम्,
वे० - २।२८।८
१७. वर्तमानकालीनाः,
उ० - १०।४४।७
१८. पूर्वाः,
वे० - ५।४८।२
१९. उत्तरोषाः,
वे० - १।१२४।९
२०. न्यूनशक्तिः,
स्क० - १।१२०।२
२१. अमुख्यैरप्रशस्तैः,
सा० - ६।४७।१७
२२. अपरकालैः,
स्क० - ६।४७।१७
२३. पश्चिमदेशम्,
सा०मु० - १।३१।४
२४. निकृष्टः,
सा०मु० - १।७४।८
२५. अर्वाग्देशवर्ती। नातिदूरचरः,
स्क० - १।७४।८
२६. अतादृशाकारः,
वे० - १।७४।८
२७. अनन्तरभावि,
सा० - १।१४५।२
२८. परकीयम्,
वे० - १।१४५।२
२९. नव्या,
सा० - ३।५५।५
३०. अपरभागे,
सा० - ६।२७।५
३१. परार्धे,
वे० - ६।२७।५
३२. अर्वाक्कालीनः,
उ०सा० - १०।१८।५
३३. पृष्ठभागम्,
सा० - १०।१३९।२
३४. अन्येद्युः,
वे० - ८।२७।१४
३५. अन्यद्भूतजातम्,
सा० - १०।८६।११

अपरी

१. अन्यासाम् प्रजानामर्थाय,
स्क० - १।३२।१३
२. विद्युदादिव्यतिरिक्ताभ्यः,
वे० - १।३२।१३

३. अपराध्यः, अन्यासाम्,
सा०मु० - १।३२।१३
४. भाविनीषु रात्रिषु,
सा०मु० - १।११३।११
५. अपराः पश्चिमाः। आगामिकालाः,
स्क० - १।११३।११
६. उत्तरासु रात्रिषु,
वे० - १।११३।११
७. अन्यासु शात्रवीषु सेनासु,
सा० - १०।११७।३
८. अरातिषु,
वे० - १०।११७।३
९. अन्यास्वपि स्त्रीषु,
सा० - १०।१८३।३
१०. स्त्रीषु असगोत्रासु,
वे० - १०।१८३।३

अपराजित, ता

१. अहिंसितम्
वे० - १०।४८।११
२. क्वापि पराजयरहितम्
सा०मु० - १।११।२
३. अतिरस्कृतौ
सा० - ३।१२।४

अपरिविष्ट

१. पिशाचिकायाः विवृतम् अपरिमितम्,
वे० - २।१३।८
२. मलादिभिरव्याप्तम्,
सा० - २।१३।८

अपह्वृत

१. अहिंसितः,
उ०-१०।६३।५ (अहिंसिताः केनचिदपि), वे०-१०।६३।५, सा०- १०।६३।५ (कैश्चिदप्यहिंसिता ये देवाः)

२. अपरिहिंसितः,
उ०-१०।६।२ (परिहिंसितः। अपरिश्रान्तः इत्यर्थः) सा० - १०।६।२
३. अकुटिलानि,
वे०सा०- ८।७८।८, वे०- १०।६।२ (अनुष्ठातुमकुटिलः)
४. अकुटिलगतयः,
सा०मु० - १।१०२।११

अपरीत

१. अपगताः वृष्टिप्रतिबन्धकैरसुरादिभिरप्राप्ताः,
स्क० - १।१००।३
२. अपरिगतः,
स्क०-१।८९।१। (अपरिगताः अन्यैरप्राप्तपूर्वाः), वे० - ५।२९।१४ (अपरिगताः। अन्यैरप्राप्तपूर्वाः), ८।२४।९, सा०- ८। २४।९ (शत्रुभिरपरिगतम्। अव्याप्तम्), सा० मु०- १।८९।१ (शत्रुभिरपरिगताः अप्रतिरुद्धाः)
३. अपरिवृतः,
वे० - १।८९।१, १००।३
४. परैनभिगताः, दुष्प्रापा,
सा०मु० - १।१००।३

अपरीवृत

१. अपरिवृतः,
वे० - २।१०।३
२. असंस्पृष्टः,
सा० - २।१०।३,

अप√रुध्

१. अपरोधितवान् अस्मि, वित्तनाशेन दुःखितां कृतवान्,
उ० - १०।३४।२
२. निरुणद्धि,
[illegible]

३. परित्यक्तवान्,
वे०सा०- १०।३४।२

अपर्वन्

१. अकाण्डे निद्रामध्ये,
वे० - ४।१९।३
२. पौर्णमास्याम्,
सा० - ४।१९।३

अपलाश

१. पलाशवर्जितः,
वे० - १०।२७।१४
२. पर्णरहितः,
उ० - १०।२७।१४
३. पराशदनवर्जितः विनाशरहितः,
उ० - १०।२७।१४
४. पर्णरहितः पराशदनवर्जितः। विनाशरहितः,
सा० - १०।२७।१४

अपवक्तृ

१. अपवदिता,
स्क० - १।२४।८
२. पराभवत्त्वयमिति वदतु
वे० - १।२४।८
३. अपवदिता निराकर्ता
सा०- १।२४।८, मु० - १।२४।८ (निराकर्ता)

अप√वप्

१. पराङ्मुखान् कृतवान्,
वे० - २।१४।६
२. युगपदेव भूम्यामपातयत्,
सा० - २।१४।६
३. नाशितवान्
सा० - १।१३३।४
४. अधो नीतवान्,
वे० - १।१३३।४
५. अपगतान् कुरु। अपनुदेत्यर्थः,
सा० - ८।९६।९
६. अपनुद,
वे० - ८।८६।९

अप√वा

अपगच्छति,
वे०सा० - १।१६२।१०

अप√वी

१. अपगच्छति,
उ०वे०सा०- १०।४३।२, वे०सा०मु०- ५।६१।१८
२. विरमते,
सा० - ५।६१।१८

अप√वृ

१. उद्घाटयति,
स्क० - १।१०।७, ३२।११, ५१।३, ४।४५।२४, (उद्घाटितवान्), ५१।४, स्क०सा०मु०- १।७।६, सा०- १। १३०।३, २।११।१८, ४।२८।१ (उद्घाटितवान्), ३१।१३, सा०मु०- १।१०।७, १२।१४
२. विवृतद्वारं कृतवन्तः,
वे० - ५।२९।१२। ७।२७।२ (विवृतद्वारं कुरु)
३. विवृणु,
वे० - ८।२३।२९
४. आवरणरहितमकरोत्,
सा० - ३।४४।५
५. गुहाद्वारोद्धाटनेन प्राकाशयः
सा० - १।५१।३
६. अपगतावरणा अकरोत्। उद्घाटितवान्,
सा० - १०।१२०।८

७. प्रकाशितवन्तः,
सा० – ४।२।१६
८. अपवरणं कृतवानसि। वृष्टेरावरकं मेघं वज्रेणोद्धाट्य वर्षणं कृतवानसि,
सा० – १।५१।३, १३२।४। (अपवृतवानसि मेघमुत्पाट्य वृष्टिमुत्पादितवानसि),
मु० – १।५१।३। (अपवरणं कृतवानसि)
९. प्रकाशेन तिरस्कृतवती,
सा०मु० – १।११३।१४
१०. मेघादपकृष्य युवां सिञ्चथः,
सा० – ८।५।२१
११. अपवर्षथः
वे० – ८।५।२१
१२. प्रयच्छेत्,
सा० – ८।२३।२९
१३. वृत्रकृतमपां निरोधं परिहृतवान्,
सा०मु० – १।३२।११
१४. आवृणोति। अपनयति,
स्क० – १।११३।१४
१५. प्रेरयेत्यर्थः,
सा० – २।२।७
१६. हिंसितवान्,
सा० – २।१४।३
१७. अपावृतं कुरु,
वे०– २।२।७, मु०– १।३२।११ (अपावृतमकरोत्)
१८. आच्छादितवान्,
सा० – ३।३१।२१
१९. अपहृताः,
वे० – ४।२।१६
२०. दुग्धवन्तः,
वे० – ४।५।८
२१. अपगच्छन्तु। यथाकामं चरन्तु
वे०–४।५५।६, ७।७५।१ (अपगमयति)
२२. निगूढास्ता अपावृणोत्,
सा०– ६।४५।२४

अप–वर्त्

१. अपावृणोषि,
वे० – ४।२०।८
२. अपवारकः,
सा० – ४।२०।८

अपा–वृत

१. विवृतद्वारम्,
वे० – १।५७।१
२. अपगतावरणम् क्रियते,
सा०मु० – १।५७।१

अपा–वृति

१. अपवरणम्,
वे० – ८।६६।३
२. अपवरणीयम्,
सा० – ८।६६।३

अप√वृज्

१. संस्थापयति
वे० – १०।११७।७
२. आवर्जयति,
सा० – १०।११७।७

अप√वृत्

निवर्तय,
सा० – २।२३।७

अप√वे

अपवानं नाम अपकृष्टस्य निकृष्टस्य अचेतनस्य भोग्यप्रपञ्चस्य सर्जनम्,
सा० – १०।१३०।१

अप√व्ये

१. अप नयति,
वे० – ७।८१।१

२. अपवृणोति,
सा० - ७।८१।१

अप-व्रत

१. अपगतयागकर्मणः। अभक्तानित्यर्थः,
स्क० - १।५१।९
२. अयजमानान्,
वे० - १।५१।९
३. अपगतकर्मणा
वे०सा०मु० - ५।४०।६, ४२।९
४. अपगतकर्मणः अयजमानान्,
सा०मु० - १।५१।९

अपश्चाद्-दध्वन्

१. अपश्चाद्गामिने। सङ्ग्रामेष्वग्रगामिन इत्यर्थः,
स्क० - ६।४२।१
२. तदानीमेव दध्वने,
वे० - ६।४२।१
३. अपश्चाद्गमनाय सर्वेषामग्रगामिने,
सा० - ६।४२।१

अप√श्नथ्

अप बाधध्वम्,
सा० - ९।१०१।१

अपश्य

१. अदर्शनाः,
वे० - १।१४८।५
२. अद्रष्टारः,
सा० - १।१४८।५
३. विद्वांसोऽप्यभावयितारः, अनुपासका इत्यर्थः,
सा० - १।१४८।५

अपश्यत्

कर्तव्याकर्तव्यविभागमजानन्,
सा० - १०।१३५।३

अपश्रित

१. आश्रितम्,
स्क०-१।८४।१४, सा०मु० - ५।६१।१९
२. अपश्रितः,
स्क०वे० - ५।६१।१९
३. अवगूढम्,
वे० - १।८४।१४
४. सर्वैराश्रितः
सा० - ८।२४।३०
५. विवृतद्वारः,
वे०सा० - ८।२४।३०
६. अपगत्य स्थितम्,
सा०मु० - १।८४।१४

अप √सिध्

१. अपगमय,
उ० - १०।३६।४, सा०-६।४७।२९, ८।१८।१०, १०।२५।७
२. अपगमय। नाशय,
स्क० ६।४७।२९
३. अपगमय, अस्मत्तः अपजहि,
उ० - १०।२५।७
४. अपजहि,
सा० - १०।२५।७
५. हिन्धीत्यर्थः,
सा० - ८।७९।९
६. परिहर,
सा० - ८।६०।२०
७. निवर्तयिति,
सा०- ६।४७।२१, १०।३६।४ (विनिवारयतु) १०।९८।१२ (अपवारय)
८. अनुषक्तव्यम्,
स्क० - ६।४७।२१
९. अपाबाधथाः,
सा०मु० - ५।३१।७

अपसेधत्

१. सेधतिरत्र सामर्थ्यात् वधार्थः अपघ्नन्,
स्क० - १।३५।१०।
२. गत्यर्थो वा अन्तर्णीतण्यर्थः अपगमयन्,
स्क० - १।३५।१०, सा० - ९।११०।१२। (अपगमयन् हिंसन्)
३. निषेधन्,
वे० - १।३५।१०
४. परिहरन्,
सा० - ९।८२।२
५. निराकुर्वन्,
सा०मु० - १।३५।१०

अप√सू

१. अपप्रेरय अपगमय अपनाशय,
उ० - १०।३७।४
२. अपगमय
वे०- १०।१००।८ (अपगमयतु), वे०सा०- १०।३७।४
३. अपप्रेरयतु। अपगमयतु,
सा० - १०।१००।८

अप√स्था

१. मा गच्छत,
वे० - ८।२०।१
२. अपगच्छन्तु,
वे०-१०।१०६।२, वे०सा० - ८।४८।११
३. अस्मत्तोऽपेत्यान्यत्र मा तिष्ठता अस्मास्वेव तिष्ठतेत्यर्थः,
सा० - ८।२०।१
४. अपक्रम्य तिष्ठतम्,
सा० - १०।१०६।२
५. अपक्रम्य तत्र तत्रावतिष्ठन्ते,
सा० - १०।१२४।८

अप-तस्थिवस्

१. विमुखान् असङ्गतान्,
वे० - ९।१९।६।
२. अपक्रम्य स्थितान्। अस्मदभिमतान्,
सा० - ९।१९।६

अप√स्पृ

न प्रीणयति,
सा० - ८।२।५

अप√स्फर्

१. मा च अतो विचालीः,
स्क० - ६।६१।१४
२. अप्रवृद्धान् मा कार्षीः। स्फारो वृद्धिः। उपसर्गवशात् तद्विपरीते वर्तते,
सा० - ६।६१।१४

अपस्फुर्

१. अप्रवृद्धोदकाः,
वे०सा० - ८।६९।१०
२. अत्यन्तं प्रवृद्धः,
सा० - ८।६९।१०

अप√हन्

१. अपगमय,
उ० - १०।७६।४, स्क० - १।४२।२, सा० - १०।४०।१३
२. अपगमयतम् मम सम्भोक्तारं कुरुतमित्यर्थः,
उ० - १०।४०।३
३. विनाशयतः,
सा० - ६।६०।६
४. नाशयतम्
सा० - १।१३२।६
५. मारय
सा०- ९।४।३, ८।७, ६१।२८, ६३।२८
६. विनाशयत
सा० - १०।७६।४

७. *वधं प्रापय*
सा०मु० – १।९४।९
८. *अवश्यमपाकुरु,*
सा०मु० – १।४२।२

अपघ्नत्
१. *हिंसन्तः,*
सा० – ८।४३।२६, ९।१३।९
२. *अपगमयन्,*
सा० – ९।२७।१
३. *निघ्नन्तः,*
सा० – ९।४१।१
४. *विनाशयन्तः,*
सा० – ९।६३।५
५. *मारयन्तः,*
सा० – ९।६३।२६

अप-जङ्घ्नत्
अपघ्नन्,
वे०सा०– ९।४९।५

अप√हा
१. *अप एव गमयति,*
वे० – १०।१२७।३
२. *परित्यजन्ति,*
वे०सा० – ९।७३।६
३. *अप गच्छति,*
वे०सा० – ७।७१।१
४. *अपैव गच्छति,*
सा० – १०।१२७।३

अप√हनु
१. *अनुपालयामि,*
वे० – १।१३८।४
२. *अपनयामि, त्यजामि, सर्वतः प्रख्यापयामि,*
सा० – १।१३८।४

अपाक
१. *अपक्तव्यप्रज्ञाः। अत्यन्तपरिपक्व-प्रज्ञा,*
स्क० – १।११०।२
२. *अपक्तव्यप्रज्ञाः,*
वे० – १।११०।२, ६।१११४, १२।२
३. *पाकः पक्तव्यप्रज्ञो मूर्खः तद्वि-लक्षणोऽपाकः,*
सा० – ६।१११४
४. *प्राज्ञे,*
सा० – ६।१२।२
५. *परिपक्वज्ञानाः,*
सा०मु० – १।११०।२

अपाकचक्षस्
१. *अनल्पतेजसः,*
वे० – ८।७५।७
२. *अनल्प चक्षसोऽग्निः*
सा० – ८।७५।७

अपा√कृ
१. *अपनयतम्,*
स्क० – ६।५९।८
२. *अपाकुरुतम्,*
सा० – ६।५९।८

अपाकृति
१. *अपाकरणप्रकारम्,*
वे० – ८।४७।२
२. *अपाकरणं परिहारप्रकारम्,*
सा० – ८।४७।२

अप√अच्
१. *अपगमय,*
वे०सा० – ९।९७।५४
२. *अपमुखमञ्चतः पृष्ठभागे वर्तमानान् सर्वान् शत्रून् अप नुदस्व,*
सा० – १।१३१।१

अप√अज्

१. अपगमयति,
उ० – १०।६८।५ (अपगमयति अपक्षिपति वा), स्क०वे०सा०मु० – १।४२।३
२. अपागमयत्,
सा० – १०।६८।५

अपाका

१. अनल्पम्,
वे० – १।१२९।१
२. अपाकम्। अनल्पप्रज्ञयाधिकारवन्तम्। पाकः पक्तव्यो भवति,
सा० – १।१२९।१ (निरु० ३।१२)

अपाकात्

१. अनल्पात्,
वे० – ८।२।३५
२. अविपक्वप्रज्ञाच्छात्रोः,
सा० – ८।२।३५

अपाच्, ञ्च

१. अधोगतयः,
उ० – १०।४४।७
२. प्रत्यक्,
वे० – ३।५३।११
३. जीवो भूत्वा पुरुषोऽपाङ्,
वे० – १।१६४।३८
४. पश्चिमः,
सा० – ३।५३।११
५. अशुक्लं कर्म,
सा० – १।१६४।३८
६. प्रतीच्यां दिशि,
सा० – ८।४।१, १०।५
७. अपाचीना अधोगन्तारः,
सा० – १०।४४।७

अपाची

१. अधोगामिनी,
उ० – १०।६७।५
२. पराङ्मुखीम्,
वे० – ५।४८।२, वे०सा० – १०।६७।५
३. अपाञ्चनाः प्रतिनिवृत्तमुखीः,
सा०मु० – ५।४८।२

अपाक्-तात्

प्रतीच्याः,
वे०सा० – ७।१०४।१९

अपाचीन

१. अवाचीनम्,
वे० – ७।७८।३
२. नीचीनम्,
सा० – ७।७८।३

अपाच्य

अपाची प्रतीची,
वे०सा० – ८।२८।३

अपाद्

१. पादवर्जितः,
स्क०वे०–१।३२।७, ६।५९।६, सा० – ४।१।११
२. पादरहितः,
वे०–४।१।११, सा०–५।३२।८, ६।५९।६, सा०मु० – १।३२।७, (वज्रेण च्छिन्नत्वात् पादरहितः), १५२।३, (पादरहिता उषाः)
३. अपाद्युक्तोषा,
वे० १।१५२।३
४. पादहीनं कृत्वा,
सा० – ३।३०।८

अपानती

अपाननं नाडिभिरवाङ्मुखं वायोर्नयनम्। तत्कुर्वती,

सा० - १०।१८९।२

अपार्

१. विवृण्वन्ति,

वे० - ९।१०।६

२. विवृतद्वारं करोति,

वे० - ५।४५।६

३. अप गमय, विनाशय, ऋणुगतौ तानादिकः,

सा० - ९।१०२।८

४. अपावृणोत्,

सामु० - ५।४५।६

अपार, रा

१. अनन्तेन शरीरेण

उ० - १०।४४।१

२. अपर्यन्तः,

वे० - ३।३०।९, ५।८७।६, ८।६।२६, ९।६८।३

३. पाररहितः। केनाप्यवसानं प्रापयितुमशक्य इत्यर्थः,

सा० - ८।६।२६

४. पर्यन्तरहिते,

सा० - ९।६८।३

५. पारवर्जितः,

वे० - ३।१।१४, १०।४४।१

६. अनवधिकाः

सा०मु० - ५।८७।६

७. अगाधे,

सा० - ३।१।१४,

८. दूरपारे,

वे०सा० - ३।३०।५, ४।४२।६

९. अपरिमाणम्। विनाशरहितम्,

सा० - ४।१७।८

१०. अदृष्टपर्यन्तम्,

वे० - ४।१७।८

११. अपर्यन्तपारौ,

वे० - ४।४२।६

अपाला

एतन्नामिकामत्रिसुतां ब्रह्मवादिनीम्,

सा० - ९।९१।७

अपाष्ठवत्

अपस्थितमृजीषम् तद्वत्,

वे०सा० - १०।८५।३४

अपास्

१. अप नय,

स्क० - ६।५१।१३

२. अपक्षिप,

सा० - ६।५१।१३

३. दूरं गतः,

सा० - १०।८३।५

४. अप ...भवामि,

वे० - १०।८३।५

५. अपनुद,

सा० - ३।२४।१

६. पराङ्मुखः त्वद्यागकर्मणः सकाशात् अपगतः भवामि,

उ० - १०।८३।५

७. निरस्य पृथक्कुरु,

वे० - ३।२४।१

अपि

१. एव,

वे०-७।३१।५, सा०-२।५।८, ६।५९।९

२. अपिशब्दः समुच्चये,

वे० - २।३४।१०

३. तथा,
वे० – ३।५९।४
४. च,
वे० – ७।१६।८
५. अपिशब्द प्रसिद्धौ,
सा० – २।३४।१०
६. अपि इति पूरणः,
सा० – ७।१६।८
७. अपिशब्दोऽन्वर्थे,
सा० – १०।७१।५
८. अपि इत्यनर्थकः,
सा० – १०।१०४।१०

अपिकक्ष

१. अंसाः,
वे० – ४।४०।४, १०।१३४।७
२. अपिकक्षो नाम बाह्वोर्मध्यभागः। यज्ञस्य अपिकक्षभूतैर्हविर्भिः,
सा० – १०।१३४।७
३. कक्षप्रदेशे,
सा० – ४।४०।४

अपिकक्ष्य

१. गुह्यम्,
स्क० – १।११७।२२
२. छिन्नस्य यज्ञशिरसः कक्षप्रदेशेन पुनः संधानभूतं प्रवर्ग्यविद्याख्यं रहस्यम्,
सा०मु० – १।११७।२२
३. कक्षस्य शिरसः अप्ययोऽपिकक्षः,
वे० – १।११७।२२

अपिकर्ण

१. कर्णावपिगते समीपदेशे स्थितः सन्,
सा०- ६।४८।१६
२. कर्णशब्दोऽपठितोऽपि कर्मनाम। करणशब्दस्य कर्मनाम्नोऽयं अकार-लोपः अपिगतं प्राप्तम्, अर्धानुष्ठितं यत्कर्म तद अपिकर्ण, तस्मिन्नपिकर्णे प्राप्ते अर्धानुष्ठिते कर्मणि यागलक्षणे
स्क० – ६।४८।१६
३. कर्ण शब्दः प्रसिद्धशरीरावयव-वचनः। एवम् अपिगते प्राप्ते कृत्स्ने सन्निकृष्टभूताय तुभ्यं उपांशु कर्णे कथयामि,
स्क० – ६।४८।१६

अपि√गम्

१. सङ्गच्छेरन्,
वे० – १।१७९।१
२. सङ्गताः,
वे० – ५।३३।१०
३. अपि संभावनायां गच्छेयुः, संभोगं कुर्युः, अतो मां किमित्यवमन्यसे। इदानीमपि वा संभावयेत्,
सा० – १।।१७९।१
४. संभावयेत्यर्थः,
सा० – १।१७९।१
५. अपिगताः प्राप्ताः,
सा०–६।५१।१६ (प्राप्ताः स्म) १०। १५४।१ (प्राप्नुहि), सा०मु०–५।३३।१०

अपि√गा

अपि गच्छेयुः,
वे०– ७।२१।५, सा०– ७।२१।५ (अपि गमन्)

अपि√घस्

१. अपि हन्तु,
वे० – १।१५८।५
२. हतवान्। विदारितवान्,
सा० – १।१५८।५

अपीजू

प्रेरयित्र्यौ भवतः,

वे०सा० - २।३१।५

अपित्

१. परितः अपिशब्दः परिपर्यायः,

वे० -७।८२।३

२. जलरहिता नदीः,

सा० - ७।८२।३

अपि√धा

१. निदधुः,

वे० - १०।५६।४, सा० - १०।९८।११

(निधेहि)

२. धृतवन्तः,

सा० - १०।५६।४

३. स्थापय,

सा० - १०।९८।११

४. आच्छादय,

सा० - १०।८७।२

५. अपधानं हननम्। अवधीत्,

सा० - ८।९६।१३

६. अपकृष्य स्थापयतु,

सा० - १०।१६४।३

७ अपकरोतु,

वे० - १०।१६४।३

अपि-धान

१. निर्गमनबिलघट्टनानि,

स्क० - १।५१।४

२. अपिधानानि आच्छादकान् मेघान्,

सा०मु० - १।५१।४

अपिधान-वत्

वलेनासुरेणाच्छादितवन्तम्,

सा० - ५।२९।१२

अपि-धि

१. अपिधीयमानान् पुरोडाशादीन्,

वे० - १।१२७।७

२. पर्याप्तिपर्यन्तं दत्तान्,

सा० - १।१२७।७

अपि-हित

१. घटितम्,

स्क० - १।३२।११

२. उदकमध्ये वर्तते,

वे० - ५।६२।१

३. छादितम्,

सा० - १०।१२९।३

४. तिरोहितानि,

सा० - ४।२८।१

५. आच्छादितानि,

सा० - ४।२८।५, सा०मु०- ५।६२।१

६. वृत्रेण निरुद्धम्,

सा० मु० - १।३२।११

अपि√नह्

अपिनद्धान् पाशैः बद्धान् करोमि,

सा० - १०।१६६।३

अपि-नद्ध

१. आच्छादितम्,

उ० - १०।६८।८

२. पिहितम्,

सा० - १०।६८।८

अपि-प्राणी

१. सर्वदा चेष्टयित्री,

सा० - १।१८६।११

२. अपि पूरणी

वे० - १।१८६।११

अपि√भू

१. किञ्चित् स्याम्,
वे० - २।११।१२
२. अपि ...वर्तते
सा० - २।११।१२
३. ईषदपि ...भूम,
सा० - ७।५७।४
४. संभाव्यत,
सा० - १०।१४२।१

अपि√मद्

मादयथ,
वे०- १।१८६।१, सा०- १।१८६।१
(अपिः संभावनायाम् ... मादयथ)

अपि√मृष्

१. अपिमार्जनं निराकरणम्,
वे० - ३।३३।८
२. विस्मार्षीः,
सा० - ३।३३।८
३. अपिशब्द ईषदर्थे इषदपि न हिनस्ति,
सा० - ६।५४।४
४. मृष्यतिः क्षमार्थः, मृष तितिक्षाया-मिति। न क्षमते उपेक्षत,
स्क०-६।६५।४
५. मृषिर्मार्जनकर्मा मार्जयामि,
सा० - ७।२२।५
६. सोढुम् न शक्नोमि क्षिप्रमुच्चार-यामि,
वे० - ७।२२।५

अपि-रिप्त

१. अपिलिप्ताय,
वे० - १।११८।७, सा० - १।११८।७
(अपिलिप्ताय पटलेन पिहितदृष्टये एवं विधाय कण्वाय)
२. अवलिप्ताय घट्टिताक्षाय। अन्धाये-त्यर्थः,
स्क० - १।११८।७
३. असुरैर्बाधिताय,
सा० - ८।५।२३
४. प्रक्षिप्ताय,
वे० - ८।५।२३
५. असुरैर्ब्राह्मण्यपरीक्षार्थम् इहासीनः सन् व्युष्टामुषसं जानीहीति अन्धकार-वति गृहे प्रवेशिताय,
सा०मु० - १।११८।७

अपि√वत्

१. अपि गमयन्ति,
उ०वे० - १०।१३।५
२. गमय प्रापयेत्यर्थ,
उ०-१०।२०।१, २५।१, सा०- १०। २५।१ (गमय)
३. आगमय,
वे०- १०।२०।१, २५।१, सा०- १०। २०। १ (आगमय। त्वत्संबन्धिस्तोत्रकरणे प्रेरय)
४. अपि सेवामहे,
वे० - १।१२८।२
५. अपि संभावनार्थः। आ परितोषं सेवामहे,
सा० - १।१२८।२
६. अपि ...संभजेमहि,
सा० - ७।३।१०
७. अपि ... संगमयन्ति,
सा० - १०।१३।५

अपि-वतत्

१. अपि गच्छन्तः,
सा० - ७।६०।६

२. *अपि च नयन्ति,*
वे० - ७।६०।६

अपि-वातयत्

१. *प्रतिगमयन्त,*
वे० - १।१६५।१३
२. *सम्पूर्णं प्रापयन्तः,*
सा० - १।१६५।१३

अपि√वह्

१. *वहति,*
उ०वे०सा० - १०।५२।३
२. *अपि नयामि,*
वे० - ७।१०४।१४
३. *उपगच्छामि,*
सा० - ७।१०४।१४

अपी-वृत

१. *वाय्वादिसन्निरोधार्थं वस्त्रेणाच्छादितः शिशुरूपः इन्द्रः*
उ० - १०।३२।८
२. *घटितम्। स्वगोष्ठे द्वारं निरुध्य स्थापितमित्यर्थः,*
स्क० - १।१२१।४
३. *परिवृतम्,*
वे०- १।१२१।४, वे०सा०-१०।३२।८
४. *तिरोहितम,*
सा० - २।११।५
५. *निगूढम्,*
सा०मु० - १।१२१।४, वे०-२।११।५

अपि√वृच्

१. *पुनः पुनः छिन्तम्,*
स्क० - ६।६२।१०। वे० - ६।६२।१० (छिन्तम्)
२. *प्रवृक्तम्,*
सा० - ६।६२।१०

अपि√वृज्

१. *आवर्जितवन्तः त्वयेदं कर्तव्यमिति समर्पितवन्तः,*
उ० - १०।४८।३
२. *वर्जयन्ति ... परिवर्जयन्ति,*
स्क० - ६।३६।२
३. *तेन सहैकमनसो भवन्ति,*
वे० - ६।३६।२
४. *निष्पादयन्ति,*
सा० - ६।३६।२
५. *समपादयन्,*
सा० १०।४८।३
६. *समापयन्ति,*
सा० - १०।१२०।३

अपि√वृत्

१. *अपि इत्येष प्रेत्येतस्य स्थाने। प्रावर्तयः। कूपे प्रक्षिपेत्यर्थः,*
स्क० - १।१२१।१३
२. *अपि नीतवान् असि,*
वे० - १।१२१।१३
३. *प्रापयः,*
सा०मु० - १।१२१।१३

अपि√व्रश्च्,

वृश्च छेदय,
सा० - ८।४०।६, १०।८७।१६

अपि - शर्वर

१. *शर्वरीमुखे,*
वे० - ३।९।७
२. *शर्वर्या अह्ना सङ्गये अपिशर्वरे रात्रिमुखे,*
वे० - ८।१।२९
३. *शर्वरीमुखेऽग्निविहरणकाल एव,*
सा० - ३।९।७

४. शर्वरीं रात्रिमपिगतः कालः अपि-शर्वरः शार्वरे कालेऽपि,
सा० - ८।१।२९

अपि-ष्ठित

१. एकभूतं स्थितम्,
वे० - १।१४५।४
२. व्याप्य वर्तमानम्,
सा० - १।१४५।४

अपि√हनु

अपिह्नवोऽपलापः,
सा० - ८।३१।७

अपि√इ

१. अपि गच्छन्ति,
वे०-१।१४०।७, १६२।२, सा० - २।३।९। (अपि अस्मान् गच्छतु ...अपि क्रियया वा संबध्यते। गच्छत्वित्यर्थः) ३।३३।२ (अपि गच्छति। परस्परमैक्यमापद्यत इत्यर्थः), १०।११५।१
२. अभिगच्छति,
वे० - ७।४७।३, सा० - ९।७१।६
३. प्राप्नोति
वे०सा० - ३।८।९, सा० - १।१४०।७, १६२।२
४. गच्छति,
सा० - १०।११५।१

अपि-यत्

देवान् प्रति गच्छन्तम्,
वे०सा० - १।१६२।२०, ८।४३।७ (गच्छन्)

अपीति

१. अपीत्येषोऽपतेस्य स्थाने। अपगतेः,
स्क० - १।१२१।१०
२. संग्रामात्,
वे०सा०मु० - १।१२१।१०

अपीत्य

१. सङ्गम्य,
वे० - २।४३।२
२. अभिगत्य,
सा० - २।४३।२

अपी

१. ज्ञातयः,
स्क० - ६।६७।९
२. बन्धवः.
वे० - ६।६७।९
३. अपः कर्म। तद्वन्तः,
सा० - ६।६७।९

अपि√इष्

प्रेर्यते,
वे०सा० - ९।६९।१

अ-पुनर्

१. पुनः यथा तत् करणीयं न भवति,
उ० - १०।६८।१०
२. पुनरकरणीयम्,
सा० - १०।६८।१०

अपुष्पा

१. अर्थो वाचः फलं पुष्पं च। अर्थ-ज्ञानरहिताम्,
स्क० - १०।७१।५
२. ईषद्दृष्टादृष्टफलाम्,
स्क० - १०।७१।५
३. पुष्परहिताः,
सा० - १०।९७।१५
४. वाचोऽर्थः पुष्पफलं। अर्थवर्जिताम्,
सा० - १०।७१।५

५. कर्मादिविषयज्ञानवर्जिताम्,
सा० – १०।७१।५

अपूरुष

१. नेतृपुरुषरहितम्
वे० – १०।१५५।३
२. निर्मात्रा पुरुषेण रहितम्
सा० – १०।१५५।३

अपूरुषघ्न

१. पुरुषानबाधमानः,
वे० – १।१३३।६
२. पौरुषोपेतानां यजनसमर्थानाम् अहननः,
सा० – १।१३३।६

अपूर्व्य, व्या

१. यतः पूर्वा अन्या नास्ति सा अपूर्वा। सर्वप्रथमेत्यर्थः। अपूर्वैवापूर्व्या,
स्क० – १।४६।१
२. यज्ञियानामग्रिमः,
वे०– १।१३४।६
३. न विद्यते पूर्वं यस्मात् तत्पानम-पूर्वम्। तदर्हतीत्यपूर्वः,
सा०– १।१३४।६। सा०मु०–५।५६।५ (न विद्यते पूर्वः येभ्यस्तमपूर्व्यम्)
४. अभूतपूर्वम्,
वे० – ३।१३।५
५. तेजस्वितया प्रतिक्षणमभिनवम्,
सा० – ३।१३।५
६. नूतनम्,
वे० – ५।५६।५, ६।३२।१, १०।२३।६
वे०सा० – ८।६६।११,
७. पूर्वैरकृतानि नूतनानि,
सा० – ६।३२।१
८. अभिनवम्,
सा० – ८।१८।१, वे०सा०–८।२१।१

९. पूर्वेषु मध्यरात्रादिकालेषु विद्यमाना न भवति,
सा०मु० – १।४६।१
१०. पूर्व्येण वर्जितः,
वे०सा० – ८।८९।५
११. अन्येनाकृतपूर्वाणि,
स्क० – ६।३२।१
१२. अन्यैरकृतपूर्वम् उत्कृष्टम्,
स्क० – १०।२३।६ सा० – १०।२३।६ (अन्यैः पूर्वकृतम्। उत्कृष्टम्)

अपृणत्

१. हविर्भिः त्वाम् अप्रीणयतः,
स्क० – ६।४४।११
२. अप्रयच्छन्,
वे०– १।१२५।७, ५।७।१०, ६।४४।११, १०।११७।७, वे०सा०–६।४४।११, (हवींष्यप्रयच्छतः) १०।११७।१, मु०–५।४२।९,
३. देवादीन् अप्रीणयन्तमदातारम्,
सा० – १।१२५।७
४. अददतः,
सा० – ५।७।१०
५. अदातारं जनम्,
सा० – १०।११७।७

अप√इ

१. अपगच्छति,
स्क०– १।५०।२ (अपगच्छन्ति। अदृश्यतां प्रतिपद्यन्त इत्यर्थः), वे०– १०।१०८।१०, वे०सा०–१।१२३।७, १२४।८, ८।६६।१५, ६७।१५, १०।१४।९, ७२।६, १६४।१, सा०मु०– १।५०।२
२. निर्गच्छ,
सा० – १०।१६४।१

३. प्रतिलोमं गच्छति,
सा० - १।१२३।७
४. अपसृत्यैव गच्छति,
सा० - १।१२४।८
५. अपगतः युष्मत्पादतः समुत्थितः,
उ० - १०।७२।६
६. प्रति गच्छत,
सा० - १०।१०८।१०
७. अतिदूरं देशं गच्छत,
सा० - १०।१०८।१०

अप्√ईज्

१.अप गमयति,
स्क०वे०सा०-६।६४।३, वे०- ५।४८।२
२. अपचालयति,
सा०मु० - ५।४८।२

अपेशस्

१. रूपवर्जितस्य,
स्क० - १।६।३
२. रूपरहिताय,
सा०मु० - १।६।३

अपैय्

१. अप अगमः,
वे० - ५।२।८
२. अपागाः,
सा० - ५।२।८

अपोच्छ

१. विवासयति,
स्क० - १।४८।८। सा० - ७।१०४।२३
(विवासयतु अपवर्जयतु)
२. पृथक् करोतु,
वे० - ७।१०४।२३
३. तिरस्कुर्वती प्रादुर्भवत,
वे० - १।४८।८
४. अप गमयतु,
वे०सा०- ८।४७।१८ (अपगच्छतु),
सा०- ७।८१।६
५. अप वर्जयति,
सा० मु० - १।४८।८

अपोदक, का

१. व्यपगतोदकाभिः,
स्क० - १।११६।३
२. अप्रविष्टोदकाभिः,
वे० - १।११६।३
३. सुश्लिष्टत्वात् अपगतोदकाभिः अप्रविष्टोदकाभिः,
सा०मु० - १।११६।३

अपोर्णु

१. अपच्छादय,
उ० - १०।७३।११, सा०-९।९६।११
२. तेजोभिराच्छादयतः,
सा० - ८।४०।५
३. अपाच्छादयति विवृतमकार्षीत्,
सा० - ९।१०८।४
४. विवृतद्वारं कृतवन्तौ स्थ,
सा० - १०।४०।८
५. अपाच्छादितवन्तौ स्थः, वृष्टि-प्रदानाय विवृतद्वारं कृतवन्तौ,
स्क० - १०।४०।८
६. अपवारय,
उ० - १०।७३।११
७. रज्जुरूपो भूत्वा अस्मान् व्याकर्षन् हेतुकर्तृत्वेन अपनयेत्यर्थः,
उ० - १०।७३।११
८. परिहर,
सा० - १०।७३।११
९. अपगंमयति,
वे०सा० - १०।८८।१२

१०. तमसानाच्छादितं करोति। स्वय-माविर्भवति,
सा०मु० - १।९२।४
११. प्रकाशयति,
स्क० - १।९२।४
१२. अपगतावरणं करोति,
सा०- १।१५६।४
१३. विवृतद्वारं करोति,
वे० - १।१५६।४
१४. अपसारयति,
सा० - २।३४।१२
१५. सम्प्रति रात्रिर्गता इत्यर्थः,
वे० - २।३४।१२

अपोर्णुवत्

१. अपगमयन्त,
वे० - ४।४५।२
२. अपगतावरणवन्तो ज्ञानवन्तः,
सा० - १।१९०।६
३. अपाकुर्वन्तः,
सा० - ४।४५।२

अपीच्य

१. अन्तर्हितम्,
स्क०वें०सा०मु०- १।८४।१५, वे०सा०- २।३५।११, ७।६०।१०, ८।४१।५, ८, ४७।१३, ९।७१।५, ८६।१०, ८७।३, १०।१२।८, ५३।११
२. निगूढेन,
सा० - ७।६०।१०
३. गुह्यम्,
वे०सा० - ८।३९।६
४. देवत्वमाकाङ्क्षता,
सा० - १०।५३।११

अपि√अस्

१. अपि भवति,
स्क०वे०सा० - ६।६८।६, वे०- ८।१८।१९, वे०सा०- ८।३२।७, ४७।८
२. भवन्तु,
सा० - १।१६२।८,९
३. सर्वदा भवामः,
सा० - ८।१८।१९
४. अपिः संभावनायाम्। त्वदधीनाः स्म,
सा० - ८।६६।१३
५. प्राप्नुवन्त,
सा० - १।१६२।८
६. सन्तु,
वे० - १।१६२।८
७. व्याप्नोत,
सा० - १।१६२।१४

अप्रकेत

१. अप्रज्ञातम्,
वे० - १०।१२९।३
२. अप्रज्ञायमानम्। ...यद्यपि जगत-स्तमसश्च कर्मकर्तृभावो यौक्तिको विद्यते तथापि व्यवहारदशायामिव तस्यां नामरूपाभ्यां विस्पष्टं न ज्ञायत इति तादात्म्यवर्णनम्। ...अप्रज्ञात-लक्षणं। अप्रतर्क्यमनिर्देश्यं प्रसुप्त-मिव,
सा० - १०।१२९।३

अप्रक्षित

१. अप्रक्षीणम,
स्क०वे० - १।५५।८
२. प्रक्षयरहितम्,
सा०मु० - १।५५।८

अप्रचेतस्

१. अज्ञः,

स्क०वे० - १।१२०।१

२. अस्तोतॄणाम्,

वे०सा० - ९।६४।२०

३. प्रज्ञानरहितान्,

सा० - ९।९८।११

४. अप्रज्ञान्,

वे० - ९।९८।११

५. अप्रकृष्टज्ञानो मनुष्यः,

सा० - १०।७।६

६. अप्रज्ञानो मानुषो होता। त्वयाऽनधिष्ठितो न किञ्चिदपि जानातीत्यर्थः,

उ० - १०।७।६

७. मनुष्यः,

वे० - १०।७।६

८. अप्रकृष्टज्ञानः। दाने चेतो मनो यस्य न भवति,

सा० - १०।११७।६

९. युवयोर्माहात्म्यमजानन्,

सा०मु० - १।१२०।१

अप्रच्युत

अन्यैः प्रच्यावयितुमशक्यानि,

सा० - २।२८।८

अप्रजा

१. प्रजावर्जिताः,

स्क० - १।२१।५

२. अप्रादुर्भूताः ... अप्रजाता,

वे० - १।२१।५

३. अनुत्पन्ना प्रजायन्ते इति प्रजाः। ...न प्रजा अप्रजाः,

सा० - १।२१।५

४. अनुत्पन्नाः,

मु० - १।२१।५

अप्रजज्ञि

१. प्रज्ञातारः वागर्थस्य,

उ० - १०।७१।९

२. अज्ञाः,

वे० - १०।७१।९

३. अविद्वांसः,

सा० - १०।७१।९

अप्रति

१. अप्रतिगतः

वे०सा०-४।१७।१९, ६।३१।४, ४४।१४, ७।८३।४, ८५।३, ९।२३।७, वे०सा०मु०- १।५३।६, सा०-८।९०।५

२. अप्रतिष्ठमानानि,

स्क० - ६।४४।१४

३. अप्रतिहतानि,

वे० - ७।९९।५, ८।९०।५

४. अविद्यमानः प्रत्येता प्रतिगन्ता प्रतिशूरायिता येषु तान्यप्रतीनि। भीतनष्टसर्वयोद्धकाणीत्यर्थः,

स्क० - ६।३१।४

५. अवतिष्ठमानः,

स्क० - १।५३।६

६. अप्रतिबध्यमानः,

स्क०- १।५३।६, मु०-५।३२।३ (प्रतिबन्धरहितः)

७. उत्कृष्टानि धनानि,

सा० - २।१९।४

८. असदृशानि,

वे० - २।१९।४

९. प्रतिद्वन्द्विरहितः,

सा०- ५।३२।३

१०. अविस्तीर्णधनेन,
सा० – ८।३२।१६
११. अव्रतेन,
वे० – ८।३२।१६

अप्रतिधृष्टशवस्

१. अप्रत्यभिभूतपूर्वबलम्,
स्क० – १।८४।२
२. अप्रत्यभिभूतबलम्,
वे० – १।८४।२
३. केनाप्यप्रतिधर्षितबलम्। अहिंसित-बलमित्यर्थः,
सा०मु० – १।८४।२

अप्रतिमान

१. निरुपमानम्,
वे० – ८।९६।१७
२. प्रतिमानमुपमा। निरुपमम्। अस्य सदृशमन्यदीयं वीर्यं नास्तीत्यर्थः,
सा० – ८।९६।१७

अप्रतिष्कुत

१. अन्येनाप्रतिगतः अप्रतिष्कुतः। युद्धे अभियुञ्जानः। अन्येनाप्रत्यभियुक्त-पूर्व इत्यर्थः,
स्क० – १।८४।७
२. अप्रतिगतः। केनचिदप्रतियोध्य-मान इत्यर्थः,
स्क० – १।८४।१३
३. अप्रतिकृतः,
वे० – १।७।६,८, ८४।१३, ५।६१।१३, ७।३२।६, ८।९३।१२, ९७।१३
४. प्रतिशब्दरहितः,
वे०–१।८४।७, ३।२।१४,
वे०सा०मु०– १।७।६, सा०–७।३२।६,
सा०मु०– ५।६१।१३

५. अप्रतिरोधनीयम्,
सा०– ८।९३।१२, ९७।१३
६. परैरप्रतिशब्दितः प्रतिकूलशब्द-रहितः,
सा०मु० – १।८४।७, १३

अप्रतीत

१. अप्रतिगतम्,
स्क०सा०– ६।७३।३, वे०–१।११७।९, १३३।६, ५।४२।६, १०।१११।३, वे० सा०–१०।१०४।७, वे०सा०मु०– ५। ३२।७,९ सा०– ४।४२।६, ५०।९
२. शत्रुभिरप्रतिगतम्,
वे०– १।३३।२, ३।४६।३, ४।४२।६, ५०।९, वे०सा०– ६।२०।९, सा०मु०– १।११७।९
३. अप्रतिगतम्। शत्रुभिः अप्रत्यभि-भूतपूर्वमित्यर्थः,
स्क० – १।३३।२,
४. अप्रतिगतपूर्वं शत्रुभिः,
स्क० – १।११७।९
५. शत्रुभिरप्रतिहतः,
वे० – ६।७३।३
६.अप्रतिगतस्य युद्धेऽपलायमानस्य,
सा०मु० – ५।४२।६
७. अप्रतिगतं बलिभिरतिरस्कृतमित्यर्थ,
सा०मु० – १।३३।२
८. अवसन्नैः रक्षःप्रभृतिभिः अप्रतिगत-युद्धे शत्रुभिः अनाक्रान्त,
सा० – १।१३३।६
९.सत्त्वभिः प्राणिभिः असंस्कृतमनस्कैः अनधिगतः,
सा० – १।१३३।६
१०. एतावदस्य सामर्थ्यमित्यपरि-च्छिद्यमानः,
सा० – ३।४६।३

अप्रदुग्धा

अक्षीणरसाः,

सा० - ३।५५।१६

अप्रभु

समर्थो न भवति,

सा० - ९।७३।९

अप्रदृपित

१. दर्परहितः,

वे० - १।१४५।२

२. अप्रदृप्तः,

सा० - १।१४५।२

३. तेन शिक्षितोऽनुदण्डः सर्वो लोकः,

सा० - १।१४५।२

अप्रभूति

१. अप्रादुर्भूतानि,

वे० - १०।१२४।७

२. अप्रभूष्णुना अल्पेनैव यत्नेन,

सा० - १०।१२४।७

अप्रमूर

१. अप्रमूढचेतसः,

स्क० - १।९०।२

२. अप्रमूढाः,

वे० - १।९०।२

३. अप्रमूर्च्छिता अमूढाः प्राज्ञाः सन्तः,

सा०मु० - १।९०।२

अप्रयुच्छत्

१. अप्रमाद्यतः स्वाधिकारं प्रति प्रमादमकुर्वत,

उ० - १०।६६।१३

२. अप्रमाद्यन्। महताऽऽदरेणेत्यर्थः,

स्क० - १।१०६।७

३. अप्रमाद्यतः,

वे०सा०- १०।६६।१३

४. अप्रमाद्यन्,

उ०वे०सा०- १०।७।७, १७।५, वे०- १।१०६।७, १४३।८, २।११।८, १०। १२। ६, ३१।२०।२, वे०सा०- २।९।२, ३।५।६, १०।४।७, ६६।१३, वे०सा० मु०- ५।८२।८, सा०-४।५५।७, १०।८८।१६

५. अप्रमाद्यद्भिः अनवधानरहितैः,

सा० - १।१४३।८

६. अप्रमाद्यन् वर्षणे सावधानः,

सा० - २।११।८

७. अप्रमाद्यन् सावधानो भूत्वा,

सा० - ३।२०।२

८. न प्रमाद्यन्निति न ह्यागमने प्रमादः,

वे० - १०।८८।१६

९. अप्रमाद्यन् अस्मद्रक्षणे जागरूकः सन्,

सा०मु० - १।१०६।७

अप्रयुता

१. अप्रमत्ताम्

वे० - ७।१००।२

२. दोषैर्वियुक्ताम्,

सा० - ७।१००।२

अप्रयुत्वन्

१.अन्येनामिश्रितैः। अत्यन्तासाधारणैः,

स्क० - ६।४८।१०

२. अजस्रैः,

वे० - ६।४८।१०

३. अपृथग्भूतैः संहतैः,

सा० - ६।४८।१०

अप्रवीता

१. अनिषिक्तरेतांसि,

वे० - ४।७।९

२. *अनुपगता यजमानाः,*
सा० – ४।७।९
३. *केनापि पुरुषेणानिषिक्तरेतस्काः,*
सा० – ३।५५।५
४. *अनभ्यक्ताः,*
सा० – ३।५५।५
५. *पुरुषैरनिषिक्तगर्भा,*
वे० – ३।५५।५

अप्रशस्त, स्ता

१. *राक्षसान्,*
वे० – १।१६७।८
२. *क्षीणानपि पदार्थान्,*
सा० – १।१६७।८
३. *धनाभावादसमृद्धा,*
सा० – २।४१।६
४. *गर्हिताः,*
सा० – ४।२८।४
५. *अधनाः,*
वे० – ४।२८।४

अप्रहन्

१. *केनचिदपि प्रहन्तुमशक्यम्,*
स्क० – ६।४४।४
२. *अप्रहन्तारं भक्तानामनुग्राहकम्,*
सा० – ६।४४।४

अप्रहित

अप्रेषितम्,
सा० – ८।९९।७

अप्रामि-सत्य

१. *अविनश्यत्सत्यः,*
वे० – ८।६१।४
२. *अहिंसितसत्यः,*
सा० – ८।६१।४

अप्रायु

१. *अप्रगच्छन्तः स्वकीयं रक्षितव्यम-परित्यजन्तः,*
वे०–१।८९।१ (अप्रगच्छन्तः), सा०मु०– १।८९।१
२. *अप्रगन्तारः नित्यसन्निहिता,*
स्क० – १।८९।१
३. *अप्रगमनस्वभावम्–*
वे० – ५।८०।३
४. *अप्रमोषितारः आयुषः। जीवितस्य चानपहर्तारः,*
स्क० – १।८९।१
५. *अन्यैरथैरप्रश्रिता बुद्धिर्येषां ते अप्रायुवः, अनाक्षिप्तचेतस्काः,*
स्क० – १।८९।१
६. *अत्यन्तं यत्नवन्तः,*
स्क० – १।८९।१
७. *कर्मसु अप्रमाद्यन्मनुष्ययुक्तैः,*
सा० – ८।२४।१८
८. *अप्रमत्ताः,*
सा० – ८।२४।१८
९. *अप्रमाद्यद्भिः,*
वे० – ८।२४।१८
१०. *अप्रगन्तृ अविचलितम्,*
सा०मु० – ५।८०।३

अप्रायुस्

१. *अप्रगच्छतः,*
वे० – १।१२७।५
२. *प्रगतमायुर्यस्यासौ प्रायुः। न प्रायुर-प्रायुः,*
सा० – १।१२७।५

अप्रोषिवस्

यजमानगृहमत्यजन्
सा० – ८।६०।१९

अप्वा

पापाभिमानिनि देवते,

सा० – १०।१०३।१२

अप्सरस्

१. उर्वश्याः,

वे० – ७।३३।१२, सा०–७।३३।१२

२. अपां सारयित्री,

सा० – १०।१२३।५

३. क्रीडार्थं सरन्ती,

सा० – १०।१२३।५

४. माध्यमिका वाक्,

वे० – १०।१२३।५

५. देवस्त्रीणाम्,

सा० – १०।१३६।६

अप्सव

१. रूपवत् शोभनम्,

उ० – १०।६५।३

२. रूपवन्तम्,

वे०सा० – १०।६५।३

अप्सा

१. अपां सेवितारम्,

स्क० – १।९१।२१

२. अप्साम् अप्सातृकं भक्षकरहितम्। सर्वेषामनुग्राहकमित्यर्थः,

सा० – १।९१।२१

३. अपां दाता,

वे० – १।९१।२१, सा० – ९।८४।१

४. अपामाप्तव्यानां कर्मणा सनितारं संभक्तारम्,

सा० – ६।१४।४

५. कर्मणः सम्भक्तारम्,

वे० – ६।१४।४, ९।८४।१

६. अपां सम्भक्ता सोमः,

वे० – ९।६५।२०

७. वसतीवरीनामधेयानामपां संभक्ता,

सा० – ९।६५।२०

८. उदकानां दाता,

वे०– ९।८४।१, वे०सा० – ९।७१।८,

९. वसतीवर्याख्यानामपां संभक्ता,

सा० – ९।७१।८

१०. अपां वृष्टिलक्षणानामुदकानां दातारम्,

सा०मु० – १।९१।२१

अप्सु

१. सोमस्य अपातारः,

वे० – ७।४।६

२. रूपरहिताः,

सा० – ७।४।६

अफला

१. फलरहिताम्

उ० – १०।७१।५, सा० – १०।९७।१५

(फलवर्जिताः)

२. वाचोऽर्थः पुष्पफलम्। अर्थवर्जिताम्,

सा० – १०।७१।५

३. वाचोऽर्थो याज्ञदैवते। यज्ञे भवं ज्ञानं याज्ञं देवतासु भवं ज्ञानं दैवतं। तद्वर्जितां कर्मादिविषयज्ञानवर्जिताम्,

सा० – १०।७१।५

अबधिर

अनुपहतश्रोत्रेन्द्रियम्,

सा० – ८।४५।१७

अबन्धन

१. बन्धनरहितः,

वे० – ३।५५।६

२. अप्रतिबद्धगतिः अनालम्बनः एकः सन्,

सा० – ३।५५।६

अबन्धु

१. बन्धुवर्जितान्। वैरिणोऽसुरान्,
स्क० - १।५३।९। वे०-१।५३।९
(बन्धुवर्जितेन)
२. बन्धुरहितेन सहायरहितेन
सा० - ८।२१।४ (बन्धुरहिताः), सा० मु०- १।५३।९

अबल, ला

१. स्त्रीभूताः,
वे० - ५।३०।९, सा० - ५।३०।९
(स्त्रीरूपाः)
२. निर्बलाः,
मु० - ५।३०।९

अबाधित

बाधरहितः,
सा० - १०।९२।८

अबिभीवस्

१. भीतिरहितेन,
स्क०सा०मु० - १।६।७
२. अभीतेन,
वे०सा०- ९।५३।२
३. त्वदीयरक्षया बलादभीताः,
सा०मु० - १।११।५

अबिभ्यत्

भीतिरहितः सन्,
सा० - ६।२३।२

अबुध्न

१. अनाश्रये अनालम्बनेऽन्तरिक्षे,
स्क० - १।२४।७
२. पदनिधानयोग्यस्थलरहितेषु लोकेषु,
वे०-८।७७।५, सा०-८।७७।५ (पद-निधानयोग्यस्थानरहितेषु)
३. अमूलेऽनालम्बनेऽन्तरिक्षे,
वे० - १।२४।७
४. मूलरहिते अन्तरिक्षे,
सा०मु० - १।२४।७

अबुध्य

१. गतबुद्धिम्,
वे०- ४।१९।३
२. दुर्विज्ञानम्,
सा०- ४।१९।३

अबुध्यमान, ना

१. प्रतिबोधवर्जिते,
स्क०- १।२९।३
२. यागादीन् अकुर्वाणा अदानशीला अस्मच्छत्रवः,
सा०- १।१२४।१०
३. किमप्यजानन्तम्,
सा०-४।१९।३

अब्दिमत्

१. अब्दिः अपां दानवान् मेघः। तद्वान्,
सा०- ५।४२।१४
२. मेघवान्,
मु०- ५।४२।१४

अब्रह्मन्

१. अमहान्तः,
वे०- ७।२६।१
२. स्तोत्रहीनाः,
सा०- ७।२६।१
३. ऋत्विग्भिः क्रियमाणं सर्वं कर्म-जातमनुज्ञारूपेण जानन् ऋत्विग्विशेषो ब्रह्मशब्देनोच्यते,
सा०- ४।१६।९
४. मन्त्रवर्जितः,
वे०- ४।१६।९

५. *स न विद्यते यस्य असौ अब्रह्मा। वेदोक्तकर्मस्वातिक्यरहितः इत्यर्थः,*
सा०- ४।१६।९

अब्रह्मता

१. *स्तोत्रवर्जितया,*
वे०- ५।३३।३
२. *ब्रह्म परिवृढं कर्म। तद्रहितत्वात्,*
सा० मु०- ५।३३।३

अभक्त

१. *अभजनीयं काष्ठादिकम्,*
वे०- १।१२७।५
२. *असेवितेऽपि सङ्ग्रामे,*
वे०- १०।११२।१०
३. *असंभजनीये स्थानेऽपि,*
सा०- १०।११२।१०
४. *असेवमानम्,*
सा०- १।१२७।५
५. *पूर्वमप्राप्तम्,*
सा०- ३।३०।७
६. *अलब्धम्,*
वे०- ३।३०।७

अभय

१. *भयवर्जितम्,*
स्क०- ६।४७।८
२. *भयरहितम्,*
सा०- २।२७।११,१४, ६।४७।८, १२
३. *भयराहित्यम्,*
सा०- ४।२९।३, १०।१३१।६
४. *सर्वतो भयरहितान्,*
सा०-३।४७।२
५. *संसारभयरहितानाम्,*
सा०- १०।९२।१४
६. *भयवर्जितं प्रदेशम्,*
सा०- ६।२८।४
७. *भयाभावम्,*
वे०- ६।२८।४
८. *विनाशभयरहितम्,*
उ०- १०।६३।७
९. *असुरेभ्यः सकाशान्मा बिभीतेति देवान् प्रति यद्वाक्यम्,*
सा०- ३।३०।५

अभयतम

१. *अतिशयेन भयवर्जितेन पथा,*
उ०- १०।१७।५
२. *अत्यन्तं भयरहितेन मार्गेण,*
सा०- १०।१७।५

अभाग, गा

१. *निर्धनः,*
उ०- १०।८३।५
२. *भागरहितः,*
वे०सा०- १०।८३।५

अभि

१. *अभिलक्ष्य,*
सा० १।४५।८,१३५।६, १६२।११, १६४।२८, २।१५।५, २३।६, ३।१४।४, १५।५, २९।१३, ३२।१५, ४।११।१३, ६।१६।४४, १८।१३, १९।९, ४५।२५, ६०।२, ७।६०।२, ८।६।४२, ९५।१, ९।३।१, ६२।१, ७१।७, ७२।३, ९४।२, ९७।१२, २१, ९९।२, १०६।१२, १०७।२३, २५, १०९।४, ११०।२,८, १०।१७।६, १८।८, ६६।९, ९०।४, ११३।४, १८०।३, सा०मु०- १।३३।११, ५१।१०, १०८।६, ११९।१, ५।६५।३
२. *अभिगम्य,*
स्क०- १।९२।१०, सा०- ६।१८।९
३. *आभिमुख्येन,*
उ०-१०।४५।९, ६६।९, ७१।३,

उ०सा०- १०१२५१३, स्क०- ६१३६१५, ४९१४, स्क०वे०सा०- १७८११, वे०- ४१२४१८, ६१४९११५, वे०सा०-५१४११, सा०- ११२३९१२, १६४१३, २१४१७, ३९१७, ३१४६१४, ५११४, ६२१९, ४१४३१५, ८१२११९, ६१७, १२१२३, २११५, ८९१४, ९२१५, ९११३१२, सा०मु०- १५११, ५२१५, ६११०, ७११०, ७८१५, ८४१४, १०११६, ७, ५१९१७, ३३१२, ६१५१७, ९१५, मु०- १७८१२

४. अभिमुखम्,

उ०- १०१६४११, वे०सा०- ३१२९११३, सा०- ११२५१७, १४६१३, २१३११२, ६१३४१४, ४४११७, ७१५१२, १०४१२१, ८११५११, २५१२१, ७५११५, १०१ १८७१४

५. अभिमुखी कुरु,

सा०-४११३, ८१९३१४ (अभिमुखीकृत्य)

६. प्रति,

उ०-१०१२९१३, ४३१७, स्क०-११३३१ ११, ४२१८, ४५१८, ८४१४, ६१३७१३, स्क०वे०- १११९११, ६११६३१७, वे०- ६१४४१९७, १३४११, ७१८८१२, ९१३७१२, ३८१६, वे०सा०-११८३१२, ९१७१३, ४८१३, सा०- २१२१२, ४१ ४६१३, ८१२७१६, ३०१४, ३६१२, ९१ ५११५, ५७१२, ६२१२८, ६३१२९, १०१३७११२

७. अभितः,

वे०सा०-९१९८१२, सा०- ११७९१३, ३१५११, ५१३१७, ६१७१२, ४५१२५, ७१८३१५, ८१२३१२६, ९३११९, ९१७५११, १०४१४, १०६११, १०७११४, १०१४१२, ५३१७, ७११३, १३४१७ सा०मु०- ११३७११, ४२१८

८. लक्षीकृत्य,

वे०- ७१६०१२, ९१३११, ४२१५, ८७१५, ९०१४, वे०सा०- ९१२३११, ६५११९, ६६११, सा०- ९१६६१४, १०१३२११

९. सर्वतः,

वे०- ११४०१५, सा०- १०११३४१७, सा०मु०- ११५११, ११२, १९१९

१०. अभिलषितम्,

वे०- १०११३४१७

११. प्राप्तुम्,

सा०- १०१५३१८, सा०मु०- ११९२११० (प्राप्य)

१२. सर्वत्र,

सा०मु०- ११११८

अभितस्

१. सर्वतः,

उ०सा०- १०१७६१६, वे०सा०- २११३१ ७, सा०-११८११६, १३३१४, १३४१५, ५१३०११०, ७११०३१७, १०१२७१८, ५३१७, सा०मु०- ११०५१८

२. सर्वतो वर्तमानाः,

सा०मु०- ५११५१३, सा०- ८१५१३८

३. सर्वतो विद्यमानम्,

सा०- ७१९८१६,

४. सर्वत्र वर्तमानम्,

सा०मु०- ११५३१३

५. सर्वत्र जगति,

सा०- ४११११४

६. सर्वत्र स्थितैः,

सा०- ७१९९१३

७. परितः,

वे०- ७१९९१३, वे०सा०- ७११०११४, सा०- ७१५५१५, १०३१७

८. उभयतः,
उ०- १०।८१।६
९. उभयतः दक्षिणे वामे च पार्श्वे,
स्क०- १।५३।३
१०. वामपार्श्वतो दक्षिणपार्श्वतः,
स्क०- १।१०५।८
११. अग्रतः पृष्ठतश्च,
स्क०- १।१०५।८
१२. सर्वतः सर्वाभ्यो दिग्भ्यः,
उ०- १०।२७।८
१३. सर्वासु दिक्षु,
सा०मु०- १।८३।१
१४. समन्तात्,
सा०- ७।५९।७,

अभि √काश्

१. अभिपश्यति,
वे०सा०- ४।५८।५, ९, १०।८६।१९,
सा०-१।१६४।२०, १०।१३५।२,
२. अभि विपश्यति,
वे०- १।१६४।२०

अभिक्रतु

१. क्रतुः कर्म। अभि आभिमुख्येन युद्धार्थं कर्म येषां तेऽभिक्रतवः बलीयांसः शत्रवः,
सा०- ३।३४।१०
२. अभिकर्मणां शत्रूणाम्,
वे०- ३।३४।१०

अभि √क्रन्द्

१. स्तनितशब्दं च कुरु,
वे०- ५।८३।७
२. अभिगर्जसि,
सा०- ७।५।७
३. अभिमुखमध्वनयत्,
सा०- ९।६८।२
४. अभिलक्ष्य ... शब्दं करोति स्वरनिर्मोकसमये,
सा०- ९।८२।१
५. अभि शब्दं करोति,
वे०- ९।८२।१
६. शब्दं कुर्वन्,
सा०- ९।८६।११
७. सोममभिलक्ष्य देवानाह्वयन्तीत्यर्थः,
सा०- १०।९४।२
८. भूम्यभिमुखं शब्दय,
सा०मु०- ५।८३।७

अभि-कनिक्रदत्

१. अभिक्रन्द उच्चारयति होतृत्वेन,
उ०- १०।६७।३
२. अभिशब्दायमानः,
वे०- ९।९७।१३
३. अभिशब्दयन्,
वे०- १०।६७।३
४. आभिमुख्येन शब्दयन्,
सा०- १०।६७।३
५. अभिलक्ष्य शब्दं करोति,
सा०- ९।९७।१३

अभि-क्रन्दत्

१. आभिमुख्येन शब्दं कुर्वन्
वे०- १०।२१।८
२. आभिमुख्येन युद्धार्थं शत्रूनाह्वयन्,
सा०- १०।२१।८

अभि√क्रम

१. अभिक्रमणमवष्टम्भनं मुधाकरणं स्पर्धि तृणां चेष्यते,
स्क०- ६।४९।१५
२. आक्रमते ... प्रसर्पन्ति,
सा०- १।१४४।१

३. गृह्णाति,
सा०- १।१४४।१
४. अभिभवेम्,
सा०- ६।४९।१५

अभिक्रम्य
आभिमुख्येन गत्वा,
सा०मु०- १।८०।५

अभि-क्षत्तृ
१. अभिक्षमणशीलाः,
वे०- २।२९।२
२. अभिहिंसितुः,
वे०- ७।२१।८
३. अभितः शत्रूणां हिंसितारः,
सा०- २।२९।२
४. अभिहिंसकस्य,
सा०- ७।२१।८

अभि-क्षद्
१. क्षदतिः संस्कारार्थः। तमोऽपनयनेन सर्वस्य संस्कर्तारम्,
स्क०- ६।५०।१
२. विशसितारम्, हन्तारम्,
स्क०- ६।५०।१
३. शत्रूणामाभिमुख्येन विशसितारम्
वे०- ६।५०।१
४. धनानां पृथक्कर्तारम्
वे०- ६।५०।१
५. अभिक्षत्तारं, शत्रूणां हिंसितारम्,
सा०- ६।५०।१

अभि√क्षम्
१. शक्तान् कुरुत,
वे०-२।२८।३
२. शक्तो भवतु
वे०- २।३३।१

३. अभिभवत,
सा०- २।२९।२, ३३।१
४. सहध्वम्,
सा०- २।२८।३

अभि√क्षर्
प्रत्यक्षरन ... प्रयच्छन्त,
सा०- ९।३३।२

अभि-क्षिपत्
१. अभिप्रेरयन्,
सा०- ५।८३।३
२. प्रेरयन्,
मु०- ५।८३।३

अभि√ख्या
१. अभिपश्यति,
स्क०वे०- ६।४८।१९, वे०सा०- ६।१५।१५, ७।८६।२, १०।५३।२
२. अभिपश्य। अनुग्रहदृष्ट्या विलोकय,
सा०- ६।४८।१९
३. सर्वतः पश्यति,
सा०- १०।५३।२
४. अभिचष्टे,
सा०- १०।५३।२

अभिख्या
१. अभिदर्शनेन,
वे०- १०।११२।१०
२. अभिख्यापनेन तेजसा युक्तान् कुरु,
सा०-१०।११२।१०
३. प्रसिद्धान् वा कुरु,
सा०-१०।११२।१०
४. अभितः ख्यातिं माहात्म्यम्,
सा०- १।१४८।५
५. प्रज्ञानेन,
वे०- १।१४८।५

६. अभिमुखं गच्छन्ति,
सा०- ८।२३।५।
७. अभिमतः प्रसिद्धया,
सा०- ८।२३।५

अभिख्यातृ
१. अभिख्यानं कुर्वन्,
वे०- ४।१७।१७
२. अभिद्रष्टा,
सा०- ४।१७।१७

अभि-ख्याय
१. आभिमुख्येन दृष्ट्वा,
वे०- १।१५५।५,
२. अभि दृष्ट्वा,
वे०- २।३०।९
३. संवीक्ष्य,
सा०- २।३०।९
४. प्रख्याय,
सा०- १।१५५।५

अभि√गम्
प्राप्नुवन्ति,
सा०- ३।६०।१

अभि√गा
१. अभिगतवान्,
स्क०- १।३३।१३
२. अभिगच्छति,
वे०सा०- ७।७१।४
३. अभिलक्ष्य गतवान्,
सा०मु०- १।३३।१३

अभिगाहमान
प्रविशन्,
सा०- १०।१०३।७

अभि√गुर्
१. आभिमुख्येन स्तुहि, प्रोत्साहय। सम्यक् शस्तमित्यङ्गीकुरु,
सा०- १।१४०।१३
२. अभिगृणातु स्वीकुर्विति,
सा०- ८।८१।५

अभि-गूर्त
१. आभिमुख्येन प्रदानाय उद्यतम्,
सा०- १।१६२।१५
२. इष्टं प्रयाजैराप्रीतं वीतं पर्यग्निकृत-मभिगूर्तम्,
सा०- १।१६२।१५

अभिगूर्ति
१. आगोरणम् उद्योगः,
वे०- १।१६२।६
२. सर्वेषाम् उद्यमनम्,
वे०- १।१६२।१२
३. अभितः उद्यमनम्,
सा०- १।१६२।१२
४. संकल्पः सर्वथा करणीयमिति बुद्धिः,
सा०- १।१६२।६

अभिगूर्य
१. अभिगोरणम् आत्माभिमुखं नयनमिति,
वे०- २।३७।३
२. उद्यम्य,
सा०- २।३७।३

अभि√गॄ
१. अभीत्ययं प्रतीत्येतस्य स्थाने। प्रतिगृणीहि,
स्क०- १।१०।४
२. अभितः देवानां समीपे स्तुहि,
सा०- १।१५।३

३. अहो शोभन इत्येवमभिष्टुहि,
स्क०- १।१५।३
४. कुर्वित्यनुज्ञाऽभिगरणम्। अनुमन्यस्व,
वे०- १।१५।३
५. सर्वत्र स्तुमः,
सा०- १।४२।१०, मु०- १।४२।१० (स्तुमः)
६. अभिलक्ष्य शब्दं कुरु,
सा०मु० - १।१०।४
७. अभिष्टौति,
उ०सा०-१०।४९।११, उ०वे०सा०- १०।७।२, स्क०-१।४८।१४, ५४।७, स्क०वे०-१।४२।१०, वे०सा०- ७।३८।४, १०।१५।६
८. स्तुतीरभिलक्ष्य सम्यक् स्तुतमिति शब्दय,
सा०मु०- १।४८।१४
९. अभिमुखीकरणाय शंसति,
सा०मु०- १।५४।७
१०. अभिवदति,
वे०- १।५४।७, सा०- २।४३।१
११. आभिमुख्येन वदन्ति,
सा०- १।१००।९७
१२. आभिमुख्येनोच्चारयन्ति
स्क०- १।१००।१७
१३. उच्चारयन्ति,
वे०- १।१००।९७
१४. आभिमुख्येन ब्रूहि प्रयच्छेत्यर्थः,
सा०- २।९।४, १०।१३९।५ (अभिमुखं ब्रवीतु)
१५. अभिप्रयच्छ,
वे०- २।९।४
१६. प्रशंसतः,
उ०सा०- १०।७।२, वे०सा०- १०।१५।६, सा०- ३।६।१०
१७. यज्ञे यज्ञे प्रोत्साहार्थम्,
सा०- ३।६।१०
१८. इदं गृहाणेदं गृहाणेति यथा मां ब्रवीति,
सा०मु०- ५।२७।३
१९. इदं ददामिति वदतीत्यर्थः,
वे०- ५।२७।३
२०. प्रति ...स्तुवन्ति,
सा०मु०- ५।७९।४
२१. अनुमन्येताम्,
उ०वे०- १०।४७।८

अभि-गीत

स्तोतृभिरभिष्टुतः,
वे०सा०- ९।९६।२३

अभि-जिघ्रन्ती

अभिघ्राणं कुर्वन्त्यौ स्पृशन्त्यौ,
सा०- १।१८५।५

अभि√चक्ष्

१. अभिप्रकाश्य प्रकाशवन्ति कृत्वा,
सा०मु०- १।९२।९
२. दर्शयित्वा। प्रकाश्येत्यर्थः
स्क०- १।९२।९
३. दर्शयित्वा,
वे०- १।९२।९
४. द्रष्टव्यानां पदार्थानामाभिमुख्येन प्रकाशनार्थम्,
सा०मु०- १।१०२।२
५. प्रकाशाय दर्शनाय,
स्क०- १।१०२।२
६. अभिदर्शनाय
स्क०- १।११५।५, वे०- १।१०२।२, ११५।५ (दर्शनाय)
७. आभिमुख्येन पश्यति,
सा०मु०- १।१०८।१

८. आभिमुख्येन प्रकाशनाय,
सा०मु०- १।११५।५
९. अभिपश्यति। अगतस्य दर्शना-सम्भवात् दर्शनेनात्र तद्धेतुभूतं गमनं लक्ष्यते,
स्क०- १।१०८।१
१०. अभिपश्यति,
स्क०वे०- ६।५१।२, वे०- १।१६४।४४, १९०।६, २।४०।५, ३।५४।६, ५९।१, वे०सा०-५।३।९, ७।६१।१, ८।१०१।६, १०।८५।१८, ९२।१५, १३९।३, सा०-७।७०।५
११. सर्वतः पश्यति,
सा०- १।१६४।४४, ३।५४।६, ५९।१,
१२. प्रकाशयति,
सा०- १०।१३९।३
१३. अभितः ... प्रकाशयति,
सा०- ६।५१।२
१४. आभिमुख्येन बोधयन्ति,
सा०- १।१९०।६
१५. अभिवदन्ति,
सा०- १।१९०।६
१६. वदति,
वे०- ७।१०४।८
१७. निन्दति,
सा०- १।१९०।६
१८. अभिद्रष्टुम्
वे० - ५।३१।१२, (अभिदर्शनार्थम्), सा० - ८।१।३४ (दृष्ट्वा), ८।४।७ (अभिदर्शनीयम्), सा०मु० -५।३१।१२
१९. अभिमृश्य,
वे०- ८।१।३४
२०. अभिशंसति। मय्यसत्यवचन-मारोपयति,
सा०- ७।१।०४।८
२१. अभितः ख्यापनीयं स्तोतव्यम्,
सा०- ८।४।७
२२. अभिलक्ष्य ...पश्यन्ति। जानन्ति,
सा०- १०।१०७।४

अभि√चर्

१. कार्ष्टेत्यर्थः,
उ०- १०।३४।१४
२. गच्छत,
सा०- १०।३४।१४

अभि√जन्

अभिलक्ष्य प्रादुर्भवन्ति,
सा०- १।१६८।२

अभि√जुष्

१. सेवते,
वे०- ४।२३।४
२. अभिसेवेत,
सा०- ४।२३।४, ३३।९

अभि-ज्ञु

१. अभिगतं जानु यस्मिन् उत्तानने तदभिज्ञु। निपात्य जानुं महता यत्नेने-त्यर्थः,
स्क०- १।३७।१०
२. अभिगते जानुनी यस्मिन् उपसदने तत् अभिज्ञु। भूमौ जानुनी निपात्योप-सीदन्तीत्यर्थः,
स्क०- १।७२।५
३. अभिगतजानुकम्...उत्क्षिप्तपादाः,
वे०-१।३७।१०,७२।५, (अभिगतजानुकः), वे०सा०- ३।३९।५, ७।२।४, ८।९२।३
४. जान्वाभिमुख्यं यथा भवति,
सा०- १।३७।१०। मु०- १०।३७।१० (जान्वाभिमुखं यथा भवति)
५. अभिमुख्येनावस्थितजानुयुक्तम्,
सा०मु०- १।७२।५

अभि√तन्

१. विस्तारयति,
वे०- ५।५४।१५ (विस्तृता भवाम), सा०- १।१६०।५ (अभितो विस्तारयाम), ८।६।२५ (अभिविस्तारयसि), मु०- ५।५४।१५ (विस्तारयाम)

२. अभिभवेम,
वे०- १।१६०।५

३. परिभवसि,
वे०- ९।१०८।६

४. अभितो व्याप्नोषि,
सा०- ९।१०८।६

अभि √तस्

१. अभि गच्छन्ति,
वे०- ४।५०।२

२. आत्मानमुपक्षिपन्ति,
वे०- १०।८९।१५ (अभिक्षिपन्ति), सा०- ४।५०।२, १०।८९।१५ (निक्षपन्ति)

३. स्तुवन्ति,
सा०- ४।५०।२

अभि√तृद्

१. प्रकाशितवानसि,
सा०-६।१७।१, ६।१७।२,३ (प्रकाशय)

२. अभि ... तृण्णवान् असि,
वे०- ६।१७।१, वे०सा०- ९।११०।५

३. हिंसितुमैच्छन्,
सा०- १०।७४।४

४. अभिहिंसन्ति,
उ०- १०।७४।४

५. हिनस्ति,
सा०- ८।१०३।५

६. सर्वतो हिंसितवान्,
सा०- ८।७७।५

७. अभिलक्ष्य उपेक्षां कुर्वन्,
सा०- ३।३१।५

८. वर्षणार्थमवधीदित्यर्थः,
सा०- २।२४।४

अभि√तॄ

१. अभिगच्छतः,
वे०- १।१४०।३

२. आभिमुख्येन प्राप्नुतः,
सा०- १।१४०।३

अभि√त्सर

अभिमुखं कुत्सितं गच्छन्ति। सम्यक् स्तोतुं न शक्नुवन्तीत्यर्थः,
सा०- ८।२।६

अभि√दभ्

१. अभिदम्भितुम् इच्छन्,
वे०- २।२३।१०, १३

२.अभिदम्भितुमभिभवतुमिच्छुः पुरुषः,
सा०- २।२३।१०

३. अभिभवनेच्छावतीः,
सा०- २।२३।१३

अभि-दस्यु

१. दस्युः ... आभिमुख्येन,
उ०- १०।२२।८

२. उपक्षपयिता अभि,
वे०- १०।२२।८

३. उपक्षपयिता आभिमुख्येन स्वरूपतः,
सा०- १०।२२।८

अभि√दास्

१. अभि हिनस्ति,
वे०- १।७९।११, ७।१०४।७। वे०सा०- १०।२७।२३

२. अभिहन्ति,
सा०- ७।१०४।७
३. उपक्षयति। बाधते.
वे०सा०- १०।१३३।५ (उपक्षयति), सा०मु०- ६।५।४
४. उपक्षपयति,
सा०-१०।१५२।४ (अभितः उपक्षपयति), सा०मु०- १।७९।११

अभि-दासत्

१. उपक्षपयितुः,
वे०- १०।१०२।३, सा०- १०।१५२।३
२. अभिक्षपयतः,
वे०- १०।१५२।३
३. अभिद्रुह्यतः,
सा०- १०।१०२।३

अभि√दी

१. अभि प्रयच्छ
वे०- ९।१०८।९
२. आभिमुख्येन प्रकाशय। प्रयच्छेत्यर्थः,
सा०- ९।१०८।९

अभि√दीधि

१. अभिदीपय तीक्ष्णां कुरु,
वे०- ३।३८।१
२. अभि धारय,
वे०- १०।३२।४
३. सर्वतो दीप्तां कुरु,
सा०- ३।३८।१
४. अभितो दीप्यस्व,
सा०- १०।३२।४

अभि-द्यु

१. अभिगतैश्वर्यदीप्तयः,
उ०- १०।७८।४
२. अभिगतदीप्तयः,
उ०वे०सा०- १०।७७।३, स्क०वे०- १।५३।५, स्क०वे०सा०- ६।५१।१५, स्क० वे०सा०मु०- १।११९।१०, वे०- १।१२७।७, १३४।२, वे०सा०- ८।४।२०, ७।२५, ७५।६, ८३।९, वे०सा०मु०- १।४७।४
३. अभिगता दीप्तिर्यैस्ते अभिद्यवः। ब्राह्मया दीप्त्या दीप्ता इत्यर्थः,
स्क०- १।४७।४
४. अत्यन्तदुष्प्रापः प्राप्तः यागाहो यैस्ते अभिद्यवः,
स्क०- १।४७।४
५. अभिद्योतमानैः,
वे०- १।६।८, सा०-१।१२७।७ (अभितो द्योतमानाः), ३४।२ (अभितः द्योतयन्तः)
६. अभितो दीप्यमानैः,
सा०मु०- १।५३।५
७. अभिगन्तारः,
सा०- १।१३४।२
८. अभितो द्यवो दिवसा येष्वित्यभिद्यवोऽर्धमासाश्च,
सा०- ३।२७।१
९. द्युलोकमभिगतैः,
सा०मु०- १।६।८

अभि√द्रा

१. अभि गच्छति,
वे०- ८।४७।७
२. कुत्सितं नागच्छति। न हिनस्तीत्यर्थः,
सा०- ८।४७।७

अभि√द्रु

१. प्रति द्रुतवान् निष्पादनार्थं कुल्यात्मना गतवान्,
उ०- १०।७५।२

२. अभ्यगच्छ,
सा०- १०।७५।२

अभि√द्रुह्

१. सर्वतो बुद्धिपूर्वकं द्रोहं कृतवानस्मि,
सा०मु०- १।२३।२२
२. अभितो द्रोहम्,
सा०मु०- १।५।१०

अभि-द्रु

१. अभिद्रोग्धुः,
वे०- २।२७।१६
२. अभितो द्रोहं कुर्वते राक्षसादये निर्मिताः
सा०- २।२७।१६

अभि-द्रोह

१. अपकारजातम्,
सा०- ७।८९।५
२. अभितो द्रोहकं पापं दुःस्वप्नकारणम्,
सा०- १०।१६४।४

अभि√धन्व्

अभिगच्छन्ति,
वे०सा०- ९।२४।२

अभि√धा

१. आभिमुख्येन दत्तम्,
स्क०- १।१२०।८
२. आभिमुख्येन या स्थापयतम्,
सा०-१०।४।६ (स्थापयतः), सा०मु०- १।१२०।८
३. अभिदत्तम्,
वे०- १।१२०।८
४. देवानुद्दिश्य विधत,
सा०- ७।३४।९
५. अभिधावनं कुरुत,
सा०- ८।६७।५
६. बध्नीतः,
वे०- १०।४।६
७. परिधातुमिच्छति,
वे०सा०- १०।८५।३०
८. अभितो धारयामि,
सा०- १०।१४५।६

अभि-हित, ता

यूपं प्रापितः,
सा०मु०- ५।५०।४

अभि√धाव्

अभिगच्छति,
सा०- ९।२८।४, ३७।६, ६०,३

अभि√ध्मा

१. अभिघ्नन्तौ,
स्क०सा०मु०- १।११७।२१
२. घ्नन्तौ,
वे०- १।११७।२१

अभि√नक्ष्

१. अभि व्याप्नोति,
स्व०वे०सा०मु०- १।९५।१०
२. हविषा परिचरति,
सा०- २।२०।२
३. अभितो गच्छन्तः
वे०-२।२४।६ (अभि गच्छन्तः), ८।९६।५
वे०सा०- ६।३४।३, सा०- २।२४।६
४. अभिप्राप्नुवन्ति,
सा०मु०- ५।१५।२
५. व्याप्नुवन्ति,
वे०- ५।१५।२, स्क०- ६।३४।३
६. अभितः इन्द्रं स्तुतिभिर्हविर्भिर्गच्छन्तः,
सा०- ८।९६।५

अभि-नक्षमाण

१. अभिगच्छन्तो व्याप्नुवन्तो वा,
उ०- १०।१७।९
२. अभिव्याप्नुवानाः,
वे०- १०।१७।९
३. अभितो गच्छन्तो व्याप्नुवन्तः,
सा०- १०।१७।९

अभि-नभ्य

१. नभ्ये,
वे०- १०।११९।१२
२. आभिमुख्येन प्राप्नुवन्त,
सा०- २।२७।१४, ४।२३।४
३. अभि व्याप्नुवन्तु,
स्क०- ६।४९।८, वे०- २।२७।१४, ४।२३।४, वे०सा०- ७।१०४।२३
४. प्राप्नोतु,
सा०- ६।४९।८
५. व्याप्नोति,
वे०- ६।४९।८
६. अभितो व्याप्नोति,
वे०सा०- ८।२०।१६

अभि-नि√क्रम्

निकृष्टं नितरां वा अभिभव,
सा०- १०।६०।६

अभि-नि√वृत्

१. अस्मान् प्रति निवर्ततताम्,
स्क०- १।८९।२
२. आभिमुख्येन नितरां वर्तताम्,
सा०- १।८९।२

अभि-नि√हन्

१. आभिमुख्येन नि जघान
वे०- ६।१७।९
२. अभि ....न्यवधीत्,
सा०- ६।१७।९

अभि नि√इ

१. अभि गच्छतु,
वे०- १०।१४९।४
२. नितरामभिगच्छतु,
सा०- १०।१४९।४

अभिन्न

१. अप्रतिहते,
वे०- ६।२८।२
२. शत्रुभिरभेद्ये,
सा०- ६।२८।२

अभि√पत्

१. अभिलक्ष्य ...गच्छति,
वे०- ८।१०२।९
२. अभिगच्छति,
सा०- ८।१०२।९

अभि-पत्यमान

१. अभिगच्छन्तः,
वे०- १०।१३२।३
२. अभिपतन्तः,
सा०- १०।१३२।३
३. अभिप्राप्नुवन्तः,
सा०-१०।१३२।३

अभि-पद्य

१. वेदाध्ययनमेव श्रेयस्करं को वा वेदार्थं विजानाति इत्येवं मन्यमाना,
उ०- १०।७१।९
२. प्राप्य,
सा०- १०।७१।९

अभि√पश्

१. प्रत्यवेक्षत,
स्क०- १।२५।११
२. अपश्यत्,
वे०- ३।४८।३, सा०- ९।९।६

३. सर्वतोऽदर्शत्,
सा०- ३।४८।३
४. अभिमुखं पश्यति,
सा०- ८।२५।७
५. अभितोऽदीपयन्,
सा०- १०।६८।११
६. अभिमण्डितवन्तः,
उ०- १०।६८।११
७. सर्वतोऽवलोकयति,
सा०मु०- १।२५।११

अभि-पश्यन्ती
१. दर्शयन्ती,
वे०- ७।७५।४
२. साक्षित्वेनावलोकयन्ती,
सा०- ७।७५।४

अभि√पा
१. अभि रक्षसि,
वे०- ३।१९।६, वे०सा०- १०।१।३
२. सर्वतः पालयसि,
सा०- ३।१९।६

अभि-पित्व
१. अभिप्राप्तिषु,
उ०वे०सा०-१०।४०।२, वे०- ७।१८।९, ८।४।२१, २७।२०, सा०-१।८३।६, ४।१६।१
२. अभिगमनकालेषु,
सा०- १।८३।६
३. अस्मरभिमतप्रप्तिम्,
सा०- ४।१६।१
४. अभिपतने समाप्तौ। तृतीयसवने,
सा०- ४।३४।५,६, सा०मु०- ५।७६।२ (अभिपतने)
५. अपराह्णे,
वे०- ४।३४।५,६, ५।७६।२
६. अभिप्राप्तव्यम्,
सा०- ७।१८।९
७. पूर्वोक्ते धने अभिप्राप्ते सति,
सा०- ८।४।२१
८. अस्मद्यज्ञं प्रति युष्माकमभिप्राप्तौ,
सा०- ८।२७।२०

अभि-पीप्यान
१. अभ्यष्वजन्त,
वे०- ७।३६।६
२. अभिवर्धयन्त्यः,
सा०- ७।३६।६

अभि √पॄ
१. अभिप्रयच्छत,
वे०- ७।३७।१
२. युष्मदीयं जठरमभिपूरयत्,
सा०- ७।३७।१

अभि-प्र-चक्ष्
१. अभिप्रकाशयितुम्,
स्क०- १।११३।६
२. अभिप्रदर्शयितुम्,
वे०- १।११३।६
३. आभिमुख्येन प्रकाशयितुं व्युच्छन्ती,
सा०मु०- १।११३।६

अभि-प्र√जन्
उत्तरोत्तर ...जायन्ते,
सा०मु०- ५।१९।१

अभिप्र-भङ्गिन्
अभिप्रहर्तुः,
वे०सा०- ८।४५।३५

अभि-प्र√मन्द्
१. विद्याबलेनाभिप्राहर्षयन्
सा०- ७।३३।१
२. अभि प्रकर्षेण मादयन्ति,
सा०- ८।१२।१३

अभि-प्र√मृश्

१. प्रकर्षेणाभिभूतवानसि,
वे०- ४।३०।१३
२. अभितः सर्वतः प्रकर्षेणाबाधथाः,
सा०- ४।३०।१३
३. प्रकर्षेणास्मसु स्थापय,
सा०- ८।२१।१६
४. प्रयच्छेत्यर्थः,
सा०- ८।८१।६

अभिप्र-मुर्

१. अभिप्रमूर्छितया,
वे०- १०।११५।२
२. अभितः समुच्छ्रितेनोद्यतेन,
सा०- १०।११५।२
३. सर्वतो हविर्भिः संवेष्टितेन,
सा०- १०।११५।२

अभि-प्र√स्था

१. प्रपूर्वस्तिष्ठतिर्गत्यर्थः ... अभि-गच्छति,
स्क०- १।७४।८
२. ऐश्वर्यमभिप्राप्य प्रतितिष्ठति, सर्वोत्कृष्टो भवति,
सा०मु०- १।७४।८

अभि-प्री

१. अभिप्रियम्,
वे०- १।१६२।३
२. अभितर्पयितारः,
वे०सा०- ९।३१।३
३. प्रीणयितारम् ... अभि,
सा०- १।१६२।३

अभि√प्रु

१. अभि गच्छन्ति,
वे०- ४।५८।८
२. अभिनमयन्ति निमग्नं कुर्वन्ति,
सा०- ४।५८।८

अभि√प्रुष

१. अभिषिञ्चति,
स्क०- ६।७१।१
२. प्रक्षालयति,
स्क०- ६।७१।१, वे०- ६।७१।१ (अभि प्रक्षालयति)
३. आभिमुख्येन स्थित्वा क्षिप्रं सिञ्चति,
उ०सा०- १०।२३।४
४. सोमं पापयति पिबति च
उ०सा०- १०।२३।४
५. अभि कम्पति
वे०- १०।२३।४
६. अभिप्रेरयति,
सा०- ६।७१।१

अभि√प्रुषाय

१. मर्यादया सिञ्चति,
उ०- १०।२६।३
२. अभिक्षरति,
उ०- १०।२६।३
३. वर्षति,
उ०- १०।२६।३
४. गमयति,
वे०- १०।२६।३
५. मारितवान्,
स्क०- ६।३१।३
६. अभितः क्रीडय,
सा०- १०।१२०।३
७. अस्मानभिलक्ष्य सिञ्चति,
सा०- १०।२६।३

अभि√बाध्

१. अभिभवति,

वे०- ८।५।३४

२. अभिहन्ति,

सा०- ८।५।३४

अभि-भञ्जती

आभिमुख्येन मर्दयन्तीनाम्,

सा०-१०।१०३।८

अभि-भा

अभिभवः,

सा० - २।४२।१

अभि√भू

१. तिरश्चकार,

सा०-४।१६।५

२. अभीत्यनर्थकः। भवति,

सा०-१।१७८।४

३. आभिमुख्येन भवति,

सा०-१।१७८।४

४. अभिमुखो भव,

सा०-४।३१।३

अभि-भू

१. शत्रूणामभिभवित्रे,

वे०-२।२१।२

२. अभिभविता,

सा० ८।९८।२, १०।१५३।५, १६६।४

३. सर्वस्याभिभवित्रे,

सा०-२।२१।२

४. अभिभावुकः,

सा०-८।९७।९

अभिभू-तर

१. अत्यन्तमभिभवितारम्,

वे०-८।९७।१०

२. शत्रूणामत्यर्थमभिभवितारम्,

सा०-८।९७।१०

अभि-भूति

१. अभिभविता,

स्क०वे०-१।११८।९। वे०-६।१९।६, वे०सा०मु०-१।५३।३, सा०-४।३८।१

२. शत्रूणामभिभविता तिरस्कर्ता भवति,

सा०-८।१६।८

३. अभिभवित्री,

सा०-४।३८।९

४. अभिभावुकम्,

वे०-४।२१।१, ३८।१,९, १०।७६।२, ८४। ६, वे०सा०- ४।४१।४, सा०-४। २१।१ (परकीयं बलम्), ६।१९।६, (शत्रूणामभिभावुकम्), १०।७६।२ (शत्रूणामभिभावुकम्), ८४।६ (शत्रूणामभिभावुकम्), सा०मु०- १। ११८।९

अभिभूत्योजस्

१. अभिभवितृबलयुक्तम्,

स्क०-१।५२।७

२. अभिभवितृबलम्,

वे०-१।५२।७, ६।१८।१

३. अभिभवितृबलः शत्रूणाम् अभि-भवनशीलः इत्यर्थः,

उ०-१०।८३।४

४. अभिभूतिः शत्रुविषयोऽभिभवः। तत्रौजो बलमस्येत्यभिभूत्योजाः शत्रूणां पराभवे समर्थः,

सा०-३।३४।६,

५. अभिभवनशीलबलः,

वे०-३।३४।६, ४८।४

६. शत्रूणामभिभवितृणा ओजसा बलेन युक्तम्,
सा०मु०-१।५२।७
७. शत्रूणामभिभवनपराक्रमोपेतः सन्,
सा०-३।४८।४
८. अभिभाविबलः.
सा०-४।४२।५
९. अभिभावुकबलः,
वे०-४।४२।५, १०।८३।४, (शत्रूणामभिभावुकबलः) सा० - १०।८३।४ (परेषामभिभावुकबलः)
१०. आभिभावुक तेजाः,
सा०-६।१८।१

अभि-भूवरी

१. अभिभवनशीला,
वे०- १०।१५९।५
२. अभिभवन्ती,
वे०-१०।१५९।६
३. अभिभवित्री,
सा०- १०।१५९।५, ६

अभि√मद्

१. अर्चतिकर्माऽयम्,
स्क०-१।५१।१
२. अभिलक्ष्य हृष्टा अभूवन्,
सा०-३।३१।१०
३. आभिमुख्येन हर्षं प्रापयत्,
सा.मु०-१।५१।१

अभि√मन्

१. आभिमुख्येन जानाति,
उ०-१०।२६।११
२. विजानाति,
सा०- १०।८६।१९
३. जानामि,
सा०-१०।२७।११
४. अभिपूजयति,
सा०-१०।२७।११

अभि√मन्त्रि

१. अभि उच्चारयामि,
वे०-१०।१९१।३
२. ऐकविध्याय संस्करोमि,
सा०-१०।१९१।३

अभि√मन्द्

१. अभि माद्यसि,
वे०-१०।५०।२
२. अभिष्टूयसे,
सा०-१०।५०।२

अभि-माति

१. अभिमातिशब्दोऽत्र हिंसावचनः,
स्क०-१।२५।१४
२. अभिमानिनः कर्मविघ्नकारिणः शत्रून्,
सा०-३।२४।१, ६२।१५
३. पाप्मानः,
सा०मु०-१।२५।१४
४. शत्रून्,
वे०-३।६२।१५, वे०सा०-१०।१०२।४
५. शत्रूणां हिंसकम्,
सा०मु०-५।२३।४
६. अभिमननशीलम्,
वे०-५।२३।४
७. अभिमन्यत इत्यभिमातिः शत्रुः,
सा०-८।३।२
८. अभिमन्यमानः,
वे०- ८।३।२, वे०सा०- १०।१८।९
९. शत्रुसेनाः,
सा०-८।२४।२४
१०. अभिमानम्,
सा०-८।२५।१५

११. अभिमानिनम्,
वे०-८।२५।१५
१२. अभिभवनशीलमानयुक्तोऽभि-भविता,
सा०-१०।६९।५
१३. अभिभवः,
उ०-१०।६९।५
१४. अभिगमनम्,
वे०-१०।६९।५
१५. अभिगन्तारम्,
वे०सा०-१०।८४।३
१६. अभितो मातिर्मानं येषां तेऽभि-मातयः शत्रवः,
सा०-१०।११६।६

अभिमाति-षाह्

१. शत्रूणां हन्तुः,
सा०मु०-१।९१।१८
२. हिंसतॄणामभिभवितुः,
स्क०-१।९१।१८
३. शत्रूणामभिभवितुः,
वे०-१।९१।१८
४. शत्रून् सहमानाः,
वे०-२।४।९
५. वैरिणां पापादीनां सोढारः,
सा०-२।४।९
६. अभिमातीनां शत्रूणाभभिभवितारः,
सा०- ६१।६९।४, सा०मु०-६।७।३
७. अभिमातीनां सोढारः,
वे०-६।७।३
८. अभिमातयः हिंसाः शत्रुसेनाः वा, तासामभिभवितारः,
स्क०-६।६९।४
९.. शत्रूणां सोढारः,
वे०-६।६९।४

अभिमाति-षाह्य

१. अभिमातीनां सह निमित्तम्,
वे०-३।३७।३
२. मातिर्मानो गर्वः। अभितो मानो येषां तेऽभिमातयः शत्रवः तेषां सहनमेव सह्यम्।,
सा०-३।३७।३

अभिमाति-हन्

१. शत्रूणां हन्तारमिन्द्रम्,
वे०-९।६५।१५ (शत्रूणां हन्ता), सा०-३।५१।३
२. अभिमातीनां हन्तारम्,
वे०-३।५१।३
३. अभितो मातिरभिमानं येषां ते शत्रवः। पापरूपाणां शत्रूणां हन्ता,
सा०-९।६५।१५

अभि√मृश्

१. अभिमर्शनं करोति। फलप्रदानेनेति भावः,
सा०-१।१४५।४
२. विमृशन्,
वे०-३।३८।१
३. देवतामभिलक्ष्य यागार्थं वयमृत्विजः संस्पृशामः,
सा०-१०।१७३।६

अभि√यश्

१. आभिमुख्येन यष्टुमिच्छते,
सा०-९।११।१
२. यष्टुमिच्छते,
वे०-९।११।१
३. अभिगच्छति,
वे०सा०-९।७८।१

अभि-युज्

१. अभियोक्त्रीः,

वे०- ५।४।५, वे०सा०- ३।११।६, ६।२५।२, ८।४५।८

२. अभियोक्तारोऽसुराः,

सा०-४।३८।८

३. अभियोक्ता,

वे०-४।३८।८, ९।२१।२, सा०-५।४।५

४. अभियोजयितारः,

सा०-९।२१।२

अभि-युग्वन्

१. अभियोक्त्रा शत्रूणामभिभवित्रा,

वे०-६।४५।१५। (अभियोक्त्रा), सा०-६।४५।१५

२. अभियोगेन अस्माभिरभियुक्तः सन्नित्यर्थः,

स्क०-६।४५।१५

अभि√युध्

१. अभिलक्ष्य प्रेरय,

सा०मु०-१।९१।२३

२. अभिगमय,

स्क०-१।९१।२३

३. देहि अस्मभ्यम्,

स्क०-१।९१।२३

४. संप्रहरेत्,

उ०-१०।८।८, सा०-४।३८।८

५. सर्वतः अयोधीत्,

वे०-४।३८।८

६. आभिमुख्येन युद्धवान्,

उ०सा०-१०।८।८

७. अभिलक्ष्य ...युद्धं कृतवन्तौ,

सा०-६।६०।२

८. युद्धं कृतवान्,

सा०-६।३१।३

अभि-योद्धृ

१. योद्धा,

वे०-८।८८।४

२. शत्रूणां संप्रहारकः,

सा०-८।८८।४

अभि√रक्ष्

१. अभितो रक्षति

सा०-१।१३६।५, ७।८३।९ (अभितः सर्वतो रक्षति)

२. अभितः पालयन्ति,

सा०-१।१६३।५, ९।११४।४

३. परिपालयतु,

सा०- ४।५३।५, १०।८६।४

४. अवितं करोति

सा०-९।७३।३

५. सर्वं जगदभिपश्यन् पालयति

सा०-१०।१७०।१

अभि-रक्षमाण

१. अभितः सर्वतो रक्षन्तः,

सा०-१०।१५७।४

२. बाधकाभावात् सर्वत्र प्रख्यापितवन्तः,

सा०-१०।१५७।४

अभि-राष्ट्र

१. अभिगतराष्ट्रः,

वे०-१०।१७४।५

२. अभिगतराष्ट्रः प्राप्तराज्यः सन्,

सा०-१०।१७४।५

अभि√वन्

१. संभक्तवत्यः। सेवितवत्यः,

स्क०-१।५१।२

२. अभ्यसेवन्त,

वे०-१।५१।२

३. *आभिमुख्येन खलु अभजन्त,*
सा०मु०-१।५१।२

अभि√वप्
१. *अभिवपनं कुर्वन्ति, वपन्ति*
वे०-७।५६।३
२. *संगच्छन्ते,*
सा०-७।५६।३

अभ्युप्या
१. *अभिवपनम् उपरि प्रक्षेपः,*
वे०-२।१५।९
२. *संयोज्य,*
सा०-२।१५।९

अभि वयस्
१. *अभिगतान्नम्,*
वे०-१०।१६०।१
२. *वय इत्यन्ननाम। अभिगतं चरु-पुरोडाशाद्यन्नं यस्य तादृशस्य सोमस्य,*
सा०-१०।१६०।१

अभि√वश्
१. *अभि कामयते,*
वे०-२।१४।९, ४।१।८
२. *अभि भवति,*
वे०-२।२५।३
३. *कामयते,*
सा०-२।१४।९, ४।१।८
४. *हन्तुमभितः कामयते,*
सा०-२।२५।३

अभि√वस्
१. *आच्छादय,*
वे० - ९।७५।५, सा० - ९।७५।५
(आच्छादय। संयोजयेति यावत्)
२. *अभितिष्ठति,*
सा०-१।१६०।२
३. *अभितः आच्छादयामः,*
सा०-९।१०४।४

अभि√वह्
१. *वहताम् ...प्रति*
वे०-८।३२।२९
२. *अभिलक्ष्य इन्द्रं वहताम्, प्रापयताम्,*
सा०-८।३२।२९
३. *अभिलक्ष्य इन्द्रं वहताम्*
सा०-८।९३।२४
४. *प्रापयताम्*
सा०-८।९३।२४
५. *अभिक्रम्य व्याप्य वहति, व्याप्नोति,*
सा०-१।१४६।२

अभि√वा
अभिगच्छतु,
सा०-१०।१६९।१

अभि-वि√चक्ष्
१. *अभि वि पश्यति,*
वे०-३।५५।९
२. *विशेषेणानुग्रहदृष्ट्या पश्यति,*
सा०-३।५५।९

अभि√विज्
१. *विविक्ता भिन्ना भवतु,*
वे०-१।१६२।१५
२. *अभितो ... चीचलत् तापातिशयेन ...नीनशदित्यर्थः,*
सा०-१।१६२।१५

अभि-वेग
१. *अर्थिनं प्रति मनसोऽभिचलनम् अभिगमनं वृत्तिविशेषः,*
उ०-१०।२७।१
२. *अभिगमनं मनसो वृत्तिविशेषः*
सा०-१०।२७।१

अभि-वि√दिव्

१. लक्षीकृत्य वि द्योतते,
वे०-४।४।६,
२. अभिलक्ष्य ...विशेषेण द्योतस्व,
सा०-४।४।६

अभि-वि√पश्

१. आभिमुख्येन विविधं पश्य,
वे०-३।२३।२
२. अभिमुखो भूत्वा अस्मन्विशेषेणानु-ग्रहदृष्ट्या वीक्षस्व,
सा०-३।२३।२

अभि-वि-√भा

मानुषीः प्रजाः प्रति वि भाति
सा०-७।५।२

अभि-वि√या

१. विविधं गच्छति,
स्क०-१।४८।७
२. अभि विविधं याति,
वे०-१।४८।७
३. मनुष्यानुद्दिश्य ...विशेषेण गच्छति,
सा०मु०-१।४८।७

अभि-वि√ष्ठा

१. विविधं गच्छसि,
वे०-५।८।७
२. अभिमुखं प्रतिष्ठत,
सा०-६।२१।७
३. अभिभवति,
वे०-६।२१।७
४. अभिव्यज्य वर्तसे,
सा०-५।८।७

अभि-वीता

१. अभिकान्तम्
वे०-७।२७।४
२. अभिप्राप्ता,
सा०-७।२७।४

अभि-वीर

१. अभिगताः वीराः वीर्यवन्तोऽनुचराः यस्य सः,
सा०-१०।१०३।५
२. अभिगतवीरः,
वे०-१०।१०३।५

अभीवृत, ता

१ परिवृतम्,
उ०-१०।७३।२, वे०-१।३५।४, १६४।२९, ३।४४।५, ६।७०।४, ८। १००।९, १०। १७६।३ वे०सा०-८। ३९।५, १०।७३।२ (परिवृतानि परिवेष्टतानि)
२. अभितो वर्तमानम्,
सा०मु०-१।३५।४
३. अभितो व्याप्ता अधिष्ठितेव्यर्थ ... अभिव्याप्ता,
सा०-१।१६४।२९, ६।७०।४ (आवृते भवतः)
४. आच्छादिते,
स्क०-६।७०।४
५. ऋत्विग्यजमानैरावेष्टितः,
सा०-१०।१७६।३
६. सुवर्णखचितम्,
स्क०-१।३५।४

अभि√वृत्

१. वर्तते ... प्रति,
वे०-१।१८३।२
२. देवयजनभूमिं प्रति गच्छति,
सा०-१।१८३।२
३. अभितो निवर्तयत्,
सा०-२।३४।९

४. *अभिगमय*
सा०-१०।१७४।१, ३ (अभिगमयतु)
५. *अभिभूतान् कुर्वन्तो वर्तन्ते स्म,*
सा०मु०-५।३१।५

अभिवृत्य
अभितो गमयित्वा,
सा०-१०।१७४।२

अभीवर्त
१. *अभितः सर्वत्र वर्तमानः,*
सा०-१०।१७४।३
२. *अभिवृत्तो भवसि,*
वे०-१०।१७४।३
३. *अभिगच्छत्यनेनेत्यभीतवर्तः,*
सा०-१०।१७४।१
४. *अभिवर्तमानेन,*
वे०-१०।१७४।१

अभि√वृध्
१. *अभि भवति,*
वे०-२।१७।४
२. *सर्वतः प्रवृद्धोऽभवत्,*
सा०- २।१७।४
३. *अभिमतफल प्रदानेनाभितो वर्धयसि,*
सा०-३।४४।२
४. *लक्षीकृत्य वर्धसे,*
वे०-३।४४।२, ५।४४।५
५. *अभिमुखं अभिवर्धय,*
सा०मु०-५।४४।५
६. *प्रवृद्धोऽभूत्,*
सा०- ९।४७।१

अभि√वृष्
अभिषिञ्चति,
सा०-७।१०३।३

अभि-वृष्ट, ष्टा
पर्जन्येनाभिषिक्तः,
सा०-७।१०३।४

अभिवेनत्
कामयमानाः,
वे०सा०-१०।१२३।६

अभि√व्ये
१. *निधेहि,*
वे०-३।५३।१९
२. *अभितस्तत्तत्स्थानेषु दाढ्यार्थं निधेहि,*
सा०-३।५३।१९

अभि-व्रजत्
१. *अभिगच्छन्,*
वे०-१।५८।५, ९।६८।३
२. *आभिमुख्येन गच्छन्,*
सा०मु०-१।५८।५,
३. *अभितो सर्वतो गच्छन्,*
सा०-९।६८।३
४. *अनुष्ठानार्थमभितः संचरद्भिः ज्ञेयम् अर्थम् अभिगच्छद्भिर्वा तदर्थम्,*
सा०-१।१४४।५
५. *उपरि व्रजद्भिः,*
वे०-१।१४४।५

अभिव्लग्य, ग्या
१. *अभितो गत्वा,*
सा०-१।१३३।१
२. *अभिप्लुत्य,*
वे०-१।१३३।१, २
३. *अभितः प्राप्य,*
सा०-१।१३३।२

अभि-व्लङ्ग
१. *अभिप्लवनैः,*
वे०-१।१३३।४

२. अभिगमनैः,
सा०- १।१३३।४

अभि-शस्

अभिगताभिलाषेण,
सा०-१०।१६४।३

अभि-शस्ति

१. हिंसाहेतोः,
सा०मु०-१।७१।१०
२. हिंसातः,
स्क०-१।७१।१०, ६।४२।४ (हिंसायाः), वे०-८।८९।२ (हिंसायाः)
३. अभिहिंसितुः,
उ०-१०।३९।६ (अभिहिंसायाः), स्क०-१।९१।१५,
४. अभिशंसनात् अभिशापरूपात् निन्दनात्,
सा०-८।१९।२६। (अभिशंसनाय मिथ्यापवादाय हिंसायै वा), सा०मु०-१।९१।१५
५. अभिशंसनात्,
वे०-१।९१।१५, ३।३०।१, सा०- ७।९४।३
६. तत्कृतां हिंसाम्,
सा०-३।३०।१, ६।४२।४ (अभिशंसनात् तत्कृताद्धिंसनात्)
७. अभितो हिंसा येषां ते। तादृशान्,
सा०-८।८९।२, ८।६६।१४ (निन्दायाश्च सकाशात्)
८ अभिशंसकात् शत्रोः,
सा०-७।१३।२
९. अभिशंसकाद् वृत्रात्,
सा०-१०।१०४।९
१०. ब्रह्महत्यायाः,
वे०-१०।१०४।९

अभिशस्ति-चातन

१. रक्षसां चातयिता,
वे०-३।३।६
२. अभिशस्तीनामरातीनां यज्ञविघ्नकारिणं रक्षसां चातयिता नाशयिता,
सा०-३।३।६

अभिशस्ति-पा

१. अभिशंसकेभ्यः शत्रुभ्यः पालयितारम्,
सा०-६।५२।३
२. अभिशस्तेः पाता,
वे०-९।२३।५
३. अभिशस्तेः पाता। अभितो हिंसा ततो रक्षक इत्यर्थः,
सा०-९।२३।५
४. अभिशस्तेः परिरक्षकः,
वे०-९।९६।१०
५. अभितः शस्तिर्हिंसा येषां तेऽभिशस्तयः शत्रवः, तेभ्यः परिरक्षकः,
सा०- ९।९६।१०

अभिशस्ति-पावन्

१. हिंसितुः हिंसातो वा रक्षिता,
स्क०-१।७६।३
२. उपद्रवस्य रक्षकः,
वे०-१।७६।३
३. अभिशंसकात् शात्रवात् पावा रक्षिता,
सा०-७।११।३
४. अभिशस्तिभ्यो रक्षिता,
वे०-७।११।३
५. हिंसायाः पाता रक्षिता,
सा०मु०-१।७६।३

अभि√शास्

१. गच्छतेति आचष्टे,
स्क०-६।५४।२
२. आभिमुख्येन बोधयति,
सा०- ६।५४।२

अभि√शुच्

१. अभिसन्तपः,
उ०-१०।१६।१
२. अभितपतु,
सा०-६।५२।२
३. अभिदहतु,
सा०-६।५२।२
४. अभितः शोकेन संतापेन युक्तं कुरु,
सा०-१०।१६।१

अभि√श्नथ्

१. अभिबाधमानात,
वे०-१०।१३८।५
२. अभितो हिंसकाद् वज्रात् सर्वं शत्रुजात्,
सा०-१०।१३८।५

अभि-श्री

१. आश्रयणीयः,
स्क०-१।९८।१, ६।७०।१
२. अभिश्रयणीयः,
वे०-१।९८।१, वे०सा०- ६।७०।१,
सा०- ६।९१।३
३. अभिश्रयणीयः आभिमुख्येन सेवितव्यः सन्,
सा०मु०-१।९८।१
४. अभिश्रयितारम्,
वे०-८।४४।७
५. अभिश्रयितारमीड्यम्,
सा०-८।४४।७
६. अभिश्रयन्तम्,
वे०-८।७२।१३
७. अभिश्रयन्तम्। अग्निसंयोगात्तावत्पर्यन्तं प्रवृद्धमित्यर्थः,
सा०-८।७२।१३
८. अभिश्रयन्तः,
वे०सा०- ९।७९।५
९. अभिश्रिता आश्रिता,
सा०-१०।१३०।५
१०. अभि सम्भर्त्री,
वे०-१०।१३०।५
११. अभिगन्ता,
वे०-७।९१।३
१२. अभिगमनस्वभावे,
वे०-१।१४४।६
१३. प्राप्तैश्वर्ये,
सा०-१।१४४।६
१४. अभितः सेव्ये,
सा०-१।१४४।६
१५. अभितः सोमं श्रयन्त्यः,
वे०सा०, ९।८६।२७
१६. अभितो गाः श्रयन्तो गोभिः श्रिताः,
सा०-९।८६।२७
१७. अभिसेवकाः,
सा०-१०।६६।८
१८. आभिमुख्येन सेवितारः,
उ०-१०।६६।८
१९. यज्ञानां सेवितारः,
वे०-१०।६६।८

अभि√श्रिष्

१. अभिश्लेषेण श्लेष्मणा। येन विच्छिन्नः पुनः सन्धीयते तच्छ्लेष्म,
वे०-८।१।१२

२. अभिश्लिषोऽभिश्लेषणात् संधान-द्रव्यात्,
सा०-८।१।१२

अभि√श्री

१. स्वकीयेन पयसा संस्कुर्वन्तीत्यर्थः,
सा०- ९।१।९
२. समस्कुर्वन्नित्यर्थः,
सा०-९।११।२
३. श्रयणं कुर्वन्ति,
सा०-९।८४।५
४. अभित आच्छादयन्ति,
सा०-९।९३।३

अभि-श्रीणत्

अभिसंयोजयन्,
सा०-९।९७।४३

अभि-श्राव

१. अभितः सर्वतः श्रवणाय,
सा०-१।१८५।१०
२. अभिश्रवणार्थम्,
वे०-१।१८५।१०
३. आभिमुख्येन श्रूयते इत्यभिश्रावः.
उ०- १०।१२।१। सा०-१०।१२।१ (आभिमुख्येन श्रूयत इत्यभिश्राव आह्वानम्)
४. श्रवणयोग्ये,
वे०-१०।१२।१

अभि-श्वसत्

१. नासिकाश्वाससदृशं शब्दं कुर्वन्,
वे०-१।१४०।५
२. सर्वतः चेष्टमानः,
सा०-१।१४०।५

अभि-श्वसस्

आभिमुख्येन श्वसतः,
सा०-१०।९२।८

अभि√षच्

१. आभिमुख्येन सेवन्ताम्,
सा०मु०-१।२२।११
२. अभिसेवन्ताम्,
स्क०-१।२२।११, वे०-४।४४।२, ७।६७।३, ९।७४।७, वे०सा०मु०- ५।३१।२, सा०- ७।९०।५
३. सेवते,
सा०-७।६७।३, ७२।१
४. आभिमुख्येन समवयन्ति प्राप्नुवन्ति,
सा०मु०- १।७१।७
५. प्राप्नुवन्ति,
सा०-४।४४।२
६. अभितः समवयन्ति,
सा०-३।४०।७, ९।७४।७ (अभितः समवैति)
७. हूयमानान्यभिगच्छति,
स्क०-१।७१।७
८. सर्वतः समगच्छन्,
सा०-३।३१।४
९. आभिमुख्येन संगतो भव,
सा०-३।५३।१७
१०. शीघ्रगमनाय,
वे०-३।५३।१७

अभि-षाच्

१. शत्रूणामभिभवितारम्,
सा०-३।५१।२
२. अभिसम्भक्तारम्,
वे०-३।५१।२
३. शत्रूणामभिभावुकान्,
सा०-६।६३।९
४. शत्रूणामभिसोढॄ,
वे०-६।६३।९

५. यथा-यथाऽश्वारोह इच्छति शनैः शीघ्रं वा तथा-तथा वोढूनित्यर्थः,
स्क०-६।६३।९
६. यज्ञमभितः सेवमानाः,
सा०-७।३५।११
७. आभिमुख्येन सेवन्तः,
वे०-१०।६५।१४
८. अभिगन्तारः,
वे०-७।३५।११
९. आभिमुख्येन यज्ञं समवयन्तः संगतवन्तः,
सा०-१०।६५।१४

अभि√षद्

नाशयितुमभिगच्छति,
सा०-९।७।५

अभिषात

१. मरुद्दत्ता आपः,
वे०-५।४१।१४
२. मरुद्भिः संभक्ताः,
सा०मु०-५।४१।१४

अभि√षह्

१. अभिभवति,
वे०सा०मु०-५।२३।१, सा०- १०।१५९।१
२. अतिशयेन अभिभव,
स्क०-६।४५।१८
३. अत्यन्तम् अभिभव,
वे०-६।४५।१८
४. अत्यर्थमभिभव,
सा०-६।४५।१८
५. जघान। तमवधीदित्यर्थः प्रसङ्गादवगम्यते,
सा०-८।९६।१५
६. अभि प्राप्नुयाम्,
वे०-१०।१५९।१

अभिषाह्वस्

१. अभिभवन,
वे०-९।२०।१
२. शत्रूणां सोढा... अभिभवतीति,
सा०-९।२०।१

अभिषेहान

अभिभवन्,
वे०सा०-८।३७।२

अभीषाह्

१. अभिषहमाणः,
वे०-७।४।८
२. शत्रूणामभिभविता,
सा०-७।४।८

अभि-षिञ्चत्

१. सिच्यमानः,
स्क०वे०-१।१२१।६
२. अभिलक्ष्य ... सिच्यमानः,
सा०मु०-१।१२१।६

अभिषेण

१. अभिगतसेनान्,
स्क०वे०-६।४४।१७
२.अस्मान्प्रत्यभिगताः सेना येषां तादृशानस्मदभिमुखम्,
सा०-६।४४।१७

अभि-ष्टन

१. अभिष्टनः स्तनयित्नुशब्दः,
स्क०-१।८०।१४
२. सिंहनादे,
वे०सा०मु०-१।८०।१४

अभि-ष्टि

१. अभ्येषणानि,
उ०-१०।९।४, वे०-१।११९।८, १२९।१, ९, १५८।१, ४।१६।४, ३१।१०, ६।३३।५,

६७।११, ८।३।२, १९।२०, १०।६१।२२,
वे०सा०-७।१९।८, सा०-७।१९।९
२. सर्वैः प्राणिभिः अभ्येषणीयाः,
वे०सा०- १०।१००।१२ (अभ्येषणीयः),
सा०मु०- १।११९।८
३. अभितः एषणैः,
सा०-१।१२९।९
४. अभ्येषणशीलः,
वे०सा०-१०।१००।१२
५. अभ्येषणार्थम्,
वे०-७।१९।९
६. अभ्येषणीयाभिः प्रार्थनीयाभिः,
सा०-८।३।२
७. अभ्येषणसाधनैर्हविर्भिः,
सा०-८।१९।२०
८. युष्मदभ्येषणशीलाभिः युष्मद-न्वेषणपराभिः स्तुतिभिः,
स्क०-१।४७।५
९. अभिगमनैः.
वे०-१।४७।५, वे०सा०-८।६७।१,
सा०-४।३१।१०, ५।४१।९, ६।३३।५,
६७।११, ८।६८।५, १०।६१।२२,
सा०मु०-५।३८।५
१०. अभिष्टिशब्दोऽपि इषेर्गत्यर्थस्य,
स्क०-१।११९।८
११. अभ्यागमने,
सा०-४।१६।४
१२. आगमनैः,
वे०-४।४६।२
१३. अभिगमे,
सा०-४।१६।९
१४. अभिगतवानसि,
वे०- ४।१६।९
१५. अभितो गमनाय,
सा०-१।४४।२, सा०मु०-५।३८।३
१६. अभिलषितसिद्ध्यर्थम्,
वे०-५।१७।५, ३८।३, ८।१२।४,
२७।१३, ६८।५, वे०सा०-२।३४।१४
१७. अभीच्छते,
वे०-८।८।१७, वे०सा०-१०।४९।४
१८. अभिलषितप्राप्त्यर्थम्,
सा०-८।२७।१३
१९. अभिमतसिद्ध्यर्थम्,
वे०-८।२७।१३, १०।९३।११,
वे०सा०- ८।१०१।१
२०. अभिमताय,
वे०सा०-८।६७।१, सा. ८।६७।१०
२१. मत्स्यपक्षे जालनिर्गमनं प्रार्थित-मितरपक्षेऽभिमतमिति विवेकः,
सा०-८।६७।१
२२. अभितः एषणीयैः कामैर्निमित्त-भूतैः,
सा०-४।४६।२
२३. आभिमुख्येन गमनवत्यः,
सा०मु०-१।५२।४
२४. अभिगन्त्र्यः,
स्क०-१।५२।४
२५. अभिगन्ता,
सा०- १।९।१, १०।१०४।१०,
२६. अभिकामिन्यः,
स्क०-१।५२।४
२७. नद्यः,
वे०-१।५२।४
२८. सिंहनादे,
वे०सा०मु०-१।८०।१४
२९. अभिप्राप्तये,
सा०-८।८।१७
३०. अभिमतप्राप्तये,
सा०-१।१२९।१

३१. अभीज्या,
वे०-१०।२२।१२
३२. आभिमुख्येष्टयः इज्याः,
सा०-१०।२२।१२
३३. आभिमुख्येनेष्टयः इज्याः,
उ०-१०।२२।१२
३४. आभिमुख्येच्छा अभीप्सितप्रार्थना,
सा०-१०।२२।१२
३५. अभीच्छा ईप्सितार्थप्रार्थना,
उ०-१०।२२।१२
३६. अपेक्षिताभिः रक्षाभिः,
सा०मु०-१।४७।५
३७. अभीष्टैः फलैः,
सा०-८।१९।२०
३८. आभिमुख्येन पूजितौ,
सा०-१।१५८।१
३९. अभीष्टसाधकौ,
सा०-१।१५८।१
४०. इष्टस्य धनादेरस्माकं लाभायेत्यर्थः,
सा०-८।१२।४
४१. यागः,
उ०-१०।९।४, स्क०-६।३३।५, वे०-९।८४।२, वे०सा०-१०।६।१, ९३।११
४२. यागाभिमुख्येन मम यजमानाय,
उ०-१०।४९।४
४३. यज्ञाङ्गभावाय,
सा०-१०।९।४
४४. प्रार्थना,
स्क०-६।३३।५, ६।६७।११ (प्रार्थनायै लाभर्थमित्यर्थः)
४५. अभियष्टव्यः,
स्क. १।९।१
४६. अभिभवित,
सा०मु०-१।९।१
४७. अभिगन्ता,
सा०-१।९।१, १०।१०४।१०

अभिष्टिकृत्

१. यज्ञकृत्,
सा०-४।११।४
२. यज्ञमानसंबन्धिनामभीष्टानां कर्ता,
सा०-४।२०।१
३. यजमानानामभीष्टस्य फलस्य कर्ता सोमः,
सा०- ९।४८।५
४. यजमानानामभीष्टस्य कर्ता,
वे०-९।४८।५
५. अध्येषणकृत्,
सा०-४।११।४
६. अध्येषणस्य कर्ता,
वे०-४।११।४
७. अभिलषितानां कर्ता,
वे०-४।२०।१

अभिष्टिशवस्

१. अध्येषणशालबलाय,
वे०-३।५९।८
२. शत्रूणामभिगन्तृबलयुक्ताय,
सा०-३।५९।८

अभिष्टिद्युम्ना

१. अध्येषणीयान्नाः,
वे०-४।५१।७
२. अभिगमनमात्रेण द्युम्नं धनं यासां ताः,
सा०-४।५१।७

अभिष्टिमत्

१. अभिष्टिरिच्छा प्रार्थना, तद्वच्च। प्रार्थनीयम्,
स्क०-१।११६।११

२. अन्वेषणवत् च अभ्येष्टव्यम् वरणीयं च
वे०-१।११६।११
३. अभ्येषणयुक्तमाभिमुख्येन प्राप्तव्यम्,
सा०मु०-१।११६।११

अभि√ष्टु

आभिमुख्येन तस्य स्तोत्रं कुरु,
सा०मु०-१।५४।२

अभिष्टुत, ता

१. अभितः सर्वतः स्तुते अभूताम्,
सा०-७।३९।७
२. परितः स्तुतः,
सा०-९।३।६
३. अभितः स्तुतः,
सा०-९।२७।१

अभि√ष्ठा

१. आक्रम्य तिष्ठ,
सा०मु०-१।४२।४
२. आक्राम,
स्क०- १।४२।४, सा०-६।२०।१, सा० मु०-५।२८।३ (आक्रमस्व)
३. अभिगम्याक्रम्य तिष्ठति,
सा०-४।५०।७
४. अभि भवेम,
वे०-१।११०।७, ६।२१।७,
सा०- १०।६९।१२, १७४।२
५. सायंहोमकालेऽभिभूय तिष्ठति,
सा०-१०।३।३
६. अभिमुखं प्रतिष्ठते,
सा०-६।२१।७
७. प्रतितिष्ठ, अस्मदभिमुखो भवेत्यर्थः,
उ०-१०।६९।१२
८. अभित्तिष्ठतिरत्र सामर्थ्याज्जयार्थः। जयेम,
स्क०-१।११०।७
९. अभितः तिष्ठति,
सा०-१।१४९।४, ८।२१।१२, १०।१२३।३

अभि-तस्थिवस्

१. अभि तिष्ठन्तः,
वे०-४।४।९
२. त्वत्प्रसादादात्मसात्कुर्वन्तः,
सा०-४।४।९

अभि-ष्ठित

१. अधिष्ठिताः,
वे०-१०।१६६।२
२. आक्रान्ताः भवन्तु,
सा०-१०।१६६।२

अभि-सम्√स्वृ

१. सङ्गताः अभिष्टुवन्ति,
वे०-८।३।७
२. अभि स्तुवन्ति,
वे०-९।६७।९
३. सम्यगस्तुवन्,
सा०-८।३।७, ९।६७।९

अभि-सत्वन्

१. अभिगतसत्वकः,
वे०-१०।१०३।५
२. अभिगतसत्वा,
सा०-१०।१०३।५

अभि-सं√धा

संयोजय। भक्षयेत्यर्थः,
सा०-१०।८७।३

अभि√सप्

१. अभि स्पृशन्ति,
वे०-७।३८।५

२. अभिलक्ष्य परिचरन्ति,
सा०-७।३८।५

अभि-सम्√ऋ
१. सम् अभि प्राप्नोतु,
वे०-९।७९।३
२. प्राप्नोति,
सा०-९।७९।३

अभिसृष्ट
१. अभि विसृष्टः,
वे०-३।३५।१
२. अनुज्ञातः,
सा०-३।३५।१

अभि√स्नु
१. उपरि पावनार्थं सिच्यमानाः,
उ०-१०।९।४
२. उपरि शुद्ध्यर्थ सिञ्चन्तु,
सा०-१०।९।४

अभि√स्वृ
१. अभिशब्दय,
स्क०-१।१०।४, वे०सा०-९।९७।३
२. अभिलक्ष्य प्रशंसारूपं शब्द कुरु,
सा०मु०-१।१०।४
३. सशब्देन मुखेन पुनः पुनः प्रोत्साहय,
वे०-१।१०।४
४. अभिष्टुवन्ति,
वे०सा०-९।८५।३
५. अभिप्रापयन्ति,
सा०-१।१६४।२१
६. अभि प्रयच्छन्ति,
वे०-१।१६४।२१
७. अभिगच्छ,
स्क०- १।१०।४, सा०- ८।१३।२७, २८
८. प्रेरय,
वे०-८।१३।२७
९. स्वरतिः शब्दार्थ एव। ... स्तोमान् प्रति,
स्क०-१।१०।४

अभि-स्वर्
१. अभितः स्वरः स्वरणं शब्दनं यस्य तेन स्तोत्रेण,
सा०-२।२१।५
२. अभिस्वरणे सति,
वे०-३।४५।२, ८।९७।१२ (अभिस्वरणेन) १०।११७।८ (अनुस्वरणे)
३. अभिस्वरेण स्तोत्रेण प्रणमन्ति,
सा०-८।९७।१२
४. अभिगमने,
वे०-२।२१।५, सा०-१०।११७।८
५. अस्मदाभिमुख्येन प्रेरणे निमित्तभूते सति,
सा०-३।४५।२

अभिस्वर्तृ
१. युद्धार्थं शत्रूणाम् अभिशब्दयितारः,
उ०-१०।७८।४
२. वन्दिनः,
वे०-१०।७८।४
३. अभितः शब्दयितारो वन्दिन इव,
सा०-१०।७८।४

अभि√हन्
१. हतवानसि,
सा०-३।३०।८
२. अभिहतवान्,
वे०सा०मु०-५।२९।२
३. आभिमुख्येन हन्तुमिच्छति,
सा०-७।५९।८

४. जिघांसति,

वे०-७।५९।८

५. मारय,

सा०-७।१०४।१९

अभि√हर्य्

१. प्रेप्सन्ते,

वे०-१०।११२।६

२. अभिकामयन्ते,

सा०-१०।११२।६

अभि√हि

१. अभि प्रेरयन्ति,

वे०-९।१०१।३

२. अभि प्रेरयन्ति। अभिषुण्वन्तीति यावत्,

सा०-९।१०१।३

अभि√हु

१. आभिमुख्येन पापैः ह्रियमाणान्,

सा०-१।१२८।५

२. आभिमुख्येन कुटिलं कुर्वतां द्विषाम्,

सा०-१।१८९।६

३. अभितो ह्रियमाणात्,

सा०-१।१२८।५

४. अभिहन्तुः,

वे०-१।१२८।५

५. आहन्तुः,

वे०-१।१२८।५

६. अभिहिंसित्र्याः,

उ०-१०।६३।११ (अभिहिंसित्र्याः राक्षस-जातेः सकाशात्।) वे०सा०-१०।६३।११

अभिहुति

१. अभिहिंसकात्,

वे०-१।१६६।८

२. अभिभवकारणात् कुटिलस्वभावात्,

सा०-१।१६६।८

अभि√इ

१. अभिगच्छ,

स्क०-१।८०।३, वे०-१।८०।१२, ११५।२, १४०।६, १०।६३।१६, वे०सा०-१।१२३।७, ४।५७।८, ७।१८।१०, १०४।२१, ८।१००।१, ९।६४।३, ९६।२२, ९७।७, १०१।१६, १०।३।३, ८३।३, ११७।८, सा०- ७।१०३।२

२. अभ्यगच्छत्,

वे०-१।८०।१२, ११५।२, १२३।७, १४०।६

३. अभिलक्ष्य गच्छति,

सा०-१।११५।२

४. अभितो गच्छति,

सा०-१।१४०।६

५. आभिमुख्येन गच्छति,

सा०-१।१२३।७

६. हन्तव्यान् शत्रूनाभिमुख्येन प्राप्नुहि,

सा०मु०-१।८०।३

७. हन्तुमाभिमुख्येनागच्छत्,

सा०मु०-१।८०।१२

८. शत्रून् प्रति गच्छ,

उ०-१०।८३।३

९. अभिगतः प्राप्तः,

स्क०-१।८०।१२

१०. अभि प्राप्नोति,

सा०-१०।६३।१६

११. आभिमुख्येन प्राप्नुहि,

सा०मु०-१।८०।३

१२. अभिमुखं गच्छति। अव्यवधानेन गच्छति,

सा०-१।१२४।९

१३. स्वगमत्,

वे०-१।१२४।९

१४. प्रति गच्छ,
उ०-१०।८३।३
१५. सर्वतः याचामहे,
सा०मु०-१।२४।३
१६. अभियाचामहे,
स्क०वे०-१।२४।३

अभीति

१. अभिगतीः,
वे०-२।३३।३
२. अभिगमनम्,
वे०सा०-७।२१।९, सा०-२।३३।३

अभीत्य

१. अभिगम्य,
वे०सा०-४।३२।१०
२. अभिप्राप्य,
सा०-१०।९९।५

अभि√ई

१. अभियाचामहे,
स्क०वे०-१।२४।३
२. सर्वतः याचामहे,
सा०मु०-१।२४।३

अभीक

१. समीपे,
स्क०वे०-१।७१।८, वे०-४।१२।५, ४३।४, १०।५५।१, वे०सा०- ३।५६।४, सा०-१।१८५।१०, ४।१६।१२, १०।६१।६, सा०मु०-१।११९।८
२. गृहसमीपे,
सा०मु०-१।११८।५
३. शत्रुसमीपे,
उ०-१०।३८।४
४. सङ्ग्रामे ,
उ०वे०सा०-१०।३८।४, स्क०-१।११९।८, स्क०वे०-१।१२१।१४, वे०-१।१७४।५, १८५।१०, ३।३९।७, ६।५०।१०, ७।१८।२४, ८५।१, १०।१३३।१, वे०सा०-१।११६।१४, ४।२८।३, ६।२४।१०, सा०-४।१६।१२
५. अभिप्राप्ते समीपवर्तिनि सङ्ग्रामे,
सा०मु०-१।१२१।१४
६. अभ्यक्ते प्राप्ते सङ्ग्रामे,
सा०-६।५०।१०
७. युद्धे,
वे०- ४।१६।१२, २४।४, १०, सा०-७।१८।२४,
८. अभिगते युद्ध,
सा०-७।८५।१
९. अन्तिमे,
वे०-१।११८।५, ११९।८, सा०- १।१८५।१० (अन्तिकनामैतत्। समीपे), ४।१२।५, १०।५५।१ (अन्तिकनामैतत्। समीपे)
१०. आसन्ने यागकाले,
स्क०- १।११८।५, ११९।८
११. आसन्ने देशे,
सा०- १।१७४।५
१२. अभ्यक्तेऽभिगजेऽभिप्राप्ते गर्भ-स्थाने,
सा०मु०- १।७१।८
१३. भयरहिते स्थाने,
सा०- ३।३९।७
१४. अभिगन्तारम्,
वे०-९।९२।५, सा०-९।९२।५ (अभिगमनशीलम्)
१५. अभ्यर्णेऽपि निकटप्राप्तेऽपि केशाकेश्यवस्थायामपि,
सा०- १०।१३३।१

अभीक्ष्

अभिपश्यतः,

वे०सा०-१०।१२१।६

अभीद्ध

१. अभितप्तात्,

सा०-१०।१९०।१

२. अभितः प्रकाशमानात्,

सा०-१०।१९०।१

३. तप्यमानात्,

वे०-१०।१९०।१

४. अभिदीप्तः,

सा०-१।१६४।२६

अभीपतस्

१. आनुकूल्येन

सा०-१।१६४।५२

२. अभिगमनवतः सलिलधारांस्तटा-कादींस्तर्पयन्तम्,

सा०-१।१६४।५२

३. अभिगन्ता,

सा०-१।१६४।५२

४. अभिपततः,

वे०-१।१६४।५२

अभीरु

१. भयरहिताः,

स्क०सा०मु०-१।८७।६

२. अकातराः,

सा०-८।४६।७

३. निर्भयः,

वे०-४।२९।२, सा०-४।२९।२, (निर्भयशीलः)

अभीशु

१. अङ्गुलयः,

सा०मु०-१।३८।१२

२. अश्वप्रग्रहाः,

स्क०वे०-१।३८।१२, ५।६१।२, ६।५७।६

३. रश्मिभिः,

वे०सा०मु०-५।४४।४, सा०- ६।५७।६

४. बन्धनरज्जवः,

सा०मु०-५।६१।२

५. अश्वाः,

वे०-८।३३।११

६. रश्मयोऽश्वरशनाः,

सा०-८।३३।११

अभुज्

१. समयपालनरहितः,

वे०-१०।९५।११

२. अभोक्तापालयिता प्रतिज्ञातार्थम-पालयन्,

सा०-१०।९५।११

अभुञ्जत्

१. अभुञ्जानं च। भोक्तुं चासमर्थम्,

स्क०-१।१२०।१२

२. आश्रितान् अरक्षतः,

वे०-१।१२०।१२

३. अपालयतः,

वे०सा०-८।१।६

४. परान् अरक्षतः,

सा०मु०-१।१२०।१२

अभोग्घन्

१. यागादिना यस्तेषामभोग्यस्तस्य हन्तारः,

स्क०-१।६४।३

२. देवानामभोजयितॄणामयजमानानां हन्तारः,

वे०-१।६४।३

३. ये देवान् हविर्भिर्न भोजयन्ति तेषां हन्तारः,
सा०मु०-१।६४।३

अभ्यञ्जन

१. तैलम्,
वे०-८।३।२४, वे०सा०-८।७८।२,
२. अभिव्यक्तं यथा भवति,
सा०-८।३।२४
३. आञ्जनम्,
वे०-१०।८५।७

अभ्यञ्जान

सर्वतः प्रकाशयन्,
सा०-२।८।४

अभि√अम्

१. अभिभूता,
वे०-१।१८९।३
२. अभिमिमते,
सा०-१।१८९।३
३. अभिमुखाः सन्तः,
सा०-७।२५।२
४. अभिभवन्ति,
सा०-७।२५।२
५. अभि हिंसन्ति,
वे०-७।२५।२

अभ्यर्ध-यज्वन्

१. स्तोतॄनभ्यर्धयन् समृद्धान् कुर्वन्,
सा०-६।५०।५
२. अल्पानपि रसान् अभिवर्धयन् मरुद्भ्यो यजति यः सोऽभ्यर्धयज्वा।,
स्क०-६।५०।५
३. अभिगतं प्राप्तं देवेभ्यो लब्धमित्यर्थः। अभिगतं च तदर्धं च अभ्यर्धम्। कस्यार्धम्। हविषः। यो यजते सोऽभ्यर्धयज्वा,
स्क०-६।५०।५
४. अभ्यर्धयन् यजति,
वे०-६।५०।५

अभि√अर्ष्

१. अभि गच्छन्ति,
वे०-९।६२।३, ६६।२२, वे०सा०-९।८५।४, ७, ८, सा०- ९।६३।६
२. अभि गमयन्,
वे०-९।१६।६, ६२।१९, १०६।१३, सा०-९।१६।६। (अभिगच्छन्)
३. अभि पवसे,
वे०सा०-९।६४।८
४. प्रयच्छसि,
वे०-९।६४।८
५. आभिमुख्येन गच्छन्ति,
सा०-९।६२।३, ६६।२२

अभि√अव्

अभिरक्षतु,
वे०सा०-९।९७।३९

अभ्यव√क्षि

१. अभ्युपगच्छसि,
वे०-७।१८।२
२. निवससि ... अभितो रक्ष,
सा०-७।१८।२

अभि √अश्

१. अभि प्राप्नुयाम्,
वे०-१।१५४।५, वे०सा०-६।१३।६, सा०-४।५।७, ७।९३।८, १०।३१।३
२. प्राप्नुयाम्,
उ०-१०।३१।३, वे०-७।९३।८
३. अभिमतं प्राप्नुयाम्,
वे०-१।१६६।१४
४. व्याप्नुयाम्,
उ०-१०।३१।३, सा०-१।१५४।५

५. अभिमुख्येन व्याप्नुयाम्,
सा०-१।१६६।१४
६. अभितो व्याप्नुयाव,
सा०-१।१७९।३
७. अभिभवेव,
वे०-१।१७९।३
८. अभिलक्ष्य ...प्राप्तवन्तः,
सा०-२।२४।६
९. आप्तवन्तः,
वे०-२।२४।६
१०. अभितः सर्वतः प्राप्नोति,
सा०-३।११।७
११. अभिप्राप्ताः,
वे०-१०।३१।३

अभि√अस्

१. अभिभवतु,
उ०वे०सा०-१०।४८।७, ६९।६, स्क० वे०सा०- १।१०५।१९, वे०-१।१५६। २, ७।५६।२४, १०।११७।७, वे०सा०- २।४।२, ८।६, २८।१, ३।१।१६, १६।२, ४।१२।१, २७।२, ५।४।१, ६।२५।५, ७।१।१७, १३, ४८।२, ८।१।२७, ३२, २४।१९, ९९।५, १००।४, १०२।३, ९।३५।३, १०।५३।४, १३२।२, वे०सा०मु०-१।९४।८, सा०-२।२६।१, ४।२१।२
२. अभिभवितारो भवेम,
सा०-१।१७८।५
३. आभिमुख्येन गच्छति प्राप्नोति,
सा०-१।१५६।२
४. सम्पत्याभिभवतु मूर्ध्ना,
स्क. १।९४।८।
५. तेजसा अभिभवसि,
सा०-९।५९।४

६. आतिष्ठेम,
सा०-७।५६।२४
७. प्राप्नुयाम,
वे०-७।५६।२४

अभ्या√पॄ

१. आपूरयति,
वे०-३।३०।११
२. अभि गच्छ,
वे०-३।३०।११
३. समन्तात् पूरयामास,
सा०-३।३०।११
४. अभि प्रेरय,
सा०-३।३०।११

अभ्या√यम्

१. अभि आ गच्छन्तु,
वे०-८।९२।३१
२. आभिमुख्येन नियन्तारो भवन्तु,
सा०-८।९२।३१

अभ्यायंसेन्य

१. अभितो नियन्तव्यौ अनुग्रहवशात् तदधीनौ,
स्क०-१।३४।१
२. आभिमुख्येन यन्तारौ भवतम्,
सा०-१।३४।१
३. अस्मान् प्रति गन्तारौ,
वे०-१।३४।१
४. अभित आयच्छमानसेनार्हौ,
मु०- १।३४।१

अभ्या√या

१. आ गच्छ,
वे०-५।५१।५
२. अभिलक्ष्य आ याहि,
सा०मु०-५।५१।५

३. अभिलक्ष्यागच्छताम्,
सा० मु०-५।५१।६

अभ्यावर्तिन्

१. अभ्यावर्तिनाम्ने,
वे०-६।२७।५
२. एतन्नामकाय राज्ञे,
सा०-६।२७।५
३. एतदाह्वयो राजा,
सा०-६।२७।८

अभ्युद्, न्द

अभिषिञ्चत। तर्पयतेत्यर्थः,
सा०मु०-५।४२।३

अभ्युन्दत्

अभिक्लेदयतः,
वे०सा०-९।६१।४

अभ्युप√इ

अभिगच्छन्ति,
वे०सा०-६।२८।४

अभ्यूर्णु

१. अभिछादयति,
वे०-८।७९।२, १०।१८।११
२. आच्छादयति,
सा०-८।७९।२
३. आभिमुख्येनाच्छादय,
उ०सा०-१०।१८।११

अभ्यूर्वान

१. अभिच्छादयन्ती,
वे०-५।४१।१९
२. आच्छादयन्ती,
सा०मु०-५।४१।१९

अभि√ऋ

१. अभिगमयति। व्यापयतीत्यर्थः,
स्क०-१।३५।९
२. विध्यति,
वे०-१।३५।९
३. अभिगच्छन्ति,
वे०सा०-३।१।४
४. सर्वतो व्याप्नोति,
सा०मु०-१।३५।९

अभ्यारम्

अभिगम्य,
वे०सा०-८।७२।११

अभ्यृञ्ज्

१. अभि विसृज्यते,
वे०-१।१४०।२
२. भृज्यते,
सा०-१।१४०।२
३. पक्वं करोति,
सा०-१।१४०।२
४. प्राप्नोति। अभितः आभिमुख्येन नयति, भक्षयति,
सा०-१।१४०।२

अभ्रातृ

१. अभ्रातृका कन्यका,
वे०-१।१२४।७
२. भ्रातृरहिता,
सा०-१।१२४।७
३. भ्रात्रादिबन्धुरहिताः,
सा०-४।५।५
४. भ्रातृवर्जिताः,
वे०-४।५।५

अभ्रातृव्य-व्या

१. शत्रुवर्जितः
वे०- ८।२१।१३
२. भ्रातृव्यादिवर्जितः
सा०-८।२१।१३

अभ्व

१. महत्सुखम्,
वे०-६।७१।५
२. महत्त्वम्,
स्क०-१।२४।६, वे०-६।४।३, सा०-२।४।५
३. महान्,
स्क०वे०-१।३९।८, स्क०वे०सा०-१।९२। ४, स्क०वे०सा०मु०-१।६३।१, वे०-३। ३३।१०, सा०-१।१८५।२, २।३३।१०
४. महत्सर्वं वस्तुजातं तिरोहितम्,
सा०-६।७१।५
५. महद् भूतजातम्,
स्क०-६।७१।५
६. महत्कर्म,
सा०मु०-६।४।३
७. महद्धनं,
सा०मु०-५।४९।५
८. महत् तेजः,
सा०मु०-५।४९।५
९. महत् अन्धकारम्,
वे०-५।४९।५
१०. अतिमहत्,
सा०-४।५१।९
११. अतिविस्तृतं जगत्,
सा०-२।३३।१०
१२. महिमानम्,
वे०-२।४।५
१३. अतिमानम्,
वे०-१।१४०।५
१४. महान्तमभिभवद्गमनमार्गम्,
सा०-१।१४०।५
१५. महत्ताम्,
वे०-१।२४।६
१६. अतिशयेन विपुलम्,
सा०मु०-१।९२।५
१७. वेगम्,
सा०मु०-१।२४।६
१८. महतो भयहेतोः पापात्,
सा०-१।१८५।२
१९. महतो भयात्,
वे०-१।१८५।२
२०. शत्रुः,
सा०मु०-१।३९।८
२१. उदकम्,
वे०-१।१६८।९, १६९।३
२२. पुराणमुदकम्,
वे०-१।१६९।३
२३. मेघं जनयन्ति उत्पादितवन्तः,
सा०-१।१६८।९

अम् (१)

१. भयम्,
स्क०-१।६६।४, स्क०वे०-१।६३।१, स्क०वे०सा०मु०-१।६७।२, वे०-४।१७।७, ८।१२।२४
२. असुरकृते भये सति,
सा०मु०-१।६३।१,
३. शत्रूणां भयम्,
सा०मु०-१।६६।४
४. वृत्रनिमित्ते भये सति,
सा०-४।१७।७
५. बलम्,
वे०-१।६६।४,५।५९।२, वे०सा०-४।२२।३, ६।६१।८, ७।३४।१९, ८।२०।६, ७५।१०, ९।९०।६, वे०सा०मु०- ५।५६।३
६. अमति रुजति शत्रूननेनेत्यमो बलम्,
सा०-८।१२।२४

७. सर्वतो गमनशीलं बलं तज्जातं भयं वा,
सा०-८।९३।१४
८. अम शब्द आत्मपर्यायः, आत्मन एव। स्वरूपादेवेत्यर्थः,
स्क०-५।५९।२
९. स्वस्थानात्,
मु०-५।५९।२
१०. रोगः तत्सदृशः,
स्क०-६।६१।८

अमवत्

१. बलवन्तः,
वे०-१।५२।९, ४।५५।४, वे०सा०-६।६६।६, ८।२०।७, १०।११।७, वे०सा०मु०-१।३८।७, ५२।१०, ५।८७।५, सा०-१।३६।२०, सा०मु०- ५।५८।१
२. अमति शत्रून् रुजति इति अमो बलम्,
सा०-१।३६।२०, सा०मु०-१।५२।९
३. बलोपेतम्,
वे०-५।५८।१, ८।७५।१३ (बलयुक्तम्), सा०-४।५५।४, ५।३४।९ (बलसहितम्)
४. आत्मवन्तः यत्नवन्तः इत्यर्थः,
स्क०-१।३६।२०, ३८।७
५. आत्मवत् प्रयत्नवत्। महता प्रयत्नेनेत्यर्थः,
स्क०-१।५२।९
६. आत्मवान् प्रयत्नवान्,
स्क०-१।५२।१०
७. आत्मार्हः। यथैषां योग्यं तथेत्यर्थः,
स्क०-५।५८।१
८. आत्मवतः। यत्नकारिण इत्यर्थः,
स्क०-६।६६।६
९. आत्मवांश्च स्वाधिकारं प्रति यत्नवान्,
उ०-१०।११।७
१०. गमनवन्तः,
स्क०-१।३६।२०, ३८।७
११. अम शब्दो रोगवचनः,
स्क०-६।६६।६
१२. अम रोगे। तमसो रोगवन्तः। तमसो भङ्गवन्त इत्यर्थः,
स्क०-१।३६।२०
१३. शत्रूणां रोगवन्तः। रोगभूताः उच्छेदका इत्यर्थः,
स्क० - १।३८।७, सा० - ४।४।१
(अमोऽमनं रोगः। शत्रूणां रोगभूतः इत्यर्थः)
१४. अमात्यवान्,
वे०-४।४।१, सा०-४।४।१ (राज्ञा सह वर्तते इत्यमः अमात्यः। तद्वान्)
१५. सहाययुक्तम्,
वे०-५।३४।९
१६. गृहयुक्तम्,
मु०-५।३४।९।
१७. अभिभावुकम्,
सा०मु०-५।८६।३
१८. अभिभवत्,
वे०-५।८६।३

अमवती

१. रोगयुक्तम्,
वे०-१।१६८।७
२. इन्द्रादिसहायवती,
सा०-१।१६८।७
३. रोगवती,
सा०-१।१६८।७

अमवत्-तर

१. आत्मवत्तरेभ्यः, अतिशयेन आत्मवद्भ्यः, जितेन्द्रियेभ्यः, व्यवस्थितेभ्यः इत्यर्थः,
उ०-१०।६७।५

२. बलवद्भ्यः,
वे०-१०।७६।५

३. अत्यन्तबलवद्भ्यः,
सा०-१०।७६।५

अमति (१)

१. रूपम्,
स्क०-१।६४।९, स्क०वे०सा०मु०-१।७३।२, वे०-३।३८।८,५।६२।५, ७।३८।१, २, ४५।३, वे०सा०मु०-५।४५।२, सा०मु०-५।६९।१

२. निर्मलं रूपम्,
सा०मु०-१।६४।९

३. रूपं प्रभमित्यर्थः,
सा०- ७।३८।१, २,

४. आत्ममतिरमतिरुच्यते,
स्क०-१।७३।२

५. गमनशीलोऽमतिरादित्यः,
स्क०-१।७३।२

६. दीप्तिम्,
सा०-३।३८।८, ७।४५।३

७. शरीरदीप्तिम्,
सा०मु०-५।६२।५

८. बलम्,
वे०-५।६९।१

अमत्र

१. पात्रम्,
वे०- २।१४।१, ६।४२।२, वे०सा०मु०-५।५१।४,

२. अमा सहादन्त्यत्र होत्रादय इत्यमत्राणि चमसाः,
सा०-२।१४।१

३. अमत्रैः सोमपात्रैः ग्रहचमसादिभिः,
सा०-६।४२।२

४. अमत्रैरमात्रैः अपरिमितैः अभिवृतैः,
सा०-६।४२।२

५. अमत्रैरपरिमेयैः। बहुभिरित्यर्थः,
स्क०-६।४२।२

६. अमत्रशब्दो भाजनवचनः। सौमैश्च तद्भाजनैः ग्रहचमसादिभिश्चेत्यर्थः,
स्क०- ६।४२।२

७. ग्रहचमसादिकम्,
उ०-१०।२९।७, सा०- १०।२९।७ (ग्रहचमसादिकं पात्रम्)

८. अमत्रोऽमात्रो महान्यवत्यभ्यमितो,
सा०- १।६१।९ (यास्क०-६।२३)

९. यात्रया इयत्तया रहितः,
सा०-१।६१।९

१०. महान्,
वे०-१।६१।९

११. युद्धादिषु गमनकुशलः,
सा०मु०-१।६१।९

१२. शत्रूणामभिभविता,
सा०-३।३६।४

अमत्रिन्

अमत्रं बलम्। तद्वन्,
सा०-६।२४।९

अम (२)

१. गृहम्,
उ०वे०सा०- १०।६३।१६, वे०-१।१२४।१२, वे०सा०-२।३८।६, ६।२४।१०, १०।१८५।२

२. गृहे देवयजनाख्ये,
सा०-१।१२४।१२
३. सह,
स्क०सा०-६।५१।१५, वे०-१०।१२८।६, सा०-१।१२४।१२, २।३६।३
४. सह युगपदेव,
सा०-१०।१२८।६
५. सहायाः,
वे०-६।५१।१५
६. समीपे,
सा०-६।६४।६
७. सहिताः,
वे०सा०-१०।२७।२
८. यज्ञागताः,
वे०-२।३६।३

अमाजुर्

१. यावज्जीवं गृह एव जीर्यन्ता,
सा०-२।१७।७
२. दौर्भाग्यादलब्धपतिका यावज्जीवम्,
वे०-२।१७।७
३. पितृगृहे जूर्यन्त्या अपि दुर्भगायाः घोषायाः,
सा०-१०।३९।३
४. पितृगृहे सह जीर्यन्त्या,
वे०-१०।३९।३
५. पितृगृहे जीर्णाया अपि सत्या,
उ०-१०।३९।३
६. सोमाभिषवमकुर्वन्तस्ते गृहैः पुत्रैः पौत्रैर्धनादिभिश्च जीर्णाः भवन्ति,
सा०-८।२१।१५

अमात्य

१. सहभवम्,
वे०-७।१५।३
२. अन्तिके भवम्,
सा०-७।१५।३
३. सहभूतम्,
सा०-७।१५।३

अमति (२)

१. दारिद्र्यम्,
सा०-८।६६।१४, (दारिद्र्यात्मिकाया), सा०मु०- १।५३।४, ५।३६।
२. शत्रुभूताय दारिद्र्याय,
सा०-३।१६।५
३. दुर्बुद्धिम्,
सा०-८।१८।११, १०।४२।१०, ४३।३
४. दुर्मतेः दरिद्र्यकृतायाः,
वे०-८।६६।१४
५. दारिद्र्यदगता दुर्मतिः सर्वार्थविषया,
वे०-१०।३३।२ (दारिद्र्याद् आगता दुर्मतिः) ४२।१०, दारिद्र्यादागतां दुर्बुद्धिम्,
सा०-१०।३३।२
६. अविद्यमानमतिं प्रज्ञापहारिणीं तृषामित्यर्थः,
उ०-१०।४२।१०
७. शत्रुभूतामशनायाम्,
सा०-३।८।२
८. अमतिं बाधमानः इत्यशनाया वै पाप्माऽमतिः,
वे०-३।८।२ (ऐतरेय ब्राह्मण -२।२)
९. पापरूपामशनेच्छाम्,
सा०-४।११।६
१०. अज्ञानम्,
स्क०-१।५३।४, सा०-३।५३।१५
११. इन्द्रस्यास्तोतारमात्मीयं शत्रुम्,
स्क०-१।५३।४
१२. मोहम्,
वे०-३।५३।१५

१३. मतिविपर्यासम्,
वे०-४।११।६
१४. प्रज्ञापहारिण्याः पिपासायाः,
सा०-१०।४३।३
१५. अविद्यमानमतेः प्रज्ञापहारिण्याः,
उ०-१०।४३।३
१६. अर्थाऽभावाद् या दुर्गतिर्भवति तस्यै,
वे०-३।१६।५
१७. अभिहान्यै,
सा०-७।१।१९
१८. अस्तोतुः,
सा०-५।३६।३

अमतीवन्

अमतिरशोभना बुद्धिः। तद्वान्,
सा०-८।१९।२६

अमध्यम

१.अविद्यमानो मध्यमो येषां ते अमध्यमाः,
स्क०-५।५९।६
२. नापि मध्यमाः,
वे०-५।५९।६
३. सर्वप्रकारैः समाः,
सा०-५।५९।६

अमन्तु

१. अज्ञाता,
सा०-१०।२२।८
२. अज्ञाः,
वे०-१०।१२५।४
३. आभिमुख्येन स्वरूपतः अज्ञाता,
उ०-१०।२२।
४. अत्र अवेत्युपसर्गस्य वकारलोपो द्रष्टव्यः। अवमन्तुरवमन्ताभिभविता,
सा०-१०।२२।८
५. अमन्यमाना अजानन्तः,
सा०-१०।१२५।४
६. अवोपसर्गस्य वकारलोपोऽत्र द्रष्टव्यः। अवमन्तुः अवमन्ता परिभविता,
उ०-१०।२२।८
७. अस्तुतिः,
वे०-१०।२२।८

अमन्द

अनल्पान्,
वे०सा०-१।१२६।१

अमन्यमान

१. अस्तुवतः,
स्क०-१।३३।९
२. अव्रतान्,
वे०-१।३३।९
३. मन्त्रार्थमनुध्यातुमशक्तानपि केवलं पाठकान् यजमानान्,
सा०मु०-१।३३।९

अमर्त्य, र्त्या

१. मरणरहितः,
सा०-६।९।७, ८।१०२।१७, ९।३।१, ९।६, १०।१४०।४, १४९।३, सा०मु०-१।४४।११, ५८।३, ६।९।४
२. मरणरहितेषु देवेषु मध्ये,
सा०मु०-१।११०।५
३. मरणरहितः सोऽग्निः,
सा०-६।१२।३, ८।१९।२४,
४. मरणरहितो देवात्मा,
सा०-७।१५।१०
५. मरणरहितस्य देवस्य,
सा०-८।११।५, १९।३, २५,
६. मरणधर्मरहितावमनुष्यौ,
सा०-८।२६।७

७. मरणरहिता,
सा०-१०।१२७।२
८. मरणवर्जितः,
वे०-६।९।७
९. मरणरहितोऽमृतत्वप्रापकः,
सा०-१०।१४४।१
१०. मरणधर्मरहितः,
सा०-३।२।११, १०।९, ११।२, २४।२, २७।५, ५।१।१, ६।१।२, ४।१।१, १०। ८७।२१, १२२।३
११. मरणधर्मरहितमेवात्मानम्,
सा०-२।११।२
१२. अमरणधर्मा,
उ०-१०।७९।१, स्क०-१।८४।४, वे०-१।१६४।३०, ३८, १७५।२, ६।९।४, सा०-४।८।१, ९।२, ६।१६।६, १८।७, १५, ७।७३।१, ९।२२।४, २८।३, १०।२१।४, सा०मु०- ५।१४।१,२, १८। १, ६।३।६, मु०-५।७५।९,
१३. अमरणधर्मन् इन्द्र,
सा०-१।१२९।१०,
१४. अरणधर्मकम्,
सा०-१।१३९।८
१५. अमरणस्वभावः,
सा०-१।१६४।३०
१६. अमरणधर्मा हविः,
वे०-३।११।२
१७. अमरणधर्मा अयमात्मा,
सा०-१।१६४।३८
१८. अमरणधर्मा ध्रुवः,
सा०-५।७५।९
१९. अमरणः,
वे०-५।७५।९, सा०-८।५।३१
२०. अमरणदेव,
सा०-८।४।१८
२१. अमरणस्वभावस्य वैश्वानररूपेण वर्तमानस्य,
सा०-१०।७९।१
२२. मनुष्य धर्मरहितः,
सा०-९।६८।८, ६९।५, १०३।५, १०।११८।६।
२३. मनुष्यधर्मरहितः सोमः,
सा. ९।१०८।१२
२४. दुर्मरम्,
वे०-२।११।२
२५. मनुष्यधर्मरहितेन स्तुतेन येन देवजनेन,
सा०-१०।६३।१७
२६. अविनाशी,
सा०-१।१७५।२, ५।४।१० (अविनाशम्), ६।१८।७ (विनाशरहितेन)
२७. अमारकम्। सोमपानजन्यो मदो मदान्तरवन्मारको न भवतीत्यर्थः,
सा०मु०-१।८४।४
२८. दशापवित्रेणापरामृष्टं सोम-सम्बन्धादपम्,
सा०-२।३७।४
३०. मृत्तिरहितः सन्,
सा०-८।४८।१२
३१. अमृताः,
वे०-९।२२।४
३२. मर्त्येषु दुर्लभम्,
सा०-१।१३९।८
३३. देवानां मध्ये,
स्क०-१।११०।५, वे०-१।११०।५, (देवेषु) सा०-९।८४।२ (देवः)
३४. अमनुष्ये देवतात्मनि,
सा०-७।१।२३
३५. अग्ने,
वे०-५।१८।२

३६. मनुष्यधर्मरहितेन स्तुतेन येन देवजनेन,
सा०-१०।६३।१७
३७. देवेन,
स्क०-१०।६३।१७, वे०-१०।६३।१७ (देवजनेन)
३८. नित्याग्ने,
सा०मु०-५।१८।२
३९. मरुतः,
सा०-१।१६८।४
४०. वैश्वानररूपेण वर्तमानस्य,
वे०-१०।७९।१
४१. अमरणस्वभावस्य वैश्वानररूपेण वर्तमानस्य,
सा०-१०।७९।१

अमर्धत्

१. अक्रुध्यन्तौ,
वे०-३।२५।४
२. अहिंसन्तः,
वे०सा०-७।७६।२, ५
३. अनागमनेन यज्ञहिंसामकुर्वन्तौ,
सा०-३।२५।४

अमर्धन्ती

अहिंसन्त्यः,
वे०सा०मु०-५।४३।१

अमर्मन्

१. मर्महीनमात्मानं मन्यमानस्य,
सा०-६।२६।३, सा०मु०-५।३२।५
२. गूढमर्मणः,
वे०-५।३२।५
३. अविदितमर्मस्थानस्य,
सा०-३।३२।४
४. तिरोहितमर्मस्थानस्य,
वे०-६।२६।३

अमविष्णु

१. अहिंसका,
वे०-१०।९४।११
२. उत्क्षेपणावक्षेपणगत्युपेताः,
सा०-१०।९४।११

अमहीयमाना

१. अन्नाभावाद् अपूज्यमानाम्,
वे०-४।१८।१३
२. अश्लाघनीयम्,
सा०-४।१८।१३

अमात्

१. पृथिव्याः,
वे०-५।५३।८
२. बलात्,
सा०-९।९७।८
३. भयात्,
वे०-९।९७।८
४. अस्माल्लोकात्,
सा०मु०-५।५३।८

अमात्र

१. मात्राशब्दः परिमाणवचनः। अपरिमाणमत्यन्तमहान्तम्,
स्क०-१।१०२।७
२. अपरिमाणबलम्,
वे०-१।१०२।७
३. मात्रयेयत्तया रहितं परिगणितुमशक्यैः सर्वैर्गुधिकं त्वाम्,
सा०मु०-१।१०२।७

अमानुष

१. मनुष्याणां रहितम्,
सा०-२।११।१०
२. मनुष्याणाम् अहितम्,
वे०-२।११।१०, ८।७०।११

३. मानुषोऽहं न भवामीत्येवं मन्यमानं तमसुरम्,
सा०-२।११।१०
४. मानुषाणामिन्द्रयाजिनामप्रियम्,
सा०-८।७०।११
५. मनुष्यादन्यं राक्षसादिकम्,
सा०-१०।२२।७
६. मानुषादितरम् असुरमित्यर्थः,
उ०-१०।२२।७, वे०-१०।२२।७, ८, (असुरः)
७. मनुष्यसंव्यवहाराद्बाह्यः। असुर-प्रकृतिरित्यर्थः,
सा०-१०।२२।८
८. मानुषादन्यो मनुष्यसंव्यवहाराद् बाह्यः, राक्षसवृत्तिरित्यर्थः,
उ०-१०।२२।८

अमानुषी

१. अप्सरस्सु,
वे०-१०।९५।८
२. देवताभूतास्वप्सरः सः,
सा०-१०।९५।८

अमित

१. अपरिमिता,
स्क०- ५।५८।२, वे०-८।२४।२१ (न परिमितानि), सा०-६।६२।२, ७।३।७, ८४।४, सा०मु०-१।११९।३, ५।३४।१,
२. अपरिमिताः। बहवः इत्यर्थः,
स्क०-१।११९।३
३. बलेनापरिमिताः महाबलाः,
स्क०-१।११९।३
४. बहवः,
वे०-१।११९।३, ७।३।७
५. अस्य इयन्ति सामर्थ्यानि नान्यानीति परिमितानि न भवन्ति,
सा०-८।२४।२१
६. शत्रुभिः अहिंसितानि,
सा०-८।२४।२१
७. इयत्तारहितं महिमानम्,
सा०-४।१६।५
८. महती,
वे०-५।३४।१
९. अपरिच्छिन्नाः,
वे०सा०मु०-५।५८।२
१०. अनिर्मितपूर्वाणि,
स्क०-६।६२।२

अमितक्रतु

१. अपरिमितकर्मा,
स्क०-१।१०२।६
२. अपरिमितप्रज्ञः,
स्क०-१।१०२।६
३. अमितप्रज्ञः,
वे०-१।१०२।६
४. अपरिच्छिन्नज्ञानः,
सा०मु०-१।१०२।६

अमितौजस्

१. अपरिमितबलः,
स्क०-१।११।४
२. अमितबलः,
वे०-१।११।४
३. प्रभूतबलः,
सा०मु०-१।११।४

अमित्र

१. शत्रून्,
स्क०-१।६३।५, ६।७३।३, १००।५, स्क०सा०-४।३३।१, ३, वे०सा०- २।१२।८, ३।३०।१६, ४।१२।२, ६।७५।४, ७।३२।२५, १०।१०३।४, सा०-१।१३३।१, ३।१८।२, ४।४।४, २५।२, ६।४६।६, ८, ७।१८।९, २५।२,

७७।४, ८५।२, ८।१६।१०, ७५।१०, ९।९७।५४, १०।८९।९, १५, १०३।१२, १३३।१, १५२।३, सा०मु०- १।६३।२

२. शत्रुभटान्,

सा०-७।९२।४

३. असुरैः,

सा०-३।३०।१६, ६।७३।३

४. सेनान्,

स्क०-६।४४।१७

५. वैरिणः असुरादीन्,

स्क०-१।१००।५, ६।४६।६, ८ (वैरिणः)

६. अस्मत्प्रतिकूलाचरणपरान्,

सा०-६।४४।१७

७. हिंसकान्,

सा०-६।७५।७, १६

आमित्र

१. अमित्रभवः,

वे०-६।२८।३

२. अमित्रस्य शत्रोः सम्बन्धिः,

सा०-६।२८।३

अमित्रखाद्

१. अमित्राणां भक्षयिता,

वे०-१।१५२।१

२. अमित्राणां शत्रूणां खादिता विनाशयिता,

सा०-१०।१५२।१

अमित्रदम्भन

१. अमित्राणां हिंसकः,

वे०-४।१५।४

२. शत्रूणां हिंसकम्,

सा०-२।२३।३, ४।१५।४

अमित्रहन्

१. अमित्राणां हन्ता,

स्क०-६।४५।१४, वे०-९।९६।१२, १०।२२।८, १३४।३, वे०सा०-९।११।७,

२. अमित्राणां हन्ता। अमित्रोऽस्निग्धः

वे०सा०-१०।८३।३

३. अमित्राणामप्रियाणां हन्ता,

सा०-१०।१७०।२

४. अमित्राणां शत्रूणां हन्तः,

वे०-१०।८३।३, सा०-६।४५।१४, १०।१३४।३

५. शत्रूणां हन्ता,

सा०-९।९६।१२, १०।२२।८

६. भक्तजनस्य शत्रूणां हन्तः,

उ०-१०।२२।८

अमित्रायुध्

१. अमित्राणां योद्धारः,

वे०-३।२९।१५

२. अमित्रैः कर्मविघ्नकारिभिरसुरैः सह योद्धारः,

सा०-३।२९।१५

३. अमित्राणि पापानि। तैः सह योद्धारः,

सा०-३।२९।१५

अमित्रयत्

१. शत्रुत्वमाचरन्तम्,

सा०-१।१३७।७, ५।३५।५, १०।१८०।३ (अमित्रः शत्रुः। स इवाचरन्तम्)

२. शत्रुम् इच्छन्तम्,

सा०-५।३५।५

३.अमित्रत्वम् इच्छन्तम्,

वे०-१।१३३।७

४. शत्रूयन्तम्,

वे०-५।३५।५, १०।१८०।३

अमित्रिन्

१. मैत्रीवर्जिताय,
वे०-१।१२०।८
२. मित्राहित्यम्,
सा०मु०-१।१२०।८

अमित्रिय

१. अमित्रकृतानि,
वे०-८।३१।३
२. शत्रुभिः कृतान्,
सा०-८।३१।३
३ अमित्रभवम्,
वे०-६।१७।१, वे०सा०-९।६१।२०
४. अमित्रं शत्रुम्। अमित्रशब्दात् द्वितीयैकवचनस्येयादेशः,
सा०-६।१७।१

अमिथित

अनाक्रुष्टः,
वे०सा०-८।४५।३७

अमिन

१. अहिंसितः,
वे०-६।१९।१
२. सर्वत्र गन्ता,
सा०-१०।११६।४
३. सर्वैः काम्यमानः,
सा०-१०।११६।४
४. हिंसारहितः,
वे०-१०।११६।४
५. अहिंसनीयः,
सा०-६।१९।१

अमिनत्

१. अहिंसत्,
वे०-४।५।६, १०।८८।१३
२. हिंसितवान्। तेजसाभिभूतवान्,
सा०-१०।८८।१३,
३ अहिंसतेऽत्यजते,
सा०-४।५।६

अमिनती

१. अहिंसती,
स्क०वे०सा०मु०-१।९२।१२, वे०- १।१२४।२, वे०सा०-४।५६।२
२. अहिंसन्ती भानप्रदानेनानुकूलं कुर्वती,
सा०-१।१२४।२

अमीतवर्णा

१. अम्लानवर्णाः,
वे०-४।५१।९
२. अहिंसितवर्णाः,
सा०-४।५१।९
३. अपरिमितवर्णाः,
सा०-४।५१।९

अमीवचातन

१. रोगचातनम्,
वे०- ७।८।६, १०।९७।६ (रोगाणां चातनः)
२. रोगाणां निवारकम्,
सा०-७।८।६
३. अमीवा व्याधिः। तस्य चातनश्चातयिता नाशयिता,
सा०-१०।९७।६
४. अमीवानां हिंसकानां शत्रूणां रोगाणां वा घातकम्,
सा०-१।१२।७
५. अमीवा हिंसिता तस्य चातनं निर्णाशनम्। स्तोतृहिंसितॄणां नाशयितारम्,
स्क०-१।१२।७
६. अमीवानां शत्रूणां घातकम्,
मु०-१।१२।७

७. रक्षसां चातयितारस्,
वे०-१।१२।७

अमीवचातनी

रोगाणां नाशयित्र्यः,
सा०-१०।१३७।६

अमीवहन्

१. रोगाणां हन्ता,
सा०मु०-१।१८।२, ९१।१२,
२. रोगाणां नाशकः,
सा०-७।५५।१
३. हिंसितॄणां हन्ता,
स्क०-१।१८।२, ९१।१२
४.रक्षसां हन्ता,
वे०-१।१८।२, ९१।१
५. रक्षोहा,
वे०-७।५५।१

अमीवा

१. रोगः,
वे०- १०।३७।४, वे०सा०-१।१८९।३, ८।१८।१०, ९।८५।१, सा०-२।३३।२, ६।७४।२, ७।१।७, ३८।७, ७१।२, १०।९८।१२, १००।८
२. रोगादिबाधाम्,
सा०मु०-१।३५।९
३. रोगजातिः,
उ०-१०।३७।४, ६३।१२, स्क०-६।७४।२
४. रोगविशेषः औदरः,
वे०-७।७१।२
५. रोगरूपं राक्षसम्,
वे०-१०।१६२।१ (राक्षसम्), सा०-९।९७।४३, १०।१६२।१, (रोगरूपः)
६. रोगजातम्,
सा०-१०।३७।४
७. रोगादिकम्,
सा०-१०।६३।१२
८. रोगवद्बाधकं शत्रुम्,
सा०-१०।६३।१२
९. रक्षः,
वे०-१।३५।९, १८९।३, २।३३।२, ७।१।७, ९।९७।४३। वे०सा०- ८।३५।१६
१०. बलवत्यः पीडाः,
सा०-८।४८।११
११ रोगराहित्येन सामर्थ्योपेतानि,
सा०-३।१५।१
१२. अभ्यमनपराः पिशाचिकाः,
वे०-३।१५।१
१३. आभिमुख्येनागमनपरागमनपराः पिशाचिकाः,
सा०-३।१५।१

अमूर

१. अमूढः,
वे०-१।१४१।१२, ३।२५।३, ४।४।१२, ६।२, ११।५, २६।७, १०।६१।२७, वे०सा०-३।१९।१, ४।५५।२, ६।१५।१७, ६७।५, ७।९।३, ४४।५, ६१।५, ८।७४।७, १०।४।४, ४६।५, वे०सा० मु०-१।६८।४, ७२।२
२. मौढ्यरहिता,
सा०-१०।६१।२७
३. अमूढः सर्वज्ञः,
उ०-१०।४६।५, सा०-३।२५।३, ४।४।१२
४. अप्रतिहतगते,
सा०-४।४।१२
५. अमूढाः। यत्नवन्तः,
स्क०-६।६७।५
६. अमूढः प्राज्ञ इन्द्रः,
सा०-४।१६।७

७. अमूढः। प्रगल्भः,
सा०-४।६।२, ११।५
८. अमूढबलः,
सा०-१।१४१।१२
९. अमूढचेतसः
स्क०-१।७२।२
१०. अमूढाः विविक्तप्रज्ञावन्तः,
स्क०-१।६८।४

अमृक्त, क्ता

१. दशापवित्रेण अमृष्टम्,
सा०-२।३७।४
२. दशापवित्रेणापरामृष्टम्,
वे०-२।३७।४
३. शत्रुभिरपरिमृष्टे,
वे०-३।६।४, ११।६, ६।५०।७, ७।३७।१, ८।२।३१,
४. अनाधृष्टा रक्षोभिः,
वे०- ४।३।१२
५. रक्षः प्रभृतिभिरबाधिताः,
सा०-४।३।१२
६. अन्यैरपरिबाध्यम्,
सा०मु०-६।१।१४
७. शत्रुभिरबाधितः,
सा०-८।२।३१
८. अहिंसितम्,
वे०-६।१।१४, ७।३७।२, वे०सा०- ८।२४।९, १०।१०४।८, सा०-३।६।४, ११।६, ६।५०।७, ७।३७।१
९. अहिंसितम्। चोरादिभिर्नापहृतम्,
सा०-७।३७।२
१०. अमृतसदृशम्। अत्यन्तहितम्,
स्क०-६।५०।७
११. अमृक्तम् अशुद्धम्,
स्क०- ६।५०।७
१२. अन्नेन धनेन सहितम्,
स्क०-६।५०।७
१३. अनिर्णिक्तेन,
वे०सा०-९।६९।५

अमृत, ता

१. देवः,
उ०सा०-१०।३३।८, उ०वे०- १०।१०।३, ७४।३, स्क०-१।७२।१०, स्क०वे०सा०मु०- १।२४।१, वे०- १।५९।१, ७२।२, ११४।६, १८९।३, २।१।१४, ३।१।१८, २८।५, ४।१।१०, ४३।१ ५।४२।५, ६।१५।१०, १०।१७६।४, वे०सा०- १।१२७।८, २।२।९, ४।४२।१, ५।२।१२, ७।४।५, ५।१, ११।१, १०।३१।३, सा०- १।३८।४, ४।३५।८, १०।६६।५
२. देवता,
स्क०-१।३५।६, ९१।१८, वे०सा०मु०-१।३५।२, सा०-१।२४।१
३. प्रजापत्यादयो देवाः,
सा०-१०।१०।३
४. यष्टव्यानां देवानाम्,
सा०-१०।७४।३
५. मरणवर्जितः,
उ०-१०।६५।१४, १५, ६६।११३, ६९।९, स्क०- १।२६।९, ३५।२, ३८।४, ४४।५, ७०।२, ८३।५, ९०।३, ११३।१३, वे०-१।५८।१, ७।७५।३, सा०-१०।१६।८
६. मरणधर्मरहितः,
सा०-२।१०।१, २, ३।१४।७, २०।३, २१।१, २५।२, ३, २६।३, २८।५, २९।५, १३, ६१।३, ४।२।१, ९, ३।३, ८।२३।१९, ९।११३।७, १०।१७।२,

४५।७, ८, ६५।१४, १५, ६६।१, १३, ७०।११, ९१।११, सा०मु०- ६।५।५, ७।४

७. मरणरहितः,

उ०-१०।६६।५, १३, वे०सा०- ६।९।४, सा०-३।३।१, ४।१६।१४, ६।४।२, १५।१०, १६।२५, ४८।१, ५२।९, ७।४।४, १७।४, ३५।१५, ८।१।६, ८।१०१।६, ९।९७।३२, १०।१७।२। (मरणधर्मरहिताम्), सा०मु०-१।२६।९, ४३।९, ४४।५, ५८।१, ७७।१, ८३।५, ११३।२, १३, ११४।६

८. अमरणधर्मा,

उ०-१०।३०।१२, ४५।८, स्क०-१।४३।९, ५।५७।८, ६।४८।१, ७०।११, वे०- १।११३।२, ३।५।२, २९।१३, ६।४।२, ७।४।४, सा०-१।७२।६, १२३।१, १६६।३, १३, १८९।३, २।१।१४, ३।५।१३, ६१।३, ४।२।१, ५।६९।४, ७।३८।८, ८।७१।११, ९।९७।३२, १०।१३।१, सा०मु०-१।५९।१, ७२।२, ७२।१०, ९०।३, ५।४२।५, ५।७६।५

९. अमरणम्,

वे०-४।३।३, ५।१३, ५।५७।८, ७६।५, ९।९७।३२, वे०सा०-७।९७।५, ८।३१।९, वे०सा०मु०- ५।४२।१८, सा०-१।१२२।११, २।४०।१, ६।१५।६, ८, ८।४८।३, ७४।५, १०।१२२।५, १८६।३। सा०मु०-१।६८।२

१०. अमरणस्वभावाः,

सा०-४।५।२, सा०मु०- ५।५७।८

११. अमरणाद्देवाद्देवनिमित्ताद्भयात्,

सा०-१०।१७६।४

१२. अमरणहेतवः,

सा०-४।३।१२, ६।४४।१६ (अमरण-हेतुकम्), (अमरणहेतु, भूतानि), १०।१२३।४

१३. अमरणशीलः,

सा०-४।११।५, सा०मु०-५।३१।१३, ६।२१।१०

१४. अमरणधर्मकस्य स्वर्गस्य,

सा०-१।१७०।४, ४।३५।३

१५. अमरणलक्षणः स्वर्गसाधनः,

सा०- ४।४१।१

१६. अमरणा अनश्वराः,

सा०-७।७५।३

१७. अमरणसाधनम्,

वे०सा०मु०-५।५७।५, वे०-८।१३।१२, सा०-१०।१२३।४

१८. अमरणहेतोरुदकस्य,

सा०मु०-६।७।७

१९. अमरणरूपं तज्जन्यफलम्,

सा०-१०।३०।१२

२०. अमरणं प्राणिनामवस्थानम्,

सा०-१०।१२९।२

२१. अमरणत्वाय,

सा०मु०-१।९१।१८

२२. उदकम्,

स्क०- ६।४४।२३, वे०-१०।११।९, १२।३, १२३।३, १३९।६, वे०सा०-१।१८५।६, ३।१।१४, ९।७०।२, ४, ९४।२, १०८।४, सा०-७।५७।६, ९। ११०।४, सा०मु०-५।५८।१, ६।७।६

२३. उदकस्य वृष्टिलक्षणस्य,

स्क०-५।५८।१

२४. पयः,

वे०-१।७२।९, वे०सा०-८।१०१।१५

२५. *अमृतवत्स्वादुभूतं पयः,*
सा०-१।७१।९
२६. *पीयूषम्,*
सा०-६।४४।२३, सा०मु०-१।२३।१९
२७. *अन्नानि,*
वे०-१।७२।१, १२२।११, २।४०।१, ३।१७।४, २३।१, ५।२८।१, ७।५७।६
वे०सा०-७।४।६,
२८. *अन्नार्थम्,*
सा०-३।३४।२
२९. *क्षयरहितं प्रभूतमन्नम्,*
सा०-३।२३।१
३०. *अमरणसाधनमन्नम्,*
वे०-१।१५९।२
३१. *नित्याः,*
उ०-१०।४५।७, स्क०-१।६२।१०, ७२।१, सा०-३।१।१८, ४।११, ६।२१।३, ७।१६।१,
३२.*अमृतसदृशस्यात्यन्तमृष्टस्य हविषः,*
स्क०-१।१३।५
३३. *हविःस्थानीयमन्नम्,*
वे०-३।२६।७
३४. *हविः,*
वे०-५।२।३, ३।४, १०।२०।१०
३५. *देवानां हविः,*
उ०,१०।१२।३
३६. *हविलक्षणैरन्नैः,*
सा०-१०।२०।१०
३७. *अमृतसदृशस्य हविषः,*
सा०-१०।९३।४
३८. *अनश्वरम्,*
सा०-८।१३।१२
३९. *अमरणा अनश्वराः,*
सा०-७।७५।३
४०. *विनाशरहितम्,*
सा०-१०।९०।३
४१. *अविनाशी,*
सा०-५।२।३, ७।७६।१
४२. *अमारकमविनाशकम्,*
उ०सा०-१०।१३।४
४३. *अमृतत्वसाधनम्,*
सा०-५।२।३
४४. *देवान्नभूतायाः सुधायाः,*
सा०-३।१७।४
४५. *मरणं नास्त्यस्मिन्नित्यमृतं सुधा,*
सा०-१०।१२१।२
४६. *कर्मफलं दिव्यादिव्यविविध, विषयोपभोगात्मकम्,*
सा०-३।२६।७
४७. *घृतस्य,*
सा०मु०-१।१३।५
४८. *न विद्यते मृतं मरणम् अस्मिन्निति अमृतम्,*
सा०-१।१३।५
४९. *हिरण्यम्,*
सा०मु०-१।७२।१
५०. *पुनः पुनः करणेऽप्यालस्यरहिताः सत्यः,*
सा०मु०-१।१६२।१०
५१. *अग्लानाः,*
वे०-१।६२।१०
५२. *जरामरणरहितं स्थानम्,*
सा०-१।१२५।६
५३. *जरामरणवर्जिता,*
वे०-१।११३।१३
५४. *मरणवर्जिता,*
स्क०-१।११३।१३
५५. *मरणधर्मिषु,*
वे०-६।९।४

५६. देवपानस्य मधुनः,
उ०सा०-१०।११।९
५७. द्युलोकस्य,
वे०-६।७।६
५८. मृष्टम्,
स्क०-६।४४।१६
५९. अमृतसदृशम्, अत्यन्तमृष्टम्,
स्क०-५।५७।५
६०. क्षयरहितम्,
सा०-३।४३।५
६१. मोक्षम्,
सा०- ४।५८।१
६२. सायुज्यतामोक्षपर्यन्तमित्यर्थः,
सा०-७।५९।१२
६३. जीवितम् अमृतम्,
वे०-७।५९।१२
६४.सूर्यस्य,
सा०मु०-५।४७।२
६५. अग्निः,
स्क०-१।१३।५, स्क०सा०-१।२४।२
६६. अमरणधर्माग्निः,
सा०मु०-१।७०।२
६७. सोमस्य,
वे०-३।३८।४, सा०-१०।५३।१०, सा०मु०-१।११२।३
६८. अमृतसदृशं मरणवर्जितं सोमाख्यमन्नम्,
स्क०-६।३७।३
६९. सरण्यूम्,
उ० - १०।१७।२ (अमृतधर्माणं तां त्वष्टुर्दुहितरं सरण्यूम्, वे०-१०।१७।२, सा०- १०।१७।२ (मरणधर्मरहितामेता सरण्यूम्)
७०. अप्सरस्सु,
वे०सा०-१०।९५।१
७१. अमरणशीलेन्द्रः,
सा०मु०-५।३१।१३
७२. अमर्त्यः,
वे०-५।३१।१३
७३. सुकर्मा,
वे०- १।७०।२
७४. चन्द्रनक्षत्रादीनि ज्योतींषि,
सा०मु०-१।३५।६
७५. देवाः,
उ०सा०-१०।३३।८, स्क०-१।३५।६, वे०-१।७२।२, ३।१।१८
७६. सर्वेऽमरणधर्माणो देवाः,
सा०मु०-१।७२।२
७७. अमृता अमूरा इत्यादिभिरङ्गिरसः उच्यन्ते न देवाः,
स्क०-१।७२।२
७८. देवता,
स्क०-१।९१।१८

अमृतत्व

१. देवत्वम्,
स्क०-१।३१।७, स्क०सा०मु०-१।११०। ३, ४, वे०-३।६०।३, सा०-४।३३।४, १०।९०।२, सा०मु०-६।७।४,
२. देवत्वप्राप्त्यर्थम्,
सा०-३।३१।९,
३. देवत्वममरणम्,
सा०-९।९४।४, १०।६२।१ (अमरणधर्मं देवत्वम्) १०७।२, (अमरणधर्मत्वं देवत्वम्) १२४।२, (मरणधर्मराहित्यम् देवत्वम्)
४. हविर्भक्षणलक्षणं देवत्वम्,
स्क०-१।९७।६
५. अमरणत्वसिद्धये,
सा०मु०-१।७२।९

६. *स्वकीयामरणत्वम्,*
सा०मु०-१।९६।६
७. *अमरणरूपं पदम्,*
सा०-१।१६४।२३
८. *न म्रियन्ते,*
वे०-९।९४।४
९. *अमरणाय,*
सा०-९।१०८।३
१०. *अमरणधर्मम्,*
सा०-१०।६३।४
११. *मरणवर्जितत्वम्,*
उ०-१०।६३।४
१२. *अविनाशित्वम् ,*
सा०-१०।५२।५, ९२।३
१३. *मोक्षम्,*
सा०-४।५८।१
१४. *मोक्षे स्वर्ग इत्यर्थः,*
सा०मु०-५।५५।४
१५. *स्वर्गम्,*
सा०मु०-५।६३।२
१६. *उत्कृष्टे,*
वे०-१।३१।७, सा०मु०-१।३१।७, (उत्कृष्टमरणरहिते पदे),
१७. *संतत्यविच्छेदलक्षणम्,*
सा०-५।४।१०
१८. *अविद्यमानं मृतत्वं यस्य सोऽमृतत्वोऽग्निः,*
स्क०-१।७२।९

अमृतबन्धु

१. *अमरणबन्धना,*
वे०सा०-१०।७२।५
२. *अमृतत्वबन्धनाः अमृतोपजीविनः अमरणधर्माः,*
उ०-१०।७२।५

अमृत्यु

१. *मृत्युरहिता देवाः,*
सा०-३।२।९
२. *मृत्युरहिताः,*
वे०-३।२।९
३. *अमरणहेतु,*
सा०-६।४८।१२
४. *अमृत्युकारणभूतम्,*
सा०-६।४८।१२
५. *अमरणं तद्धेतु पयः,*
वे०-६।४८।१२
६. *मरणधर्मरहिताः,*
सा०-९।७०।३
७. *अमारकाः,*
वे०-९।७०।३
८. *अमारिताः,*
वे०सा०-१०।९४।११

अमृध्र, ध्रा

१. *अहिंस्यम्,*
स्क०सा०मु०-१।३७।११, वे०-९।८२।५
२. *अहिंसितारम्,*
स्क०-१।३७।११, वे०-८।८०।२, वे०सा०-६।१९।७, सा०मु०-५।४३।१३,
३. *अहिंसित्र्यौ,*
वे०-५।४३।२, वे०सा०-६।२२।१०, सा०-७।६७।५,
४. *अहिंसितानि,*
वे०-३।५८।८, ७।६७।५, सा०मु०-५।३७।१
५. *या न हिंसन्ति ताः,*
वे०-५।३७।१
६. *हिंसारहिते,*
सा०मु०-५।४३।२

७. *अहिंसकः,*
वे०-५।४३।१३, सा०-८।८०।२
८. *हिंसितुमशक्याः,*
वे०सा०-६।७५।९
९. *अमृदुम्, तीक्ष्णम्,*
स्क०-१।३७।११, वे०-१।३७।११
(अमृदुम्)
१०. *वीर्यवन्तम्,*
स्क०-१।३७।११
११. *अतिरस्कृताः,*
सा०-३।५८।८

अमेन
१. *अस्त्रीकान्,*
वे०-५।३१।२
२. *अपगतस्त्रीकांश्चित्,*
सा०मु०-५।३१।२

अम्बर
अन्तिकनामैतत्,
सा०-८।८।१४

अम्बा
१. *मातः,*
वे०- १०।९७।२, सा०-२।४१।१६,
१०।८६।७
२. *मातरः ओषधयः,*
सा०-१०।९७।२

अम्बि
१. *अम्बिशब्दोऽम्बापर्यायः। अम्बा-मातृभूता आपः,*
स्क०-१।२३।१६
२. *मातृस्थानीया आपः,*
सा०मु०-१।२३।१६

अम्बी
१. *माध्यमिकां वाचम्,*
वे०सा०-८।७२।५
२. *स्तोता,*
सा०-८।७२।५

अम्बितमा
१. *मातृतमे,*
वे०-२।४१।६
२. *मातॄणां श्रेष्ठे,*
सा०-२।४१।६

अम्भृण
१. *उदकहरः,*
वे०-१।१३३।५
२. *अतिभयंकरं शब्दायमानम्,*
सा०-१।१३३।५

अय
१. *गमनसाधनेन,*
सा०-६।६६।४
२. *गन्तॄणां मेघानाम्,*
स्क०-६।६६।४
३. *गन्तव्यानि स्थानानि,*
वे०-६।६६।४
४. *कर्मकरणार्थं गच्छन्तीत्यया ऋत्विजः,*
सा०-१०।११६।९
५. *कर्मकराः,*
सा०-१०।११६।९
६. *रश्मयः,*
वे०-१०।११६।९

अयथ
१. *अयत्नेन। लीलया,*
सा०-१०।२८।१०, ११ (अनायासेन)

अयन
१. *स्थानं समुद्रम्,*
वे०-३।३३।७
२. *स्थानम्,*
सा०-३।३३।७

अयमान

गच्छन्,

वे०सा०-८।१००।८, सा०-४।३८।५

अयस्

१. लोहपिण्डम्,

वे०-४।२।१७

२. हिरण्यनामैतत्। अयोविकारा इत्यर्थः,

सा०-५।६२।७

३. अयः सुवर्णविकाराः,

मु०-५।६२।७

४. अयोमयम्,

वे०-५।६२।७। (अयोमयी), सा०-५।६२।७। (अयोमया), ६।७५।१५ (अयोमयम्)

५. अयोमयाः अयः पिण्डसदृशा इत्यर्थः,

सा०-१।१६३।९

६. अयोवद् दृढाः,

वे०-१।१६३।९

आयस

१. अयोमयकवचयुक्तदेहः,

सा०मु०-१।५६।३

२. दृढशरीर इन्द्रः,

वे०-१।५६।३

३. अयोमयः,

वे०सा०मु०-१।८०।१२

४. लोहमयः,

स्क०-१।८०।१२

५. गमनशीलः,

स्क०-१।८०।१२

६. अयसा निर्मितः,

वे०- ८।९६।३, १०।९६।३ (निर्मितोऽयसा), ९६।४, सा०-८।९६।३ (अयसा निर्मितः। अयोमयः),

७. अयः सारभूतोऽस्ति निर्मितः,

सा०-१०।९६।३

८. अयोविकारः,

सा०-१०।९६।४

९. अयोमयहृदयः,

वे०-१०।९६।८, सा०-१०।९६।८ (अयोमयहृदयः। शत्रूणां घातकः)

आयसी

१. अयोमयधाराम्,

सा०-८।२९।३

२. हिरण्मयी,

सा०-७।३।७, ८।१००।८

३. अयोमयानि अभेद्यानि,

सा०-४।२७।१

४. अयसा निर्मिताः,

वे०-४।२७।१, ७।३।७, सा०-७।९५।१

५. व्याप्तैः,

सा०मु०-१।५८।८

६. अयोवत् दृढतरैः,

सा०-१।५८।८,

७. अयोमयीम्,

सा०मु०-१।११६।१५, २।२०।८

८. लोहमयीम्,

स्क०-१।११६।१५, वे०-७।९५।१

९. अयोमयवत्सारभूतः,

सा०-१०।१०१।८

१०. आयसैः पुरैः,

वे०-१।५८।८,२।२०।८ (अयसा निर्मिता पुरी)

अयः शिप्र

१. अयोवत्सारभूतशिप्राः,

सा०-४।३७।४

२. *हिरण्मयशिरस्त्राणाः,*
वे०-४।३७।४

अयशीर्षन्

हिरण्यालंकृतशिरस्कः,
वे०सा०-८।१०१।३

अयस्मय

१. *हिरण्येन निर्मितः,*
वे०-५।३०।१५
२. *हिरण्मयः,*
सा०मु०-५।३०।१५

अयः स्थूण

अयोमयशङ्कुम्,
सा०मु०-५।६२।८

अयोग्रा

१. *अङ्गुल्या,*
वे०-१०।९९।६
२. *अयोवत्कठिननखया,*
सा०-१०।९९।६

अयोद्रंष्ट्र

१. *दशतीति दंष्ट्रा चक्रधारा। अयोमयीभिश्चक्रधाराभिर्युक्तान्,*
सा० - १।८८।५, मु० - १।८८।५ (अयोमयीभिश्चक्रधाराभियुक्तान्)
२. *दंशनसाधना ऋष्टयो दंष्ट्रा। अयोमया ऋष्टयो येषाम्,*
सा०-१।८८।५
३. *दंष्ट्रास्थानीयत्वाद्रथोद्धी अत्र दंष्ट्रे उच्यते। अयोमयरथोद्धीन्। लोहमयोद्धीकरथस्थानित्यर्थः,*
स्क०-१।८८।५
४. *तीक्ष्णदंष्ट्रः,*
सा०-१०।८७।२

अयोऽपाष्टि

१. *अपयष्टिर्व्याप्तिर्यस्य स प्रदेशोऽपाष्टिः पार्ष्णिः। अयोमयोऽपाष्टिः पार्ष्णियस्य सः,*
सा०-१०।९९।८
२. *अयोमयपार्ष्णिप्रदेशः,*
वे०-१०।९९।८

अयोहत

१. *अय इति हिरण्यनाम। तेन तद्वान् पाणिर्लक्ष्यते। हिरण्मयेन पाणिना हतं संस्कृतम्,*
सा०-९।८०।२
२. *हिरण्येन पाणिना हतम्,*
वे०-९।८०।२
३. *हिरण्येन हतम्,*
वे. सा०-९।१।२

अयक्ष्मा

१. *यक्ष्मरहितानि अनामयानि,*
सा०-९।४९।१
२. *यक्ष्मरहितानि,*
वे०-९।४९।१

अयज्ञ

१. *यज्ञरहितम्,*
वे०-१०।१३८।६
२. *यज्ञहीनान्,*
सा०-७।६।३
३. *यज्ञरहितमसुरम्,*
सा०-१०।१३८।६

अयज्ञसाच्

१. *यज्ञानामसेवितारः। अकर्तारः,*
स्क०-६।६७।९
२. *यज्ञमसेवमानाः,*
वे०-६।६७।९
३. *न यज्ञयुक्ताः,*
सा०-६।६७।९

अयज्ञिय

यज्ञानर्हात्प्रदेशान्निर्गत्य,
सा०-१०।१२४।३

अयज्यु

१. अयजमानान्,
वे०-१।१२१।१३, १३१।४, २।२६।१,
सा०-७।६।३, ८३।७
२. अयजमानान् यज्ञविहीनान् असुरादीन्,
सा०मु०-१।१२१।१३
३. अयजनशीलान्,
स्क०-१।१२१।१३
४. अयष्टारं यज्ञविघातिनं राक्षसादिम्,
सा०-१।१३१।४
५. अयज्वनः,
सा०-२।२६।१, ७।६।३

अयज्वन्

१. यज्वविरोधिनः सन्तः,
सा०मु०-१।३३।४
२. चिरन्तना अयष्टारः। जन्मन एव प्रभृति यागवर्जिता इत्यर्थः,
स्क०-१।३३।४
३. अयजमानाः,
वे०-१।३३।४, वे०सा०मु०-१।१०३।६
४. अयष्टुः स्वभूतं यष्टृभ्यः,
स्क०-१।१०३।६
५. अननुष्ठातॄणाम्,
सा०-७।६१।४
६. अयज्वनाम्,
वे०-७।६१।४, ८।३१।१५, ७०।११, १०।४९।१
७. यागमकुर्वतो जनान्,
सा०-८।३१।१५, १६
८. अयष्टारम्,
सा०-८।७०।११, १०।४९।१

अयतत्

१. प्रयत्नमकुर्वाणे,
वे०-२।२४।५
२. अयतमानौ अप्रयत्नौ उभौ लोकौ द्यौश्च पृथिवी च,
सा०-२।२४।५

अयन्त्र

१. अयमनैः गमनप्रतिबन्धरहितैः, स्वमार्गैः,
उ०-१०।४६।६
२. रक्षसां नियमनैः,
वे०-१०।४६।६
३. शत्रूणां नियमनैः सह,
सा०-१०।४६।६

अयातु

१. अहिंसादिनियमयुक्तेन,
सा०-७।३४।८
२. अगच्छन्,
वे०-७।३४।८
३. अराक्षसम्,
सा०-७।१०४।१६
४. अहिंसकम्,
वे०-७।१०४।१६

अयामन्

अगमने,
वे०सा०-१।१८१।७

अयास्

१. गमनशीलाः,
स्क०-१।६४।११
२. गच्छन्तः,
वे०-१।६४।११, १५४।६, १६९।७, ५।४२।१५,
३. जगतः,
सा०मु०-१।८७।४

४. अयना गन्तारोऽतिविस्तृताः,
सा०-१।१५४।६
५. यासो गन्तारः। अतादृशाः।
अत्यन्तप्रकाशयुक्ताः,
सा०-१।१५४।६
६. देवयजनदेशं प्रति गन्तारः,
सा०मु०-१।६४।११
७. अभिगन्तारः,
सा०-१।१६७।४
८. गमनस्वभावाः,
वे०-१।१६७।४। सा०-३।१८।२
(सर्वत्रगमनस्वभावाः)
९. गन्तॄणाम्,
सा०-१।१६८।९
१०. गमनशीलः,
वे०-१।१६८।९, ९।८९।४
११. गमनशीलाः रश्मयः,
वे०-३।१८।२
१२. अयमानानां गमनशीलान्,
सा०-१।१६९।७।
१३. सतत गमनशीलाः,
सा०-३।५४।१३
१४. गन्तारः,
वे०-३।५४।१३, ९।८९।३, वे०सा०-६।६६।५, सा०-७।५८।२, ९।८९।४
१५. मेघं प्रति गन्तारः,
स्क०-६।६६।५
१६. गमनशीला,
वे०सा०-४।६।१०, ७।५८।२, ९।४१।१
१७. यज्ञगन्तॄन्,
सा०मु०-५।४२।१५
१८. प्रेरकम्,
सा०-९।८९।३

अयास्य

१. यासः प्रयत्नः। तत्साध्यो यास्यः। न यास्योऽयास्यः। युद्धरूपैः प्रयत्नैः साधयितुम् अशक्यः,
सा०मु०-१।६२।७
२. गमनकुशलः,
वे०-१।६२।७।
३. उपक्षपयितुमशक्यः,
वे०सा०-८।६२।२
४. अयासनीयश्चालयितुमशक्यः,
सा०-१०।१३८।४
५. शत्रुभिः यसितुमशक्यः,
वे०-१०।१३८।४
६. अयास्यो नामाङ्गिरसोऽभिप्रेतः,
स्क०-१।६२।७। सा०-१०।१३८।४
(अयास्योऽङ्गिरा)
७. ऋषिः,
सा०-९।४४।१
८. अयास्यः नामर्षिः,
उ०-१०।६७।१, सा०-१०।६७।१, १०८।८, (एतन्नामा)

अयुक्त

१. कुत्रापि न नियुक्ताः। अबद्धाः,
सा०-९।९७।२०
२. अयोगिनम्,
उ०-१०।२७।९
३. सस्यानि भक्षयन्तम् आत्मीयं पशुम्,
वे०- १०।२७।९
४. असंयुक्ता,
सा०मु०-५।३३।२

अयुज

असहायः,
वे०सा०-८।६२।२

अयुत

१. अपरिमितसंख्याकम्,
सा०-४।२६।७
२. दशसहस्राय,
सा०-८।१।५
३. दशसहस्राणि चत्वारिंशत्सहस्राणि,
सा०-८।२।४१
४. धनानि,
सा०-८।२१।१८

अयुद्धसेन

१. अप्रहतसेनः,
सा०-१०।१३८।५
२. अयुध्यमानाऽऽत्मसेनः,
सा०-१०।१३८।५

अयुद्ध

१. अयोद्धा,
उ०सा०-१०।२७।१०, वे०सा०-८।४५।३
२. युद्धमकुर्वन्,
वे०-१०।२७।१०

अयुध्य

१. योधयितुमशक्यः,
वे०-१०।१०३।७
२. अहन्तव्यानां गवाम्,
सा०-१०।१०३।७

अयोद्धृ

१. योद्धुमसमर्थः,
स्क०-१।३२।६
२. युद्धासमर्थः,
वे०-१।३२।६
३. योद्धरहित इव इन्द्रम्,
सा०मु०-१।३२।६

अर (१)

१. अलम्,
उ०सा०-१०।७१।१०, स्क०-१।१०८।२, वे०-६।६३।२, वे०सा०-१।१७३।६, १८७।७, सा०-१।१४२।१०, २।१७।६, ६।७४।१, ७।८६।७, ८।८२।३, ९।२।२६, २७, १०।९६।७, १०१।२, १०६।८, ११७।३, सा०मु०-१।६६।३
२. पर्याप्तः,
उ०-१०।६३।६,उ०सा०- १०।७१।१०, स्क०वे०-१।६६।३, स्क०वे०सा०-६।७४।१, ७।७।६, स्क०वे०सा०मु०-१०८।२, स्क० सा०- ६।४१।५, ६३।२, वे०-१।१४२।१०, २।५।७, ५।४४।८, ६६।५, ७।६६।१४, १०।९।३, १०।९७।१८, १०१।२, १०६।८, वे०सा०-१।७०।३, २।१७।६, १८।२, ३।३५।५, ६।१३।४, १६।४३, ७।८६।७, ८।१५।१३, ४५।१०, ९।२।२५, २६, २७, ९।२४।५, १०।९६।७, ११७।३ सा०-१।१७३।६, सा०- २।५।८, ४।३२।२४, ८।८२।३, ९।२।२४
३. समर्थः,
स्क०-१।७०।३, सा०-१।१४२।१०, १०।७१।१०
४. पुरुवारं बहुप्रभूतं च,
सा०-१।१४२।१०
५. परिचरन्तु,
सा०-१।१७०।४
६. अलङ्कृण्वन्तु,
वे०-१।१७०।४, २।५।८, ४।३३।२, वे०सा०-१०।६३।६
७. सम्पूर्णम्,
सा०-१।१८७।७

८. अत्यर्थम्,
सा०-२।५।७, ४।३३।२, १०।९७।१८,
सा०मु०-५।४४।८, ६६।५,
९. सुष्ठुः,
स्क०-६।७४।१
१०. गमनम्,
वे०सा०-८।४६।१७
११. क्षिप्रम्,
सा०-१०।९।३

अरंकृत्, कृत

१. अलंकर्तारः,
वे०सा०-२।१।७, सा०मु०-१।१४।५
२. अलङ्कृतः,
वे०सा०-१०।११९।१३
३. हविरादीनामलंकर्तारः,
सा०-८।५।१७
४. बहुभिर्द्रव्यैरलंकाररूपैर्युक्तः,
सा०-१०।१४।१३
५. पर्याप्तकारिणः,
स्क०वे०-१।१४।५, वे०-८।६७।३,
वे०सा०-८।५।१७,
६. पर्याप्तकारिणीम्,
वे०-८।१।१०
७. अलङ्कर्तारं पर्याप्तकारिणम्,
सा०-८।१।१०, ६७।२

अरंगम

१. पर्याप्तं शत्रून् प्रति गन्त्रे,
स्क०-६।४२।१
२. पर्याप्तगामिने,
वे०-६।४२।१
३. पर्याप्तगमनाय,
सा०-६।४२।१

अरितृ

१. नाविकः,
वे०-९।९५।२
२. कर्णधारः,
सा०-२।४२।१
३. जनांस्तीरं प्रापयन्नाविकः,
सा०-९।९५।२

अरित्र

१. गच्छति येन नौः तत् अरित्रम्। अपल्लवक इत्यपभ्रंशेन यन्नाविकानां प्रसिद्धं तत्,
स्क०-१।४६।८
२. समुद्रगमनसाधनं जलपात्रम्,
वे०-१।४६।८
३. तारकाः,
वे०सा०-१०।४६।७
४. यज्ञनावं प्रणेतारः,
उ०-१०।४६।७
५. सर्वगामिनः,
उ०-१०।४६।७
६. गमनसाधनं नौरूपम्,
सा०मु०-१।४६।८

अरित्रपरणी

१. कर्षणादिरूपेणारित्रेण पारयितव्याम्,
सा०-१।१०१।२
२. अरित्रैः कर्षणादिभिः पारयितव्याम् चयनाख्यम्,
वे०-१०।१०१।२

अर (२)

१. नाभौ कीलितान् काष्ठविशेषान्,
सा०-१।३२।१५
२. नाभावर्पितान् सूक्ष्मान् स्थासकान्,
सा०मु०-५।१३।६
३. रथस्य शङ्कून्,
सा०-१।१४१।९, सा०मु०-५।५८।५
(रथशङ्कवः)

४. चक्राङ्गभूताञ्छङ्कून्,
सा०-८।७७।३
५. अर्याणां स्वामिनाम्,
सा०-८।२०।१४
६. पुनः पुनः आगच्छताम्,
वे०-८।२०।१४

अरमणस्

१. पर्याप्तमनसम्,
वे०-६।१७।१०
२. शत्रूणामरमभिगन्तृमनो यस्य तम्,
सा०-६।१७।१०

अरक्षस्

१. रक्षोवर्जितेन,
वे०-८।१०१।८, वे०सा०-१।१२९।९,
सा०मु०-५।८७।९
२. राक्षसवर्जितः,
वे०-१।१९०।३, ५।८७।९
३. स्वविरोधिरक्षोरहितस्य,
सा०-१।१९०।३
४. बाधकरहितेन,
वे०-७।८५।१, सा०-२।१०।५
५. रक्षोवर्जितं दानम्,
सा०-८।१०१।८
६. रक्षोरहितां राक्षसैरसंस्पृष्टाम्,
सा०-७।८५।१

अरज्जु

१. रज्जुवर्जितः,
वे०-२।१३।९, ७।८४।२
२. रज्जुवर्जिते बन्धनागारे,
सा०-२।१३।९
३. रज्जुरहितैः रोगादिभिः,
सा०-७।८४।२

अरण

१. अरमयिता, दाहेन दुःखकारी,
सा०-२।२४।७
२. अग्निना दग्धः,
वे०-२।२४।७
३. अरिम्,
सा०-३।५३।२४
४. शत्रूणाम् अरणीयम्,
वे०-३।५३।२४
५. अशब्दम्,
सा०मु०-५।८५।७
६. अदातारम्,
सा०-५।८५।७
७. नित्यं निरन्तरम,
सा०-५।८५।७
८. गृहमागतः,
वे०-५।८५।७
९. असुखकरम्,
सा०-८।४।१०
१०. अर्यं स्वामिनम्,
सा०-१०।११७।४
११. अरममाणम्,
वे०-१०।११७।४

अरणी

अश्वत्थम्,
सा०-१०।१२४।२

अरण्य

१. वनानि,
वे०-१०।१४६।१
२. कानने,
सा०-६।२४।१०
३. अरण्याधिदेवते,
सा०-१०।१४६।१

४. कान्ताराणि,
सा०-१०।१४६।१

अरण्यानी

१. अरण्यस्य पालयित्री काचिदधि-देवतारण्यानि,
सा०-१०।१४६।१
२. कान्ताराणि,
सा०-१०।१४६।१
३. अरण्यस्य पत्न्यरण्यमपार्णं भवति,
सा०- १०।१४६।१ (यास्क०- ९।२९, ३०)
४. ग्रामादरमणं भवति,
सा०-१०।१४६।१ (यास्क०- ९।२९, ३०)
५. महारण्ये,
सा०-१०।१४६।४

अरणि

१. आयुधैः,
वे०-१।१२९।५
२. यज्ञादिरूपैः,
सा०-१।१२७।४
३. अतिशयेन तेजस्विभिः, युद्धादिरूपैः मार्गैः इव,
सा०-१।१२९।५
४. गमनसाधनैर्यज्ञादिमार्गैः,
सा०-१।१२९।५
५. दैवयज्ञार्थम्,
सा०-३।२९।२

अरति

१. अभिगन्तारम्,
वे०-१।५८।७, १२८।६, २।४।२, वे०सा०-६।४९।२, वे०सा०मु०-६।३।५, १५।४, सा०-४।२।१, ६।६७।८
२. गमनशीलम्,
वे०-१।१२८।८, ४।१।१
३. गन्तादित्यः,
वे०-२।२।२
४. गन्तारम्,
स्क०-६।४९।२, स्क०वे०- ६।६७।८, वे०-३।१७।४, ७।१०।३, ८।१९।२, २१, १०।३।१, ३।२, ३।७, ४६।४, वे०सा०-२।२।३, ७।५।१, १६।१, १०।३।६, ४५।७, ६१।२०, वे०सा०मु०-६।७।१,
५. शीघ्रं गन्तारम्,
सा०-४।१।१
६. गच्छन्,
वे०-४।२।१
७. गन्तव्यं स्वामिनम्,
सा०-६।७।१
८. गन्त्री ज्वाला,
सा०-६।१२।३
९. ज्वाला,
वे०-६।१२।३
१०. अग्निः सूर्यात्मना गन्ता,
सा०-१०।३।७
११. गन्ता अग्निः,
वे०-१०।३।२। सा०-१०।३।२ (गमन-शीलोऽग्निः)
१२. हविरादाय देवान् प्रति गन्ता,
उ०-१०।४५।७ (हविरादाय गन्ता), १०।४६।४ (सर्वगतं हविरादाय), सा०-१०।३।१
१३. गन्तारं सर्वदा यागगृहे वर्तमानम्,
सा०-१०।४६।४
१४. सञ्चरन्तम्,
वे०-२।२।३

१५. ईश्वरः,
सा०-१।१२८।६, २।२।३, २।४
१६. ईश्वरं तादृशं देवम्,
सा०-१।१२८।९
१७. अर्यमीश्वरम्,
सा०-८।१९।२१।
१८. अर्यं स्वामिनम्,
सा०-६।१५।४, ४९।२, ८।१९।१
१९. स्वामिनम्,
सा०-७।१०।३, १६।१
२०. अधिपतिः,
सा०मु०-१।५९।२
२१. अभिप्राप्तव्यम्,
सा०-८।१९।१
२२. अरममाणः,
सा०-१।१२८।६
२३. अप्रीतिः,
सा०-१।१२८।६
२४. व्याप्तो विस्तृतः,
सा०-२।२।२, २।३ (व्याप्तम्)
२५. प्रापयितारम्,
सा०मु०-१।५८।७
२६. न विद्यते विषयेषु रतिः प्रतीर्यस्या सावरतिः। विषयेष्वसक्तम्,
सा०-३।१७।४
२७. अरमणं दुःखमभिगन्तारम्,
सा०-४।३८।४
२८. अरमणे देशे,
सा०-५।२।१
२९. अरिम्,
सा०-४।३८।४
३०. अरण्यां हितम्,
सा०-५।२।१
३१. अन्तर्हिते देशे,
वे०-५।२।१
३२. भूतानामारयिता,
सा०-१०।४५।७
३३. देवान् प्रति निर्भर्त्सयिता,
उ०-१०।४५।७
३४. आरतिः आरण,
उ०-१०।४५।७
३५. आरयिता भूतानाम्,
उ०-१०।४५।७

अरत्नि

१. अरममाणाः शत्रवः,
सा०-८।८०।८
२. अदानाः अयजमानाः शत्रवः,
वे०-८।८०।८
३. हस्ते,
सा०-१०।१६०।४
४. राजवर्जिते देशे,
वे०-१०।१६०।४
५. रमणीयधनवर्जिते,
वे०-१०।१६०।४

अरथ

१. रथहीनाः,
सा०मु०-५।३१।५
२. रथवर्जिताः,
वे०-५।३१।५, वे०सा०-१।९७।२० १०।९९।४

अरथी

१. रथिः रथिः। न रथिररथीः। असारथिरपि स्तोत,
सा०-६।६६।७
२. सारथिरहितः,
स्क०-६।६६।७

अरध्र

१. असमृद्धम्,
वे०-६।१८।४, ६२।३

२. शत्रुभिर्वशीकर्तुमशक्यस्य। रघेर्वशीकरणार्थस्य रूपम्,
सा०-६।१८।४
३. साद्गुण्याद् रक्षोभिरहिंसितम्,
स्क०-६।६२।३
४. रक्षोभिरहिंसितम्,
वे०-६।६२।३

अरपस्

१. अपापः,
सा०-२।३३।६, ८।१८।९, १०।३७।११
२. पापवर्जितः,
वे०-८।१८।९
३. पापरहितम्,
वे०सा०-१०।१५।४, सा०-१०।१३७।५
४. अपापत्वम्,
वे०-१०।३७।११

अरमति

१. पर्याप्तमतिम्,
वे०-५।५४।६, ७।३४।२१, ३६।८
२. पर्याप्तबुद्धिः,
सा०-७।३४।२१
३. पर्याप्तस्तुतिः,
वे०-८।३१।१२, वे०सा०-१०।६४।१५,
४. अलंमतिः पर्याप्तस्तुतिः,
सा०-८।३१।१२
५. अलंमतिः पर्याप्ता मतिः अस्मदीया यस्याः कतृत्वेन सम्बन्धिनी। पर्याप्तया सर्वगुणग्रहणसमर्थया अस्मत्प्रज्ञया कृतेत्यर्थः,
उ०-१०।६४।१५
६. अनुपरतिः,
सा०-२।३८।४, ७।३६।८, (उपरति-रहिताम्), १०।६४।१५ (अनुपरता)
७. धीरः,
वे०-२।३८।४
८. अनुपरमाम्,
वे०-५।४३।६
९. आ समन्ताद्रममाणाम्,
सा०मु०-५।४३।६
१०. सर्वत्र गन्त्री,
सा०-५।४३।६
११. आरमणं धनादिकं प्रति,
सा०मु०-५।५४।६
१२. विरामवर्जिताः,
वे०-७।१।६
१३. दीप्तिः,
सा०-७।१।६
१४. सर्वविषयव्यापिबुद्धिः,
सा०-७।३४।२१
१५. भूमिम्,
सा०-७।४२।३
१६. सन्ततां ज्वालाम्,
वे०-७।४२।३
१७. अपर्यन्ता,
वे०-१०।९२।४, ५
१८. पर्यन्तरहिता,
सा०-१०।९२।४
१९. रमतिर्विरामोऽवसानम्। तद्रहितामपर्यन्ताम्,
सा०-१०।९२।५

अरममाण

१. अनुचरन्,
वे०- ९।७२।३
२. अनुपरतः सन्। पुनः पुनर्देवानां प्रीणनाय ग्रहादीनि प्रविशन्नित्यर्थः,
सा०-९।७२।३

अररिन्द

१. उदकानि,
वे०-१।१३९।१०
२. वृष्टिलक्षणान्युदकानि,
सा०-१।१३९।१०

अररिवस्

१. अदातुः,
वे०-१।१८।३, १४७।४, वे०सा०-७।१।१३, ९४।८, सा०-९।२९।५
२. अदातू रक्षःप्रभृतेः,
सा०मु०-५।७७।१
३. अदाता अस्मद्दानप्रतिबन्धकः इत्यर्थः,
सा०-१।१४७।४
४. अप्रयच्छतः,
वे०-३।१८।२, ९।२९।५
५. हविरप्रयच्छतः,
सा०-३।१८।२, ७।५६।१९
६. अयजमानाय,
वे०-७।५६।१९
७. अरेः,
सा०-७।९४।८
८. उपद्रवं कर्तुमस्मत्समीपं प्राप्तस्य शत्रुरूपस्य,
सा०मु०-१।१८।३
९. देवेभ्यो हविषामदातुरयष्टुः स्वभूतः,
स्क०-१।१८।३

अररु

१. अरणशीलं गमनस्वभावं कंचिन्मेघम्,
सा०-१।१२९।३
२. अदातारमयजमानम्,
वे०-१।१२९।३
३. असुरमेतन्नामन्,
सा०-१०।९९।१०
४. असुरम्,
वे०-१०।९९।१०

अरश्मन्

१. रश्मिवर्जिताः,
वे०-९।९७।२०
२. रश्मिवर्जिताः। रज्जुरहिताः,
सा०-९।९७।२०

अरस, सा

असारं बाधकं न भवतीत्यर्थः,
सा०-१।१९१।१६

अराजिन्

१. ईश्वरवर्जितम्,
वे०-८।७।२३
२. राज्ञा केनचित्स्वामिनानधिष्ठिताः,
सा०-८।७।२३
३. राजा स्वामी अस्य न विद्यते इत्यराजेन्द्रः,
सा०-८।७।२३

अराति, ती

१. शत्रवः,
उ०सा०-१०।३४।१४, स्क०वे०सा०मु०-१।४३।८, वे०-२।२३।५, ६।१६।२७, ५९।८, ७।८३।५, ८।७१।४, वे०सा०-३।२४।१, ४।२६।७, ८।४८।३, ९।७९।३, ९६।१५, ९७।१०, सा०-३।१८।१, ४।५०।११, ७।१।७, ८३।३, ८।३९।२, १०।५७।१, सा०मु०-५।५३।१४
२. अदानशीलाः शत्रवः,
सा०मु०-१।२९।४
३. अरातिशब्दः शत्रुपर्यायः,
स्क०-१।२९।४
४. अदाता शत्रुः,
सा०-२।७।२

५. अरातित्वं शात्रवम्,
सा०- ४।४।४
६. अभिगमनशीलाः शत्रवः,
सा०-७।८३।५
७. शत्रुसेनाः,
वे०-२।२३।९, ३।१८।१, ४।२७।२, सा०-६।१६।२७, ४४।९, ७।९७।९, ८।११।३
८. शत्रुभूताः प्रज्ञाः,
वे०-४।५०।११, सा०-६।४८।१६
९. शत्रुभूताः। स्त्रीलिङ्ग निर्देशवशाद् विशः,
स्क०-६।४४।९
१०. अदानशीलाः शत्रुभूताः प्रजाः,
सा०-८।९।१
११. शत्रुभूतः,
वे०-१०।३४।१४

अरातीयत्

१. अरातिं शत्रुमिवास्मानाचरतः शत्रोः ...न विद्यते रातिर्दानमस्मिन्नित्यरातिः शत्रुः,
सा०-१।९९।१
२. अरातिरदानं हविषः, तां कामयमानस्य सोममददतः,
वे०-१।९९।१

अरातीवन्

१. अरातित्ववान् शत्रुः,
वे०-१।१४७।४
२. स्वयमदानवान्,
सा०-१।१४७।४
३. अभिमुखमागमनवान्,
सा०-२।२३।७

अराधस्

१. अधनम्। दारिद्र्यात् यष्टुमसमर्थम्,
स्क०-१।८४।८
२. अनाराधयन्तम्,
वे०-१।८४।८
३. राधोधनम्। दानार्हधनरहितात्। लुब्धकादित्यर्थः,
सा०- ५।६१।६। मु०- ५।६१।६ (धनरहितात् लुब्धकात्)
४. हविर्लक्षणेन राधसा धनेन रहितम्। अयष्टारम्,
सा०मु०-१।८४।८
५. अधनात्,
वे०-५।६१।६, १०।३२।२
६. हविर्लक्षणेन धनेन रहितात्। अयष्टुश्चेत्यर्थः। यो हि न देवान् स्तौति न यजते स निर्धनो भवत्यल्पधनोः वा,
स्क०-५।६१।६
७. धनरहितान्,
सा०-१०।३२।२
८. संसाधककर्मरहितम्,
सा०-९।१०१।१३
९. संराधककर्मरहितम्,
वे०-९।१०१।१३
१०. अयजमानान्,
वे०-१०।६०।६
११. अदातॄनयजमानान्,
सा०-१०।६०।६

अराय

१. अधना,
सा०-८।६१।११
२. अहविष्का,
सा०-८।६१।११

३. नाधनाः,
वे०-८।६१।११ (यास्क०- ६।२५)

अरायी

१. अदायिनि दानविरोधिनि,
सा०-१०।१५५।१
२. अदानशीले,
वे०- १०।१५५।१
३. अदात्रीम् दानविरोधिनीम्,
सा०- १०।१५५।२
४. अप्रदात्रीम्,
वे०-१०।१५५।२

अरावन्

१. अरणवानभिगन्ता,
सा०-७।६८।७
२. अदाता,
वे०-१।३६।१५, ९।१३।९, १६ वे० सा०-७।३१।५, ८।२८।४, ६१।२५, ९।६३।५
३. अस्मभ्यं देयस्य धनस्य अदातॄन् वैरिणः,
सा०मु०-१।३६।१६
४. अदातॄन् हविषः। अयष्टॄन्,
स्क०-१।३६।१६
५. अप्रदाता,
वे०-८।२८।४
६. अदानानयजमानान्,
सा०- ९।१३।९
७. न प्रयच्छति,
सा०- ९।२२।५
८. शक्तौ सत्यां धनानामदातॄंश्च,
सा०-९।६१।२५
९. गमनवान् भूत्वा,
सा०- १०।३७।१२
१०. अरणवान्,
सा०-१०।३७।१२
११. अर्ता,
सा०-१०।३७।१२
१२. अभिभवनार्थम् अस्मान् प्रति गमनवान्,
सा०-१०।३७।१२
१३. गन्ता,
सा०-१०।३७।१२
१४. अदातुर्हविषाम्। अयागशीला-दित्यर्त्यर्थः,
स्क०-१।३६।१५
१५. अरातीनाम्,
वे०-७।५६।१५। सा०-७।५६।१५
(अरातिः शत्रुभूतः)
१६. धनादीनामदातृरूपात्,
सा०मु०-१।३६।१५

अरि

१. शत्रुः,
वे०-७।२१।९, ६०।११, ६८।२, ८।४८।८, ९।७९।३, १०।२७।८, वे०-१०।११५।५, वे०सा०-७।९२।४, ८।६०।१२, १०।४२।१, ५९।३, सा०-१।१६९।६, २।८।२, १२।४, ४।१६।१९, ५।४८।५, ६।१३।५, १४।३, १५।३, ७।५६।२२, सा०मु०-१।४।६, ११८।९,
२. शत्रवोऽपि ईश्वराः,
स्क०-१।४।६
३. शत्रोः संबन्धिनम्,
सा०- १।७३।५, २।१२।४, ७।८३।५
४. शत्रुरिन्द्रः
सा०-८।२।१४
५. वैरिणः,
स्क०-१।११८।९

६. अमित्रम्,
सा०मु०-५।४८।५
७. शत्रूणामभिगन्तारः सन्तः,
सा०-७।४८।३
८. अस्मद्विरोधिनः,
सा०-७।६८।२
९. ईश्वरः,
स्क०-१।७०।१, वे०-७।८।१, १०।१४८।३ वे०सा०-८।३४।१०, वे०सा०मु०-५।३३।६, सा०-१०।२८।१
१०. ईश्वरः। स्तुत्युच्चारणे समर्थ इत्यर्थः,
स्क०-१।९।१०
११. ईश्वराः। अप्रतिहताग्निगुण, प्रकाशनसामर्थ्या इत्यर्थः,
स्क०-१।७१।३
१२. ईरयिता स्तुतेरीश्वरः,
सा०-१।१८४।१
१३. ईश्वरः कर्माङ्गदेवलक्षणः,
उ०-१।१८४।१
१४. ईश्वरो यजमानः,
उ०-१०।३९।५
१५. स्वामी,
उ०-१०।४२।१, उ०वे०-१०।२०।४, उ०सा०-१०।२७।८, वे०-१।१६९।६, ४।२।१८, ५।३३।२, १०।१८४।१, १९१।१, वे०सा०-३।४३।२, ४।२९।१, ५।२।१२, ८।२१।१६, २४।२२, ६५।९, १०।८६।१, ११६।६, १४८।३, सा०-१।७०।१, ४।४८।१, ७।८।१
१६. अरणीयस्य स्वामिनः,
सा०-१।१६९।६
१७. स्वामी लब्धगोधनः,
सा०-४।२।१८
१८. स्तुतीनाम् अभिषवणकर्मणां च करणे स्वामी,
उ०-१०।७६।२
१९. स्वामी सर्वस्येश्वरः,
सा०-१०।११५।५
२०. स्वामी सर्वस्याग्निः,
उ०-१०।२०।४
२१. धनस्वामिन्यः,
सा०-१।७१।३ (धनस्य स्वामिन्यः), मु०-१।७१।३
२२. स्तोतारः,
सा०-१।१८५।९, ४।२०।३, ४८।१
२३. प्रेरिता स्तोता,
वे०-१।९।१०
२४. इरयति स्तुतीः प्रेरयतीत्यरिः स्तोता,
सा०-७।६०।११
२५. अभिगन्ता,
वे०-१।१५०।१, ६।१३।५, १४।३, ७।५६।२२, ८।२।१४, वे०सा०-८।१।४, सा०-९।७९।३
२६. अभिगन्त्रीः,
वे०सा०-१०।१३३।३, सा०-७।९७।९
२७. गन्त्री,
उ०-१०।२७।८, (स्वाधिकारं प्रति गन्त्र्यः) सा०-४।५०।११
२८. गन्तारः,
वे०-८।९४।३, वे०सा०मु०-५।५४।१२,
२९. स्तोत्रकरणार्थमितस्ततो गन्तारः,
सा०-८।९४।३
३०. गन्ता वायुः,
वे०-८।७२।१६
३१. अरणशीलो वायुः,
सा०-८।७२।१६

३२. गन्ता पतिः यजमानः,
सा०- १०।३९।५
३३. गन्ता पतिः,
वे०-१०।३९।५
३४. गन्तव्यः,
सा०-१०।२०।४
३५. गन्तव्यः प्राप्तव्यः,
सा०मु०-१।७०।१
३६. अभिगच्छन्तः,
वे०सा०-८।३९।२, ९।६१।११,
३७. निर्गन्ता,
वे०-१०।२८।१
३८. याचितॄणां धनानि अप्रयच्छन्तीः,
वे०-४।५०।११
३९. अर्ता हविरादिप्रापणेन सेवकोऽहम्,
सा०-१।१५०।१
४०. होता,
सा०-१।१८४।१
४१. प्रेरकः,
वे०- १०।७६।२
४२. ग्राव्णामभिषवाय प्रेरको यजमानः,
सा०-१०।७६।२
४३. हविषां प्रेरकः अग्निः,
सा०-७।८।१
४४. प्रदाता,
वे०-१।७०।१
४५. अर्थम्,
वे०-१।११८।९
४६. व्यापकम्,
वे०-४।३८।२
४७. गमनशीला देवाः,
वे०-७।३४।१८
४८. अर्यमा,
सा०-७।६४।३
४९. करादीनाम् अप्रदानानि,
वे०-७।८३।५
५०. धनम्,
वे०-१।१८५।९

अरि-गूर्त

१. अरिषु अदातृषु सदा शब्दितः,
सा०-१।१८६।३
२. अरीणां हननाय उद्युक्तः,
सा०-१।१८६।३
३. अरीणामाहवाता,
वे०-१।१८६।३

अरि-धायस्

१. अरिभिरीश्वरैर्धारणीयाः बहुमूल्या; असंख्याताः,
सा०-१।१२६।५
२. अभिगन्तॄणां मनुष्याणां धारकाः,
वे०-१।१२६।५

अरि-ष्टुत

अरिभिः प्रेरयितृभिः प्रशस्तः,
सा०-८।१।२२

अरिप्र, प्रा

१. अपापम्,
वे०-७।४७।१, ९०।४, ८।८।९, १०।७१।१ (अपापं वेदार्थज्ञानम्)
२. पापरहितम्,
सा०-७।४७।१, ९०।४, १०।७१।१
३. रिप्रमिति पापनाम। अपापौ,
सा०-८।८।९
४. अपापं सदा भवति पापापनोदम्,
उ०-१०।७१।१
५. कल्याण्यः,
वे०-१०।१२०।९

अरिषण्य

अहिंसकौ,
वे०सा०-२।३९।४

अरिषण्यत्

१. हिंसन्,
वे०-६।२४।९, २५।२, वे०सा०-२।३७।३
२. अहिंसन्। पालयन्नित्यर्थः,
सा०-६।२५।२
३. अहिंसंस्त्वम्,
सा०-६।२४।९
४. अस्मानहिंसन् अस्मद्धिंसा, परिहारार्थमित्यर्थः,
स्क०-१।६३।५
५. रेषणं हिंसनमनिच्छन्,
सा०-१।६३।५

अरिष्ट, ष्टा

१. अनुपहिंसितैः,
वे०-१।११२।२५
२. अहिंसितः,
उ०सा०-१०।६३।१३, स्क०वे०सा०मु०-१। ४१।२, स्क०वे०-६।६९।१, स्क० सा०-६।५४।७, स्क०सा०मु०-१।११२। २५, वे०-७।४०।४, वे०सा०-२।२७।२, ७, ३४।७, ६।१९।४, ७।४३। ५, ९७।४, ८।२७।४, १०।८५।२४, सा०-२।२७।१६, ८।२७।१६, १०। १२८।३, १६६।२, सा०मु०-५।१८।३, ३१।१, ४२।८
३. अक्षताः,
वे०-२।२७।१६
४. अनुपद्रवैः,
सा०-६।६९।१
५. अबाधितान्,
वे०-७।४०।४
६. अविनष्टः,
वे०-१०।६३।१३
७. अन्यूनाः,
वे०-१०।१२८।३

अरिष्टगातु

१. अहिंसितमार्गः,
वे०-५।४४।३
२. अहिंसितगमनः,
सा०-५।४४।३

अरिष्टग्राम

१. अक्षतगणाः,
वे०-१।१६६।६
२. अहिंसितसंघाः,
सा०-१।१६६।६

अरिष्ट-ताति

१. अविनाशकरीभिः,
वे०- १०।१३७।४
२. अविनाशाय,
वे०सा०-१०।६०।८
३. अहिंसाकरैः,
सा०-१०।१३७।४

अरिष्टनेमि

१. नेमिः इति आयुधनाम। अरिष्टोऽहिंसितो नेमिर्यस्य,
सा०-१।८९।६
२. रथचक्रस्य धारा नेमिः। यत्संबन्धिनो रथस्य नेमिः न हिंस्यते सोऽरिष्टनेमिः,
सा०-१।८९।६
३. अरिष्टोऽहिंसितो नेमिर्यस्यैवम्भूतः,
मु०-१।८९।६
४. अहिंसितायुधः,
स्क०-१।८९।६

५. *अहितायुधः,*
वे०-१।८९।६
६. *अहिंसितचक्रवलयम्,*
सा०-१।१८०।१०
७. *अक्षतचक्रधारम्,*
वे०-१।१८०।१०
८. *अहिंसितप्रधिविशिष्ट हे रथ,*
सा०-३।५३।१७

अरिष्ट-भर्मन्
१. *अहिंसितहविर्भरणे,*
वे०-८।१८।४
२. *अहिंसितभरणे,*
सा०-८।१८।४

अरिष्ट-रथ
१. *अहिंसितयज्ञरथः,*
उ०सा०-१०।६।३
२. *अहिंसितरथः,*
वे०-१०।६।३

अरिष्टवीर, रा
१. *अहिंसितपुत्रपौत्राः,*
स्क०-१।११४।३
२. *अनुपहिंसितवीराः,*
वे०-१।११४।३
३. *वीर्याज्जायन्ते इति वीराः प्रजाः। अरिष्टा अहिंसिता वीरा येषां तथाभूतः सन्तः,*
सा०-१।११४।३, मु०-१।११४।३
(अरिष्टा अहिंसिता वीराः प्रजाः येषां ते तथाभूताः सन्तः)

अरिष्टि
१. *अविनाशम्,*
वे०-२।२१।६
२. *अहिंसाम्,*
सा०-२।२१।६

अरिष्यत्
१. *अहिंस्यमानाः,*
वे०-४।५७।३ वे०सा०-२।८।६,
२. *अहिंस्यमानमविनाशिनमित्यर्थः,*
उ०-१०।६३।१४
३. *अहिंस्यन्तः,*
सा०-४।५७।३
४. *अहिंसिताः,*
सा०-८।२५।११, १०।६३।१४
५. *अरिष्टा भवन्तः,*
वे०- ८।२५।११
६. *पालनवत्त्वात् केनाप्यबाधिताः,*
सा०-८।२५।१२
७. *इन्द्रसहायानां मरुतामबाधकम्,*
सा०-१०।६३।१४

अरीळ्ह
१. *जिह्वयाऽलीढः,*
वे०-४।१८।१०
२. *शत्रुभिरनभिभूतम्,*
सा०-४।१८।१०

अरुग्ण
१. *अभग्नपूर्वम्,*
स्क०-६।३९।२
१. *अन्यैरभग्नम्,*
सा०-६।३९।२

अरुच्
१. *अदीप्तीन् लोकान् आदित्यादीन्,*
स्क०-६।३९।४
२. *अरोचमानान्,*
वे०-६।३९।४
३. *प्रकाशरहितान् तमसा मलीमसान् सर्वाल्लोकान्,*
सा०-६।३९।४

अरुण, णा

१. आरक्तो वर्णः,
स्क०-१।७३।७, ९२।१५, १०५।१८, ६।६४।३

२. रक्तवर्णः,
उ०सा०- १०।३०।२, स्क०-१।८८।२, ९२।२

३. आरोचनं श्वेतवर्णं तेजः,
सा०- १।७३।७, मु० - १।७३।७ (आरोचमानमं श्वेतवर्णं तेजः)

४. लोहितवर्णः,
सा०-६।६४।३, सा०मु०-१।१०५।१८, ११३।१४,

५. आरोचमानैः,
वे०- १०।५५।६, वे०सा०- २।३४। १३, ७।९८।१, सा०-२।३४।१२, १०। १४४।५

६. शुभ्रवर्णाः,
सा०मु०-१।९२।२

७. गमनशीलैः,
सा०-१।१३०।९, २।१।६

८. अत्यन्ततेजोयुक्तः,
सा०-१।१३०।९

९. विकृतरूपाणि दिगन्तराणि,
सा०-१०।१६८।१

आरुणी

१. अरुणीः वडवाः,
स्क०-१।६४।७

२. अरुणवर्णासु वडवासु,
वे०सा०मु०-१।६४।७

अरुणप्सु

१. अरुणरूपाः,
वे०-१।४९।१, ८।५।१, ७।७, ७३।१६, वे०सा०मु०-५।८०।१

२. अरुणवर्णाः,
सा०मु०-१।४९।१

३. अरुणवर्णरूपाः,
सा०-८।७।७

४. आरक्तरूपाः,
स्क०-१।४९।१

५. आरोचमानरूपाः,
सा०-८।५।१

६. शुभ्रवर्णाः,
सा०-८।७३।१६

अरुणयुज्

१. आरुण्ययुक्तैः,
वे०-६।६५।२

२. अरुणवर्णयुक्तैः,
सा०-६।६५।२

अरुणाश्व

रक्ताश्वाः,
स्क०-५।५७।४

अरुणि

अरुणवर्णाः,
सा०-१०।९५।६

अरुणी

१. अरुणवर्णाः,
स्क०सा०-१।१२१।३, स्क०सा०मु०-१।११२।१९, वे०- १०।१५।७, वे०सा०-४।१४।३, सा०-४।१।१६, २।१६,१०।६१।४

२. अरुणवर्णगोयुक्ताः,
सा०-१।१४०।१३

३. आरोचमानाः,
सा०-१।११२। १९, १२१।३

४. आरोचमानानां ज्वालानाम्,
सा०-१०।१५।७

५. *आरुण्यसाधनभूताः*,
सा०-१।१४०।१३
६. *गावः*,
वे०-१।१४०।१३

अरुतहनु

१. *अशब्दितहन्तव्यः*,
वे०-१०।१०५।७
२. *अबाधितहनुः*,
सा०-१०।१०५।७

अरुशहन्

१. *यजमानां शत्रूणां हन्ता*,
वे०-१०।११६।४
२. *अरुशाः शत्रवः। तेषां हन्ता*,
सा०-१०।११६।४

अरुष

१. *आरोचमानम्*,
उ०सा०-१०।८५।५, ८९।९, स्क०वे०-१।६।१, वे०-२।२।८, २९।६, ३१।६, ५।१२।६, वे०सा०-१।१४६।२, २।१०।२, १५।३, ३१।२१, ३।१।४, ७।५, ४।२।३, ६।९, १५।६, ४३।६, ५८।७, ५।१।५, १२।२, ४८।६, ४९।२, ३, ७।३।३, १६।२, ३, ४२।२, ७१।१, ७५।६, ९७।६, ८।३४।१७, ६९।१६, ९।८।६, २५।५, ६१।२१, ७१।७, ८२।१, ८९।३, १११।१, १०।१।६, ७३।९, ४५।७, वे०सा०मु०-१।११४।५, ११८।५, सा०- ९।७४।१, १०।२०।९, ९२।२, सा०मु०-१।९४।१०, ५।८।१, ४३।१२, ४७।३, ५६।७, ५९।५, ७३।५, ६।३।६,
२. *आरोचमानः सर्वेषां प्रीतिकरः*,
वे०- ४।६।९ (आरोचनशीलाः),
सा०-३।२९।६,
३. *रोचमानेन*,
वे०सा०-६।२७।७, सा०-२।२।८, ३।३१।३, सा०मु०-५।१२।६, मु०-५।१२।२
४. *दीप्तम्*,
स्क०-१।६।१, ३६।९
५. *आरोचनस्य*,
वे०-६।८।१
७. *आरोचनवर्णाः*,
उ०-१०।४५।७, स्क०-१०।४३।९,
८. *गमनशीलम्*,
स्क०-१।११८।५, वे०सा०-९।७२।१, ७४।१ सा०-१।१४१।८, सा०मु०-१।३६।९,
९. *गन्ता*,
स्क०- १।११४।५, ५।५९।५, ६।४९।२, ३, स्क०वे०- १।३६।९, ९४।१०,
१०. *गन्ता। सर्वत्रप्रतिहतगतिरित्यर्थः*,
स्क०-६।४८।६
११. *अरोषणम्*,
सा०-१।३६।९
१२. *हिंसकरहिताग्निरूपेणावस्थितम्*,
सा०मु०-१।६।१
१३. *हिंसकरहिता*,
सा०-१।११८।५
१४. *रुषा हिंसकाः तद्रहितस्य। शत्रु-राहित्येन रोचमानस्य*,
सा०-३।७।५
१५. *रोषरहितः*,
सा०-६।३।६

अरुषी

१. *आरोचमानाः*,
वे०-१।१४।१२, ७१।१, वे०सा०-८।६८।१८, ६९।५, १०।५।५, वे०सा० मु०-१।९२।१, २, सा०- १।७२।१०

२. *आरोचमाने उषः कालाभिमानिनि देवते,*
सा० मु०-१।३०।२१
३. *शुक्लतया आरोचमाना,*
सा०-३।५५।११
४. *आरोचमानाभिर्दीप्तिभिः,*
वे०सा०-९।१११।२
५. *आरोचने,*
उ०- १०।५।५, वे०-१।३०।२१,
६. *आरोचनशीलाम्,*
वे०-१।७१।१
७. *अहर्नाम,*
वे०- ३।५५।११
८. *रोचमाना,*
वे०सा०- ४।५२।२
९. *वडवाः,*
मु०-५।५६।६
१०. *आरोचमाना वडवाः,*
वे०सा०-५।५६।६
११. *दीप्ते,*
स्क०-१।३०।२१
१२. *बलवत्वाद् दीप्ताः,*
स्क०-१।१४।१२
१३. *गन्त्रीः,*
स्क०-१।१४।१२, ३०।२१
१४. *गमनस्वभाविकाम्,*
स्क०-१।७१।१, ९२।१, २
१५. *गतिमतीः,*
सा०मु०-१।१४।१२
१६. *शुभ्ररूपयुक्ताम्,*
सा०-१।७१।१
१७. *निर्मलरूपाः,*
सा०-३।२९।३
२. *आरोचमानतेजः सङ्घातः,*
वे०-२।२९।२

अरूक्षित

१. *कल्याणम्,*
वे०-४।११।१
२. *स्निग्धम्,*
सा०-४।११।१

अरेणु

१. *रेणुवर्जिताः,*
वे०-१।३५।११, ५६।३, १६८।४, ६।६२।६, ६६।२
२. *रेणुरहिताः,*
सा०-६।६६।२
३. *पांसुवर्जिताः,*
स्क०-१।३५।११, वे०-१।१६३
४. *धूलिरहिताः,*
सा०मु०-१।३५।११
५. *धूलिवर्जितैः। अमलिनैः,*
स्क०-६।६२।६, ६६।२ (धूलिवर्जितैः)
६. *अनवद्यम्,*
सा०-१।१५१।५, सा०मु०-१।५६।३
७. *तस्कराद्यनपाहरेण अनष्टा,*
सा०-१।१५१।५
८. *अक्षयाः,*
वे०-१।१५१।५
९. *अपापैः,*
सा०-१।१६३।६, १६८।४
१०. *अहिंस्यमानाः प्रबला असुराः,*
सा०-१०।१४३।२

अरेपस्

१. *अपापाः,*
उ०-१०।७८।१, स्क०वे०सा०मु०-१।५७।४, ६१।१४, वे०-१।६४।२, ५।५१।६, ५३।३, ६।३।३, ९।१०१।१०, वे०सा०-१०।१०५।१०, वे०सा०मु०-१।७३।४,

२. अपापौ। आथर्वणस्य गुरोः शिरश्छेदनादिना पापलेपरहिताविति भावः,
सा०-१।१८१।४
३. अपापं सुखकरम्,
सा०मु०-५।७३।६
४. अपापया निर्मलया,
सा०-१।१२४।६
५. अपापाः। यथा प्रतिग्रहार्थमन्यत्रागत्वा स्वगृह एवानुतिष्ठन्तो निर्दोषा भवन्ति तादृशा इत्यर्थः,
सा०-१०।७८।१
६. अपापां वृष्ट्यविघातिनीम्,
सा०मु०-५।६३।६
७. पापरहिताः,
स्क०-१।६४।२, सा०-९।७०।८, १०१।१०, १०।९१।४, सा०मु०-६।३।३
८. पापवर्जिताः,
स्क०-१।६४।२
९. उज्ज्वलया,
वे०-१।१२४
१०. पापेनालिप्यमानया,
वे०-१।१८१।४
११. निर्मलम्,
वे०-४।१०।६, ५।६३।६
१२. अहिंसकौ,
सा०मु०-५।५१।६
१३. अलेपाः,
सा०-५।५३।३
१४. गतिरहितम्, पात्रे स्थितम्,
सा०-९।७०।८

अव√मिह्

१. अव वर्षन्ति,
वे०-९।७४।४
२. अवस्ताद्वर्तमानं पार्थिवमुदकं वर्षन्ति,
सा०-९।७४।४

अवमार्जन

अङ्गसंशोधकानि स्थानानि,
सा०-१।१६३।५

अव√यज्

१. नाशयति,
सा०-१।१३३।७। ४।१।५ (विनाशयति)
२. अधः करोति,
वे०-१।१३३।७
३. पृथक्करोतु ...विश्लथयतु,
वे०-७।६०।९
४. अवपूर्वो यजतिस्त्यागार्थः,
सा०-७।६०।९

अवयाः

१. शत्रूणामवयजनं नाशनम्,
वे०-१।१७३।१२
२. अवयजनम्। अवयुज्य पृथक्कृत्य यजनं हविर्भागोऽस्ति,
सा०-१।१७३।१२
३. शत्रूणां वर्जनाय गन्ता वज्रोऽस्ति,
सा०-१।१७३।१२

अव√यम्

१. अधो नियच्छत्यात्मनः,
स्क०-१।५६।१
२. उद्यच्छति,
वे०-१।५६।१
३. पानार्थमुद्धरति,
सा०मु०-१।५६।१

√अवयास्

१. अवेजते। क्रोधरहितान् करोति,
वे०-६।६६।५

२. अवेत्येष आ इत्येतस्य स्थाने आयासति क्लेशयति। आगतमात्रेभ्यः एव हविर्ददाति, नैनान् प्रतीक्षयतीत्यर्थः,
स्क०-६।६६।५
३. अवयजते। अपगतक्रोधान् करोति,
सा०-६।६६।५

अवयात्

१. अवशब्दोऽपेत्यस्य स्थाने अस्मद्यज्ञादपगच्छताम्,
स्क०-१।९४।१२
२. अधस्तात् आगच्छताम्,
वे०-१।९४।१२
३. अवस्ताद्गच्छतां स्वर्गलोकस्य, धस्तादन्तरिक्षे वर्तमानानाम्,
सा०मु०-१।९४।१२

अवयात् हेळस्

१. अपगतक्रोधः,
वे०-१।१७१।६
२. अपगतमन्युः,
सा०-१।१७१।६

अवयातृ

१. अभिगन्ता,
वे०-१।१२९।११
२. अधोयापयिता प्रापयितासि,
सा०- १।१२९।११

अवयान

अवयापनम्,
वे०-१।१८५।८

अवयै

१. अवगच्छते,
वे०-८।४७।१२
२. अस्मान् हिंसितुमवगच्छते,
सा०-८।४७।१२

अवयुन

१. प्रज्ञानरहितम्,
वे०-६।२१।३
२. अप्रज्ञानम्। प्रज्ञाननाशनमित्यर्थः,
सा०-६।२१।३

अवर्ति

१. वृत्त्यभावात्,
वे०-४।१८।१३
२. अस्माकं वृत्तिहानिम्,
सा०-३।५८।३
३. अजीवनम्,
वे०-३।५८।३
४. जीवनोपायराहित्येन,
सा०-४।१८।१३
५. वर्तिजीवनम्। तदभावोऽवर्तिः,
सा०-५।७६।२

अवारतस्

१. अर्वाक् स्वाभिमुखं सर्वतो गच्छति,
उ०-१०।६५।६
२. अप्रार्थनेनैव,
वे०-१०।६५।६, सा०-१०।६५।६
(अवरणेन अप्रार्थनेनैव)

अवर्

१. रक्ष,
वे०-१।१३३।६
२. अवस्तात् अवाङ्मुखम्,
सा०-१।१३३।६

अवर, रा

१. अपरः,
वे०-१०।५६।७, ८१।१, १२०।७,
२. अपरकालीनानि,
वे०-८।९६।६

३. *अवरकालीनानि पश्चाद्भवानि,*
सा०-८।९६।६
४. *निकृष्टेषु स्वप्रजाभूतेषु मनुष्येषु,*
सा०-१०।५६।६
५. *अल्पं भौमं धनम्,*
सा०-१०।१२०।७
६. *विप्रकृष्टान् भूतान् स्वात्मनाहुतान्,*
सा०-१०।८१।१
७. *अस्मात् अर्वाग्वर्त्तिनः प्राणिनः,*
उ०-१०।८१।१
८. *अग्न्यादिषु,*
वे०सा०-१०।५६।७
९. *पार्थिवोऽग्निर्दैव्यो होता,*
सा०-१०।८८।१७
१०. *पार्थिवान्,*
वे०- ९।९७।१७। सा०-९।९७।१७
(अवरदेशे स्थितान् पार्थिवान्)
११. *अन्यानस्मदीयान्,*
सा०-८।७५।१५
१२. *दुर्बलैर्वारयितुमशक्यानि,*
वे०सा०-९।९६।७
१३. *अवाङ्मुखम्। अस्मदभिमुख-मित्यर्थः,*
सा०-१०।५५।४
१४. *उन्मुखम्,*
वे०-१०।५५।४
१५. *आत्माभिमुखान्,*
वे०-२।३४।१४
१६. *अर्वाचीनाः मनुष्याः,*
सा०-६।२१।६
१७. *ओषधीषु,*
वे०-१।१४१।५
१८. *निकृष्टः,*
सा०-१।१६३।९, २।२४।११, ४।२५।८, ९।८८।१९, १०।१५।१
१९. *पूर्वापेक्षया निकृष्टासु पश्चाद्भा-विनीष्वोषधीषु,*
सा०-१।१४१।५
२०. *निकृष्टं नाम पौत्रसंज्ञम्,*
सा०-१।१५५।३
२१. *न्यूने,*
वे०-२।२४।११
२२. *गुह्यम्,*
वे०-१।१५५।३
२३. *अधमाः,*
सा०-२।१२।८
२४. *उभये,*
वे०-२।१२।८
२५. *अवाङ्भागः आदिश्च,*
सा०-१।१६८।६
२६. *द्युलोकादधस्तने,*
सा०-२।९।३
२७. *मुख्यान्,*
सा०-२।३४।१४

अवरम्बमाणः
१. *अवलम्बमानः,*
वे०-८।१।३४
२. *अतिदीर्घत्वेनावाङ्मुखं लम्बमानः ...उरू प्रत्यवलम्बमानः,*
वे०-८।१।३४

अवरुद्ध, द्धा
पञ्जरेणावृतः परिवेष्टितः,
उ०सा०-१०।२८।१०

अवरोधन
१. *भूतानां प्रवेशनम्,*
सा०-९।११३।८
२. *अवरुणद्धि आदित्यो भूतानि प्रवेशयति,*
वे०-९।११३।८

अवरोहत्

विमुञ्चन्,
सा०-५।७८।४

अवर्त्र

१. अवारणीयः,
वे०-६।१२।३
२. केनाप्यवारणीयः,
सा०-६।१२।३

अव√वा

१. वननीयगमनोऽधो गच्छति,
वे०-१।५८।५
२. गच्छति,
वे०सा०-१०।६०।११
३. व्याप्नोति,
सा०मु०-१।५८।५

अव√वी

१. अभि गच्छति,
उ०सा०-१०।२३।४
२. अव गच्छति,
वे०-१०।२३।४

अव√व्यध्

अवाङ्मुखान् कृत्वा ताडयति,
सा०-९।७३।८

अव-विद्ध

१. अपविद्धम्,
वे०-१।१८२।६
२. अवस्ताच्छत्रुभिः पातितम्,
सा०-१।१८२।६
३. विक्षिप्तम्,
सा०-७।६९।७

अव-व्ययत्

अवाचीनं यथा भवति तथा संवृण्वन्। तिरस्कुर्वनित्यर्थः,
सा०-४।१३।४

अव√व्रश्च

१. अवच्छिन्धि,
स्क०-१।५१।७
२. अववृक्तवान्,
सा०-७।१८।१७
३. छेदनं कुरु ,
सा०मु०-१।५१।७

अव√शो

अत्यर्थं तनूकुरु। विनाशयेत्यर्थः,
सा०-१०।१०५।८

अव√श्रथ्

१. अव श्लथय,
वे०-१।२४।१५
२. अधस्तादवकृष्य शिथिलीकुरु,
सा०मु०-१।२४।१५

अव√श्वि

१. अश्वानाम् अरुणवर्णानां समूहे रथे,
वे०-१।१२४।११
२. अत्यर्थमागच्छति,
सा०-१।१२४।११
३. वर्धते,
सा०-१।१२४।११

अवस्

१. अधस्तात्,
स्क०वे०-१।८३।२, वे०-१।१६३।६, ९।७४।
२. अवस्तात्,
वे०-१०।२७।२१, वे०सा०-१०।१७।१३, ६७।४ वे०सा०मु०-५।४०।६, सा०-९।७४।६, सा०मु०-१।८३।२
३. अवस्तात् सामर्थ्यात् भूमेः,
सा०-१।१६३।६
४. अवस्तात् अधोदेशे,
वे०-९।७४।६। (अवस्तात् अधस्तात्),

सा०-१।१६४।१७, १०।२६।२१ (अवस्तादधोभागे स्थितेषु)

५. अवस्तात् स्थितम्,

सा०-१।१६४।१८

६. अवरस्य,

वे०-१।१६४।१८

७. अवमश्च, स्वल्पश्च,

उ०-१०।१७।१३

८. अवस्तात् भूलोके,

सा०मु०-६।९।३

९. पृथिव्यां वर्तमानः,

वे०-६।९।३

१०. अन्तरिक्षलोकस्य परस्तादादित्यमण्डले,

उ०-१०।२७।२१

११. अन्नाय गोरूपाय,

वे०-१०।१६९।१ (अन्नाय), सा०- १०।१६९।१

अवस्तात्

१. अधस्तात्,

सा०-१०।८८।१४

२. अवरो निकृष्ट आसीत्,

सा०-१०।१२९।५

३. सूर्यलोकात् अधस्तात् अन्तरिक्षलोके,

सा०-३।२२।३

अवोदेव

देवानामवस्तात्,

सा०-८।१९।१२

अव-सं√स्वृ

१. प्रति सम् गच्छन्ते,

वे०-९।७३।४

२. अवस्तात् ...संयोजयति,

सा०-९।७३।४

अव√सद्

अवतिष्ठस्व,

सा०-९।९६।१३

अवसाना

१. वस्त्रमनाच्छादयन्तीरपि जलाच्छादनात्,

वे०- ३।१।६

२. वस्त्रमनाच्छादयन्त्यः। वस्त्रस्थानीयस्य जलस्य विद्यमानत्वात्,

सा०-३।१।६

अव√सृज्

१. समर्पय,

सा०मु०-१।१३।११

२. अवसृष्टं बन्धनात् विमुक्तं करोतु। विमोकप्रकार एव स्पष्टीक्रियते,

सा०मु०-१।२४।१३

३. वृष्टिं कृतवानित्यर्थः क्षिपति पातयति। वर्षतीत्यर्थः,

स्क०-१।५५।६

५. अधः पातय,

सा०मु०-१।८०।४

६. देहि,

उ०सा०-१०।६५।१२, स्क०-१।८०।४, सा०- १०।८५।१३

७. अवाङ्मुखम् अपातयः,

सा०- १।१७४।४

८. अवाङ्मुखमसृजत् निरगमयत्,

सा०-१०।११३।४

९. अवाङ्मुखं प्रेरयतम्,

सा०मु०-५।६२।३

१०. त्याक्षीः, तदधीनं .... कुर्वित्यर्थः,

सा०-१।१८९।५

११. प्रयच्छ,

वे०- १।१८९।५

१२. अवसर्गो नामाभ्यनुज्ञा। 'जीवत्वयं मास्मैनं मारयत' इत्येवमनुजानीयादित्यर्थः,
स्क०-१।२४।१३
१३. नश्यन्तु,
सा०-५।२।५
१४. प्रापयन्ति,
सा०मु०-५।३०।१३
१५. अधो विसृजसि,
स्क०-६।४३।३
१६. विमुञ्च,
सा०-७।८६।५
१७. मेघान्निरगमय,
सा०-१०।१३३।२

अवसृष्ट

१. विमुक्ता,
सा०-७।४६।३
२. देवतार्थमवशिष्टाः परित्यक्ताः सन्तोऽश्वमेधे,
सा०-१०।९१।१४
३. इन्द्रेण निसृष्टाननुज्ञातान् हविभूर्तान् सोमान्,
सा०-१०।२८।११
४. इन्द्रेण निसृष्टान् दत्तान् हविर्भूतान्,
उ०-१०।२८।११
५. क्षिप्ता,
वे०सा०-६।७५।१६

अव√सो

१. अवसन्नो भवति यागार्थम्,
सा०-१०।६१।२०
२. विमोचयतु,
सा०-७।२८।४
३. विश्रथयतु,
वे०-७।२८।४
४. विमुञ्च,
स्क०-६।४०।१, सा०-४।१६।२
५. मुञ्च,
वे०- ६।४०।१
६. अवस्थापय,
सा०-६।४०।१

अवसान

दहनस्थानम्,
सा०-१०।१४।९

अवसाय

विमुच्य,
स्क०सा०मु०-१।१०४।१

अवसित

१. अवबद्धस्य। स्थावरस्य जङ्गमस्य च इत्यर्थः,
स्क०-१।३२।१५
२. निविष्टाः,
सा०-४।२५।८
३. एकत्रैव स्थितस्य स्थावरस्य,
सा०मु०-१।३२।१५

अवसै

१. अवसानात्,
वे०-३।५३।२०
२. यावद्रथवेगावसानं तावत्,
सा०-३।५३।२०

अव√स्था

१. अधो गच्छति,
वे०-५।४४।९
२. अवगच्छति,
सा०मु०-५।४४।९
३. अवस्थितिं ...कुरुत,
सा०मु०-५।५३।८

४. अव तिष्ठत,
वे०-५।५३।८
५. प्रति तिष्ठति,
वे०-८।२४।३०
६. उपस्थितवान्,
उ०-१०।४८।५
७. अवस्थापयति,
वे०सा०-७।८७।६

अवतस्थिवस्
१. अवस्थितम्,
वे०-८।९६।१४
२. उदकस्यान्तरवस्थितम्,
सा०-८।९६।१४

अव-स्था
१. अकालं विकृता वार्धक्यादयः,
वे०-५।१९।१
२. अशोभना दशाः,
सा०मु०-५।१९।१

अव√स्पृ
१. पालितवान्,
स्क०-६।४२।४
२. पालयतु,
सा०-६।४२।४
३. बाधां विनाश्य पालय,
सा०-९।७०।१०
४. पारय,
सा०-५।३।९
५. अवपारय,
वे०सा०-९।७०।१०, १०।३९।६
६. अव प्रीणय,
वे०-५।३।९
७. अवाङ्मुखं जहि,
सा०-९।७०।१०

अवस्पर्तृ
१. अवहिंसितः,
वे०-२।२३।८
२. उपद्रवेभ्यः पारयितः,
सा०-२।२३।८
३. अवसा रक्षणेनापद्भ्यः पारयितः,
सा०-२।२३।८

अव√स्मि
स्मयन्ते अवाङ्मुखं प्रकाशन्ते,
सा०-१।१६८।८

अवस्रस्
अवपतनात्,
सा०-२।१७।५

अव√स्रु
१. अत्यन्तमधो गच्छतु,
वे०-१।१२९।६
२. स्वस्थानादवाङ्मुखा भूत्वा गच्छतु अधः पतत्वित्यर्थः,
सा०-१।१२९।६

अव√स्वन्
अवाङ्मुखं शब्दमकरोत्,
सा०-४।२७।३

अव√स्वृ
भयं शब्दयति,
सा०-८।६९।९

अव√हन्
१. चूर्णय,
सा०-१।१३३।३
३. अवयुत्य अस्मत्तः पृथक्कृत्य नाशयत,
सा०-२।३४।९
३. प्रहरति,
सा०मु०-१।८०।५

४. अव असृजत,
वे०-२।३४।९
५. अर्वाचीनं कृत्वा हतवानसि,
सा०-४।३०।१४
६. अपनीतवानसि,
वे०-४।३०।१४
७. प्रतिमुखं गत्वा भूम्याम् अचूर्णयत्,
वे०-५।२९।४
८. अवहतवान्,
सा०मु०-५।२९।४
९. अभिहतवानसि,
सा०मु०-५।३२।१
१०. अपनीतवानसि,
वे०-५।४०।६
११. अपहृतवान्,
स्क०-६।३१।४
१२. हतवान्,
उ०-१०।४८।६ (अवदायोद्यम्य वज्रं हतवानस्मि), वे०-५।३२।१, सा०- १०। ४८।६, ७३

अवघ्नती

१. हन्यमाना,
वे०-१।१९१।२
२. अवहन्यमानौषधिः,
सा०-१।१९१।२

अवहन्तृ

१. अवहन्ता,
वे०-४।२५।६
२. हिंसितैव भवति,
सा०-४।२५।६

अव√हा

१. प्रहितवान्,
वे०-१।११६।३
२. अवेत्येप परीत्येतस्य स्थाने। ओहाक् त्यागे। प्रथमपुरुषबहुवचनस्य स्थाने मध्यम पुरुषैकवचनमेतत्। विपन्नावं सन्तं परित्यक्तवन्तः,
स्क०-१।११६।३
३. अवहितो भवामि। नाहं प्रथमक्षान् विसृजामि,
सा०-१०।३४।५
४. अवहितः,
वे०-१०।३४।५
५. अवगच्छामि। उपसर्पामि,
उ०-१०।३४।५
६. नावा गन्तुं पर्यत्याक्षीत्,
सा०मु०-१।११६।३
७. अवहापनं भवत्युपरिस्थितस्याक्षस्य भङ्ग इति,
वे०-३।५३।१९
८. पीपतः,
सा०-३।५३।१९

अव√हु

अधोमुखं जुह्वति,
सा०-५।७।५

अव√हृ

१. प्रापितवान् ...क्षिप्तवान्,
स्क०- १।३२।९
२. अधस्ताद् वृत्रशरीर एवं वज्रं प्रहृतवान्,
वे०-१।३२।९
३. अधोभागे वृत्रस्योपरि ...प्रहृतवान्,
सा०मु०-१।३२।९

अव√अज्

१. विसृजति,
वे०-१।१६१।१०

२. बाह्यभूमिं प्रति गमयति रक्षोभागत्वेन स्थापयति,
सा०-१।१६१।१०

अवाजिन्

१. अनश्वम्,
वे०-३।५३।२३
२. वाचामिनो वाजिनः सर्वज्ञः। तद्विलक्षणं मूर्खजनम्,
सा०-३।५३।२३

अवात, ता

१. अनभिगतः,
वे०-६।१६।२०, वे०सा०-६।१८।१
२. अन्यैः शत्रुभिरप्रतिगतः,
सा०-६।१६।२०
३. शत्रुभिरहिंसितः,
सा०-६।१८।१
४. अशुष्काः,
सा०-६।६७।७
५. अगतपूर्वाः अन्यदेवतां प्रति याः,
स्क०-६।६७।७
६. अगच्छन्त्यः,
वे०-६।६७।७
७. वान्ति प्रातिकूल्येन गच्छन्तीति वाताः शत्रवः तद्रहिताः,
सा०मु०-१।५२।४
८. वायुनापि निरोद्धुमशक्या इत्यर्थः,
स्क०-१।५२।४
९. गमनरहिताः अपलायितारः,
वे०-१।५२।४
१०. वातं गमनं तद्रहिताः एकपाण्यवस्थानात्,
उ०सा०-१।६२।१०
११. अगतपूर्वा,
स्क०-१।६२।१०
१२. सुश्लिष्टा,
वे०-१।६२।१०
१३. गमनसाधनरहिते देशे,
सा०-६।६४।४
१४. वातरहितेऽपि काले,
स्क०-६।६४।४
१५. सङ्गमनसाधनवर्जिते निरालम्बने देशे,
वे०-६।६४।४
१६. वातवर्जितम्,
वे०-१०।१२९।२
१७. प्राणसंबन्धाभावात्,
सा०-१०।१२९।२
१८. अगमनः,
सा०-८।७९।७
१९. गमनवर्जितः,
वे०-८।७९।७
२०. अन्यैर्गन्तुमशक्यः,
वे०सा०-९।९६।८
२१. तैरभिगतः,
सा०-९।९६।११
२२. तैरनभिगतः,
वे०-९।९६।११

अवार्यक्रतु

१. अवार्यकर्माणम्,
वे०-८।९२।८
२. भटैरनिवारणीयकर्माणम्,
सा०-८।९२।८

अवास्य

१. विमुच्य,
वे०-१।१४०।१०
२. अपक्षेप्य विहाय,
सा०-१।१४०।१०

अवि

१. पवित्रम्,
वे०-९।८६।११, ४८, ९१।२, १०७।२
२. दशापवित्रम्,
वे०-२।३६।१, ९।५२।२, सा०-९।७८।१ (अविरोमनिर्मितं दशापवित्रम्), ८६।११ (दशापवित्रच्छिद्रैः)
३. अविमयेन,
वे०-९।७८।१, सा०-९।९१।२ (अविमयैः पवित्रैः)
४. अविवालकृतैः,
सा०-९।१०७।२
५. अवेर्मेषस्य,
सा०-८।२।२
६. अवेर्बालमयैदशापवित्रैः,
सा०-२।३६।१

अविका

अविजाति .... अवयोः मेषः,
सा०-१।१२६।७

अवि-मत्

अवयो येषा अस्य सन्ति इति तद्वान्,
सा०-४।२।५

अव्य

१. अविमयम्,
वे०-९।६६।९, ६७।५, ९७।३१, वे०सा०- ९।६१।१७, ८८।६ सा०- ९।८६।२५, १०७।१७
२. अविमये पवित्रे,
वे०-९।७०।८ (अविमये समुच्छिते पवित्रे), वे०सा०-९।५०।२, १०७।१७,
३. अविभवः,
वे०सा०-९।७५।४, सा०-९।९६।३, १३, (अविभवे पवित्रे) ९७।४, ३१, १०९।१६
४. अवेः स्वभूतेः,
सा०-९।६९।३
५. पवित्रम्,
वे०- ९।१९६।१३, ९८।३, १०९।१६, वे०सा०-९।८६।१३, सा०- ९।९७।४
६. अविवालम्,
वे०-९।८६।२५, सा०- ९।६७।५
७. अविवालभवम्,
सा०-९।६९।९
८. अविलालेन कृते पवित्रे,
सा०-९।६६।९, ७०।८ (अविवालकृते दशापवित्रे)

अव्यय

१. अविमयम्,
वे०सा०-९।१६।६, ४९।४, ८२।१, ८६।३४, सा०-९।९९।५, १००।४, १०३।३
२. पवित्रम्,
वे०- ९।६६।११, ६९।४, ९९।५, १०३।३, ११०।१, वे०सा०- ९।९८।२
३. अविमयी त्वक् च निर्नेक्ती भवति। तद्धि दशापवित्रापेक्ष्यमभिहितम्,
सा०-९।७०।७
४. अविमयमव्यवयवभूतम्,
सा०-९।६७।२०
५. अविमयमूर्णास्तुकेन निर्मितं दशा-पवित्रम् ,
सा०-९।६६।२८
६. अविमये अविस्वभूते वा,
सा०-९।६६।११
७. अविमयं वालम्,
वे०सा०-९।८६।३१
८. दशापवित्रम्,
वे०-९।३७।३
९. अविमयं समुच्छ्रितं पवित्रम्,
वे०-९।८६।८

१०. व्ययरहितमविनश्वरम्,
सा०-८।९७।२
११. अच्छिन्नानि व्ययरहिताः,
सा०-१।१३५।६

अविक्षित
१. अविक्षीणम्,
वे०सा०-८।३२।८
२. अविक्षीणा,
सा०-७।१।२४

अविचाचलि
१. निश्चलः,
वे०-१०।१७३।२
२. चलनरहितः,
सा०-१०।१७३।२
३. अतिशयेन चलनरहित एव सन्,
सा०-१०।१७३।१

अविचेतन
विज्ञानरहितानप्रज्ञातानर्थान्,
वे०सा०-८।१००।१०

अविचेतस्
१. विपरीताः,
वे०-९।६४।२१
२. विशिष्टमतयो विचेतसः। अविचेतसो विपरीतमतय इत्यर्थः,
सा०-८।६४।२१

अविजानत्
अतिगहनं तत्त्वं विशेषेण ज्ञातुमशक्नुवन्,
सा०-१।१६४।५

अवितारिणी
१. या विविधं न गच्छति तां निश्चलां बुद्धिम्,
वे०-८।५।६
२. वितरणं विगमनमपायः। अनपायिनीम्,
सा०-८।५।६

अविथुर
१. अभीरवः,
स्क०-१।८७।१
२. अनेकाकिनः,
वे०-१।८७।१
३. अवियुक्ताः,
सा०-१।८७।१
४. अवियुक्ताः, सप्तगणसंघीभूताः,
मु०-१।८७।१

अविदस्य
अनुपक्षपणीयम्,
सा०-७।३९।६

अविदीधयु
१. दीप्यमानम्,
वे०-४।३१।७
२. विदीधयुः अदीप्यमानः। न विदीधयुः अविदीधयुः,
सा०-४।३१।७

अविदुष्टर
१. अत्यन्तमजानन्तः,
वे०-१०।२।४
२. अविद्वत्तरा अत्य मजानन्तः,
सा०-१०।२।४

अविद्रिया
१. दृ विदारणे। सहयोगलक्षणा चैषा तृतीया अविदारणीभिः अविनाशिनीभिः,
स्क०-१।४६।१५
२. रक्षणपरैः,
वे०-१।४६।१५

३. प्रशस्ताभिः,
सा०-१।४६।१५

अविद्वस्

१. अजानन्,
स्क०- १।१२०।२, मु०-५।३०।३, १०।७९।६,
२. अजानन् अशाठ्येनेत्यर्थः,
उ०-१०।७९।६
३. पूर्वमजानन् जनः,
सा०-५।३०।३
४. अज्ञः स्तोता,
सा०मु०-१।१२०।२
५. वैदुष्यरहिता अल्पमतयः,
सा०-६।१५।१०

अविधवा

१. जीवद्भर्तृकाः,
उ०-१०।१८।७
२. शोभनपतिकाः,
वे०-१०।१८।७
३. धवः पतिः। अविगतपतिकाः। जीवद्भर्तृका इत्यर्थः,
सा०-१०।१८।७

अविप्र

१. विप्राः मेधाविनः ऋत्विजः, ते यस्य स्तोतुर्न सन्ति सोऽविप्रः,
स्क०-६।४५।२
२. विप्रः स्तोता। तद्विलक्षणोऽपि पुरुषे,
सा०-६।४५।२
३. अमेधावी,
सा०-८।६१।९
४. अस्तुतिकुशलः,
सा०- ८।६१।९
५. मेधारहितः,
वे०-८।६१।९

अविरण

१. अविगतरणाय संग्रामनाशनाय,
सा०-१।१७४।८
२. अविरमणाय प्राणिनामविनाशाय,
सा०-१।१७४।८

अविवेनत्

१. एवेन्द्रम्, अविरूपम् सुष्ठुकामयमानम्
वे०-४।२४।६
२. विवेनो विगतेच्छः। तदन्योऽविवेनः। आत्मानं कामयमानम्,
सा०-४।२४।६

अविवेनम्

१. अविगतकामम्,
वे०-४।२५।३
२. अविगतकामम्। यथाकामम्,
सा०-४।२५।३

अविशस्तृ

१. शस्ता,
वे०-१।१६२।२०
२. विशसने अकुशलः शमित,
सा०-१।१६२।२०

अविश्वमिन्व-न्वा

१. सर्वैश्चाज्ञायमानपरिमाणाम्,
वे०-१।१६४।१०
२. असर्वव्यापिनीम्,
सा०-१।१६४।१०
३. अपरिच्छिद्यमानम्,
वे०-२।४०।३
४. विश्वस्यापरिच्छेद्यम्,
सा०-२।४०।३

अविष

१. अवनानि पालनानि,
स्क०-६।३९।५

२. विषवर्जितानि पुष्टिकराणि,
स्क०-६।३९।५
३. विषरहितानि,
सा०-६।३९।५
४. रक्षकाणि,
सा०-६।३९।५
५. महतः प्रीतिकारिणः,
सा०-८।२५।२०

अविहर्यत-क्रतु

१. अविगतो हर्यतः कामो यस्य सोऽविहर्यतः कामवान्। क्रतुरिति यज्ञनाम। अविहर्यतः क्रतुर्यस्य सोऽविहर्यतक्रतुः। स्तुतिर्हवींषि च प्रति कामयमानचित्त इत्यर्थः,
स्क०-१।६३।२
२. प्राप्तुमशक्यत्वात् अप्रेप्सनीयः क्रतुः प्रज्ञा कर्म वा यस्य सोऽविहर्यतक्रतुः,
स्क०-१।६३।२
३. प्रेप्सितकर्मन्निन्द्र... विहर्यतोऽनभिलषितः। अविहर्यतोऽभिलषित इत्यर्थः। तादृशः क्रतुः कर्म यस्य स तथोक्त,
सा० - १।६३।२। मु० - १।६३।२ (प्रेप्सितकर्मन्)

अविह्रुत-ता

१. अहिंसितम्,
वे०-१०।१७०।१
२. अकुटिलम्,
सा०-१०।१७०।१
३. अबाधितम्,
वे०-५।६६।२
४. अहिंस्यम्,
सा०मु०-५।६६।२

अवीता

१. असेविता नवतराः,
वे०-४।४८।१
२. अन्यैः पूर्वमभक्षिताः,
सा०-४।४८।१

अवीर, रा

१. अपुत्राः,
वे०-७।४।६, १०।८६।९ सा०-७।४।६ (पुत्रादिरहिताः), ६१।४,
२. अनुत्पादितपुत्राः,
वे०-७।६१।४
३. वीरवर्जिते,
सा०-१०।९५।३
४. वीरेणात्मना वर्जिते,
वे०-१०।९५।३

अवीरहन्

१. वीर्यात् जायन्ते इति वीराः पुत्राः। तेषामहन्ता ...वीराणां हन्ता वीरहा। न वीरहा अवीरहा,
सा०-१।९१।१९
२. अहन्ता च वीराणाम्,
स्क०-१।९१।१९
३. पुत्राणामहन्ता,
वे०मु ०- १।९१।१९

अवृक, का

१. वृकशब्देनात्र हिंस्त्रप्राणिवचनत्वाद्धि, स्त्रत्वं लक्ष्यते। अहिंस्त्राय,
स्क. १।३१।१३
२. कुक वृक आदाने इत्यस्यैतद्रूपम्। आदातव्यानामदात्रे। स्तोतॄणां यजमानानां च देवहार्यं यद्धनं तस्याप्यनपहर्त्र इत्यर्थः,
स्क०-१।३१।१३

३. कुक वृक आदाने इत्यस्य रूपम्। अवृकम् अनादातृ। अभिप्रेतान् अनपहारकमित्यर्थः,
सा०-६।४८।१८
४. कुक वृक आदाने परैरनादेयम्,
स्क०-१।४८।१५
५. कुक वृक आदाने। आदातृवर्जितानि। अनपहार्याणीत्यथः,
स्क०-१।५५।६
६. वृकेणावरकेण तेन रहितानि,
सा०मु०-१।५५।६
७. वृको हिंसकः शत्र्वादिः। तद्रहितस्य,
सा०-१।१५५।४
८. वृकवर्जितस्य,
वे०- १।५५।४, ७।७४।६
९. वृकरहितः,
वे०- ७।१९।७, १०।३६।३
१०. वृकशब्दोऽयं वृश्चते छेदनार्थस्य। अवृकम् अवृक्णम् अच्छिन्नम्। समनित्यर्थः,
सा०-६।४८।१८
११. वृकसदृशं वृकं हिंसकम्। अवृकम् अहिंसकम्,
सा०-६।४८।१८
१२. अनादातृ। अभिप्रेतान् अनपहारकमित्यर्थः,
सा०-६।४८।१८
१३. वृको हिंसकः शत्र्वादिः। तद्रहितस्य,
सा०-१।१५५।४
१४. अहिंसकाय,
सा०-४।४।१२, सा०मु०-१।३१।१३
१५. हिंसकरहितम्,
सा०-२।३१।३, सा०मु०-१।४८।१५, ६।२।२
१६. हिंसारहितः,
सा०-४।१६।१८
१७. बाधकरहितः,
सा०-६।१५।३, ७।१९।७। ८।९।१, १०।३६।३, १४४।५
१८. बाधकरहितं सर्वदा ऐक्यरूपेण वर्तमानम्,
सा०-६।४८।१८
१९. वृकशब्दोऽयं वृश्चतेः छेदनार्थस्य। अवृकम्, अवृक्णम् अच्छिन्नम्। समनित्यर्थः,
सा०-६।४८।१८
२०. मरुद्भिः,
वे०-२।३१।३
२१. स्तेनरहितम्,
वे०-१।४८।१५, ४।४।१२, ६।४।४, १५।३, ८।९।१
२२. वृकाः स्तेनाः तद्रहितैः वृकः स्तेनः। तद्रहितम्। बाधारहितमित्यर्थः,
वे०-८।२७।४ (अस्तेनैः), सा०-८।२७।४, सा०वे०मु०-६।४।८
२३. स्तेनवर्जितानि,
वे०-१।५५।६, ६।२।२, ७।६६।८, ८८।५
२४. अहिंस्याय,
सा०-७।६६।८, ८८।५ (अहिंस्यमात्यन्तिकम्)
२५. हिंसारहितम्,
वे०-१०।१४४।
२६. परकीयधनस्यानादातारः,
सा०-७।७४।६
२७. निजेन निरतिशयेन ऐश्वर्येण युक्तत्वाद् अन्यतः कस्यचिदर्थस्य अनादातृ,
उ०-१०।३६।३

२८. *वृकवदरण्यश्ववदस्मासु हिंसामकुर्वन्तः,*
सा०-१०।१५।१
२९. *अनमित्राः,*
वे०-१०।१५।१
३०. *रक्षोवर्जिताय,*
वे०- १।३१।१३, ४।१६।१८
३१. *राक्षसादिभिर्बाधकैर्वियुक्तेऽस्मदीये अग्न्यागारे,*
सा०मु०-६।४।४

अवृकतम

१. *अस्तेनतमः,*
वे०-१।१७४।१०
२. *दातृतमः,*
सा०-१।१७४।१०

अवृजिन

१. *अवद्यरहिताः,*
वे०-२।२७।२
२. *अवर्जितारः सर्वानुग्राहकाः,*
सा०-२।२७।२

अवृत

१. *शत्रुभिरपरिवृतः,*
वे०-१।१३३।७, वे०सा०-८।३३।६, १० (अपरिवृतः)
२. *परैरनाक्रान्तः सन्,*
सा०-१।३३।७
३. *रक्षः प्रभृतिभिरनाच्छादितम्,*
सा०-६।१४।५
४. *अनावृतः,*
वे०-६।१४।५, वे०सा०-८।१०२।१४

अवृद्ध

१. *अवर्धयितॄन्,*
वे०-७।६।३
२. *स्तुतिभिरग्निमवर्धयतः,*
सा०-७।६।३

अव√इ

१. *गच्छति,*
वे०-१।१६४।५१
२. *अवाङ्मुखं गच्छति,*
सा०-१।१६४।५१
३. *अवगच्छति,*
वे०-५।७८।८, सा०मु०-५।३७।२, ४९।५
४. *अवगमयति,*
वे०- ५।३७।२
५. *अपगच्छतु,*
वे०-५।४९।५
६. *निर्गच्छ,*
सा०मु०-५।७८।८

अवायती

१. *अवगच्छन्ती,*
वे०-८।९१।१
२. *स्नानार्थमभ्यवगच्छन्ती,*
सा०-८।९१।१

अव√ई

१. *अपगच्छतु,*
वे०-७।५८।५
२. *स्तोत्रेण वयमपनयामः,*
सा०-७।५८।५
३. *अवगच्छति,*
वे०सा०-८।४।३
४. *उपगच्छेयम्,*
सा०-७।८६।४
५. *अभिमुखं गच्छामि,*
वे०-७।८६।४
६. *अवनयामः,*
सा०मु०-१।२४।१४

७. अपनयामः,
स्क०-१।२४।१४
८. विनाशयामः,
वे०-१।२४।१४

अवेनत्

१. गर्भवासमकामयमानः,
उ०-१०।२७।१६
२. आत्मानमकामयमानम्,
वे०-१०।२७।६
३. निवासमकामयमानम्,
सा०-१०।२७।१६

अव√इन्व्

१. अपक्षारयतम्,
वे०-७।६४।२
२. अवस्तात् प्रेरयतम्,
सा०- ७।६४।२

अव√ईश्

वेक्षसे,
सा०-८।७९।९

अव्यती

सपत्नीभिः सह पर्यायेण पतिमागच्छति सा व्यती। न तादृश्यव्यती।,
सा०-१०।९५।५

अव्यथि

१. व्यथारहिताभिर्नौभिः,
सा०मु०-१।११२।६
२. अकम्पिताभिः,
वे०-१।११२।६
३. अभयरूपाभिर्भयव्यावर्तिनीभिरूतिभिः,
स्क०-१।११२।६
४. नौभिः सामर्थ्यात्,
स्क०-१।११२।६
५. अव्यथाम्,
वे०-१।११७।१५
६. व्यथारहितैः,
वे०-७।६९।७, ८।२।२४, वे०सा०-९।४८।३
७. व्यथां पीडाम् अप्राप्त एव सन्,
सा०मु०-१।११७।१५
८. अविकलचित्तः। स्थिरयुष्मद्भक्तिरित्यर्थः,
स्क०-१।११७।१५
९. सुखकरेषु स्तोतृषु,
सा०-८।२।२४

अव्यथिया

व्यथारहिताः,
उ०वे०सा०-१०।२७।२१

अव्यथ्य

अव्यथनीयाय,
वे०-२।३५।५

अव्यनत्

विविधमनितिश्वसितीति,
सा०- १०।१२०।२

अव्रत, ता

१. अयजमानान्,
वे०-१।३३।५, १०१।२, १३०।८, १३२।४, १७५।३, ९।७३।५, वे०सा०-९।७३।८
२. व्रतरहितान् वृत्रानुचरान्,
सा०मु०-१।३३।५
३. अव्रतान्,
वे०-१।५१।८
४. अकर्मणः अयष्टॄन्,
स्क०- १।३३।५

५. अयष्टारम् ...अकर्माणम्,
सा०-१।१३२।४
६. कर्मरहितान् यजमानान्,
सा०-९।७३।५
७. व्रतमितिकर्मनाम। कर्मविरोधिनस्तान् दस्यून्,
सा० - १।५१।८, मु०-१।५१।८ (कर्म-विरोधिनस्तान् दस्यून्)
८. व्रतमिति कर्मनाम। तद्रहितान् याग-विद्वेषिणः,
सा०-१।१३०।८
९. अकर्मणः यागकर्मवर्जितान्। अयष्टॄनित्यर्थः,
स्क०-१।५१।८
१०. व्रतस्य यागदेः कर्मणो विरोधिनम्,
सा०मु०-१।१०१।२
११. अकर्माणम्। भयान्निश्चेष्टमित्यर्थः,
स्क०-१।१०१।२
१२. अकर्माणमननुष्ठायिनम्,
सा०-१।१७५।३
१३. अकर्माणम्,
वे०सा०-९।४१।२
१४. व्रतरहितः कर्मरहितो भूत्वा,
सा०-८।९७।३

√अर्च्

१. अर्चति,
वे०-१।६।८, १०।१, ५२।१५, ९२।१३, १६५।१४, १६६।७, वे०सा०-१।१७३।२, २।१७।१, ५।२९।६, २९।१२, ४५।७, ६।२१।६, २१।१०, ५०।६, ५०।१५, ८।४०।४, ९२।१९, ९३।२६, ९।९७।४, १०।१३३।१, सा०-१।१७२।२
२. अर्चन्ति कुर्वन्ति,
वे०-३।१४।४
३. अर्चन्ति अभिषुण्वन्ति,
वे०-५।३१।५
४. अभ्यर्चत ...यद्वा ...अभिष्टुम,
सा०-९।९७।४
५. उपार्चत,
वे०-१०।९६।२
६. विशेषेणार्चति। सोमपाने श्रद्धां करोति,
सा०-४।१६।३
७. नभः प्रदेशं पूजयन्ति। कृत्स्नं जगद्युगपदेव व्याप्नुवन्तीत्यर्थः,
सा०मु०-१।९२।३
८. पूजयति,
उ०वे०सा०-१०।३६।५,वे०-१।१५१।६, १६५।१, ५।२९।१, वे०सा०-१०।१४८।३, सा०-१।१३२।५, ३।४४।२, ८।४०।४, ९२।१९, ९३।२६, १०।९६।२, १३३।१, १४७।३, १६५।१ सा०मु०-५।४५।७, १।५१।१, ५२।१५, ५४।२, ८०।९, ८४।५, मु०-१।६।८
९. अर्च पूजायाम्। पूजयन्त्युषसः। प्रकाशत्वापादनेनाभिपूजितं कुर्वन्तीत्यर्थः,
स्क०-१।९२।३
१०. पूजयति। अतिशयेन प्रीणयतीत्यर्थः,
सा०-१।६।८
११. पूजयथ। स्वीकुरुथ इत्यर्थः,
सा०-१।१५१।६
१२. पूजयन्ति। जगति कुर्वन्ति यद्वा मम बलं वर्धयन्ति,
सा०-१।१६५।१
१३. पूजयन्ति। स्तुत्यादिना संभावयन्तीत्यर्थः,
सा०-१।१६६।७

१४. पूजयाम। शंसामेत्यर्थः,
सा०-१।१७३।१
१५. अभिपूजयामि। स्तौमीत्यर्थः,
सा०मु०-५।४१।८
१६. पूजय। विधेहि,
सा०-१०।११२।९
१७. स्तौति,
उ०वे०सा०- १०।१२।४, ६४।३, स्क०-१।६।८, ९।१०, स्क०वे०- १।५१।१, ५२।१५, ५४।२, ८०।९, स्क०वे० सा०मु०- १।१०१।७, स्क०सा०- ६। ५०।६, १५, वे०-१।८४।५, ५।४१।८, १०, १०।१४७।३, १६५।१, वे०सा०-१।१३८।१, ८।२३।२४, ४१।१, १०।१।३, १०।७६।५, ९४।७, सा०-४।१।१४, ६।२१।६, सा०वे०- ६। २२।१, सा०मु०-५।२९।१, २९।२, ६, १२, मु०- ५।३०।६
१८. स्तौति। इन्द्रस्य पराक्रमं प्रशंसति इत्यर्थः,
सा०-१।९।१०
१९. स्तोत्र कुरु,
मु०-१।५४।२
२०. स्तुवन्ति कुर्वन्तीत्यर्थः,
सा०-५।३०।६, ३१।५
२१. उच्चारयति,
स्क०- १।८४।५, स्क०वे०सा०मु०-१।५४।३, वे०- १।१६५।१४, ३।५४।२, ४।४।८, ७।२२।३ वे०सा०-९।११।४, १०।८९।३,
२२. अर्चतिरुच्चारणकर्मा। शङ्खमार्चन जयार्थं ध्मापितवन्तः,
वे०- ४।१।१४
२३. वदति,
वे०-१।९।१०, सा०-७।२२।३
२४. अर्चतिकर्मत्वाद् अर्चतिः स्तुत्यर्थः। तेनाप्युच्चारणं लक्ष्यते। उच्चारयत स्तुतिशस्त्रलक्षणाः,
स्क०-६।४५।४
२५. प्रशंसति, अनुशंसति, शंसति,
वे०-१।१७३।१, वे०सा०-६।४५।४, सा०मु०- १।१०।१, मु०-१।९।१०,
२६. ब्रवीति,
वे०- १०।११२।९, सा०-२।१७।१,
२७. प्रयच्छति,
वे०-१।१३२।५,
२८. ददाति,
उ०-१०।६४।९, सा०मु०-५।५४।१
२९. श्रद्धते,
वे०-४।१६।३
३०. वहति,
सा०-३।१४।४

अर्क

१. अर्चनीयम्,
स्क०सा०- ६।६५।५, वे०सा०मु०- १। १०।१, ८५।२, वे०-५।५७।५, ८।६३। ४, १०।१५३।४, वे०सा०-६।४९।८, ९।२५।६, ९२।१९, १०।६८।४, १०७।४, ११४।१ सा०-२।११।५, ३।२६।७, ८, ३१।११, ६।३।८, ७।९।२, ६२।३, ८।१०१।१४, ८८।४, ९।५०।४, मु०-५।४१।७
२. स्तुत्यम्,
सा०-१०।१५३।४
३. स्तोतव्यः,
वे०-३।२६।७
४. पूज्यम्,
स्क०सा०मु०-५।५७।५, वे०-३।२६।८

५. मन्त्रः,
उ०वे०-१०।६।४, स्क०- १।६२।७, ११, ८८।४, स्क०वे०- १।३३।२, ६।५०।१५, ८।८८।४, ८९।६, ९।७३।२, वे०- १।१४१।१३, १६४।२४, १९०।१, ४।३।१५, १०।३, ५।३१।४, १०।६७।५, वे०सा०- ६।२१।४, ९।९७।३५, सा०-१।१७६।५, ४।४४।३, ५५।३, ५६।१, ५६।२, ५।४१।७, १०।१४८।५

६. *अर्चनसाधनैर्मन्त्रैः,*
सा०-१।१४१।१३, १६४।२४, १९०।१, ६।५०।१५, (अर्चनसाधनैः), सा०मु०-५।४१।६,

७. *अर्चनीयो मन्त्रः,*
सा०-८।८९।६, १०।६७।५, ११६।९

८. *ऋग्रूपैर्मन्त्रैः*
स्क०-१।७।१। (मन्त्रैः ऋग्लक्षणैः), वे०-८।१६।९ (ऋग्भिः), सा०मु०-१।७।१

९. *मन्त्रैः ...यजुर्लक्षणैः,*
स्क०-१।४७।१०। सा०-८।१६।९ (अर्चनसाधनैर्यजूरूपर्मन्त्रैः)

१०. *स्तुतिरूपं मन्त्रम्,*
स्क०- ६।६६।९ (स्तुतिलक्षणं मन्त्रम्), सा०मु०- १।६१।५, ६२।७,

११. *शस्त्रम्,*
उ०-१०।६।४, वे०- १।७।१, ४७।१०, सा०-३।५४।१४ (अर्चनीयैः शस्त्रैः) ४।३।१५ (अर्चनीयैः शस्त्रैः), ८।१२।२३ (अर्चनसाधनैः शस्त्रैः), १२।२३ (अर्चनसाधनैः शस्त्रैः), सा०मु०-१।६२।११ (शस्त्ररूपैर्मन्त्रैः)

१२. *स्तोत्रम्,*
वे०-१।६१।५, ८, ६२।१, ७, ८८।४, १६६।७, १७६।५, ३।३१।९, ११, ४।४४।३, ५५।३, ५।२९।१२, ३०।६, ३३।२, ४१।७, ६।२१।१०, १०।७८।४, ११६।९।१४८।५ सा० - १।१३१।६, १०।६।४, सा०मु० - १।३३।२, ५।३१।४,५,

१३. *अर्चनसाधनैः स्तोत्रैः,*
सा०-३।३१।९, ६२।५, ४।१०।३, सा०-६।२१।१०, ७।२३।६, ९।७३।२, १०।१५।९। १५७।५, सा०मु०-१।४७।१०, ६१।८, ५।२९।१२, ३०।६, ३३।२, ६।५।५

१४. *मन्त्ररूपं स्तोत्रम्,*
सा०-१।६२।१, सा०मु०-१।८८।४, (मन्त्रसाध्यैः स्तोत्रैः)

१५. *स्तोत्रशस्त्राणि,*
वे०-३।५४।१४, ६।५।५

१६. *अन्नम्,*
वे०-१।६२।११, १८६।४, २।११।१५, ४।५६।१, २, ६।४।६, ६६।९, १०।११२।९। वे०सा०-७।३९।७, ६२।३, ९७।५, सा०- ७।४०।७, ८।६३।४

१७. *अर्चनीयमन्नं चरुपुरोडाशादिकम्,*
सा०-१।१८६।४

१८. *हविर्भिः,*
सा०-३।६२।५, वे०-६।६५।५,

१९. *हविर्लक्षणन्नम्,*
वे०-६।२०।१३, स्क०-६।६६।९

२०. *स्तोता,*
उ० वे०सा०-१०।६८।१, स्क०-१।८३।६, वे०-८।८८।४, वे०सा०-७।२४।५, सा०-५।५।४,

२१. *स्तोत्रनिष्पादकः,*
सा०मु०-१।८३।६

२२. *अर्चनसाधनमन्त्रोपेतः स्तोता,*
सा०-१।१६७।६

२३. अर्चनीयं स्तोत्रमभिस्वर्तारोऽभितः शब्दयितारो बन्दिनः इव,
सा०-१०।७८।४
२४. होता,
वे०-१।१६७।६, वे०सा०मु०-१।८३।६,
२५. देवम्,
उ०-१०।७८।४, स्क०-१।१०।१, ६।४९।८,
२६. पूषणम्,
वे०सा०-६।४९।८
२७. देवो बृहस्पतिः,
उ०-१०।६८।४
२८. तेजोभिः,
वे०-६।३।८, वे०सा०-१०।६८।९, सा०-३।३४।१, ६१।६, ९।९७।३१
२९. ज्योतिषा,
उ०-१०।६८।९
३०. दीप्तिभिः,
मु०-६।३।८
३१. स्तुतिभिः,
वे०-३।३४।१, ६१, ६, १०।१५।९
३२. रश्मिभिः,
वे०सा०-४।१६।४, १०।६८।६
३३. किरणैः,
सा०मु०-६।४।६
३४. अर्चनीयग्रहनक्षत्रतारादिजातम्,
उ०-१०।६७।५
३५. गवां संघम्,
सा०-७।९।२
३६. उदकम्,
सा०मु०-१।१९।४

अर्कशोक

१. अर्चनीयै पूजनीयैः शोकैर्दीप्तिभिर्युक्तम्,
सा०-६।४।७
२. अर्चनीयैर्दीप्तिभियुक्तम्,
मु०- ६।४।७
३. अर्चनीयैः तेजोभिः,
वे०-६।४।७

अर्कसाति

१. अर्चनीयस्यान्नस्य नाथे निमित्तभूते सति,
सा०-१।१७४।७
२. अन्नभजननिमित्तम्,
वे०-१।१७४।७
३. अर्कोऽन्नं प्राप्यतेऽस्मिन्नित्यर्कसातिर्युद्धम्,
सा०-६।२०।४
४. अन्तलाभार्थम्,
सा०-६।२६।३
५. युद्धे,
वे०-६।२०।४, २६।३

अर्किन्

१. होतारः,
वे०-१।७।१, १०।१
२. मन्त्रवन्तो होतारः,
स्क० - १।७।१, १०।१ (मन्त्रोऽत्रर्क उच्यते। तद्वन्तः होतारः)
३. अर्चनहेतुमन्त्रोपेता होतारः,
सा०मु०-१।७।१, १०।१ (अर्चनहेतु-मन्त्रयुक्ताः होतारः)
४. स्तोतृप्रयुक्तैर्गुणैर्मन्त्रवन्तम्,
स्क०-१।३८।१५
५. अन्नवन्तम्,
स्क०-१।३८।१५
६. स्तुतिकामम्,
वे०-१।३८।१५

अर्किणी

स्तुतिमती,
वे०सा०-८।१०१।१३

अर्चत्

१. पूजयन्तः,
वे०- ३।३२।३, सा०-३।३१।७, ८।२९।१० सा०मु०-१।६२।२, ८५।२, १५१।२, ५।१३।१,
२. पूजयन्। स्वस्य स्वामित्वं प्रकटयन्,
सा०मु०-१।८०।१
३. अनुपूजयन्,
स्क०-१।८०।१
४. हविर्भिः पूजयते,
सा०-१।८७।२
५. स्तुवन्तः,
स्क०वे०-१।६२।२, वे०सा०-७।२८।५, १०।८९।१६, वे०सा०मु०-५।६४।२, ७।२२।४, सा०-३।३२।३
६. स्तोतुरर्थाय,
स्क०-१।८७।२
७. परिचरते,
वे०-१।८७।२
८. ब्रुवतः,
वे०-७।२२।४
९. पूजयतः,
सा०-१।१५१।२, सा०मु०-५।१३।१

अर्चद्-धूम

१. अर्चन्तः अर्चनीया धूमाः,
सा०-१०।४६।७
२. धूमोपलक्षिता ज्वाला येषां ते,
सा०-१०।४६।७
३. अर्चिष्मद्धूमाः,
उ०-१०।४६।७
४. निर्गच्छद्धूमाः,
वे०-१०।४६।७

अर्चत्र्य

अर्चनीयः,
वे०सा०-६।२४।१

अर्चत्रि

१. अर्चनीयाः,
वे०सा०-६।६६।१०
२. अर्चनीय अत्रिभिः,
स्क०-६।६६।१०

अर्चि

१. रश्मयः,
सा०-४।६।१०, ५।६।७, वे०सा०- ५।२५।८, ९।६६।५, वे०सा०मु०-५।१०।५,
२. दीप्तयः,
स्क०-६।४८।७ (दीप्तिभिः ज्वालाख्याभिः), वे०-६।४८।७, वे०सा०मु०-१।४४।१२, सा०-८।४४।४, १०।१४०।१, सा०मु०-१।३६।३, ५।१७।३,
३. ज्वालाः,
स्क०-१।३६।३, ४४।१२ स्क०सा०मु०-१।३६।२०
४. प्रभाः,
सा०-८।४४।१७
५. तेजोभिः,
सा०मु०-५।७९।८
६. प्रकाशाः,
सा०मु०-१।४८।१३

अर्चिन्

१. दीप्तयः,
वे०-५।४५।१
२. सर्वं जगत् पूजयन्तः,
सा०-२।३४।१, सा०मु०-५।४५।१

अर्चिस्

१. तेजः,
वे०-१।१५७।१, ६।४८।३, वे०सा०-३।६।३, ४।७।९, ८।७।३६, १०।८८।९, १२, सा०-८।४३।८, ९।६७।२३, १०।८७।११, १४, १७, सा०मु०-१।९२।५, ५।७९।९
२. प्रकृष्टेन तेजसा,
सा०-१।१५७।१
३. सौरवैद्युतादितेजसि,
सा०-९।६७।२३
४. दीप्तिः,
स्क० सा०-६।४८।३, वे०-१।९२।५, सा०-१०।१४२।६
५. प्रभया,
सा०मु०-५।१७।३
६. ज्वालया रश्मिसमूहेन,
सा०-२।८।४
७. ज्वालारूपेण तेजसा,
सा०-६।६०।१०
८. भासको ज्वालाविशेषः,
सा०-१०।१६।४
९. ज्वालालक्षणः,
उ०-१०।१६।४, वे०सा०- १०।८७।२ (ज्वालया)
१०. ज्योतिषा,
स्क०-६।६०।१०

अर्जुन

१. शुक्लवर्णस्य,
वे०-१।१२२।५, वे०सा०-३।३९।२, सा०मु०-६।९।१
२. श्वेतवर्णम्,
वे०-६।९।१, सा०-७।५५।२
३. श्वेतवर्णानि ज्वालान्तर्गतरूपाणि,
सा०-१०।२१।३
४. श्वेतवर्णस्य स्वशरीरगतत्वग्रोग्रस्य,
सा०-१।१२२।५
५. शुभ्रम्,
सा०-३।४४।५

अर्जुनी

१. शुभ्रवर्णे,
सा०मु०-१।४९।३, ५।८४।२
२. शुक्रवर्णे,
वे०-१।४९।३
३. शुक्लवर्णे,
स्क०-१।४९।३, वे०-५।८४।२
४. फल्गुन्योः,
वे०सा०-१०।८५।१३

आर्जुनेय

१. अर्जुन्याः पुत्रम्,
वे०सा०-७।१९।२, ८।१।११, सा०-४।२६।१
२. अर्जुनी नाम कुत्सस्य माता, तस्या अपत्यम्,
वे०-१।११२।२३, ४।२६।१० (अर्जुनीपुत्रम्)

अर्ण, र्णा

१. अरणशीलाः,
सा०-१।१७४।२
२. अरणकुशलाः,
सा०मु०-५।५०।४
३. शत्रुम्,
वे०-१।१७४।२
४. उदकानि दाता,
वे०-५।५०।४

५. द्युलोके वर्तमानमर्णोऽम्भः,
सा०-३।२२।३
६. उदकम्,
वे०-३।२२।३, ५।३२।८
७. गमनशीलाः,
वे०-३।३२।५।
८. गन्तारः जलमावृत्य,
सा०मु०-५।३२।८
९. गन्तारं मेघमावृत्य,
सा०-५।३२।८
१०. नद्यः,
सा०मु०-५।४१।१४
११. आपः,
वे०-५।४१।१४

अर्ण-साति

१. अर्णानां गन्तॄणां युद्धे प्रवृत्तानां पुरुषाणां सातिलभिः,
सा०मु०-१०।६३।६
२. उदकस्य दातरि,
वे०-१।६३।६
३. अर्ण उदकम्, तत्संभजनवेलायाम्। मेघवधोत्तरकालम् उदकदानवेलायाम्,
स्क०-१।६३।६
४. उदकलाभे निमित्ते,
सा०-२।२०।८
५. उदकं यस्मिल्लँभ्यते सङ्ग्रामे,
वे०-२।२०।८
६. सस्यादिफलसिद्ध्यर्थमुदकलाभे निमित्ते सति,
सा०-४।२४।४
७. युद्धे,
वे०-४।२४।४

अर्ण-चित्ररथ

१. अर्णनामकं चित्रनामकं च राजानौ,
सा०-४।३०।१८
२. अर्णं चिरत्ररथं च,
वे०-४।३०।१८

अर्णव

१. उदकवन्तम्,
उ०वे०सा०-१०।६६।११, स्क०-१।५५।२, स्क०वे०-१।१९।७, वे०-३।२२।२, ५१।२, ६।६१।८, ७।६३।२, १०।१९०।१, वे०सा०-३।५३।९, ९।८६।४५, सा०-१०।११५।३,
२. उदकयुक्तम्,
सा०मु०-१।१९।७
३. उदकवन्तं मेघम्,
स्क०-१।८५।९, वे०सा०-१।१६८।६, सा०-१०।६५।३
४. अर्णसोदकेन युक्तं मेघम्,
मु०-१।८५।९

५. पर्जन्यात्मना उदकवन्तम्,
सा०-३।५१।२
६. उदकवान्। उदकप्रद इत्यर्थः,
सा०-६।६१।८, ७।६३।२ (उदकप्रदः)
७. उदकसमूहः,
स्क०-६।६१।८
८. समुद्रः,
वे०-१०।१०।१, वे०सा०मु०-१।५५।२
९. समुद्रस्यानीयम्। समुद्रवत् धनानामाश्रयमित्यर्थः,
स्क०-१।५१।१
१०. समुद्रवन्महान्,
सा०-३।२२।२

११. समुद्रैकदेशम् अवान्तरद्वीपम्,
उ०- १०।१०।१
१२. अर्णसोदकेन युक्तः समुद्रः,
सा०-१०।१९०।१
१३. मेघमधः स्थितम्,
वे०-१।५६।५
१४. मेघम्,
वे०-१।८५।९, २।२३।१८, १०।६५।३,
सा०-१०।११५।३, सा०मु०-१।५६।५,
१५. स्थानभूतं मेघम्,
सा०-२।२३।१८
१६. आकरम्,
वे०-१।५१।१
१७. धनानामावासभूमिं एवगुण-विशिष्टम्,
सा०-१।५१।१
१८. अरणवत्। सर्वोपभोगसाधनान्न-साधनार्थम् गमनवत् प्रभूतमित्यर्थः,
उ०- १०।६५।३

अर्णस्

१. उदकम्,
उ०वे०सा०-१०।४९।९, स्क०वे०-१।११७।१४, ६।४७।५, ६२।६, स्क० वे०सा०- ६।३०।४, ७२।३, वे०-१।५२।२, १५८।३, १८०।१, ४।१६।७, ७।६०।४, ९।९७।२१, १०७।१२, वे०सा०-१।१६७।९, १७४।४, १८२।७, ३।३२।११, ४।१९।२, ६, ७।१८।५, ६९।७, ८७।१, ८।२०।३, २१।६, ८६।३४, वे०सा०मु०-५।४५।१०,
२. वसतीवर्याख्येनोदकेन,
सा०-९।१०७।१२
३. उदकम्। अनेन पवित्रान्निर्गतः सोमरसोऽभिधीयते,
सा०-९।९७।२१
४. नभसि स्थितानि उदकानि,
सा०-४।१६।७
५. प्रौढोदकयुक्तात्,
सा०मु०-१।११७।१४
६. प्रभूतमुदकम्,
सा०मु०-१।३।१२
७. महत् उदकम्,
वे०-१।३।१२
८. मेघस्थमुदकम्,
स्क०-१।३।१२, ५५।२
९. जलानि,
सा०-६।६२।६, सा०मु०-१।५२।२
१०. वृष्टिजलानि,
सा०मु०-१।६१।१२
११. अम्भसः,
सा०-१।१५८।३
१२. उदकमार्गान्,
वे०-१।६१।१२
१३. अरणीयं रूपं तद्वन्तं पुत्रादिक-मित्यर्थः,
सा०- १।१२२।१४, १८०।१ (अरणीयान् अभिमतदेशान्)
१४. धनम्,
वे०-१।१२२।१४
१५. स्रोतः,
वे०-२।१९।३, सा०-२।१९।३ (स्रोतो-लक्षणं प्रवाहम्)
१६. गमनशीलं तेजः गन्ता च,
उ०-१०।८।३

१७. गमनस्वभावम्,
वे०-१०।८।३
१८. सर्वस्य प्रेरक सौरं ज्योतिः,
सा०-६।४७।५
१९. अर्णवमन्तरिक्षम्,
सा०-७।६०।४

अर्थ

१. यजमानस्य प्रयोजनम्,
वे०-३।५३।५, सा०-१।१३०।५, १४४। ३, १५८।६, ३।५३।५। (अर्यते प्राप्यत इत्यर्थः प्रयोजनम्), सा०मु०-१।१०।२
२. होतृकर्मलक्षणं प्रयोजनम्,
उ०-१०।५१।६
३. समानप्रयोजनवत्,
सा०-१।१३०।५
४. गमनशीलम्,
स्क०-१।१०।२
५. अरणम्। देवयजनदेशे गमनम्,
सा०मु०-१।३८।२
६. गमनम्,
वे०-१।३८।२
७. अर्थं गमनमुच्यते,
स्क०-१।३८।२
८. गन्तव्यम्,
वे०-१०।२९।५ (गन्तव्यं देशम्), सा०-४।६।१०, ६।३२।५, ७।१८।९ (गन्तव्यमेव प्रणवदेशं प्रति)
९. अर्तव्यं गन्तव्यं समुद्रं प्रति,
सा०-२।३०।२
१०. प्रणवं प्रति,
वे०-२।३०।२
११. उपगन्तारम्,
स्क०-६।३२।५
१२. गतिम्,
उ०-१०।१८।४, उ०सा०-१।२७।२०
१३. गमनस्वभावम्,
वे०-३।११।३, सा०-३।११।३ (गमनस्वभावं तेजः)
१४. अपेक्षितं धनम्,
सा०मु०-१।१०५।२
१५. धनम्,
वे०-६।३२।५, सा०-१०।७३।५
१६. अभिलषितम् अर्थम्,
वे०-१।१०५।२
१७. यथाभिप्रेतम्,
स्क०-१।१०५।२
१८. अपेक्षितमर्थम्,
सा०मु०-१।११३।६
१९. पुरुषैरर्थ्यमानं कर्मफलं स्वर्गादिकम्,
सा०-१।१५८।६
२०. अभिलषितम्,
वे०-४।६।१०, १०।५९।१, ४३।१,
२१. स्वाभिलषितमायुर्लक्षणम्,
सा०-१०।५९।१
२२. अर्थनीयं प्राप्तव्यम्,
सा०-१०।१४३।१
२३. कार्यम्,
वे०-१।१२४।१, वे०सा०-९।१।५
२४. सस्योत्पादनार्थं कार्यम्,
वे०-१।१४४।३
२५. कार्यमुद्दिश्य जगद्रक्षणात्मकम्,
वे०-३।६१।३
२६. जगद्रक्षणात्मकम् इदं स्वकार्यम्,
वे०-४।१३।२

२७. जगल्लक्षणं कार्यम्,

सा०-४।१३।३

२८. हव्यवहनम्,

वे०-१०।५१।४, सा०-१०।५१।४ (हविर्वहनकार्यम्), ५१।६ (हविर्वहनाख्यमर्थम्)

२९. हौत्रम्,

वे०-१०।५१।६

३०. प्रवणम्,

वे०-१।१५८।६

३१. साधारणं वृष्टिलक्षणमुदकम्,

वे०-१।१३०।५

३२. वृष्टिलक्षणम्,

उ०-१०।७३।५

३३. अरणीयम्,

सा०-१।१२४।१ ८।६९।१७ (अरणीयं धनम्)

३४. अर्तारं गन्तारं योगिनमनुगृह्णन्,

सा०-१०।२९।५

३५. अत्तारं संसारस्यान्तं गन्तारं योगिनमनुगृह्णन्,

उ०-१०।२९।५

३६. अर्यते गम्यतेऽस्मिन्नित्यर्थो मार्गः,

सा०-३।६१।३

३७. गन्तव्यं मरणाख्यं मार्गम्,

सा०-१०।१८।४

३८. अध्वानम्,

वे०-१०।१८।४

अर्थिन्

१. भिक्षून्,

वे०-१।४८।६

२. याचकान्,

उ०सा०-१०।२६।८, सा०मु०-१।४८।६,

३. कार्यवन्तः,

स्क०-१।४८।६। वे०-८।२७।१२ (कार्यार्थिनः)

४. धनमपेक्षमाणाः पुरुषाः,

सा०मु०-१।१०५।२

५. धनादिकामः,

सा०-७।१।२३

६. धनदानार्थम्,

वे०-७।१।२३

७. धनानि कामयमानाः,

सा०-८।७९।५

८. निद्राऽर्थिनः,

वे०-१०।१२७।५

√अर्थि

१. प्रार्थयेथा,

स्क०वे०-१।८२।१, सा०-१०।१०६।१

२. अर्थयसे एव याचयसे,

सा०मु०-१।८२।१

√अर्द्

१. प्राणिनां पिपासारूपां पीडामहिंसन्,

सा०-४।१७।२

२. अभिभवार्थम्,

वे०-४।१७।२

३. नाशय,

सा०-८।७५।१०

४. हतवान्,

सा०-१०।१०४।१०

५. पीडयति,

वे०-१०।१०४।१०

६. अहिंसीः,

सा०-१०।१४७।२

अर्ध

१. पूर्वे अर्धे,
स्क०-१।९२।१
२. प्राचीनदिग्भागे,
सा०-६।२७।५ (प्राग्भागे), सा०मु०-१।९२।१
३. पूर्वस्मिन् भागे,
वे०सा०-१।१२४।५
४. परस्मिन्नर्धे अन्तरिक्षलक्षणे अवस्थितः आदित्यः,
सा०-१।१६४।१२
५. अर्धमार्गम्,
सा०-१।१६४।१७
६. अर्धमृद्धम्,
सा०-१।१६४।१७
७. अर्धस्थानभाजम्,
सा०-१।१६४।१७
८. समृद्धिम्,
सा०-२।३०।५, ६।४४।१८
९. समीपम्,
सा०-४।३२।१
१०. स्थानवचनम् अर्धशब्दं व्याचक्षते,
स्क०-६।४४।१८
११. अपरं भागम्,
सा०-६।४७।२१, १०।२७।१८
१२. स्थानम्,
स्क०-६।४७।२१
१३. हिंसकम्,
सा०-७।१८।१६

अर्धगर्भ

१. संवत्सरस्यार्धे गर्भं गर्भस्थानीय-मुदकं धारयमाणाः,
सा०-१।१६४।३६
२. ब्रह्माण्डस्यार्धे मध्येऽन्तरिक्षे गर्भ-वद्वर्तमानाः,
सा०- १।१६४।३६
३. उदकं गर्भिताः,
वे०-१।१६४।३६

अर्धदेव

१. देवानामर्धे समीपे वर्तमानम्,
सा०-४।४२।८
२. देवानामर्धभूतम्,
सा०-४।४२।८
३. उक्तलक्षणं पुत्रम्,
सा०-४।४२।९

अर्ध्य

१. पुनः पुनः प्रवर्धनार्हः। एकवारकरणे न संपूर्यते इत्यर्थः,
सा०-१।१५६।१
२. वर्धनीय,
वे०-१।१५६।१
३. समर्धनीयम्,
सा०मु०-५।४४।१०
४. पूजनीयम्,
वे०-५।४४।१०

अर्पित

१. तदधीनम्,
सा०-१।१६४।१२
२. प्रजापतिना पोषकत्वेन स्थापितः,
सा०-६।५८।२
३. गमितः। रश्म्यात्मनानुप्रवेशित इत्यर्थः,
स्क०-६।५८।२
४. निक्षिप्तम्,
सा०-१०।१७०।२

अर्बुद

१. अर्बुदनामानमसुरम्,
स्क०-१।५१।६, वे०-१।५१।६ (अर्बुदासुरम्), सा०-२।११।२०, (अर्बुदाख्यमसुरम्)
२. मेघस्य,
वे०सा०-८।३२।३, सा०-८।३२।२६ १०।६७।१२। (अम्बुदस्य मेघस्य)
३. अम्बूनि ददातीत्यर्बुदो मेघः,
सा०-२।११।२०
४. बहूदकत्वाद् बहुरूपत्वाच्च अर्बुदसङ्ख्यायुक्तस्येर्थः,
उ०-१०।६७।१२
५.अर्बुद इति विश्वरूपस्य नामान्तरम्,
वे०-२।११।२०
६. एतत्संज्ञकमसुरम्,
सा०मु०-१।५१।६, सा०-८।३।१९

अर्भ

१. अल्पम्,
स्क०वे०- १।७।५, ४०।८, वे०सा०-६।५०।४, १०।९१।८, सा०- १।४६।५
२. स्वल्पेऽपि धने निमित्तभूते सति,
स०मु०-१।७।५
३. अल्पाम्। युवतिमित्यर्थः,
सा०मु०-१।५१।१३
४. कन्याम्,
वे०-१।५१।१३
५. स्वल्पे युद्धे,
सा०मु०-१।४०।८ ८१।१। (अल्पे सङ्ग्रामे)
६. अल्पात् पुत्तिकादेः सकाशात्,
सा०-१।१२४।६
७. कुमारात्,
वे०-१।१२४।६
८. यजमानादेर्वा,
सा०-१।१४६।५
९. बालः,
वे०-१।१४६।५

अर्भक

१. गुणैर्न्यूना,
सा०-१।२७।१३
२. अल्पेभ्यः। बालेभ्यः,
स्क०-१।२७।१३, १४४।७
३. अल्पशरीरेभ्यः,
स्क०-१।२७।१३
४. बालम्,
वे०सा०मु०-१।११४।७
६. स्वल्पे,
वे०-४।३२।२३। सा०- ४।३२।२३ (अल्पके), ७।३३।६। (अल्पाः)

अर्भग

१. बालाय स्वयंवरलब्धभार्याय,
सा०मु०-१।११६।१
२. बालाय,
वे०-१।११६।१
३. अर्भकमित्यल्पनाम। तस्य पर्यायोऽर्भशब्दः। कै गै शब्दे। अग्न्यर्थे योऽल्पम्,
स्क०-१।११६।१ (यास्क०-३।२०)
४. अल्पाया भार्याया गन्ता सोऽर्भगः। तस्यार्भगस्य विमदस्य ऋषेरर्थाय,
स्क०-१।११६।१

अर्मक

१. महति,
वे०-१।१३३।३

२. *कुत्सिते शवैः अरणीये,*
सा०-१।१३३।३
३. *कुत्सिते गतासुभिः अरणीये,*
सा०-१।१३३।३

अर्य-र्या (१)

१. *स्वामी,*
वे०-४।२४।८, ६।४७।९, वे०सा०-७।२१।५, सा०-४।१।७, ६।५१।२, ७।३१।५, सा०मु०- १।८१।६
२. *सर्वेषां स्वामी,*
सा०मु०-१।८१।९
३. *स्वामी स्तुतीनां हविषां वा,*
सा०-७।१००।५
४. *स्वामिरूप इन्द्रः,*
स्क०-१।३३।३ (ईश्वरः इन्द्रः), सा०-१।३३।३, ४।२४।८, ८।६३।७ (इन्द्रः), १०।२७।१९ (स्वामीन्द्रः), मु०-१।३३।३, (स्वामीन्द्रः)
५. *स्वामी बृहस्पतिः,*
सा०-२।२३।१३
६. *स्वामी मरुद्गणः,*
वे०-१०।२७।१९
७. *ईश्वरः,*
स्क०- १।८१।६, ६।४७।९, स्क०वे०-१।१२१।१५, ६।५१।२, वे०- १।३३।३, ८।६३।७
८. *धनपतिः,*
सा०-६।४७।९ (धनस्य स्वामी), सा०मु०-१।१२१।१५,
९. *पालयिता,*
सा०-१।८१।६
१०. *उदारः,*
वे०-१।८१।६
११. *अरणीयो विश्वेषां देवानां संघः,*
सा०-१।१२२।१४
१२. *पूज्यस्य,*
सा०मु०-५।३३।९
१३. *सर्वस्यापि इनः,*
वे०-४।१।७
१४. *शत्रून्,*
वे०-२।२३।१३, वे०सा०-१०।८९।३
१५. *अभिगन्तव्यः,*
सा०-८।१९।३६
१६. *स्तोमानाम् ईश्वरः। महेश्वरः,*
वे०-७।१००।५
१७. *सर्वस्येश्वरः प्रजापतिः,*
उ०-१०।२७।१९

अर्यपत्नी

१. *अर्यः सूर्यः पतिर्यासां ता अर्यपत्न्यः,*
सा०-७।६।५
२. *अर्यस्य सर्वस्य जगतः स्वामिन इन्द्रस्य पालयितव्या इमा वृष्टिलक्षणा अपः,*
उ०-१०।४३।८
३. *सर्वस्य जगतः स्वामिन इन्द्रस्य पालयितव्या,*
सा०-१०।४३।८
४. *दासपत्नी,*
वे०-१०।४३।८

अर्य-र्या (२)

१. *अरणीया पूजनीया,*
सा०-१।१२३।१
२. *महती,*
वे०-१।१२३।१

अर्यमन्

१. अरीनमन्देहादीनसुरान् यच्छति नियच्छतीति सूर्यः,

सा०मु०-१।८९।३

२. ऋच्छति सर्वदा गच्छतीत्यर्यमा सूर्यः,

सा०-३।५४।१८

३. आदित्यः,

सा०मु०-५।५४।८

४. अरीणां नियन्ता,

सा०-१०।१४१।२

५. अर्याणां निर्माता,

सा०-१०।१४१।२

६. दातारम्,

सा०-१।१७४।६, ७।६०।१

७. दातृत्वम्,

सा०-२।१।४

८. प्रेरयितारम्,

वे०-१।१७४।६

९. उदारम्,

वे०-७।३६।४

१०. अश्वान् अधिष्ठाय गच्छन्ति उदाराः,

वे०-५।५४।८

११. सर्वदा गच्छन् एतन्नामकास्त्रयो देवाः,

सा०-८।२५।१३

१२. एतन्नामकेन देवेन,

सा०-९।१०८।१४

अर्वत्

१. अश्वः,

स्क०वे०-१।७३।९, स्क०वे०सा०-१।४३।६, ५।३९।५, ६।४५।२, १२, स्क०वे०सा०मु०-१।८।२, २७।९, वे०-२।२।१०, ३३।१, ४।३१।४, ३७।६, ५।६।१, ८।२।३६, ९।१०।१, १०।६४।६, ९६।७, वे०सा०-१।१६२।८, १२।१४, ७।३५।१२, ९०।६, ८।१९।६, ४०।२, वे०सा०मु०-१।९१।२०, ५।३६।२, ४७।११, ९।६।२, सा०-९।११।६, ६१।१६,

२. शत्रुसंबन्धिनः अश्वान्,

सा०मु०-१।७३।९

३. अरणकुशलेनाश्वेन,

सा०-२।२।१०, १०।९६।७ (अरण-कुशलैः)

४. अरणवताश्वेन,

सा०-४।३७।६, ५।६।१

५. अश्वलाभाय,

सा०मु०-५।८६।५

६. अश्वैर्वाहनभूतैः,

सा०- ८।२।३६

७. इन्द्रादीनां वाहनभूता हर्यादयः,

सा०-१०।६४।६

८. भ्रातृव्यम्,

वे०-१।१६३।९, वे०सा०-१०।४०।५

९. भ्रातृव्याय मर्ताय,

वे०-५।८६।५

१०. गन्तृभिः,

वे०सा०-१०।९६।८

११. उपगन्तॄन्,

सा०-४।३१।४

१२. अभिगच्छते,

वे०-६।३६।२

१३. शत्रूणामभिगन्त्रे,
सा०-६।३६।२
१४. गन्त्रे च शत्रून प्रति,
स्क०-६।३६।२
१५. स्वर्गीतिं गन्त्रे मह्यं स्तोत्रे,
उ०-१०।४५।५
१६. अरणवन्तो यज्ञं प्रति गमनवन्तः,
उ०-१०।६४।६
१७. अरः अर्तारः सर्वत्र गन्तारः,
उ०-१०।६४।६

अर्वन्

१. अभिगन्ता,
वे०-१०।१३५।५ सा०-७।५८।४, १०।९९।४ (मेघेष्वभिगन्ता), ३२।५ (अभिगन्ता मित्रो वरुणो वा)
२. गमनशीलः,
वे०-१।१४९।३,९।८७।७,१०।२७ सा०-४।७।११ (गमनशीलोऽग्निः) ७।४४।४
३. गमनस्वभावः,
वे०-४।७।११
४. गन्ता,
वे०-४।३६।६, ७।४४।४ वे०सा०-६।१२।६, सा०-६।१२।४
५. सततगामा,
सा०-१०।२७।१४
६. अर्ता सर्वत्रगामी वेत्यर्थः.... द्युलोक-गामी वेत्यर्थः,
उ०-१०।२७।१४
७. अश्वः,
स्क०वे०सा०मु०-१।१०४।१, वे०-१।१६३।१, ८, ६।१२।४, २८।४, ७।२२।१, ५८।४, वे०सा०-१।१६३।४, ४।११।४,
८. वेगवांस्त्वदीयोऽश्वः,
सा०-७।३७।६
९. गमनशीलाश्वः,
सा०-१।१६३।८
१०. बलवानश्वः,
सा०-३।४९।३
११. युद्धार्थमागतोऽश्वः,
सा०-६।२८।४
१२. अरणकुशलः,
सा०-१।१४९, ३, ४।३६।६, ९।८७।७
१३. अरणकुशलाश्वः,
सा०-१।१६३।१
१४. अप्रत्यृतः,
वे०-१०।९९।४

अर्वश

१. अश्ववान्,
वे०सा०-१०।९२।६
२. सोमवान्,
सा०-१०।९२।६

अर्वाच्, ञ्च

१. अस्मदभिमुखम्,
उ०-१०।७७।४। उ०सा०-१०।२९।३, स्क०-६।६०।३, स्क०सा०-६।३७।१, ६२।११, ६३।१, स्क०सा०मु०-१।१०८।४, ११८।२, वे०-२।३९।३, वे०सा०-३।४३,६,७।२७।३, वे०सा० मु०-१।४७।१०, सा०-२।३९।५, ३।५८।२, ४।४।८, ३२।१५, ७।३९।३, ६४।२, ६७।३, ८।६१।१०, सा०मु०-५।४३।५
२. स्तोत्रैः शस्त्रैश्च अर्वाक् आत्माभि-मुखम्,
स्क०-१।४७।१०, सा०-१०।८९।५, (आत्माभिमुखतया),

३. मदभिमुख सन्,
सा०-६।१८।११
४. अस्मान् प्रति,
स्क०-६।६०।३
५. अस्मदभिमुखी,
सा०-७।१८।३
६. अभिमुखम्,
वे०-१।१०८।४, ११८।२, ५।४३।५, ६२।४, ६।१८।११, ३७।१, ६२।११, ६३।१, ७।६४।२, ६७।३, ८।६१।१, १०।१५।४, २९।३, वे०सा०-३।३२।१३, ५८।२, १०।७७।४, सा०-२।३९।३, ८।८।२३, सा०मु०-५।४३।८
७. त्वदभिमुखम्,
सा०- ४।४।८
८. इतोमुखम्,
वे०- ४।३२।१५, ५।४३।८, ६।६०।३
९. अवाङ्मुखाः,
सा०मु०- ५।४५।१०
१०. अर्वाचीनान् अधोमुखान्,
वे०- ७।३९।३
११. अर्वाचीनाः कृताः। भूतसृष्टेः पश्चाज्जाताः,
सा०-१०।१२९।६
१२. अर्वाचीनमधोभाविन्यस्मिँल्लोके ब्राह्मणैः सह,
सा०-१०।७१।९
१३. अस्मिन् लोके ब्राह्मणैः सह,
वे०-१०।७१।९
१४. अर्वाग्ज्ञानं देवताज्ञानं वा,
उ०-१०।७१।९

अर्वाची

१. अस्मदभिमुखा,
सा०-२।३४।१५
२. अस्मदभिमुखी,
स्क०सा०मु०-१।१०७।१, वे०-२।३४।१५
३. अभिमुखी,
वे०-४।५७।६
४. अर्वागञ्चना,
सा०-४।५७।६
५. अस्मद्विषया,
वे०-१।१०७।१

अर्वाचीन

१. अस्मदभिमुखः,
वे०सा०-४।३।२, वे०सा०मु०-१।८४।३, सा०-३।३७।२, ४।२०।२, २४।१, ६।२५।३, ७।४१।६
२. अभिमुखः,
वे०- ३।३७।२, ७।४१।६, १०।११६।२ वे०सा०- ९।९७।२८, १०।६।६, सा०- ४।३२।१४, ६।२५।३
३. अभिमुखाञ्चनः,
सा०-१०।११६।२
४. इतोमुखः,
वे०-४।२०।२, २४।१, ३२।१४
५. अस्मद्यज्ञगमनाभिमुखम्,
स्क०-१।८४।३
६. अर्वागञ्चनाः अस्मदभिमुखाः,
उ०-१०।६।६

अर्वावत्

१. समीपे च,
वे०-८।३३।१०
२. समीपेऽपि वृषा सेचकः,
सा०-८।३३।१०
३. समीपस्थदेशादपि आभिमुख्येन,
सा०-८।८२।१
४. समीपस्थान्,
वे०-९।३९।५

५. *अन्तिकात्,*
वे०-८।८२।१, ९।६५।२२
६. *अन्तिके देश इन्द्रार्थम्,*
सा०-९।६५।२२
७. *अन्तिकस्थांश्च देवान्,*
सा०-९।३९।५
८. *अरणवति गन्तुं शक्ये प्रदेशे अन्तिके स्थः,*
सा०-५।७३।१
९. *गन्तुं शक्ये प्रदेशे अन्तिके स्थः,*
मु०-५।७३।१

अर्शसान

१. *शत्रूणां हिंसित्रे,*
वे०-१०।९९।७। (हिंसित्रे), सा०-१०।९९।७
२. *बाधमानः,*
वे०-१।१३०।८, वे०सा०-८।१२।९
३. *हिंसारुचिं हतावशिष्टं सर्वम्,*
सा०-१।१३०।८

√अर्ष्

१. *गच्छति,*
वे०-८।९४।७, ९।४२।५, ६३।२०, वे०सा०- ९।२।४, ३।९, ५।२, ३२।४, ३८।१, ४४।१, ५७।२, ६७।४, १५, ७७।४, ८६।११, १२, सा०-९।१२।८, ६२।२४, ६७।३,
२. *गच्छन्ति, रसवत्यो भवन्ति,*
सा०-१।१२५।५
३. *गच्छन्ति, प्राप्नुवन्ति,*
सा०- २।५५।४
४. *अभिगच्छति,*
वे०सा०- ९।१।४ १०७।५
५. *प्रति गच्छन्ति,*
वे०- ४।१८।६

६. *गमयति,*
वे०-१।१०५।१२, ९।५६।२, सा०- ९।५६।२ (गमयति। अस्मभ्यं प्रयच्छतीत्यर्थः)
७. *क्षरति,*
सा०-९।६३।२०
८. *पवस्व,*
वे०-९।१०९।३, वे०सा०-९।६३।२९, सा०-९।१०९।३। (पवस्व, क्षर)
९. *आलस्यराहित्येन सर्वदा प्रेरयन्ति। अशोष्याः सत्यः प्रवहन्तीत्यर्थः,*
सा०-१।१०५।१२। मु०-१।१०५।१२ (आलस्यराहित्येन सर्वदा प्रेरयन्ति)
१०. *प्रेरयन्ति,*
वे०-१।१२५।५
११. *निपतन्ति,*
वे०-२।२५।४
१२. *अधः पतन्ति,*
सा०-४।५८।५, ६

√अर्ह्

१. *पूजयन्ति,*
सा०-८।२०।१८
२. *योग्यं भवति। प्रकाशनादिद्वारा पूजयति,*
सा०-१०।१५८।२
३. *समर्थाः भवामः,*
सा०-४।५५।७

अर्हत्

१. *तादर्थ्य एषा चतुर्थी... स्तोमार्हस्य,*
स्क०-१।९४।१
२. *स्तोमार्हाय,*
वे०-१।९४।१
३. *पूज्याय,*
सा०मु०-१।९४।१

अर्हरिष्वणि

१. गच्छन्तो हरन्तीति अर्हरयः शत्रवः। तेषां व्यथोत्पादनेन स्वनयिता शब्दयिता इन्द्रः,
सा०मु०-१।५६।४
२. हरणशीलस्वनः,
वे०-१।५६।४

√अल्

१. गच्छति,
वे०सा०-८।४८।८, सा०-८।१।७
२. परितो गच्छति,
वे०-८।१।७

अलक

१. अलीकं व्यर्थमेव,
उ०वे०-१०।७१।६ (अलीकम्), सा०-१०।७१।६
२. व्यर्थम्,
वे०सा०-१०।१०८।७
३. कुत्सितम्,
उ०-१०।७१।६
४. अपर्याप्तम्,
उ०-१०।७१।६

अलला, भवन्ती

१. अललाशब्दं कुर्वत्यः,
वे०-४।१८।६
२. अललेत्येवं शब्दं कुर्वत्यः,
सा०-४।१८।६

अलातृण

१. इकारस्य स्थाने लकारः। अनातृणासः। आतर्दनरहिताः,
सा०-१।१६६।७
२. अलं पर्याप्तम् आर्तदनाः शत्रूणाम्,
सा०-१।१६६।७
३. अलम् अत्यर्थं दातारः फलानाम्,
सा०-१।१६६।७
४. अलमातर्दनाः,
वे०-१।१६६।७, ३।३०।१०
५. बहूदकतया अलमत्यर्थमातृद्यते हिंस्यत इत्यलातृणः,
सा०-३।३०।१०

अलाय्य

१. अभिगच्छतः,
वे०-९।६७।३०
२. अभिगमनशीलस्य शत्रोः,
सा०-९।६७।३०

अलिन

१. शत्रुशरीरेषु एवं लीनाः शरीरं निर्भिद्य शीघ्रं गच्छन्तः,
वे०-७।१८।७
२. तपोभिरप्रवृद्धा इत्यर्थः,
सा०-७।१८।७

√अव्

१. रक्षति,
उ०वे०-१०।३५।११, स्क०वे०सा०मु०-१।७।४, ३४।५, स्क०सा०मु०- १।११२।२, वे०- २।३१।१, ५।३३।७, ७।३८।८, ४७।२, ८३।१, ८।७०।६, ७५।१४, ९।९।६, ६१।२२, १०।१५।१, वे०सा०-१।१३१।५, २।१२।१४, ३।८।८, ३२।१२, ४।३१।१०, ६।४६।११, ५०।१४, ७।३६।७, ६७।४, १०४।१२, ८।२।३५, ३।१, ३०।३, ३६।२, १०।५०।५, ९७।१४, १०२।१, वे०सा०मु०- १।७९।७, ५।४०।७, ४१।११, ६३।१, ८३।४, ८७।६, सा०- ४।५२।६, ६।१९।७, १५।१५, ८।८।२०, २२।१०

२. *रक्षामकरोत्,*
सा०-१०।१२०।७
३. *अभिरक्षतम्,*
वे०-८।८।२०
४. *पालय,*
स्क०-१।७९।७, ६।४६।११, ५०।१४, सा०- ७।३८।८, ४७।२, सा०मु०-५।३३।७,
५. *गच्छति,*
वे०- ६।९।७, १०।१२०।७, सा०-८।७५।१४, १०।३५।११
६. *आगच्छति,*
वे०-४।५२।६, सा०-७।८३।१
७. *अभिगच्छति,*
सा०-५।८३।४
८. *प्रति गच्छति,*
वे०-१०।३५।११

अव

१. *तृप्तिनिमित्तेन भोज्या भक्ष्याणि पुरोडाशादीनि,*
सा०-१।१२८।५
२. *परिरक्षणार्थम्,*
वे०-१।१२८।५

अवत्

१. *मरणादिभ्यः प्राणिनां सर्वदा रक्षितः,*
स्क०-१।२४।३
२. *रक्षितः,*
वे०-१।२४।३
३. *रक्षन्,*
वे०- ७।४६।२, वे०सा०-८।७३।७
४. *पालयन्,*
सा०-७।४६।२
५. *रक्षकः,*
सा०मु०-१।२४।३

अवन्ती

१. *प्रीणयन्त्यः,*
सा०-१।१५२।६
२. *रक्षन्त्यः,*
वे०-१।१५२।६, ७।४६।२
३. *तर्पयन्त्यौ,*
सा०-१।१८५।४
४. *त्वां स्तोत्रैस्तर्पयन्तीः,*
सा०-७।४६।२
५. *रक्षन्त्यौ,*
वे०- १।१८५।४

अवनि

१. *पृथिवी,*
स्क०- १।४।१०, वे०- १।१८१।३
२. *नदीः,*
स्क०-६।६१।३, वे०सा०मु०-५।८५।६,
३. *भूमिः,*
सा०-१।१८१।३, १९०।७, ६।६१।३ (असुरैरपहता भूमीः), सा०मु०- ५।५४।२
४. *क्षेत्राणि,*
वे०-६।६१।३
५. *रक्षकः,*
वे०-८।३२।१३, वे०सा०मु०-१।४।१०,
६. *स्वामी,*
सा०- १।४।१०
७. *मार्गाः,*
वे०-१।१९०।७
८. *अवन्तीत्यवनय आपः,*
सा०-१०।९९।४
९. *अपः,*
वे०-१०।९९।४

१०. पालकः,
सा०-८।३२।१३
११. रात्रीः,
सा०-७।८७।१

अवस्

१. रक्षणम्,
उ०सा०- १०।२२।७, स्क०वे०- ६।६५।३, वे०-२।३४।१४, ३।२२।३, २५।१, ५१।६, ५९।६ ६।१४।१, ३, ६१।२, ८।९।१, १०।६।१, १४९।५, वे०सा०-१।१८६।१०, १८७।६, ३।२।१३, १३।२, ४१।७, ८, ५।७६।२, ६।२०।१०, ७।१।२, २०।१, २१।८, ९, ९४।७, ९।१३, ४७।५, ७५।१६, ९७।८, ९।६१।२४, १०८।१४, १०।१५।४, १८५।१ वे०सा०मु०-१।१७।६, ५।१७।१, ६५।५, सा०- १।१५८।३, ३।१।१५, २२।७, ६।६।१, सा०मु०-१।१७।१, ८५।११, ८६।६, ५।४६।६, ७४।६, ७६।३
२. मनुष्याणां रक्षणैर्हेतुभिः स्तोतृभिः,
वे०-४।२२।७
३. रक्षाम्,
सा०-३।१।१५, १०।६।१
४. रक्षणार्थम्,
वे०-१।१७।२, ८६।६, ६।५२।५, ७।८५।४, १०।२२।७, वे०सा०- ८।८।९, सा०- ६।१४।१, ६१।२, ९।९।१, ३१।२, १४९।५
५. रक्षितुम्,
वे०सा०-९।५८।२
६. अवितुमनुष्ठातारं रक्षितुम्,
सा०मु०-१।१७।२
७. पालनार्थम्,
स्कं०-१।८६।६
८. पालनम्,
स्क०वे०-१।१७।१, वे०- १।१५८।३, ५।७४।६, वे०सा०-८।२६।२, सा०-१०।६।१
९. पालयितुम्,
स्क०-१।८५।११
१०. पाल्यमाना,
स्क०-१।१७।६।
११. अन्नस्य,
वे०-२।४।८, वे०सा०मु०-६।६।१, सा०-३।५९।६, ६।६५।३, ७।९४।७
१२. अन्नलक्षणं हविः,
सा०-३।५१।६, ४।१।२२, (अन्नं हविः), ६।५२।५, (हविषा)
१३. तर्पणाय,
सा०-४।२५।१, ७।८५।४, (तर्पणार्थम्), सा०मु०-५।२२।३,
१४. अभिमततर्पणस्य,
सा०-२।४।८
१५. अवितुं संगन्तुम्,
सा०- २।३४।१४
१६. रक्षकेण,
वे०सा०-३।३२।१३

अवस्यत्

१. अवः पालनम्, तत् कामयमानाय,
स्क०-१।११६।२३
२. रक्षणमिच्छते,
वे०-१।११६।२३
३. अवनं रक्षणमात्मनः इच्छते,
सा०मु०-१।११६।२३

अवस्यु, स्यू

१. रक्षाकामाः,
वे०सा०-९।८६।२४, सा०- २।११।१३, ८।६३।१०,

२. रक्षणेच्छुः,
वे०-१।११४।११, १३१।३, २।११।१३, वे०सा०मु०- १।२५।१९, सा०- २।२१। ५, सा०मु०- १।१०१।१
३. रक्षणकामाः,
सा०- ९।१३।२, ९४।४
४. रक्षणमिच्छन्,
वे०- ८।६३।१०, वे०सा०- ७।३२।१७, ९।४३।२, सा०-८।१३।९, २१।१,
५. अवनं रक्षणं तद्धेतून् देवनिच्छन्तः,
सा०मु०-१।१४।५
६. अवनमात्मनः तर्पणः वा सोमेन अग्नेस्तत्कामाः,
स्क०-१।१४।५
७. पालनमिच्छन्तः,
वे०-१।१४।५
८. आत्मपालनकामः,
स्क०- १।२५।१९
९. पालनकामाः,
स्क०- १।१०१।१, ११४।११
१०. पालनेच्छवः,
वे०-१।१०१।१
११. अवः अन्नं इच्छन्तो वयम्,
सा०मु०-१।११४।११
१२. अन्नेच्छवः,
वे०-२।११।१२
१३. रक्षणं इच्छन्तो वयम्,
सा०-१।११४।११, २।२१।५
१४. त्वत्तो रक्षणमिच्छन्तः,
सा०-२।११।१२, ३।४२।९
१५. आत्मनो रक्षणमिच्छन्,
सा०-३।३३।५
१६. कुत्सं रक्षितुमिच्छन्,
वे०-४।१६।११, सा०-४।१६।११ (कुत्सस्य रक्षणमिच्छन्)
१७. इन्द्राय तृप्तिमिच्छन्तः,
सा०-१।१३१।३
१८. आत्मने तृप्तिमिच्छन्तः,
सा०-१।१३१।३
१९. जिगमिषवः,
वे०- २।१९।८
२०. अवो गमनमिच्छन्तः पुमांसः,
सा०- २।१९।८
२१. अवस्युः एतन्नामकः,
सा०मु०-५।३१।१०
२२. ऋषिः कान्तदर्शनः,
वे०-५।३१।१०
२३. रक्षयित्रीम्,
सा०मु०-५।४६।१
२४. रक्षिकाम्,
वे०-५।४६।१

अवस

१. अन्नम्,
वे०-१।९३।४, सा०मु०-१।९३।४ (गोरूपमन्नम्), ११९।६
२. अवितारं गन्तारम्। नंष्टारमित्यर्थः,
स्क०-१।९३।४
३. रक्षकं पयः,
सा०मु०-१।११९।६
४. पयोलक्षणं पथ्यदनम्,
स्क०-१।११९।६ (अवसं पथ्यदनमुच्यते, यास्क०-१।१७)
५. केवलं स्वात्मन एव तर्पकम्,
सा०-६।६१।१

अवितवे

गन्तुम्,
वे०सा०-७।३३।१

अवितृ

१. रक्षकः,
वे०-१।३६।२, २।१२।६, ४।१६।१८, ३१।३, ८।७१।१५, १०।७।७, ३९।३, वे० सा०- १०।२४।३, सा०-३।६२।९, ६।३४।५, ८।८०।३, सा०मु०- १।४४।१०,
२. दृष्टभयेभ्यो रक्षकः,
उ०-७।९६।२ (दृष्टभयेभ्योरक्षिता), सा०-१०।७।७
३. रक्षिता,
स्क०वे०-१।४४।१०, स्क०वे०सा०-६।३३।४, ४५।५, ४८।२ स्क० सा०-६।४४।१५, वे०-१।१८।१, ३।१९।५, ६।३४।५, सा०-२।१२।६, ४।१६।१८, ३१।३, सा०मु०-१।३६।२,
५. रक्षित्री,
सा०- ६।६१।४, ७।९६।२
६. पालयिता,
स्क०- १।३६।२, ६।३४।५, ६१।४ (पालयित्री), सा०-३।१९।५, ९।६७।१०
७. अन्नानां धनानां च दातारौ,
सा०-१।१८१।१
८. तर्पयिता,
स्क०-६।४७।११ सा०-१।१८७।२, ६।४७।११ (कामैस्तर्पयितारम्)
९. उपरतिरहिताम्,
सा०-७।३६।८
१०. अश्वैः वाहनभूतैः,
सा०-८।२।३६

अवित्री

१. रक्षिके,
वे०-२।३२।१
२. पालयित्र्यौ,
सा०-२।३२।१

अविष्ठ

अतिशयेन रक्षिता,
वे०सा०-७।२८।५

अविष्यत्

१. पूज्यतमाय,
वे०-१०।११५।६
२. पालकाय,
सा०-१०।११५।६

अविष्या

१. निर्गमनानि,
वे०-२।३८।३
२. गमनेच्छाम्,
सा०-२।३८।३

अविष्यु

१. पालनकामाः,
वे०सा०-८।४५।२३
२. रक्षितुमिच्छन्तः,
सा०-८।६७।९
३. अन्नेच्छवे,
सा०-१।१८९।५

ऊति

१. रक्षणम्,
वे०-१।४।१, ८।९, २।११।१३, ४। १६।९, ३१।१०, ५४।७, ६।५।७, २५।१, ७।२६।५, ५९।४, ८।५।२४, ८।१, ९।५२।५, १०।१५।४, ४९।३, वे०सा०- २।५।१, ८।६, ३।२५।५, ४।१।५, ३२।२, ५।५।३, ९।६, ६।९।७, ७।१९।११, ८।५।४, २१।७, ४७।१, ९।५१।४, ९७।३८, वे०सा० मु०- १।६३।६, ६।८।६, सा०-१। १२९।८, २।१२।९, १४।२, १०।८९।१८ सा०मु०-१।६३।६, मु०-४।३०।१,

२. रक्षणायाद्यम्,
वे०-१०।४३।१
३. रक्षणार्थम्,
वे०- ५।३०।१
४. परिरक्षणैः,
वे०- १।१२९।८
५. रक्षितुम्,
वे०- ३।१४।२
६. शत्रुकृतोपद्रवपरिहाररूपै रक्षणैः,
सा०-४।१६।९
७. रक्षाभिः,
सा०- ४।३१।१०, ५।३०।१, ६।२४।३, २५।१, ७।१९।३, २५।३, २६।५, ५९।४, ८।५।२४, ८।१, १०।१५।४, सा०मु०- १।७।४, ५।५४।७, ६।२।४, ५।७
८. रक्षार्थम्,
सा०-८।५२।५, सा०मु०-१।४।१
९. रक्षारूपाः,
सा०मु०-१।८।९
१०. विघ्नपरिहारेण कर्मपरिपालनादि-रूपाः रक्षाः,
सा०-३।१४।६
११. रक्षाभिः प्रशस्तिभिः,
मु०-५।९।६
१२. पालनाय,
स्क०-१।४।१, ८।९, ६३।६, स्क०वे०-१।७।४, वे०-६।२।४, ७।१९।३
१३. शस्त्रास्त्रप्रज्ञाबलविषयैः सर्वतः पालनैः,
उ०-१०।४९।३
१४. वधादिरूपैः,
सा०-१०।४९।३
१५. तर्पणाय,
स्क०-१।४।१
१६. प्रीतये प्रीतिजननार्थमित्यर्थः,
उ०-१०।४३।१
१७. मरुद्भिः,
वे०-३।३६।१, ८।४६।७। सा०-३।३६।१ (अवन्ति रक्षन्ति सर्वमित्यूतयो मरुतः)
१८. गन्त्र्यः,
सा०-८।४६।७
१९. प्रणयेन,
सा०-२।११।१३

ऊम

१. रक्षकाः,
वे०-३।६।८, वे०सा०मु०-५।५२।१२ सा०-४।१९।१,७।३९।४ सा०मु०-५।५१।१(सर्वैरपि रक्षकैः)
२. अवितारः,
उ०वे०सा०-१०।७७।८, वे०-४।१९।१, ७।३९।४, सा०-१।१६६।३,
३. अवितारस्तर्पयितारः,
उ०सा०-१०।३१।३
४. आपोऽवित्र्यः,
वे०- १०।३१।३
५. रक्षितारः,
वे०-१।१६६।३, १०।३२।५ सा०-१०।३२।५ (रक्षितृभ्यो देवेभ्यः)
६. रक्षणैः,
वे०-१।१६९।७
७. स्वरक्षणैरुदकनिगमनसाधनैर्वा,
सा०-१।१६९।७
८. ऊमसंज्ञकाः पितरः,
वे०-५।५१।१ (पितृभिः), १०।६।७ (ऊमाः नाम पितरः), सा०-३।६।८
९. ऋतवः,
वे०-१०।१२०।१ (जैमिनीय ब्राह्मण, २।१४४)

१०. अवन्ति रक्षन्तीत्यूमाः प्राणिनः,
सा०-१०।१२०।१,३

ओम

१. रक्षकाः,
सा०मु०-१।३।७
२. अवितारः रक्षितारः,
स्क०-१।३।७। वे०-१।३।७ (अवितारः)
३. तर्पयितारः,
स्क०-१।३।७

ओम्या-वत्

१. सुखयुक्तं सुखेन स्प्रष्टुं शक्यम् अकुरुतम्,
सा०मु०-१।११२।७
२. पालनवन्तम्,
स्क०वे०-१।११२।७

ओम्यावती

१. अस्मत्पालनफलमित्यर्थः,
स्क०-१।११२।२०
२. पालनवतीम्,
वे०-१।११२।२०
३. ओम्या इति सुखनाम। तद्युक्ताम्,
सा०मु०-१।११२।२०

ओमन्

१. सुखम्,
वे०-१।३४।६, सा०मु०- १।३४।६, (सुखविशेषम्)
२. पालनम्,
स्क०-१।११८।७, ६।५०।७ (अवनं पालनम्)
३. सर्वोपस्करपालनसमर्थम्,
स्क०-१।३४।६
४. अवति रक्षतीत्योमारक्षकमन्नम्,
सा०-६।५०।७
५. 'अन्नं वा ओमा' इति ब्राह्मणम्,
वे०-६।५०।७
६. पितृभिः,
वे०-५।४३।१३
७. सुखकरम्,
सा०मु०- १।११८।७
८. रक्षणम्,
वे०- ७।६८।५, सा०- ७।६८।५ (रक्षणं सुखम्), सा०मु०-५।४३।१३
९. रक्षणार्थम्,
वे०-७।६९।४
१०. अवनेन रक्षणेन निमित्तेन,
सा०-७।६९।४

ओमन-वत्

अवनवन्तम्,
वे०सा०-१०।३९।९

ओमात्रा

१. रक्षणम्,
वे०-१०।५०।५
२. रक्षणम्। अम गत्यादिषु। औणादिक आत्रन्प्रत्ययः। छान्दस उमादेशः,
सा०-१०।५०।५

अवंश

१. वंशरहितेनान्तरिक्षेण,
वे०-७।५८।१
२. उत्पत्तिरहिते,
सा०-४।५६।३
३. अनाधारे अन्तरिक्षे,
सा०-४।५६।३, ७।५८।१ (अन्तरिक्षात्)
४. आकाशे,
सा०-२।१५।२

अवचाकशत्

१. अवेक्षमाणः,
वे०-९।३२।४

२. पश्यन्,
सा०-९।३२।४
३. अवपश्यन्,
वे०-१०।१३६।४
४. अभिपश्यन् स्वतेजसा दर्शयन्,
सा०-१०।१३६।४

अव√कृश्
नाल्पी भावयन्ति,
सा०-६।२४।७

अवक्रक्षिन्
१. अवकर्षणशीलम्,
वे०-८।१।२
२. अवकर्षणशीलं शत्रूणां हिंसितारम्,
सा०-८।१।२

अव√क्रन्द्
१. क्रन्दनं कुरु,
वे०-२।४२।३
२. शब्दं कुरु,
सा०-२।४२।३
३. अवाङ्मुखं शब्दयतु वृष्ट्यर्थम्,
सा०मु०-५।५८।६
४. शब्दं करोति। उपजातबलो युद्धार्थी गर्जति,
स्क०-५।५८।६

अव√क्रम
अवक्रमणम् अभिभवः,
वे०-७।३२।२७

अव√क्षिप्
प्रक्षिप,
सा०-२।३०।५

अवक्षिपत्
१. अधः प्रेरयन्,
उ०-१०।६८।४
२. वृष्ट्यर्थमवकिरन्,
सा०-१०।६८।४

अवखाद
१. अवखाद इति खादिः सामर्थ्याद्धिंसार्थः। न चात्र अस्मद्यज्ञे कश्चिद्धिंसिता तिष्ठति युष्माकमा-गतानां सतामित्यर्थः,
स्क०-१।४१।४
२. अवखादो गर्त उच्यते,
स्क०-१।४१।४
३. अवमन्तव्यः खादो जुगुप्सित-हविर्विशेषः,
सा०-१।४१।४

अव√ख्या
१. अवाकृत्य न्यक्कृतम्,
उ०सा०-१०।२७।३
२. अव हि पश्यत,
वे०-८।४६।११
३. पश्यताधस्तात्स्थितानस्मान्,
सा०-८।४७।११
४. अभिपश्यति,
सा०-१।१६१।४

ओगण
संघीभूताः,
वे०सा०-१०।८९।१५

अव√गम्
१. प्रति गच्छति,
उ०वे०-१०।४०।३, वे०सा०- १०।८६। १०
२. भूमिं प्रति गताः,
स्क०-१।३२।२
३. प्राप्नुतम्,
सा०-८।३५।४, १०।४०।३

४. प्राप्ताः,
सा०मु०-१।३२।२

अवगत्य

१. उपगम्य,
स्क०-६।७५।५
२. उपेत्य,
वे०-६।७५।५
३. प्राप्य,
सा०-६।७५।५

अव√गा

गच्छसि ...अवाङ्मुखम्,
सा०- १।१७४।४

अव√गृ

१. अत्यर्थं पुनः पुनर्वा अवगिर पिबेत्यर्थः,
स्क०-१।२८।१
२. पिब,
वे०-१।२८।१
३. स्वकीयत्वेनावगत्यैव भक्षय,
सा०मु०-१।२८।१

अव√ग्लै

ग्लानिं ... कुर्वन्ति,
सा०-१।१६४।१०

अव√चक्ष्

१. अवपश्यति,
वे०-८।६२।६, १०।३०।२,
वे०सा०-९।७१।९
२. अधस्तात् पश्यति,
वे०-९।९७।३३, सा०-१०।३०।२
(अधस्तात् अन्तरिक्षे ... पश्यति)
३. अवस्तात् पश्य,
सा०-९।९७।३३
४. पश्यति,
उ०-१०।३०।२

५. अवदर्शनाय,
सा०-४।५८।५
६. अवख्यातव्याः,
वे०-४।५८।५

अवचिन्वती

१. चिन्वानेव,
वे०-३।६१।४
२. अवचयमपक्षयं प्रापयन्ती,
सा०-३।६१।४

अव√चृत

१. अधो मुञ्च,
स्क०-१।२५।२१
२. विचर्तनम्,
वे०-१।२५।२१
३. अवकृष्य नाशय,
सा०मु०-१।२५।२१

अवत

१. कूपः,
उ०वे०सा०- १०।२५।४, स्क०-१।११६।९, स्क०वे०सा०मु०- १।५५।८, ११६।२२, स्क०मु०-१।८५।१०, वे०-२।२४।४, ३।४६।४, ८।६२।६, १०।१०१।५, ७, वे०सा०-४।५०।३,
२. अवस्तात्ततो भवतीति अवतः कूपः,
सा०-१।८५।१०
३. उद्धृतं कूपम्,
सा०मु०-१।८५।११
४. अवस्तात् तं कूपम्,
सा०मु०-१।११६।९
५. कूपादिप्रदेशान्,
सा०-८।६२।६।
६. अवस्तात् ततं विस्तृतम्,
सा०-२।२४।४

७. अवपतितम् अधोगतम्। अधोमुखमिति,
स्क०-१।८५।१०
८. आहावम्,
वे०-१।१३०।२, सा०-१।१३०।२
(आहावलक्षणम् अटवमिव)
९. रक्षकम्,
सा०-३।४६।४
१०. महावीरम्,
वे०सा०-८।७२।१०, ११
११. अवटम्,
सा०-१०।१०१।५
१२. अवटं द्रोणम्,
सा०-१०।१०१।६
१३. अवटवन्निम्नभूतम्,
सा०-१०।१०१।७
१४. कूपनामैतत्। कूपं संग्रामाख्यम्,
सा०-१०।१०१।७

अव√तन्

१. अवस्तात् तनुभूतान्,
सा०-१०।११६।५
२. अवततज्यानि कुरु,
वे०- १०।११६।५, वे०सा०-२।३३।१४
३. अवाञ्चि कुरु। पराजितानि कुर्वीत्यर्थः,
सा०-८।१९।२०
४. अवगतज्यानि कुरु,
सा०-४।४।५
५. पतितज्यानि...कुरु,
वे०-४।४।५

अवतर

अत्यन्तनिकृष्टम्,
सा०-१।१२९।६

अव√तॄ

१. अवधीत्,
वे०सा०मु०-१।१०१।५, सा०-१०।१३३।५ सा०मु०-१।९३।४
२. अवाङ्मुखं कृत्वावधीः,
सा०-८।९७।१७
३. अभ्यभवतम्,
वे०-१।९३।४, १३१।४
४. विनाशय,
वे०-१।११।७ (व्यनाशय), ८।९६।१७ (विनाशितवान), १०।१३३।५, वे०सा०मु०- ६।९।१, सा०- ६।२५।२
५. अनाशयः। अवपूर्वस्तिरतिर्नाशनार्थः,
सा०-१।१३१।४
६. हतवान्,
स्क०-१।११।७, १०१।५
७. हिंसितवानसि,
सा०मु०-१।११।७
८. विवृतद्वारं करोति,
वे०सा०-९।७४।७

अव√त्सर

१. हविर्गृहीत्वा गच्छति,
स्क०-१।७१।५
२. मार्गपार्श्वात् कुटिलमपगच्छति,
वे०-१।७१।५
३. त्वद्भयात्पलायते,
सा०-१।७१।५

अवत्सार

एषामृषीणाम्,
सा०मु०-५।४४।१०

अवदत्

शास्त्रार्थमब्रुवाणाज्जनात्,
सा०-१०।११७।७

अव√दह्

१. अधो निरधमः,

स्क०-१।३३।७

२. निर्धमसि,

स्क०-१।३३।७

३. योधितवानसि,

वे०-१।३३।७

४. दग्धवानसि,

सा०मु०-१।३३।७

अव√दा

१. पृथक्करोमि,

वे०-२।३३।५

२. अवखण्डयामि पृथक्करोमि,

सा०-२।३३।५

३. अपगतक्रोधं करोमि,

सा०-२।३३।५

अवि√दिश्

१. आदिशामि,

सा०-८।७४।१५

२. अवाङ्मुखमस्मदभिमुखं दिशत दत्त,

सा०-१०।१३२।६

अव√दुह्

१. धुक्षस्व,

वे०-८।१३।२५

२. अवाङ्मुखमस्मदभिमुखं धुक्षस्व क्षारय। देहीत्यर्थः,

सा०-८।१३।२५

अवद्य

१. गर्ह्यम्,

स्क०-६।६६।४, वे०-४।१८।५,

२. पापम्,

सा०-६।६६।४, वे०सा०-१०।१४।८,

सा०मु०-५।५३।१४

३. ब्रह्महत्यादिरूपं पापम्,

सा०-४।१८।७

४. गर्हमिव,

सा०-४।१८।५

५. निन्दा,

सा०-८।६८।१९

अवद्य-भी

१. उपद्रवभयेन,

वे०-१०।१०७।३

२. पापभिया,

सा०-१०।१०७।३

अवध

१. हिंसारहितम्,

वे०-१।१८५।३

२. अहिंसितम्,

सा०-१।१८५।३

अव√धा

१. अवाङ्मुखमपातयन्,

सा०-१।१५८।५

२. अधारयतं स्थापितवन्तौ... अवस्तादधारयतम्,

सा०-१।१८०।३

३. अवाचीनमदधुः। तिरस्कुर्वन्तीत्यर्थः,

सा०-४।१३।४

अवहित

१. अधो निहितः। पतित इत्यर्थः,

स्क०-१।१०५।१७। वे०-१०।१३७।१ (अधस्ताद् निहितः)

२. पतितः,

वे०-१।१०५।१७

३. पातितः,

सा०मु०-१।१०५।१७

अव√धाव्

निर्गच्छति,
सा०-१।१६२।११

अव√धू

१. अवचालयसि स्थानात् प्रच्यावयसि,
सा०-८।७०।११ (अवचालयेत्),
सा०मु०-१।७८।४
२. भयेन कम्पयसि,
स्क०-१।७८।४, ८२।२ (भयेन कम्पितवन्तः शत्रून्)
३. अवकम्पयत दत्तेत्यर्थः,
उ०-१०।६६।१४
४. कम्पयति,
स्क०-१।८२।२ (कम्पितवन्तः), सा०-१।८२।२, (अकम्पयन्), मु०-१।८२।२ (अकम्पयन् आस्वादनहर्षेण)
५. अवाङ्मुखं कम्पय। अस्मदभिमुखं गमयेत्यर्थः,
सा०-१०।१३४।३
६. अवाङ्मुखं प्रेरितवानसि,
सा०-८।१४।१४
७. अभिमुखं प्रेरयत,
सा०-१०।६६।१४
८. प्रेरयत,
वे०-१०।६६।१
९. अभिगच्छन्ति,
सा०-६।४७।१४
१०. गच्छन्ति,
स्क०-६।४७।१४
११. ऊर्ध्वं द्युलोकं गच्छन्ति,
स्क०-६।४७।१४
१२. अभिगमयसि,
सा०-१०।१३४।४
१३. पतन्ति,
वे०-६।४७।१४

अवधून्वान

१. शत्र्वाकम्पनशीलः,
स्क०-६।४७।१७
२. परित्यजन्,
सा०-६।४७।१७

अवध्र

१. बाधकरहितम्,
वे०-७।८२।१०
२. अहिंसकम्,
सा०-७।८२।१०
३. अबाधकम्,
सा०-७।८३।१०

अव√ध्वस्

विनष्टमभूत्,
सा०-१०।११३।७

अव√नक्ष्

१. व्याप्नुथः,
वे०-१।१८०।२
२. अवस्तात् तदुदयात् पूर्वं व्याप्नुथो देवयजनं गन्तुम्,
सा०-१।१८०।२

अवनद्ध

बद्धम्,
स्क०वे०-(निगडेन बद्धम्), सा०मु०-१।११६।२४

अवनीत

१. अधः प्रापिताय,
स्क०-१।११८।७
२. अधोनीतम्। असुरैः प्रक्षिप्तमित्यर्थः,
स्क०-१।११६।८

३. प्रक्षिप्तम्,
वे०-१।११६।८, ११८।७
४. शतद्वारे पीडायन्त्रगृहे अवस्तान्नीताय,
सा०मु०-१।११८।७
५. अवाङ्मुखतया असुरैः प्रापितम्,
सा०मु०-१।११६।८

अव√नु

१. सङ्गच्छन्ति,
वे०-९।८६।२७
२. संगच्छन्ते,
सा०-९।८६।२७

अव√पत्

निपतन्तु,
सा०-१०।१३४।५

अव√पद्

१. नरके पतति, नोपरि गच्छति,
वे० - ९।७३।९ सा० - ९।७३।९
(अवस्तान्नरके पतति नोपरि गच्छति)
२. अवाङ्मुखी पततु,
सा०-७।१०४।१७
३. अधः पतत्,
स्क०-१।१०५।३
४. अवपन्नं, विपन्नं, प्रभ्रष्टम्,
सा०मु०-१।१०५।३
५. हिंस्यते,
सा०- ४।१३।५, १४।५
६. हीयते,
सा०-६।५४।३
७. न्यूनं भवति,
वे०-६।५४।३

अवपदस्

१. अवपातयितुः,
वे०-२।२९।६
२. आपदः,
सा०-२।२९।६

अव√पश्

१. अवाङ्मुख सन्नीक्षते,
सा०-८।६।२९
२. अवाङ्मुखं प्रसृतैः किरणैः प्रकाशयति,
सा०-८।६।२९
३. निरीक्षध्वम्,
सा०-१०।१७९।१

अवपश्यत्

जानन्,
सा०-७।४९।३

अवपान

१. पीयतेऽस्मिन्निति पानं ह्रदादिः। ... पानमेवावपान,
सा०-१०।१०६।२
२. अतिपिपासितौ,
वे०-१०।१०६।२
३. अवक्रम्य स्थितं दूरस्थं पातव्यं सोमम्,
सा०-७।९८।१
४. अधोमुखेन पातव्यम्,
वे०-७।९८।१
५. अवनीतं ग्रहचमसादिषु पात्रेष्वानीतं पातव्यम् सोमम्,
सा०-८।४।१०
६. उदकपानस्थानम्,
वे०-८।४।१०
७. अवकलनात् श्रद्धाऽप्रतिहननात् सोमपानम्,
उ०-१०।४३।२
८. अवाङ्मुखचमसपानेषु विषयेषु,
सा०-१।१३६।४

अव√भा

१. स्वमहिम्ना स्फुरति,
सा०-१।१५४।६

अव√भिद्

१. अवाङ्मुखं यथा भवति,
सा०-२।११।२
२. अवभिन्नवान्,
उ०-१०।६९।१ (सङ्गृह्य भिन्नवान्), वे०-२।११।१८
३. अत्यन्तमभैत्सीत्,
सा०-४।१९।४
४. अधस्तात् अभिनत्,
वे०-४।१९।४
५. अवाङ्मुखं कृत्वा अच्छिनत्,
सा०-१०।६९।११
६. वज्रेण विदारितवान्,
उ०सा०-१०।८।९

अव√भृ

१. अपहरति,
वे०सा०मु०-१।१०४।३
२. अधो धारयति,
स्क०-१।१०४।३, सा०-३।२९।३ (अधोमुखां धारय)
३. अधो प्रापयति। पृथिव्यां पातयति,
स्क०-१।१०४।३
४. अवाङ्मुखमवकृत्य प्राणं हतवान्,
सा०-१।१३०।७
५. अधो हतवान्,
वे०-१।१३०।७
६. अधः पातयतु,
सा०-२।२०।६
७. अवयुत्य पृथक्कृत्य हतवानसि,
सा०-१०।१७१।२
८. अवाहरः,
वे०-१०।१७१।२
९. अवधारयत,
सा०-१०।११३।५
१०. संपादयति,
सा०-८।१९।२३
११. अवाङ्मुखं हरति,
सा०-८।१९।२३
१२. उपसंहरति,
सा०-८।१९।२३

अवभृथ

अन्त्यदिवसम्,
सा०-८।९३।२३

अवम

१. सनिकृष्टम्,
स्क०-१।१०५।४, स्क०सा०मु०- १।१०८। ९
२. सनिकृष्टे यज्ञे,
स्क०-१।१०१।८
३. अर्वाचीने,
सा. मु०-१।१०१।८
४. सर्वेषां देवानामादिभूतम्,
सा०मु०-१।१०५।४
५. अन्तिकनामैतत्। नित्यसंनिहिते युवाम्,
वे०-२।३५।१२ (अन्तिकमाय), सा०-१।१८५।११
६. आसन्ने,
वे०-१।१८५।११, ४।१।५, सा०-७।७१।३
७. समीपे वर्तमानैः,
सा०-३।३०।१६
८. अन्तिकागतैः,
वे०-३।३०।१६

९. अधोमुखानि,
वे०सा०-३।५४।५
१०. अर्वाचीनः प्रत्यासन्नः सन्,
सा०-४।१।५, ६।२१।५, (अर्वाचीनस्य)
११. दिवि,
सा०मु०-५।६०।६
१२. अधमा,
सा०-६।२५।१
१३. अधमं त्रपुसीसादिकम्,
सा०-७।३२।१६
१४. निकृष्टाभिः,
स्क० सा०-६।६२।११

√अश्

१. प्राप्नोति,
उ०सा०-१०।३६।४, ३७।६, ९४।२, स्क०- १।११४।२, वे०- २।१९।७, ३३।६, ३।४५।३, वे०सा०- २।१९।८, २१।५, ३१।७, ६।१।१३, ७।३२।२६, ९।११८।३, १०।९२।७, वे०सा०मु०- १।६९।३, ११४।३, ५।६४।३, सा०- ३।५९।२, ४।४।१४, ७।४७।२, ६५।२, ८।२७।२२, ९।९१।५, सा०मु०- १।९४।२, ५।३०।२, ६।५।७
२. प्राप्तवन्तः,
स्क०-१।२०।२। प्राप्ताः
वे०मु०-१।२०।२
३. रक्षणाय प्राप्नुवन्ति,
वे०-१०।१७६।१
४. व्याप्नोति,
उ०वे०सा०- १०।३९।११, स्क०-१। ६९। ३, स्क०वे०सा०मु०- १।७०।१, वे०- ३।५९।२, वे०सा०- २।३३।२, ७।६६।११, ८।१।२, सा०-२।१९।७, ३३।६, ३।४५।३, ७।६५।२, १०। १७६। १ सा०मु०- १।११४।२, मु०- ६।१।१३,
५. व्याप्तवन्तः,
उ०सा०- १।२०।२
६. आप्नोति,
स्क०-१।९४।२
७. लभेमहि,
वे०- १।११४।२
८. तवानुग्राह्याः बुद्धौ भवेम,
स्क०- १।११४।३
९. स्थितवन्तः,
वे०-५।३०।२
१०. भुञ्जीमहि,
वे०-४।४।१४, सा०-६।१।१३
११. पिबति,
वे०सा०-७।७३।२, सा०-९।९८।१२
१२. पानयोग्यो भवति,
सा०-१०।८५।४
१३. अमृता भवेम,
वे०-१०।३७।६
१४. भक्षयति,
वे०- १।१६२।९ (भक्षितवती) वे०सा०- १०।८७।१७, सा०- १।१६२।९, ९। ६७।३१ (परिपूतं पापरहितमन्नं भक्षयति), १०।८५।३ (भक्षयितुमर्हति)

अशन्

१. अशनवतो द्युलोकस्य,
उ०सा०-१०।६८।८
२. अश्मना व्याप्तया शिलया,
सा०-१०।६८।८
३. अश्मना मेघेन,
उ०-१०।६८।८
४. शिलया,
वे०-१०।६८।८

५. *महत्तया*,
वे०-४।२८।५
६. *अशनपरेण बलेन*,
सा०-४।२८।५

अशनि

१. *वज्रम्*,
सा०-१।५४।४, १०।८७।५
२. *शक्तिम्*,
स्क०-१।५४।४
३. *अयोधयः*,
वे०-१।५४।४
४. *अशनिः शक्तिरिहोच्यते*,
स्क०-१।८०।१३
५. *वैद्युताग्निना*,
सा०-२।१४।२
६. *आयुधम्*,
वे०-६।६।५
७. *शत्रूणां तदेतदायुधम्*,
सा०-८।२७।१८
८. *दीप्तिभिः*,
सा०-१०।८७।४

अशनिमत्

अशनिना युक्तम्,
सा०-४।१७।१३

अशस्

१. *अस्तोत्रस्य*,
वे०-२।३४।९
२. *भक्षकस्य*,
सा०-२।३४।९

अश्न

१. *सर्वत्र व्याप्तः। न हि वायुरहितः कश्चित्प्रदेशोऽस्ति, अश्नः व्यापनशीलः*,
सा०-१।१६४।१
२. *वायुः व्याप्तः*,
वे०-१।१६४।१
३. *व्यापकः*,
सा०-१।१७३।२
४. *अशनपरः*,
वे०-१।१७३।२
५. *अश्नाति भक्षयति प्राणिजातमिति*,
सा०-२।१४।५
६. *अश्नुते स्वतेजसा सर्वं व्यापनोतीत्यश्नः कश्चिदसुरः*,
सा०-२।१४।५, २०।५ (अश्नुते स्वतेजसा सर्वं जगदित्यश्तः कश्चिदसुरः)
७. *मेघस्य*,
वे०-२।२०।५, ६।४।३
८. *व्यापनशीलस्यापि राक्षसादेः*,
सा०मु०-६।४।३
९. *अश्मभि ग्रावभिः करणभूतैः*,
सा०-८।२।२

अश्नुवत्

प्राप्नुवन्,
स्क०सा०मु०-१।११६।२५

अश्मन्

१. *अपरिमितपाषाणे पर्वतादौ*,
सा०-१।१३०।३
२. *पर्वते महति*,
वे०-१।१३०।३
३. *पाषाणात्*,
सा०-२।१।१
४. *उपलान्*,
सा०-३।२९।६
५. *पर्वतम्*,
सा०-४।१६।६
६. *शिलोच्चयम्*,
वे०-४।१६।६, ६।४३।३

७. गवामावरकं पर्वतम्,
सा०मु०-५।३०।४
८. वलासुरेण निहितस्य पर्वतस्य,
सा०-६।४३।३
९. शिलासदृशम्,
वे०- १।१२१।९, वे०सा०-९।११२।२ (शिलाभिः)
१०. मेघः,
स्क०-६।४३।३, वे०-१।१२।३, वे०सा०- ९।१०८।६, सा०- २।१।१, ४।१६।६
११. अश्नुते व्याप्नोत्यन्तरिक्षमित्यश्मा मेघः,
सा०-२।१२।३। सा०मु०-५।३०।८ (मेघमिव स्थितम्)
१२. वज्रम्,
वे०-२।३०।५, ५।३०।८, ७।१०४।१९, वे०सा०-४।२२।१
१३. अश्मसदृशेन वज्रेण,
सा०-२।१४।६, ३०।५, (अश्मवत्कठिनं वज्रम्)
१४. शीघ्रं शत्रोर्व्यापकम्,
सा०मु०-१।१२१।९
१५. व्याप्तारं शुष्णं नामासुरम्,
स्क०-१।१२१।९
१६. धनम्,
वे०-५।३०।४
१७. व्यापकः आयुधः विशेषः,
सा०-१।१७२।२
१८. सर्वत्र व्याप्तः,
सा०मु०-५।४७।३
१९. मणिभिरिवेत्यौपमिकम्,
वे०-५।४७।३
२०. अश्मवदभेद्या दृढा भवतु,
सा०-६।७५।१२
२१. अशनिम्,
वे०सा०-१०।८९।१२, सा०-७।१०४।१९
२२. अभिषवग्राव्णि निधीयमानम्,
वे०-७।८८।२
२३. अभिषवार्थे पाषाणेऽवस्थितम्। अभिषुतमित्यर्थः,
सा०-७।८८।२

अश्म-चक्र

१. व्याप्तक्रमणमश्ममयचक्रं वा,
सा०-१०।१०१।७
२. परितः प्रेर्यमाणानि व्याप्तान्यायुधानि चक्रस्थाने भवन्ति,
वे०-१०।१०१।७

अश्म-दिद्यु

१. व्याप्तायुधाः,
वे०सा०मु०-५।५४।३
२. अश्मसारमयायुधः,
सा०- ५।५४।३

अश्मन्मय

१. मेघमयानि पाषाणमयानि वा। मेघसम्बन्धीनि वा पाषावद् दृढानि वेत्यर्थः,
उ०-१०।६७।३
२. अश्ममयानि,
सा०-१०।६७।३

अश्मन्मयी

१. पाषाणैर्निर्मिता,
सा०-४।३०।२०
२. शिलामयीनाम्,
वे०-४।३०।२०
३. अयः शिलासारभूताभिः,
सा०-१०।१०१।१०
४. ग्रावमयीभिः,
वे०-१०।१०१।१०

अश्मन्वती

अश्मन्वती नाम नदी,
वे०सा०-१०।५३।८

अश्मव्रज

१. अश्मा व्याप्तो मेघः। तत्र व्रजन्तीनाम्,
सा०-१०।१३९।६
२. व्याप्तसङ्घानाम्,
वे०-१०।१३९।६

अश्म-हन्मन्

१. अश्मसारभूतस्यायसो विकारैर्हननसाधनैस्तैरायुधैः,
सा०-७।१०४।५
२. व्याप्तहननैः,
वे०-७।१०४।५

अश्मास्य

१. अश्मवत् दृढतरास्यम्,
सा०-२।२४।४
२. अशनवन्तमास्यन्दनवन्तम्,
सा०-२।२४।४ (यास्क०- १०।१३)
३. व्यापनवन्तमासेचनवन्तमिति तस्याथः,
सा०-२।२४।४
४. अश्मपिहितास्यम्,
वे०-२।२४।४

अश्व, श्वा

१. वडवाः,
वे०सा०-३।१।४
२. व्यापनशीलाः, व्याप्तः, व्यापकः,
सा०-१।११५।३, १६४।३४, ४।३९।३, ६, ५।८३।६, १०।१३६।५
३. तुरगाः,
सा०मु०- १।११५।३
४. वायोः अशिता भोक्ता,
सा०-१०।१३६।५
५. कालाश्वस्य,
वे०-१।१६४।३५
६. अश्वसंबन्धिदधीचः,
सा०मु०-१।८४।१४
७. वोढारम्,
सा०-४।१०।१
८. वाहनम्,
सा०-९।९४।५
९. वेगवन्तम्,
वे०-४।१०।१
१०. वृषणो रेतसः सेक्तारः,
सा०-८।२३।११

आश्वघ्न

१. आश्वघ्ननाम्नः ऋषेः,
वे०-१०।६१।२१
२. अश्वघ्नोऽश्वमेधयाजी मनुः तस्य पुत्रः,
सा०-१०।६१।२१

अश्वजित्

अश्वानामपि जेता,
सा०-९।५९।१

अश्वदा

१. स्तोतृभ्यो यष्टृयश्चाश्वान् दात्री,
स्क०-१।११३।१८
२. अश्वानां दातारः,
वे०-५।४२।८, सा०-१०।१०७।२
३. अश्वानां दात्री,
सा०मु०-१।११३।१८
४. बहूनामश्वानां दातारः,
सा०मु०-५।४२।८

अश्वदा-तर

१. अश्वानां दातृतमः,

सा०-८।७४।१५

२. अश्वानामतिशयेन दाता,

वे०-८।७४।१५

अश्व-दावन्

अश्वानां दातः,

वे०सा०मु०-५।१८।३

अश्व-निर्णिज्

१. अश्वरूपे अश्वाकृतियुक्ते यजमाने,

उ०-१०।७६।३

२. अश्वरूपे,

वे०-१०।७६।३

३. निर्णिगिति रूपनाम। अश्वरूपे। अपहृतैरश्वैर्वृत इत्यर्थः,

सा०-१०।७६।३

अश्व-पति

अश्वादीनां स्वामी,

वे०-८।२१।३। सा०-८।२१।३ (अश्वानां स्वामी)

अश्व-पर्ण

१. अश्वानां पतनं गमनं येषामस्ति तादृशैः,

सा०मु०- १।८८।१

२. अश्वं व्याप्तं पर्णं पतनं गमनं येषाम्। अन्तरिक्षं व्याप्य वर्तमानैरित्यर्थः,

सा०-१।८८।१

३. अश्वपतनैः,

स्क०-१।८८।१, वे०- ६।४७।३१

४. अश्वपतना अश्वगामिनः। अश्ववाराः,

स्क०-६।४७।३१

अश्व-पस्त्य

व्याप्तगृहम्,

वे०सा०-९।८६।४१

अश्व-पृष्ठ

१.सर्वतो व्याप्तपृष्ठम्। पृष्ठशब्दः सर्वाङ्गं लक्षयति। व्याप्तकृत्स्नाङ्गमित्यर्थ,

सा०-८।२६।२४

२. व्याप्तपृष्ठम्,

वे०-८।२६।२४

अश्व-पेशस्,

१. अश्वरूपाम्,

वे०-२।१।१६

२. पेश इति रूपनाम। अश्वेन निरूपणीयाम्,

सा०-२।१।१६

अश्व-बुध्ना

१. अशनबन्धनाः। हविराहारवस्थिता इत्यर्थः,

उ०-१०।८।६

२. व्याप्तान्तरिक्षाः,

वे०-१०।८।३

३. व्याप्तमूला अशनबन्धना वा। हविराहारान्विता इत्यर्थः,

सा०-१०।८।३

अश्व-बुध्य

१. अश्वैर्ये बोध्यन्ते तेऽश्वबुध्याः, तान् अश्वबुध्यान्। उत्कृष्टैरश्वैरुद्भासितानित्यर्थः,

स्क०-१।९२।७

२. अश्वानां बोधकान्,

स्क०-१।१२१।१४

३. अश्वैर्बोध्यिवान्,

वे०-१।९२।७

४. *अश्वैः बोद्धव्यानि,*
वे०-१।९२।७
५. *अश्वाः बुध्या विद्यमानत्वेन बोद्धव्या येषु वाजेषु तान्,*
सा०मु०-१।९२।७
६. *अश्वाः बुध्याः बोद्धव्याः येन धनेन तादृशम्,*
सा०मु०-१।९२।८
७. *अश्वैरुद्भासितम्,*
स्क०-१।९२।८
८. *अश्वबुध्नान्। वर्णव्यापत्त्या यकारः। अश्वमूलान्। अश्वैर्हि राजानो धानान्यन्नानि च लभन्ते। अतोऽन्नानो तन्मूलत्वम्,*
सा०- १।९२।७
९. *अश्वानां बोधकान्। अश्वा यावद्भिर्लभ्यन्ते तावदित्यर्थः,*
सा०मु०-१।१२१।१४
१०. *अश्वबुध्नान्। छान्दसो वर्णविकारः। अश्वमूलान्। अश्वप्रमुखानित्यर्थः,*
सा०-१।१२१।१४

अश्वमिष्टि

१. *अश्वम् इच्छसि,*
वे०-२।६।२
२. *व्यापकयज्ञः,*
सा०-२।६।२
३. *आशु क्रियमाणं कर्माश्वम्। तदिच्छतीत्यश्वमिष्टिः,*
सा०-२।६।२

अश्व-मेध

राजर्षये,
सा०मु०-५।२७।४, ६

अश्व-युज्

१. *अश्वैर्युक्ताः,*
वे०-५।५४।२
२. *गमनाय रथेऽश्वानां योक्तारः,*
सा०मु०-५।५४।२

अश्व-यूप

अश्वबन्धनयूपाय,
सा०-१।१६२।६

अश्व-राधस्

१. *लब्धाश्वधनाः,*
वे०-५।१०।४
२. *व्याप्तधनाः,*
वे०सा०-१०।२१।२
३. *अश्वधनाः,*
सा०-५।१०।४

अश्ववत्

अश्वयुक्तम्,
वे०-९।१०५।४, सा०-९।१०५।४
(अश्वयुक्तं धनम्)

अश्व-विद्

१. *अश्वदः,*
वे०-९।५५।३
२. *अश्वस्य लम्भकः,*
वे०सा०-९।६१।३
३. *अश्वप्रदः,*
सा०-९।५५।३

अश्वश्चन्द्रा

१. *अश्वैश्चन्द्रैः कान्तैर्युक्ताः,*
स्क०-६।३५।४
२. *ह्लादकाश्वाः,*
वे०-६।३५।४
३. *अश्वैराह्लादयन्तीः,*
सा०-६।३५।४

अश्वसा

अश्वानां दाता,

सा०-९।२।१०

अश्वसा-तम

१. अश्वयोः सम्भक्ततमः,

वे०-१।१७५।५

२. अश्वोपलक्षितबहुधनदास्तवम्,

सा०-१।१७५।५

अश्व-सूनृता

१. कल्याणर्निगच्छच्छब्दे,

वे०-५।७९।१

२. कल्याणाश्वे,

वे०-५।७९।१

३. अश्वार्था प्रियसत्यात्मिका स्तुति-वाक् यस्याः सा.,

सा०मु०-५।७९।१

अश्व-हय

१. अश्वयुक्तेन सदा गन्ता,

उ०सा०-१०।२६।५

२. व्याप्तहयैः,

वे०-९।९६।२।

३. अश्वानां प्रेरकः,

वे०-१०।२६।५

४. व्याप्तैः,

सा०-९।९६।२

अश्वाजनी

१. अश्वाः व्यापनशीलाः मेघाः। तानजति गच्छतीत्यश्वाजनी विद्युत्,

सा०मु०-५।६२।७

२. अवलम्बमाना,

वे०-५।६२।७

३. कशे,

वे०-६।७५।१३

४. अश्वानां क्षेप्त्रि कशे,

सा०-६।७५।१३

अश्वा-मघ

अश्वधनौ,

वे०सा०-७।७१।१

अश्ववत्

१. अश्वसहितम्,

स्क०-५।५७।७, सा०- ९।६९।८

२. सम्बद्धाश्वम्,

वे०-८।७२।६

३. संवृद्धाश्ववत्,

सा०-८।७२।६

४. अश्वयुक्तम्,

वे०सा०-८।२२।१७, सा०-९।४२।६, ६३।१८, मु०-५।५७।७,

५. अश्वैरुपेतम्,

सा०-१।४८।१२, ५।५७।७, (बहु-भिरश्वैरुपेतम्), ७।७७।५, ९४।५, ८। ४६।५ (अश्वैश्चोपेतम्)

अश्वेषित

१. अश्वादिभिः आनीतम्,

वे०-८।४६।२८

२. अश्वैः प्रापितम्,

सा०-८।४६।२८

अश्वया

१. अश्वेच्छया,

वे०सा०-९।६४।४

२. अश्वप्रदानेच्छया,

सा०-८।४६।१०

अश्वयु

१. अश्वानिच्छन्,

वे०-९।३६।६ (अश्वादीन् इच्छन्),
सा०-९।३६।६, सा०मु०-१।५१।१४

२. अश्वादीन् स्तोतृभ्यः इच्छन्,
वे०-१।५१।१४
३. अश्वांश्चेच्छन्,
वे०-४।३१।१४
४. अश्ववान्,
वे०सा०-४।३१।१४

अश्वायत्

१. अश्वमिच्छते,
स्क. वे०-६।४५।२६
२. अश्वानिच्छन्तः,
वे०सा०-४।१७।१६, ७।३२।२३, १०।१६०।५, सा०-१०।१३१।३
३. अश्वानात्मनः इच्छते,
सा०-६।४५।२६

अश्व्य

१. अश्वसम्बन्धी,
सा०-६।४४।१२, ७।१८।१९, सा०मु०-१।३२।१२, ११७।१२, ११९।९, ५।५२।१७। (तत्संबन्धि)
२. अश्वपृष्ठे साधुः स्थिरयानः अश्व्यः,
स्क०-१।३२।१२,
३. अश्वपृष्ठस्थः,
वे०-१।३२।१२
४. अश्वैरुत्पादितः,
सा०मु०-१।७४।७
५. अश्वेषु भवः,
वे०-१।७४।७
६. अश्वेषु भवः। हेषितशब्दः,
स्क०- १।७४।७
७. शफशब्दः,
स्क०-१।७४।७
८. अश्वस्यावयवभूतम्,
स्क०-१।११७।२२
९. अश्वस्य,
वे०-१।११७।२२
१०. अश्वस्यावयवभूतेन,
स्क०-१।११९।९
११. अश्वसङ्घम्,
वे०-४।२८।५, ४१।१०, ७।१६।१०, वे०सा०-८।१३।२२, २१।१०, २५।२३, २७।६, सा०- ७।९२।३
१२. अश्वसमूहम्,
उ०-१०।४८।४, सा०-४।२८।५, ४१।१०
१३. अश्वसमूहलक्षणानि,
स्क०-६।४४।१२
१४. अश्वसमूहात्मकम्,
स्क०वे०-५।६१।५, (अश्वसमूहम्) वे०-६।४४।१२, सा०मु०-५।५२।१७, ६१।५। (तत्समूहात्मकम्)
१५. अश्वसमूहेन। तदीयेन मांसेनेत्यर्थः,
सा०-१०।८७।१६
१६. अश्ववृन्दानि,
वे०-७।६७।९
१७. अश्वात्मकानि,
सा०-७।१६।१०, ८।३४।१४, सा०मु०-५।६१।५,
१८. अश्वहितानि,
सा०-८।३४।१४
१९. अश्वमयम्,
वे०सा०-१०।४८।४
२०. अश्वार्हं रथम्,
वे०सा०-१०।९३।१२
२१. अश्वेषु भवम्,
वे०सा०-९।१०८।६
२२. अश्वसहितम्,
सा०-९।७२।९

२३. *अश्वहितम्,*
वे०-९।७२।९
२४. *अश्वकुशलोऽश्व्यः,*
सा०-८।६६।३
२५. *अश्वेषु कुशलः,*
वे०-८।६६।३
२६. *अश्वसम्बन्धीनि,*
सा०-७।१८।१९

अश्विय

१. *अश्वसमूहान्,*
वे०-४।१७।११
२. *शत्रुसम्बन्धिनोऽश्वसमूहान्,*
सा०-४।१७।११

अश्विन्

१. *अश्विदेवौ,*
सा०-३।२०।१, ४।२५।३, ७।४०।५, ८।८।२३, १०।१८४।३, सा०मु०-१।३४।१,८, ११,१२, ४४।२, १८६।१०
२. *ईश्वरौ,*
वे०-१।३।१,
३. *अश्ववान्,*
उ०वे०सा०-१०।७५।९ वे०-२।२७।१६, ५।४।११, वे०सा०-४।३७।५, ९।४।१०
४. *अश्वयुक्तान्,*
सा०-८।३२।९
५. *अश्ववानग्निः,*
सा०-७।१।१२
६. *अश्वैरन्वितौ,*
सा०-६।६२।१
७. *बह्वश्वोपेतम्,*
सा०-५।४।११, ८।४।९ (बहुभिरश्वैरुपेत एव भवति। न कदाचिदश्वेर्वियुज्यते)
८. *अश्वी,*
वे०-८।४।९
९. *अश्वोपेतः,*
सा०-४।२।५
१०. *देवानां भिषजौ,*
सा०- ३।२९।६, सा०मु०-५।२६।९
११. *प्राज्ञौ,*
वे०-१।३४।१
१२. *यथा शोभनः कश्चित् पुरुषः दुस्तरान्मार्गान् शीघ्रमतिक्रामति तद्वत्,*
सा०-२।२७।१६
१३. *स्वोदरे गर्भभूतौ,*
उ०सा०-१०।१७।२

अष्टवे

१. *आप्तुम्,*
वे०-४।३०।१९
२. *व्याप्तुम्,*
सा०-४।३०।१९

अशनत्

१. *अवभ्यवहरन्तौ,*
सा०-७।६७।७
२. *भक्षयन्तौ भञ्जन्तौ,*
सा०-८।५।३१

अशत्रु

१. *शत्रुरहितः,*
वे०-५।२।१२, वे०सा०-८।९६।१६, सा०-१०।१३३।२
२. *अविद्यमानशत्रुम्,*
उ०सा०-१०।२८।६
३. *अकण्टकम्,*
सा०-५।२।१२

अशस्तवार

स्तोतृभिरप्रार्थितधनः,
वे०सा०-१०।९९।५

अशस्ति

१. शत्रून्,
वे०-१।१००।१० सा०मु०-१।१००।१०
(अशंसनीयान् शत्रून्)
२. अशंसितॄणाम्,
स्क०- १।१००।१०
३. अभिशस्तीः,
सा०-४।४८।२, ७।१८।५
४. अकीर्तिः। शत्रुकृतान्ययशांसीत्यर्थः,
सा०-६।६८।६
५. अप्रशंसाः,
स्क०-६।६८।६
६. बाधाः,
वे०-६।६८।६
७. अशंसनीया अशंसनीयस्य दुःखस्य कीर्तयित्रीर्वा शत्रुभूताः प्रजाः,
सा०-६।४८।१७
८. अशंसितॄन् वैरिणोऽस्माकम्,
स्क०-६।४८।१७
९. अरातीः,
वे०-६।४८।१७
१०. अहिंसितः,
वे०-७।१८।५

अशस्ति-हन्

१. रक्षोहा,
वे०-९।६२।११, वे०सा०-९७।२, १०।५५।८
२. राक्षसानां हन्ता,
सा०-९।६२।११
३. स्तोत्रशंसनरहितानां शत्रूणां हन्ता इन्द्र,
सा०-८।८९।२
४. दैव्यानामशस्तीनां हन्ता,
सा०-८।९९।५
५. अशस्तीनां हन्ता,
वे०-८।९९।५

अशास्य

१. पुरुषेण अशिष्यं शासितुमशक्यं चपलत्वात्,
वे०-८।३३।१७
२. पुरुषेणाशिष्यं शासितुमशक्यं प्रबलत्वादिति,
सा०-८।३३।१७

अशिपदा

१. अन्नस्य स्थानभूताः,
वे०-७।५०।४
२. शिपदं नाम रोगविशेषः,
सा०-७।५०।४

अशिमिद, दा

१. अन्नस्य वर्धयित्र्यः,
वे०-७।५०।४
२. अहिंसाप्रदाः,
सा०-७।५०।४

अशिव

१. शिवं सुखम्, ततोऽन्यदशिवं दुःखम्। तत्करत्वादत्रासुरा अशिवा उच्यन्ते ... दुःखकरेणासुरसमूहेन,
स्क०-१।११६।२४
२. निगडेन,
वे०-१।११६।२४
३. दुःखकारिणः असुरस्य संबन्धिनीः,
सा०-१।११७।३
४. शठप्रज्ञाः,
स्क०-१।११७।३
५. दुःखहेतुना दाम्ना,
सा०मु०-१।११६।२४
६. असुरवर्गस्य,
मु०-१।११७।३

७. असुखकारिणा,
सा०-६।४४।२२(असुखकरस्य बलस्य),
सा०मु०-१।११७।१७
८. दुःखकरेण,
उ०सा०-१०।२३।५ (असुखकराणि। दुःखकराणीत्यर्थः।), स्क०-१।११७।१७,
९. क्रुद्धेन पौरहितेन,
वे०-१।११७।१७
१०. परनिन्दादीनि कुर्वाणास्त्वत्परिचर्यां त्यजन्तोऽभद्राः,
सा०-५।१२।५
११. अभद्राः,
वे०-५।१२।५
१२. असुखः शत्रुः यस्य,
स्क०-६।४४।२२
१३. अशुभाः,
सा०-१०।९५।१५
१४. अशोभनरूपोऽप्रकाशमानः सन्,
सा०-१०।१२४।२

अशिश्वी

१. शिशुना वत्सेन विरहिता अस्मदीये गृहेऽशयाना वा सत्यः,
सा०-१।१२०।८। मु०-१।१२०।८ (शिशुना वत्सेन विरहिता),
२. शिशवो बालाः वत्सकाः तद्रहिताः,
स्क०-१।१२०।८
३. शिशवो न भवन्तीत्यशिश्वीः,
सा०-३।५५।१६
४. शिशुवर्जिताः,
वे०-१।१२०।८, सा०-३।५५।१६ (शिशुरहिताः)
५. वत्सवर्जिता,
वे०-३।५५।१६

अशीति

अशीतिसंख्याकैः अश्वैः,
सा०-२।१८।६

अशीर्षन्

शिरोवर्जितः,
वे०सा०-४।१।११

अशुष

१. आशोषयितारम्,
सा०-१।१७४।३
२. अशान्तम्,
सा०-१।१७४।३
३. शोषरहितम्,
वे०-१।१७४।३
४. शूषमिति सुखनामैतत्,
सा०-४।१६।१२
५. शत्रुभिरशोष्यम्,
वे०-४।१६।१२
६. अशुष्कस्य। सम्पूर्णबलस्य,
सा०-६।२०।४
७. शोषयितुमशक्यस्य,
वे०-६।२०।४
८. शोषकरहितम्,
सा०मु०-१।१०१।२
९. अशोष्यम्। अन्येन केनचित् हन्तुमशक्यमित्यर्थः,
स्क०-१।१०१।२। वे०-१।१०१।२ (अशोष्यम्),
१०. शोषकरहितम्,
सा०मु०-१।१०१।२
११. शोषयितुमशक्यं प्रबलम्,
सा०-६।३१।३
१२. शोषयितुमशक्यम्,
वे०-२।१९।६, ६।३१।३

१३. अन्येन शोषयितुं विनाशयितुम-शक्यम्,
स्क०-६।३१।३
१४. केनाप्यशोषणीयम्,
सा०-२।१४।५, १९।६, (न केनापि शोषणीयम्),
१४. स्वयं न शुष्यति,
वे०-२।१४।५

अशृथित

अन्यैरशिथिलीकृताः,
वे०सा०-१०।९४।११

अशेव

१. असुखम्,
वे०-७।३४।१३, १०।५३।८
२. असुखकरी,
सा०-७।३४।१३
३. शेवमिति सुखनाम। येऽसुखभूताः,
सा०-१०।५३।८

अशेषस्

१. अनपत्यस्य,
वे०-७।१।११
२. अपुत्राः,
सा०-७।१।११

अश्रद्ध

श्रद्धारहितान्,
वे०- ७।६।३, सा०-७।६।३ (यज्ञादिषु श्रद्धारहितान्)

अश्रम

१. श्रमवर्जितैः,
वे०- ७।६९।७
२. श्रमरहिताः,
सा०-६।२१।१२
३. श्रान्तिमगच्छन्तः,
वे०-६।२१।१२

अश्रमण

१. श्रमवर्जिताः,
वे०-१०।९४।११
२. श्रमणवर्जिताः,
सा०-१०।९४।११

अश्रमिष्ठ

अश्रान्ततमाः,
वे०सा०-४।४।१२

अश्रात

१. अशृतः,
वे०-१०।१७९।१
२. अपक्वः,
सा०-१०।१७९।१

अश्रान्त

१. उपार्जनखेदेन अखिन्नाः सन्तः,
उ०-१०।६२।११
२. कर्मसु अनलसाः सर्वकर्म कुर्वन्तो वयम्,
सा०-१०।६२।११

अश्रित

१. आत्मन्यधिष्ठितम्,
वे०-४।७।६
२. प्राणिभिर्दाहभयात् असेवितम्, दुरासदमित्यर्थः,
सा०-४।७।६

अश्रीर, रा

१. अश्लीलम्,
सा०-६।२८।६
२. अशोभनावयवम्,
वे०-६।२८।६
३. न श्रीरश्रीः। तदस्यास्तीत्यश्रीरः। मत्वर्थीयो रः। गुणैर्विहीनः कुत्सितः,
सा०-८।२।२०

४. विगुणः,
वे०-८।२।२०
५. अश्रीका,
सा०-१०।८५।३०
६. श्रीरहिता,
वे०-१०।८५।३०

अश्रु

बाष्पम्,
सा०-१०।९५।१३

अश्वथ

१. अश्वैः थर्वति चरति गच्छति यः सोऽश्वथः दिवोदासः,
स्क०-६।४७।२४
२. अश्ववानेतत्संज्ञः प्रस्तोकः,
सा०-६।४७।२४

अश्वत्थ

१. व्याप्नुवन्तम्,
वे०-१।१३५।८
२. पर्वतादिव्याप्तिप्रदेशे स्थितम्,
सा०-१।१३५।८

अषतर

१. अभिलषिततराणि,
वे०-१।१७३।४
२. व्याप्ततराणि वा हवींषि,
सा०-१।१७३।४

अषाढ, ढा

१. अनभिभूतः स्क०-
उ०वे०सा०-१०।४८।११, स्क०- १। ९१।२१ (अन्यैः अनभिभूतपूर्वम्), वे०-३। १५।४, वे०सा०मु०- १।५५।८, सा०-६।१९।२ (शत्रुभिरनभिभूतः), ७।२०।३ (स्वयं च केनाप्यनभिभूतः), २८।२ (शत्रुभिरनभिभूतः),
२. असोढः,
वे०-१।९१।२१ (शत्रुभिरसोढः), ६। १९।२, ७।२०।३, २८।२, वे०सा०-८। ७०।४, ९।९०।३, सा०- ३।१५।४ (शत्रुभिर, सोढोऽपराजितः। स्वयं शत्रूञ्जयतीत्यर्थः),
३. शत्रूणामभिभवित्रे,
सा०-८।३२।२७
४. शत्रुभिरनभिभवनीयम्,
सा०मु०-१।९१।२१

अष्टन्

१. अष्ट,
उ०वे०- १०।२७।१५, वे०-१।३५।८, ८।२।४१, वे०सा०-१।१२६।५,
२. अष्टसंख्यकाः,
सा०-८।२।४१, १०।२७।१५
३. अष्टाभिः अश्वैः,
सा०-२।१८।४
४. प्राच्याद्याश्चतस्रो दिश आग्नेय्याद्याश्चतस्रो विदिशः इत्येवमष्टौ दिशः,
सा. मु०-१।३५।८,
५. चतस्रो दिशश्चतस्रोऽवान्तरदिशः ता एता अष्टौ,
स्क०-१।३५।८

अष्टकर्णी

१. विस्तृतकर्णीः,
वे०-१०।६२।७
२. विस्तृतकर्णाः। उपलक्षणमेतत्। व्याप्तसर्वावयवाः गाः,
सा०-१०।६२।७

अष्टम

१. अष्टर्त्विक्संबन्धि,
सा०-२।५।२

२. अष्टसंख्यापूरकम्,
सा०-१०।११४।९

अष्टापदी

१. अष्टापदी दिग्भिश्चावान्तर-दिग्भिश्च,
वे०-१।१६४।४१ (या०स्क०- ११। ४०) अष्टभिर्दिग्भिर्विदिग्भिः साष्टपदी,
सा०-८।७६।१२
२. गर्भिणीभिः,
वे०सा०-२।७।५
३. विदिगपेक्षया अष्टपादोपेता अष्टा-धिष्ठाना,
सा०-१।१६४।४१

अष्टाबन्धुर

१. वन्धुरं सारथिनिवासस्थानम्। अष्ट-संख्याकवन्धुरोपेतम्,
सा०-१०।५३।७
२. आदित्यरथम्,
वे०-१०।५३।७

अष्ठीवत्

जानुनी,
सा०-७।५०।२, १०।१६३।४

√अस् (१)

१. भवति,
उ०वे०सा०- १०।१०।११, १८।१२, २७।१, ४४।७, उ०सा०- ५।५७।२, ६०।६, १०।२२।१२, स्क०- १।२७।८, स्क०वे०- १।५।७, स्क०वे०सा०मु०- १।८।९, स्क०सा०मु०- १।२४।१५, वे०- १।१५।२, २।१४।११, २३।१४, ३।३।७, ६।८, ५४।१६, ४।१।१८, १६।२०, ३४।६, ५८।१, ५।२।१०, १२।४, ३३।४, ७४।६, ६।२३।५, ७।३।८, २२।२ ८।१।१९, ३१, १००।४, १०।७।४, ८२।५, ११५।४, ७ वे०सा०-३।२३।३, ४।६।१, ६।१५।१९, १९।१३, ९।६५।४, ८९।६, १०।९४।११, १०६।२, वे०सा०मु०- १।१७।२, ५।९।४, ७३।१, वे०मु०- १।५७।२, सा०- २।९।४, २३।९, २९।४, ३।३०।१८, ५६।८, ४।२।१०, ८।५, २३।८, ३७।२, ५।४।८, ६।२।७, ४४।१२, ५०।७, ७।३।२, ४।१२, ३२।२४, ४३।४, ६०।७, ९७।४, १००।६, ८।२।७, ४।१, ७।१२, १०।१, ५, १६।६, १९।८, २०।१७, ३१।१८, ४३।३०, १००।३, ९।२।१०, ६३।३, ७३।४, ८६।३८, १०।१।२, ४, १०।९।१, सा०मु०- ५।१३।४, ३०।१५
२. विद्यते,
उ०-८।७१।६, वे०- ४।२०।७, ३०।१, ५।३।५, ७।६०।७, ८।१००।३, वे०सा०-८।१४।४, १०२।१९, सा०- २।२७।६, ३३।१०, ६।७४।३, ७।२२।२, ८।१। ९, ३१
३. वर्तते,
सा०-१।२२।४, ८।१०।१, ५, मु०-५। ७४।६
४. प्रादुर्भवन्तु,
सा०- ५।२।१०, वे०-८।१०।५
५. शोधयेत्,
सा०मु०-१।१५।२
६. परिभवसि,
वे०-३।३।१०
७. रक्षन्तु,
वे०सा०-९।७०।३
८. जनयामास,
सा०-१०।१७।२

सत्

१. वर्तमानम्,
वे०-२।१३।१२, ५।८।३, सा०-१।१७३।७, ४।१।१५, ५।७।४, ८।११।४, ७३।१,१८
२. नित्यं वर्तमानस्य,
मु०-१।३६।३
३. सर्वत्र वर्तमानम्,
सा०मु०-१।७२।२
४. अदृश्यतया वर्तमानम्,
सा०-३।९।२
५. सर्वदा वर्तमानम्,
सा०- ५।८।३
६. सर्वेषां हृदि वर्तमाना एव,
सा०-६।६६।४
७. स्तोत्रकरणार्थं वर्तमानान् स्तोतॄन्,
सा०- ८।२३।२६
८. अस्मत्तो दूरे वर्तमानस्य,
सा०-९।१९।७
९. भवन्,
स्क०- १।७२।२, वे०-४।१५।१, ८।८।२३ १०।२७।४, वे०सा०- ८।१०१।११, १०।६७।१०, सा०-६।४७।२०, १०।१७१।४
१०. विद्यमानम्,
वे०-६।६७।१, ८।७३।१,१८, ९।१९।७, वे०सा०-६।१८।४, सा०-६।१७।५, ८।११।४, ४३।१४, ९।९।५, ६१।१०, ८६।६
११. विद्यमानान् प्रादुर्भूतान्,
वे०-७।१०४।२१
१२. समीपे विद्यमानं क्षीरम्,
सा०-४।५।१०
१३. अभिभवति,
उ०सा०-१०।२७।४, वे०सा०-२।४१।१०
१४. समीपे सीदन्ति,
वे०-४।५।१०, सा०-४।५।१० (समीपे विद्यमानं क्षीरम्)
१५. आविर्भवति,
उ०सा०-१०।५।७, सा०-८।८।२३ व्याकृतम्
१६. साधुनाम्,
सा०-२।१।३
१७. सताम्,
वे०-२।१।३
१८. सत्सु साधुरवितथस्वभावो वा,
सा०-८।१६।८
१९. आसीनाय,
वे०-५।७।४।
२०. तिष्ठते यजमानाय,
सा०-१।१२४।१२
२१. वसते,
वे०-१।१२४।१२
२२. सर्वतः,
स्क०-१।३६।३
२३. पुन्नाम्नो नरकात् त्रायकः सन्,
सा०- १।६९।१, २
२४. इदानीं त्वत्परिचर्यां कुर्वन्तः,
सा०-५।१२।५
२५. सफलसाधनत्वाद्धविरपि सत्,
सा०-५।४४।३
२६. प्रशस्तवचनोऽयम् सच्छब्दः। प्रशस्ता भूमिः पृथिवी,
स्क०-६।४७।२०। वे०-७।३२।२४ (प्रशस्तस्य वशिष्ठस्य), १०।५३।१० (प्रशस्ताः)
२७. सत्यम्,
वे०सा०-७।१०४।१२
२८. अग्निः,
वे०सा०-१०।४।४

२९. *नामरूपविशिष्टं देवादिकम्,*
सा०-१०।७२।२
३०. *व्यक्तं महापुरुषो हिरण्यगर्भाख्यः यः परत्र उत्तानपादिति वक्ष्यमाणः,*
उ०-१०।७२।२
३१. *भूष्णवे,*
सा०-१०।११५।६
३२. *सदात्मवत् सत्त्वेन निर्वाच्यम्,*
सा०-१०।१२९।१
३३. *सच्छब्देन अन्तरिक्षमुक्तम्। 'सद् इव अन्तरक्षिम्'। इति ब्राह्मणम्,*
वे०-१०।१२९।१
३४. *सत्त्वेन इदानीमनुभूयमानस्य सर्वस्य जगतः,*
सा०-१०।१२९।४

सती

१. *वर्तमाना,*
वे०-३।३१।५, ५।२९।५, ९।८७।८
२. *वर्तमानाः पणिभिरपहृताः,*
सा०-९।८७।८
३. *भवती,*
वे०-८।५।१, सा०-८।६।८, सा०मु०-५।२९।५,
४. *इह समीपे विद्यमाना,*
सा०-८।५।१
५. *निगूढाः सतीर्गाः,*
सा०-३।३१।५
६. *कल्याणीर्भवन्तीर्गाः,*
सा०-१०।१६९।४
७. *दुहिता,*
सा०-२।१७।७
८. *प्रशस्तवचनोऽयम् सच्छब्दः। प्रशस्ता भूमिः पृथिवी,*
स्क०-६।४७।२०

√अस् (२)

१. *अस्यति,*
वे०- ७।१०४।२५, १०।६१।८
२. *क्षिपति,*
स्क०वे०-१।११४।४,वे०सा०- १।१७२।२, सा०-२।२४।८, ७।१०४।२५, १०।६१।८
३. *प्रेरयति,*
सा०मु०-१।११४।४, वे० २।२४।८
४. *मुखादुद्गिरतु,*
सा०-३।५३।२२
५. *विसृजति,*
वे०-३।५३।२२

असत्

१. *असत्यम्,*
वे०-७।१०४।१२, १३, वे०सा०-७।१०४।८, सा०-७।१०४।१२, १३, (उक्तविलक्षणमसत्यम्)
२. *अनृतेन,*
वे०-४।५।१४
३. *दुःखेन,*
सा०-४।५।१४
४. *अकल्याणम्,*
वे०-६।२४।५
५. *अशुभमशनिपातनादिकम्,*
सा०-६।२४।५
६. *अव्याकृतम्,*
उ०सा०-१०।५।७
७. *सद्विलक्षणेऽव्याकृते कारणे,*
सा०-१०।१२९।४

असन

१. *इषवोऽस्यन्तेऽस्मिन्निति असनः संग्रामः,*
सा०मु०-१।११२।२१

२. असुरान् हन्तुमिषूणां क्षेपणकाले,
स्क०-१।११२।२१
३. इषुक्षेपणकाले,
वे०-१।११२।२१
४. शत्रोरुपरि क्षेपणाय,
सा०-१।१३०।४
५. निरसनाय,
वे०-१।१३०।४

असिष्यत्

१. क्षेप्स्यन्,
वे०-६।३।५
२. ज्वालां प्रक्षेप्स्यन्,
सा०मु०-६।३।५

अस्तृ

१. क्षेप्ता,
उ०-१०।४२।१, १३३।३, वे०-१।६१।७, ६४।१०, ९।७७।२
२. इषूणां क्षेप्ता धानुष्कः,
वे०-६।३।५ (शरान् क्षेप्स्यन्), सा०-२।४२।२ (शराणां क्षेप्ता धन्वी) ४।२७।३ (शराणां क्षेप्ता), ६।३।५ (बाणादेः क्षेप्ता), ९।७७।२ (शरक्षेप्तुः), १०।४२।१ (क्षेप्ता धानुष्कः), सा०मु०-१।७०।६,
३. इषूणां क्षेप्तृंस्तदनुचरान् गन्धर्वान्,
सा०-१०।६४।८
४. शत्रुवधाय आयुधानां क्षेप्तॄन् अन्यांश्च देवान्,
उ०-१०।६४।८
५. स्तृणाति सामर्थ्याद् हिंसार्थः। अहिंसितैः,
स्क०-१।८।४
६. क्षेपकः,
सा० मु०-१।६१।७
७. शत्रूणां निरासितारः,
सा०मु०-१।६४।१०
८. योद्धा,
वे०-१०।४२।१
९. प्रेरयिता,
वे०-२।४२।२
१०. वेद्धा,
वे०-४।२७।३, ६।३।५
११. वीरः क्षेप्तेव,
सा०-६।६४।३

अस्यत्

१. क्षिपन्,
वे०-१०।१६८।१, सा०-१०।४२।१
२. गृहीत्वा सर्वत्र विक्षिपन्,
सा०-१०।१६८।१

असंयत्त

१. विनैव क्लेशेनेत्यर्थः,
स्क०-१।८३।३
२. शत्रुभिः सह युद्धार्थमनभिगतः सन्,
सा० मु०-१।८३।३

असक्रा

१. असंक्रमणीम्, यावज्जीवम् अनपायिनीमित्यर्थः। अथवा समानेषु न क्रामतीत्यसक्रा... समेष्वक्रान्तम् अस्मत्सजातैर प्राप्तपूर्वामित्यर्थः,
स्क०-६।६३।८
२. असङ्क्रमणम्,
वे०-६।६३।८
३. असंक्रमणीम्,
सा०-६।६३।८ (यास्क०-६।२९)

असचद्विष्

१. असमवेतशत्रवः,
वे०-८।२०।२४

२. *असक्तशत्रवः शत्रुरहिताः,*
सा०-८।२०।२४

असजात्या

१. *असमानजातीया,*
उ०-१०।३९।६
२. *अश्रद्धेया,*
वे०-१०।३९।६
३. *अश्रद्धेया चाभिशस्तिः,*
सा०-१०।३९।६

असत्य

१. *वाचिकमनृतमसत्यम्,*
वे०-४।५।५
२. *वाचिकसत्यरहिता मनसा वाचाग्नि मभजमानाः,*
सा०-४।५।५

असना

१. *गच्छन्तीम्,*
सा०-१।१४८।४
२. *निरसनं वायुः,*
वे०-१।१४८।४।
३. *असनं चलनशीलं प्रदानशील-मन्नादिकम्,*
सा०-१।१५५।२
४. *तेजः,*
वे०-१।१५५।२
५. *प्रक्षेप्तुम्,*
सा०-१०।९५।३

असंदित

१. *दामभिरसम्बद्धः,*
वे०-४।४।२
२. *परैरनिरुद्धः,*
सा०-४।४।२

असंदिन

१. *अबद्धम्,*
सा०-८।१०२।१४
२. *आनन्दिनम्,*
वे०-८।१०२।१४

असपत्न, त्ना

१. *सपत्नीरहिता,*
वे०-१०।१५९।४, ५
२. *अशत्रुका,*
सा०-१०।१५९।५
३. *शत्रुरहितः,*
सा०-१०।१७४।५
४. *अभियोक्तृसपत्नवर्जितः,*
वे०-१०।१७४।५

असम, मा

१. *विषमः,*
सा०-६।६७।१
२. *विषमाः नानाप्रकाराः,*
सा०-२।१३।७
३. *असदृशः,*
स्क०-६।३६।४, स्क०वे०- ६।६७।१
४. *नानाविधः,*
वे०-२।१३।७
५. *न केनचित् समं सर्वाधिकमित्यर्थः*
सा०- मु. १।५४।८
६. *अतुल्यमन्यैर्मनुष्यैः,*
स्क०-१।५४।८
७. *अनुपमः सर्वोत्कृष्टः,*
सा०-६।३६।४
८. *असाधारणम्,*
उ०सा०-१०।४७।८
९. *अतुल्यः,*
उ०सा०-१०।७१।७

१०. *अतिरिक्तमत्यन्तम्,*
वे० - १०।८९।३, सा० - १०।८९।३
(अत्यन्तमतिरिक्तम् महदित्यर्थः)

असमन, ना

१. *असङ्ग्रामयोग्ये,*
स्क०- ६।४६।१३
२. *असमाने,*
वे०- ६।४६।१३
३. *विषमे,*
सा०- ६।४६।१३
४. *परस्परमसमेताः,*
सा०-७।५।३
५. *त्यक्तसङ्गमाः,*
वे०-७।५।३
६. *असमानमनस्काः। काश्चन प्राङ्-मुख्यो गच्छन्ति काश्चन प्रत्यङ्मुख्यः इति विविधमनस्काः,*
सा०-१।१४०।४
७. *भिन्नवर्णाः,*
सा०-१।१४०।४
८. *नानाविधरूपाः,*
वे०-१।१४०।४

असमष्टकाव्य

१. *अव्याप्तकर्मा,*
वे०-९।७६।४
२. *अन्यैरयाप्तकर्माः,*
सा०-२।२१।४
३. *अव्याप्तकर्मा सोमः,*
सा०-९।७६।४।
४. *असमाप्तस्तोत्रः,*
वे०-२।२१।४

असमाति

राजानम्,
सा०-१०।६०।२

असमात्योजस्

१. *असमाति असमानम् अनुपमम् उत्कृष्टतरमोजो बलं यस्य तादृशः सन्। ... अन्येनासमबलः,*
स्क०-६।२९।६
२. *समातिबलो यो भवति स समात्योजाः, अतादृशः,*
वे०-६।२९।६

असंमृष्ट

अबाधितः,
सा०मु०-५।११।३

असश्चन्ती

१. *अस्मादन्यत्र संगतिमकुर्वाणा,*
सा०-३।५७।६
२. *अनवरतं प्रवृत्ता,*
वे०- ३।५७।६।
३. *असज्यमाने व्युदस्यन्त्यौ वा,*
सा०-६।७०।२
४. *असङ्गच्छमाने असज्जमाने परस्परेण असम्मिश्रीभवन्त्यौ अविक्षिप्न्त्यौ आश्रितान् वा,*
स्क०-६।७०।२
५. *परस्परमसङ्गते,*
वे०-६।७०।२
६. *अगमनशीलम्,*
सा०-८।३१।४

असश्चत्

१. *अन्यत्रानासक्ताः स्तोतारः,*
सा० मु०-१।११२।२
२. *असङ्गच्छमानाः। असंयुक्ता इत्यर्थः,*
स्क०-१।११२।२
३. *असक्तारः,*
वे०-१।११२।२, ९।७४।६

४. *असज्यमाना अनिरुद्धाः सत्यः,*
सा०-२।२५।४, ७।६७।९ (कुत्राप्य-सज्यमानौ)
५. *असङ्गताः,*
वे०-९।८६।२७
६. *सङ्गवर्जिताः,*
वे०-२।२५।४
७. *परस्परमसक्ताः,*
सा०-९।७४।६
८. *परस्परमसंगताः,*
सा०-९।८६।२७
९. *आसंगवर्जितौ,*
सा०-७।६७।९

असश्चुषी

अप्रतिबन्धा,
वे०सा०-९।८६।१८

अससत्

१. *अस्वपन्तः,*
वे०-१।१४३।३
२. *स्वव्यापारेषु अस्वपन्तोऽविरताः,*
सा०-१।१४३।३

असामि

१. *अनल्पमधिकम्,*
सा०-६।१९।२
२. *अन्यूनः,*
वे०-६।१९।२
३. *आङ्मर्यादायाम्। आ समाप्तेः। अनन्तगुणः इत्यर्थः,*
सा०-१०।२२।३
४. *असाधारणं कृत्स्नम्,*
वे०-१०।९६।५, सा०- १०।९६।५ (असाधारणमसमं कृत्स्नम्)
५. *सम्पूर्णम् ...सामि अर्धं न सामि असामि,*
सा०-१।३९।९, १०
६. *सम्पूर्णम्,*
मु०-१।३९।९, १०

असि

१. *अस्याद्यायुधम्,*
उ०-१०।७९।६
२. *शस्त्रम्,*
सा०-१०।८९।८
३. *स्वधितिः,*
सा०-१०।७९।६

असिक्नी

१. *रात्रिः,*
वे०सा०-१०।३।१, सा०-४।१७।१५
२. *रात्रिवत्कृष्णरूपाम्,*
सा०-९।७३।५
३. *कृष्णा,*
वे०-९।७३।५
४. *असितवर्णा,*
वे०सा०-७।५।३
५. *अवयवभूता,*
सा०-१०।७५।५

असित

१. *कृष्णवर्णम्,*
सा०-४।१३।४, ५१९
२. *तमोलक्षणम्,*
वे०-४।१३।४, ४।५१।९ (तमः)
३. *स्वकीयेदीप्तेः सूर्यप्रवेशेन स्वयं कृष्णो भूत्वा,*
सा०मु०-१।४६।१०
४. *षिञ् बन्धने इत्यस्यैतद्रूपम्,*
स्क०-१।४६।१०

५. *अबद्धः,*
वे०-१।४६।१०

असिन्व, न्वा

१. *सपत्नानवक्षेप्तारम्,*
सा०-५।३२।८
२. *अबन्धनम्,*
वे०-५।३२।८
३. *भेदनरहितम्,*
सा०-१०।८९।१२
४. *बन्धनरहिता,*
वे०-१०।८९।१२

असिन्वत्

१. *अखादन्,*
वे०-२।१३।४
२. *सेतुबन्धादिकं कर्म कुर्वन् लोकः,*
सा०-२।१३।४
३. *अप्रतिबध्नन्नग्निः,*
सा०-७।३९।६
४. *अबध्नन्,*
वे०-७।३९।६, ८।४५।३८, सा०-८।४५।३८ (न बध्नन्)
५. *दन्तैरसंखादन्,*
सा०-१०।७९।२
६. *असङ्खादन् उच्चैरचर्वयन्,*
उ०-१०।७९।२
७. *असंख्यादन्त्यौ,*
उ०सा०- १०।७९।१। वे०- १०।७९।१ (असंखादन्त्यौ भक्षयन्त्यौ)

असिर

१. *उत्क्षेपकेण तेजसा,*
वे०-९।७६।४
२. *क्षेपकेण रश्मिना,*
सा०-९।७६।४

असु

१. *प्राणः,*
स्क०वे०- १।११३।१६, (यास्क०- ३।८) वे०सा०-१।१४०।८, १८२।३, १०।१५।१, सा०-२।२२।४
२. *प्राणं तदुपलक्षितं सूक्ष्मशरीरम्,*
सा०-१।१६४।४
३. *आत्मीयं ज्वालालक्षणं प्राणम्,*
सा०-१०।१२।१
४. *प्राणं ज्वालालक्षणं सर्वार्थदर्शन-लक्षणम्,*
उ०-१०।१२।१
५. *समीचीनं प्राणम्,*
सा०-१०।१४।१२
६. *प्राणभूतः,*
सा०-१०।१२१।७
७. *शरीरस्य प्रेरयिता,*
सा०मु०-१।११३।१६
८. *असितारम्,*
वे०-२।२२।४
९. *चालकः,*
वे०-१।१६४।४
१०. *बलम्,*
वे०-१०।१२।१

असुतृप्

१. *परकीयान् प्राणान् स्वीकृत्य तैस्तृप्यन्तौ,*
सा०-१०।१४।१२
२. *असुभिः तृप्तौ,*
वे०-१०।१४।१२, ८७।१४
३. *केनाप्युपायेन असून्प्राणास्तृप्यन्तः। उदरंभरा इत्यर्थः,*
सा०-१०।८२।७

४. असूनां प्राणानां चक्षुरादीन् अबादिना तर्पयितारश्चेत्यर्थ,
उ०-१०।८२।७
५. आत्मीयानां तर्पयितारः,
वे०-१०।८२।७
६. मनुष्याणामसुभिस्तृप्ताः,
सा०-१०।८७।१४

असु,नीति

१. असुरिति प्रज्ञा। तया परिसमाप्तिं नीयते इत्यसुनीतिरत्र स्तुतिरुच्यते,
उ०-१०।१२।४
२. असुः प्रज्ञा। तया नीयत इति असुनीतिः स्तुतिः,
सा०-१०।१२।४

असुत

१. नाभिषुतः,
सा०-७।२६।१
२. वल्ल्याकारे वर्तमानम्,
सा०-८।६४।३

असुन्वत्

१. अयजमानः,
वे०-१।१७६।४, सा०मु०-५।३४।६
२. सोमाभिषवमकुर्वतः,
स्क०- १।१०१।४, सा०- ४।२५।७ (सोमाभिषवमकुर्वता अयजमानेन सह) सा०- १।१७६।४। (सोमाभिषवम-कुर्वाणम्। त्वामजयन्तमित्यर्थः)
३. सुन्वतां यागानुष्ठानतॄणां विरोधिनः,
सा०मु०-१।१०१।४

असुन्वा

१. अभिषववर्जितानाम्,
वे०-८।१४।१५
२. सोमाभिषवहीनाम्,
सा०-८।१४।१५

असुर

१. बलवान्,
उ०वे०सा०- ५।१२।१, वे०-१।३५।१०, (बली) १३१।१, १७४।१, २।१।६, २७।१०, २८।७, ३।३८।४, ५।४२।१, ७।५६।२४, ८।९०।६, १०।१०।२, ११।६, ३१।६, वे०सा०-१।१५१।४, ३।५३।७, ७।३६।२, ६५।२, ९।९९।१, १०।५६।६, ९३।१४, ९९।१२, सा०-४।२।५, ५।२७।१, ७।२।३, ६।१, ३०।३, ८।२५।४, ४२।१, ९७।१, (बलवद्-भ्योराक्षसेभ्यः), ९।७३।१, ७४।७, १०।९६।११, सा०मु०- ५।१५।१
२. उद्गूर्णबलेषु,
सा०-१०।१५१।३
३. प्रकृष्टासुम्। बलवन्तमित्यर्थः,
सा०मु०-५।४२।११
४. असुर्बलम्। तद्वतः,
सा०-४।५३।१
५. बलवन् प्राणवन्,
सा०-८।९०।६
६. बलप्रदः,
सा०-३।३।४
७. प्राज्ञः,
वे०-५।१५।१, ५१।११, ८३।६, सा०-९।७४।७
८. प्राणवान्,
उ०- १०।६७।२, ७४।२, उ०सा०-१०। १०।२, ११।६, स्क०- १।२४।४ (असवः प्राणाः तद्वन्) सा०-१।३५।१० (प्राणप्रदाता) १०।९६।११, (आसुः प्राणः। तद्वन्। मत्वर्थीयो रः। तादृशेन्द्रः) (प्राणदः)

९. प्राणदाता,
सा०- ५।४१।३, ४२।११, ९।७३।१, (सर्वेषां प्रीणनात् प्राणदाता), सा०मु०- १।३५।७, (प्राणदः) ३५।१० (प्राण प्रदाता), सा०मु०-५।४२।१

१०. प्रज्ञावान्,
उ०- १०।१०।२, ११।६ ३१।६, उ०वे०सा०- १०।६७।२, उ०सा०- १०।१०।२, ११।६, स्क०-१।३५।१०, स्क०वे०-१।३५।७, वे०-३।३।४, ४।२।५, ५३।१, ७।६।१, ३०।३, १०।९६।११, सा०-७।५६।२४, ९।७४।७

११. प्राणापहर्त्रे,
सा०मु०-५।४१।३

१२. क्षेपकः,
वे०-५।४२।११, (क्षेप्तारम्), ८।१९।२३, सा०-२।२७।१०, ८।२०।१७, २७।२०, १०।१२४।३, १३२।४, १५७।४

१३. अनिष्टक्षेपणशीलः,
सा०मु०-१।२४।१४

१४. हविषां प्रक्षेपकैः ऋत्विग्भिः,
सा०मु०-१।१०८।६

१५. अस्यति क्षिपति सर्वमित्यसुरः कालात्मा संवत्सरः,
सा०-३।५६।८

१६. प्रेरकः,
वे०सा०-१०।७४।२, सा०-३।२९।१४, ८।२५।४ (सर्वान्तर्यामितया प्रेरकौ)

१७. अस्यति प्रेरयति सर्वानन्तर्यामितयेत्यसुरः,
सा०-३।३८।४

१८. निरसिता,
वे०-५।२७।१ (निरसिता शत्रूणां), सा०-१।१२२।१ (निरसितव्यानामसुराणां निरसितुः), १२६।२, (धनानां निरसितुः दानशीलस्य), १३१।१ (निरसनशीलाः), १७४।१ (शत्रूणां निरसितः), २।१।६, (शत्रूणां निरसिता), २८।७ (पापकृतां निरसिता), ५।८३।६ (उदकानां निरसिता) सा०मु०-१।५४।३, ६४।२ (शत्रूणां निरसिता), ५।४९।२ (शत्रूणां निरसितुः) ५१।११ (शत्रूणां निरसिता), ६३।३ (उदकनिरसितुः), ६३।७ (मेघानां निरसितुः)

१९. मेघः,
स्क०-१।५४।३, वे०सा०-१०।९२।६

२०. असवः प्राणाः। तेन आपो लक्ष्यन्ते... तान् राति ददाति इति असुरः,
सा०-१।५४।३

२१. असवः प्राणाः। तान् ददाति। मनुष्येभ्यः स्वोदयेन प्रयच्छतीत्यसुरः,
सा०-१०।१३२।४

२२. प्रकृष्टासुम् बलवन्तमित्यर्थः,
सा०मु०-५।४२।११

२३. दीप्तः,
वे०-१०।१३२।४

२४. पर्जन्यस्य,
उ०वे०सा०-५।६३।७

२५. सत्यप्रज्ञौ,
वे०-८।२५।४

२६. देववर्जिताः,
वे०-८।९६।९

२७. वृत्रस्य,
वे०-२।३०।४

२८. असनकुशलस्य सर्वोपाधिविहीनस्य परब्रह्मणः संबन्धिन्या,
सा०- १०।१७७।१

२९. त्वष्टुः सम्बन्धिनम्। तेन निर्मित-मित्यर्थः,
सा०मु०-१।११०।३
३०. त्वष्टा,
स्क०-१।११०।३
३१. सोमस्य,
वे०-१।११०।३

आसुर

१. कर्मविघ्नकारिणामसुराणां हन्ता,
सा०-३।२९।११
२. असुरहन्तुः,
वे० मु०-५।८५।५
३. असुरसंबन्धिनः। असुराणामस्य च वध्यघातकभावः संबन्धः। असुर-हन्तुरित्यर्थः,
सा०-५।८५।५
४. असुरो मेघः। प्राणदानात् तत्संबन्धिनः।
सा०-५।८५।५
५. असुरपुत्रः,
सा०-१०।१३१।४

असुरत्व

१. अस्यति क्षिपति सर्वानित्यसुरः प्रबलः। तस्य भावोऽसुरत्वं प्राबल्यम्। महदैश्वर्यम्,
सा०-३।५५।१
२. प्राबल्यम्,
वे०-३।५५।१
३. प्रकृष्टबलवत्वम्,
सा०-१०।५५।४
४. बलकृतम्,
वे०-१०।५५।४
५. बलेन युक्तः,
वे०सा०-१०।९९।२

असु,हन्

असुराणां हन्तुः,
वे०सा०-६।२२।४

असुर्य, र्या

१. असुराणां बलम्,
सा०-३।३८।७, ६।२०।८
२. असुरत्वं बलम्,
सा०-६।२०।२
३. महद् बलम्,
वे०-६।२०।२
४. बलम्,
वे०-२।३५।२। सा०-७।५।६, २१।७,
५. असुराणां हन्तृबलम्,
वे०-७।५।६
६. असुरघ्नं बलम्,
सा०मु०-५।१०।२
७. असुर्यं बलम्,
सा०-७।२२।५
८. असुरः शत्रून् क्षेप्ता। तस्य स्वभूतस्य बलस्य,
सा०-२।३५।२
९. असुराणां हन्ता,
वे०-१।१६७।५, ४।१६।२।, ७।२१।७।, १०।१०५।११ वे०सा०-२।२३।२, ८।१०१।१२
१०. असुराणां हिंसकाय तुभ्यम्,
सा०-४।१६।२,
११. असुरहघ्नं बलम्,
सा०मु०-५।१०।२
१२. असुराः क्षेप्तारो मरुतः,
सा०-१।१६७।५
१३. शत्रूणां क्षेप्ता,
सा०-४।४।१

१४. *असुराणां स्वभूतम्,*
वे०-३।३८।७
१५. *असुराणां हन्तुः जानन्,*
वे०-७।२२।५
१६. *असुराणां बाधकम्,*
वे०सा०-९।७१।२
१७. *असुरसंबन्धिनो भयात्,*
सा०-१।१३४।५
१८. *असुरपक्षीयात्,*
वे०-१।१३४।५

असुष्वि

१. *अनभिषोतॄनयजमानान्,*
सा०-६।४४।११
२. *सोमाभिषवस्याऽकर्तॄन्,*
स्क०-६।४४।११
३. *अयजमानान्,*
वे०-६।४४।११
४. *असुन्वतोऽयजमानस्य,*
सा०-४।२५।६
५. *अनभिषुतसोमान् यजमानान्,*
सा०-४।२४।५

असू

१. *निवृत्तप्रसवाम्,*
वे०-१।११२।३
२. *अप्रसूतां निवृत्तप्रसवाम्,*
वे०सा०-१०।६१।१७
३. *प्रसवासमर्थाम्,*
सा०मु०-१।११२।३

असूयत्

सुखेन जीवन्तं मां मृत्युसमीपं प्रेहीत्युक्त, वानिति मानसेनोपतापेन युक्तः सन्,
सा०- १०।१३५।२

असूर

१. *प्रज्ञारहिते,*
वे०-८।१०।४
२. *स्तोतृरहितेऽपि देशे,*
सा०- ८।१०।४

असूर्त

१. *असुसमीरता असुना प्राणेन परमसूक्ष्मेण वायुना हिरण्यगर्भेण विश्वकर्माख्येन प्रेरिताः,*
उ०-१०।८२।४
२. *सरणवर्जिते,*
वे०सा०-१०।८२।४

असृज्

१. *अविसृजन्,*
वे०-१।१६४।४
२. *शोणितम्। एतत्सप्तधातूपलक्षकम्। यद्यपि शरीरं पञ्चभूतात्मकं तथापि भूतद्वय, प्रत्यक्षत्वात् तदपेक्षयोक्तम्,*
सा०-१।१६४।४

असेन्य

१. *असनीयानि दासपुत्रैः,*
वे०-१०।१०८।६
२. *सेनार्हाणि न भवन्ति,*
सा०-१०।१०८।६

अस्कम्भन

१. *अन्तरिक्षे,*
वे०-१०।१४९।१
२. *पतनप्रतिबन्धकमालम्बनं स्कम्भनम्। तद्रहिते स्थले,*
सा०-१०।१४९।१

अस्कृधोयु

१. *कृध्विति ह्रस्वनाम। निकृतं भवति,*
स्क०-६।६७।११ (या०, ६।३)

२. *अविच्छन्नम्,*
सा०-६।२२।३, ६७।११
३. *न कृधु अस्कृधु दीर्घम्, तदायुर्यस्य तद् अस्कृधोयु। दीर्घकालावस्थायि,*
स्क०-६।६७।११
४. *अनल्पागमनम्,*
वे०-६।६७।११

अस्त

१. *गृहभूतम्,*
वे०-५।६।१
२. *शरीरम्,*
वे०-१०।१४।८
३. *गृहम्,*
उ०वे०सा०-१०।३४।१०, स्क० वे० सा०-६।४९।१२, स्क०वे०सा०मु०-१।६६।५, वे०-३।५३।४, वे०सा०-४।१६।१०, ३४।५, ७।१२, ३७।४, ६, ८।९१।१, ९।६६।१२, १०।१११।१० वे०सा०मु०-५।३०।१३। सा०-१०।१४।८,
४. *अस्यन्ते क्षिप्यन्ते पदार्था अत्रेत्यस्तं गृहम्,*
सा०-३।५३।४
५. *यज्ञगृहम्,*
वे०सा०-९।९७।८
६. *स्वधामस्थानम्,*
सा०-१।१३०।१

अस्ततति

१. *निरस्तधनम् दत्तधनम्,*
वे०-५।७।६
२. *अस्ते गृहे निवासकर्तारम्,*
सा०-५।७।६

अस्तमीक

१. *अन्तिके,*
वे०-१।१२९।९
२. *अत्यन्तान्तिके देवयजनदेशे,*
सा०-१।१२९।९

अस्तुत, ता

१. *सामर्थ्यान्मत्तोऽन्येन केनचिद्, स्तुतपूर्व इत्यर्थः,*
स्क०-५।६१।८
२. *बहुधा स्तुतोऽपि गुणस्याति, बाहुल्यादस्तुत एवेति ब्रुवे,*
सा०मु०-५।६१।८
३. *अस्तुतः,*
वे०-५।६१।८, ६७।५
४. *सर्वैरस्तूयमानः कोऽस्ति। उभावपि स्तुत्यावित्यर्थः,*
सा०मु०-५।६७।५

अस्तृत

१. *अहिंसितः,*
उ०सा०वे०-१०।४८।११, स्क०वे० सा०मु०-१।४१।६, वे०सा०- ६।१६। २०, ८।१।११, ९३।९, ९।९।५, २७।४, वे०सा०मु०-१।४।४, सा०- ८।९३।१५
२. *स्तृञ् आच्छादने हिंसायां वा। अनाच्छादितं सर्वप्रकाशमहिंसितं वा,*
स्क०-१।४।४

अस्तृत-यज्वन्

अहिंसितयजमानस्य,
वे०सा०-८।४३।१

आस्त्रबुध्न

अस्त्रबुध्नो नाम कश्चित् तस्य पुत्राय,
सा०-१०।१७१।३

अस्थन्

१. *अस्थिभिः,*
स्क०वे०-१।८४।१३
२. *अश्वशिरः संबन्धिभिरस्थिभिः,*
सा०मु०-१।८४।१३

अस्थनवत्

अस्थिमन्तं सशरीरम्। उपलक्षणमेतत्। कार्यभावामापन्नमित्यर्थः,

सा०-१।१६४।४

अस्थूरि

१. एकाश्वयुक्तः शकटः स्थूरि, रित्युच्यते। तद्विपरीतो बहुभिरश्वैरूपेतः शकटोऽस्थूरिः। तेन च सम्पूर्णता लक्ष्यते। अस्थूरीणि पुत्रपशुधनादिभिः सम्पूर्णानि,

सा०-६।१५।१९

२. अश्वैनैकेन युक्तो रथः स्थूरिरुच्यते। बहुभिर्युक्तोऽस्थूरिः। बहुभिः प्रजा-पशुभिर्युक्तानि गृहैश्वर्याण्यस्थूरीण्युच्यन्ते,

वे०-६।१५।१९

अस्थेयस्

१. आवृश्चन्ति स्थेयांसः,

वे०- १०।१५९।५

२. अस्थिरतराणां शत्रूणां यथा धनमप्रयत्नेन वृश्च्यते तथेत्यर्थः,

सा०- १०।१५९।५

अस्नातृ

१. अनभिषिक्तौ पितृशापात्,

वे०- ४।३०।१७

२. अलब्धस्नानान्,

वे०- २।१५।५

३. अस्नातारौ ययातिशापादनभिषिक्तौ,

सा०-४।३०।१७

४. स्नातुमशक्तान् तरणसमर्थान्नृषीन्,

सा०-२।१५।५

अस्पन्दमान

एकत्रावस्थितः सन्,

सा०-४।३।१०

अपूप

पुरोडाशम्,

उ०वे०सा०-१०।४५।९, वे०सा०-३।५२।७

अस्पृत

अहिंसितः,

वे०सा०-९।३।८

अस्मद्

१. मदीयम्,

वे०सा०मु०-१।१०।९, ३१।११

२. आस्मकीनैः,

वे०सा०-२।३०।१०

अस्मयु

१. अस्मत्कामः,

स्क०वे०-६।४८।२, वे०-१।१३१।७, १३५।५, २।२३।८, ३।४१।७, ५।७४।८, ७।७४।४, वे०सा०-९।२।५, ९३।१४, १०।९३।११,

२. अस्मान् कामयमानः,

सा०-६।४८।२, ७।७४।४, १०।९३।११, सा०मु०-५।७४।८,

३. अस्मान् त्वद्भक्तान् कामयमानः,

सा०-१।१३१।७

४. हविष्प्रदानस्मान् कामयमानः,

सा०-२।२३।८

५. विश्वमनसं मां कामयमानौ,

सा०-८।२६।१४

६. अस्मद्यज्ञमिच्छन्तौ,

सा०-१।१३५।५

७. हविः स्वीकरणार्थमस्मानात्मन इच्छन्,

सा०-३।४१।७

अस्मत्सखि

१. अस्माकं सखिस्थानीयः। सखित्वेन चात्र तद्गातं व्यसनेषु अहानं लक्ष्यते। यथा सखा सख्युर्व्यसनेष्वहाता तथा त्वम् अस्माकम् अहाता भवेत्यर्थः,
स्क०-६।४७।२६
२. अस्मत्सखा,
वे० ६।४७।२६
३. वयं सखायो यस्य स तादृशः,
सा०-६।४७।२६

अस्मत्रा

१. अस्मान् प्रति,
उ०-१०।४४।३
२. अस्मासु,
वे०-८।१८।१४। वे०सा०-१।१३२।२, १०।४४।३
३. अस्मासु। अस्मद्विषये,
सा०-८।१८।१४

अस्मद्र्य, ञ्च्

१. अस्मदभिमुखम्,
वे०-१०।११६।६, वे०सा०-७।७९।५, ९।९३।४, सा०-६।१९।१
२. मदभिमुखम्,
वे०-६।१९।१
३. अस्मदभिमुखाञ्चनः,
सा०- १०।११६।६

मम-सत्य

१. संग्रामः,
उ०सा०-१०।४२।४
२. युद्धः,
वे०-१०।४२।४

अस्मेरा

१. स्मेरमुखाः,
वे०-२।३५।४
२. अस्मयमाना दर्परहिताः,
सा०-२।३५।४

अस्रवन्ती

१. अगच्छन्तीम्,
उ०सा०-१०।६३।१०
२. अविनश्वरीम्,
सा०-१०।६२।१०

अस्रिध्

१. क्षयरहिताः,
वे०सा०मु०-१।३।९
२. अक्षयाः,
स्क०-१।३।९, वे०-३।५८।७
३. अक्षीणः,
वे०-४।३२।२४, ४५।४, ५।४६।४, वे०सा०-९।८६।१८
४. अशोषयितारः,
स्क०-१।३।९
५. अनुपक्षीणौ,
सा०-३।५८।७
६. अहिंसकः,
सा०-४।३२।२४, ५।४६।४
७. अद्रोग्धारः,
सा०-४।४५।४

अस्रिधान

१. अक्षीयमाणैः,
सा०-७।६९।७
२. अक्षीणैः,
वे०-७।६९।७

अस्रेधत्

१. अक्षीणः,
वे०-७।५९।६, ८।६०।८
२. अनुपक्षीणाः,
वे०-३।२९।९
३. अक्षीणा अनुपरतसामर्थ्याः सन्तो यूयम्,

सा०-३।२९।९

४. अक्षीणेन प्रभूतेन,

सा०-३।१४।५

५. अक्षीयमाणेन,

वे०-३।१४।५

६. अहिंसन्तः,

सा०-७।५९।६

७. अहिंसकैः,

सा०-८।६०।८

अस्त्रेधन्ती

१. अहिंसती,

वे०सा०-८।२७।१८

२. अक्षीयमाणा,

वे०सा०-५।८०।३

३. अशुष्यन्ती,

सा०मु०-५।८०।३

अस्त्रेमन्

१. प्रशस्तः,

उ०सा०-१०।८।२

२. उच्छ्रिततेजस्कः,

वे०-१०।८।२

३. क्षयरहितम्,

सा०-३।२९।१३

४. अपापम्,

वे०-३।२९।१३

अस्वप्नज्

१. अस्वपन्तः जागरूकाः,

सा०-४।४।१२

२. स्वापमर्कुवन्तः,

वे०-४।४।१२

३. असंजातस्वप्नः,

सा०-२।२७।९

४. जाग्रतः,

वे०-२।२७।९

अस्ववेश

१. स्वस्मिन्नायतनेन,

वे०-७।३७।७

२. स्वकीये स्थानेऽनुपविशन्तम्,

सा०-७।३७।७

अह

१. एव,

उ०वे०सा०-१०।४३।६, वे०- १।१५१।७, १५४।६, २।१०।२, ४।२२।७, ५।३४।७, ६।३८।४, ७।२०।२, ८।११।४, ९।७७।२, १०।२८।१, वे०सा०-४।३०।७, ५।३।७, ८।४३।८, वे०सा० मु०-१।५२।११, ५।५२।६, सा०मु०-१।८४।१५

२. खलु,

सा०- १।१५१।७, १५४।६, २।१०।२

३. विनिग्रहार्थीयः,

स्क०-१।६।४, ५२।११, ८४।१५, सा०-१।१३५।८, सा०मु०-५।३४।३

४. अह इति पूरणः,

सा०- ४।३०।१०, ७।२०।२, १०।८९।१३, सा०मु०-५।८३।३

५. अह इत्यवधारणार्थम्,

सा०मु०-१।६।४, ८।११।४

६. आश्चर्येऽहशब्दः,

वे०-१।६।४, ५।८३।३

७. अहशब्दोऽपि चार्थे,

स्क०-६।८।४

८. अह किञ्चेत्यर्थः,

सा०-१०।६१।१९

९. अह इति विनिश्चये,

सा०-१०।७१।८

१०. पूर्वं युष्माभिरनुज्ञातः,

सा०-३।३३।११

११. यथापूर्वम्,
वे०-३।३३।११
१२. सर्वदेवगण आगते सति,
सा०-१०।२८।१

अहन्

१. प्रातः,
वे०-१।१२६।३
२. प्रतिपदादीन्यहानि,
सा०-३।३२।९
३. दिवसः,
वे०- ४।४५।६, वे०सा०- ९।९२।५, १०।३७।१०, सा०-२।१९।३, ४।१०।५, १६।३, ५।४८।३, ६।२६।१, ८।२२।११, १०।७।४, ३७।९
४. दिवसानां मध्ये,
सा०-१।१२६।३
५. मरणदिवसात्,
वे०-३।३२।१४
६. दिवसाय दिवसनिर्वर्त्यकर्मणे,
सा०-१०।४०।५
७. अहोरात्रे,
उ०वे०सा०- १०।३९।१२, उ०सा०- १०।१८।५, स्क०वे०सा०- ६।५८।१, वे०सा०- १।१२३।७, २।३२।२, ५।८२।८, सा०- १।१५१।९
८. अहःशब्दसामर्थ्यदहोरात्रसाध्यं कर्मोच्यते,
सा०- १०।१२।४
९. अदानि सौमिकानि,
सा०- १०।३२।८
१०. कालाः,
उ०- १०।३२।८
११. आहन्तर्मर्यादया हिंसितः,
उ०सा०-१०।१०।६
१२. आहन्तः,
वे०-१०।१०।६
१३. हेतुभिः,
वे०सा०-९।५५।३
१४. वर्षर्तुसंबन्धिभिः,
सा०-५।६२।२
१५. एकस्मिन्ननुष्ठानदिने,
वे०सा०मु०-१।३४।३
१६. गुणयागदिवसानाम्,
उ०-१०।७०।१

अहविस्

१. अहोता,
वे०- १।१८२।३
२. यज्ञार्थवीररहितः,
सा०-१।१८२।३

अहति

अहताः,
वे०सा०- ९।९६।४

अहर्दिव

अहोरात्रयोः,
वे०सा०-९।८६।४१

अहर्दृश

१. सूर्यदृशः,
वे०- ८।६६।१० (यास्क०- ६।२६)
२. अहःशब्देन तदुत्पादक आदित्योऽभिधेयो भवति। तं पश्यन्तीत्यहर्दृशः। ननु सर्वे सूर्यं पश्यन्ति कोऽत्रातिशय इति उच्यते। इहैव जन्मनि सूर्यं पश्यन्ति न जन्मान्तरे। लुब्धका अयष्टारोऽन्धो तमसि मज्जन्ति। अथवा लौकिकान्येवाहनि पश्यन्ति न पारलौकिकान्यदृष्टानि। दृष्टप्रधाना हि नास्तिकाः,
सा०-८।६६।१०

अहर्विद्

१. अह्नो लम्भयितारौ,
वे०-१।१५६।४, वे०सा०-८।५।९, २१
२. अह्नो ज्ञातारौ,
वे०-८।५।२१
३. प्रभातसमये वेदितव्यौ स्तोव्या-वश्विनौ, अह्नि प्रभातसमये वेदि-तव्यौ स्तोतव्यौ,
सा०- ८।५।९। ८।५।२१,
४. लब्धार्हमुखाः,
वे०-१।२।२
५. अहः शब्द एकेनाह्ना निष्पाद्ये-ऽग्निष्टोमादिक्रतौ वैदिक व्यवहारेण प्रसिद्धः। क्रत्वभिज्ञा इत्यर्थः,
सा०मु०- १।२।२
६. अहश्शब्दोऽत्राह्ना यः समाप्यते ज्योष्टिटोमादिः सोमयागः तस्य वाचकः न दिवसस्य। प्रक्रान्तस्य ज्योतिष्टोमदेरहः परिमितस्य सोमयागस्य ज्ञातारः,
स्क०- १।२।२
७. अहर्वेत्तारं स्वर्गोत्पादकम्,
सा०-१।१५६।४

अहस्

१. अहोरात्रैः,
वे०-१०।१४।९
२. दिवसैः,
सा०-१०।१४।९

अहोरात्र

अहोरात्राणि,
वे०सा०-१०।१९०।२

अहना

उषा,
वे०सा०-१।१२३।४

अहस्त, ता

१. हस्तरहिता,
उ०-१०।३४।९
२. हस्तरहिता अप्यक्षाः,
सा०-१०।३४।९
३. पाणिरहिता,
सा०-१०।२२।१४
४. हस्तवर्जिता,
वे० उ०- १०।२२।१४, वे०- १०।३४।९

अहि

१. मेघः,
स्क०-१।३२।५, ६।७२।३, स्क०सा० मु०- १।३२।१, २, वे०सा०-१०।१३९। ६, सा० - २।११।५, ३।३३।७, १०।९६।४
२. अन्तरिक्षे वर्तमानं मेघम्,
सा०-१०।१३३।२ (अन्तरिक्षे गतं मेघम्), सा०मु०-१।१०३।२, ७
३. वृत्रः,
सा०-६।१७।९, १०।९६।४, सा०मु०-१।३२।५, ५।२९।२
४. वृत्रासुरम्,
सा०-६।१७।१०
५. आहननशीलं वृत्रम्,
सा०-८।३।२०
६. अहन्तव्यस्य वृत्रासुरस्य,
सा०-८।९३।१४
७. आहन्ता,
वे०-१०।११३।३
८. आहन्तव्येन,
सा०-१०।११३।३
९. जगतः आहन्तारम्,
सा०-६।७२।३
१०. उदकानि परिवृत्य तस्थिवां-समाहन्तारम्,

वे०-६।७२।३
११. मेघानामाहन्तारम्,
सा०-७।३४।१६
१२. आगत्य हन्तारम्,
सा०-७।३८।७
१३. असुरः,
सा०-२।११।५
१४. अंहतेर्वा अहिर्गन्ता वृत्राख्यो व्यंसाख्यश्चासुरः,
स्क०-१।३५।५
१५. अहिनामानमसुरम्,
स्क०-१।१०३।२, ७
१६. सर्पः,
वे०सा०-४।१९।९, ७।१०४।९ सा०-६।७५।१४,
१७. कवयः,
वे०सा०-९।५४।१
१८. अत्थः स्त्रिय आहननात्,
सा०-९।७७।३
१९. अहिः आहननात् (तु० यास्क. १७) इत्युक्तम्। आहन्ति हि स्त्री पुमांसमिति,
वे०-९।७७।३

अहिघ्न

१. अहिहननाय,
वे०-६।१८।१४
२. मेघहननाय। वृष्टिप्रदानायेत्यर्थः,
सा०-६।१८।१४

अहिनामन्

आगत्य हन्तीत्यहिः। तन्नामकानामित्यर्थः,
सा०-९।८८।४

अहि-भानु

१. आहन्तृदीप्तयः,
वे०-१।१७२।१
२. अहीयमानप्रकाशाः,
सा०-१।१७२।१

अहि-मन्यु

१. मन्युर्मन्यते दीप्तिकर्मणः। अगता अविनष्टा दीप्तिर्येभ्यः ते अहिमन्यवः। दीतिमन्तः इत्यर्थः,
स्क०- १।६४।८
२. अहीन दीप्तयो अहिमन्यवः। उत्कृष्टदीप्तयः,
स्क०- १।६४।८
३. अहिर्मेघोऽसुरो वा। मन्युः इत्यपि क्रोधनाम। अहिविषयः क्रोधो येषां ते अहिमन्यवः। दीप्तिमन्तः इत्यर्थः,
स्क०- १।६४।८
४. मननं ज्ञानं मन्युः। अहीनज्ञानाः। उत्कृष्टबुद्धय इत्यर्थः,
सा०-१।६४।८
५. आहननशीलमन्युयुक्ताः। यद्विषयः कोपो जायते तस्य हनने समर्था इत्यर्थः,
सा०मु, १।६४।८

अहि-माय

१. अहन्तव्य प्रज्ञाः,
वे०-६।५२।१५, १०।६३।४, सा०-१०।६३।४, (कैश्चिदप्यहन्तव्यप्रज्ञाः)
२. अहीनप्रज्ञा वा अहेर्वा मेघस्य असुरस्य वा मायाभिः परवञ्चनप्रज्ञाभिः प्रज्ञावन्तः,
उ०-१०।६३।४
३. 'माया' (निघ. ३, ९) इति प्रज्ञानाम। अहीन प्रज्ञाः। अथवा अहिर्मेघः, तद्विषया प्रज्ञा येषां ते अहिमायाः। अथवा आहन्तृप्रज्ञाः,

स्क०-६।५२।१५। सा०-६।५२।१५,
(माया इति प्रज्ञानाम। आहन्तृप्रज्ञाः)
४. आहन्त्र्यो माया यस्य,
सा०-६।२०।७

अहि-हत्य

१. अहिहननम्,
वे०-१।६१।८, १३०।४ (अहिं हन्तुम्) ३।३२।१२
२. अहेर्वृत्रस्य मेघस्य वा हननाय,
सा०-१।१३०।४
३. अहेर्वृत्रस्य हनने निमित्तभूते सति,
सा०मु०-१।६१।८
४. वृत्रहनने कर्मणि,
सा०-३।३२।१२

अहि-हन्

१. अहेर्वृत्रस्य मेघस्य वा हन्तर्हे इन्द्र,
सा०-२।१३।५
२. अहिं मेघं हतवानिन्द्रः,
सा०-२।१९।३
३. अहेर्हन्ता,
वे०-२।१९।३, सा०-२।३०।१ (अहिं वृत्रं हतवते)

अहि(बुध्निय, बुध्न्य)

१. बुध्नमन्तरिक्षम्। तत्र भवः अहिनामा देवः,
सा०-२।३१।६
२. बुध्न्यः। बुध्नमन्तरिक्षम्। तत्र भवः। अहिः। एत्यन्तरिक्ष इत्यहिः,
सा०-६।४९।१४

३. अन्तरिक्षे भवः अहिः एतत्संज्ञकः ऐते देवाः,
सा०-१०।६६।११
४. अहिः च बुध्न्यः देवः,
वे०-१०।६६।११
५. अन्तरिक्षगामी अहन्ता वा अहीनो वा अहन्यमानो वा एतन्नामको देवः स एव बुध्न्यः। बुध्नं बन्धकमन्तरिक्षम्। तदर्हतीति बुध्न्यः अन्तरिक्षचारी एतन्नामको देवः,
सा०-१।१८६।५
६. अहिः नाम मध्यमस्थानी देवः, बुध्नमन्तरिक्षं, तस्मिन् भवः,
स्क०-६।४९।१४
७. अन्तरिक्ष्यः,
उ०-१०।६६।११
८. अन्तरिक्षभवः मेघः,
वे०-१।१८६।५

अहिंसान

१. अहिंसतः,
वे०सा०-५।६४।३, मु०-५।६४।३ (अहिंसकस्य, मित्रस्य)

अहिंस्यमान

परैरपीड्यमानः,
सा०-१।१४१।५

अहूत

१. अनाहूताः,
वे०-१०।१०७।९
२. बलाधिक्येनानाहूयमानाः,
सा०-१०।१०७।९

अहृणान

१. अक्रुद्धः,
वे०-७।८६।२

२. अक्रुध्यन्,
वे०सा०-१०।११६।७, सा०-७।८६।२

अहृणीयमान, न

१. *अक्रुध्यन्,*
वे०-१०।१०९।२, वे०सा०-५।६२।६
२. *पापापगमनेनालज्जमानः सन्,*
सा०-१०।१०९।२

अहेडत्

१. *अक्रुध्यन्,*
उ०वे०सा०- १०।३२।८, स्क०वे० सा० मु०-१।९१।४, वे०उ०- १०।७०।४, वे०सा०- २।३२।३, सा०- ७।६७।७
२. *हेड इति क्रोधनाम। अक्रुध्यता,*
सा०-१०।७०।४

अहेडयत्

१. *अक्रुध्यन्,*
उ०सा०-१०।३७।५
२. *अक्रोधयन्,*
वे०-१०।३७।५

अह्नवाय्य

अहनवाय्यनामकं शत्रुम्,
सा०-८।४५।२७

अह्य

अह्यो गन्तव्यो वर्तनिर्मार्गभूतः,
सा०-१०।१४४।४

अह्यर्षू

१. *सर्पाणाम्,*
वे०-२।३८।३
२. *अहिमाहन्तारं शत्रुमर्षन्त्यभि, गच्छन्तीत्यह्यर्षवः,*
सा०-२।३८।३

अह्रय

१. *अलज्जम्,*
वे०-५।७९।५
२. *उन्मुखम्,*
वे०-७।६७।६
३. *अनवनतः,*
वे०सा०-८।७०।१३
४. *अलज्जाकरे,*
सा०-१०।१४७।३
५. *अह्रीकम्,*
वे०-१०।१४७।३
६. *लज्जारहितः,*
वे०-१।७४।८ (अलज्जमानः), सा०मु०-१।७४।८
७. *अह्रियमाणमक्षीणमलज्जावहं वा,*
सा०-५।७९।५, अह्रीयमाणम् अक्षीणम्, मु०-५।७९।५

अह्रयाण, णा

१. *अह्रीतगमनः,*
वे०-४।४।१४।
२. *अह्रीतयानं प्रशस्तगमनमिन्द्रम्,*
सा०-१।६२।१०
३. *अह्रीतयानः,*
वे०- १।६२।१० (यास्क, ५।१५)
४. *अलज्जितगमनः,*
सा०-४।४।१४
५. *लज्जारहितं प्रगल्भमित्यर्थः,*
सा०मु०-१।६२।१०

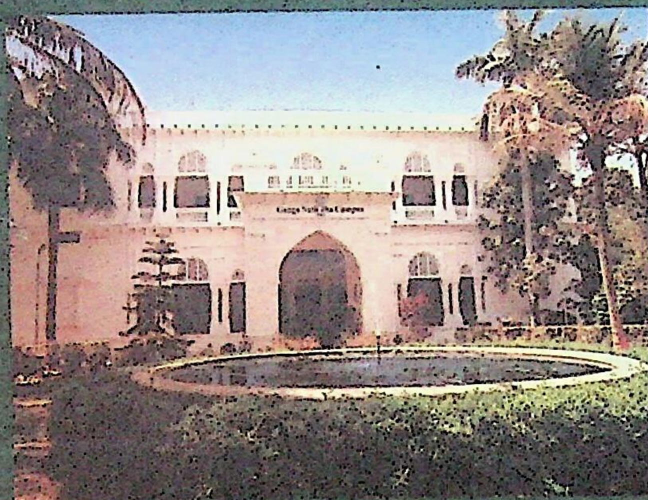
अह्रुत, ता

१. *अहिंसितः,*
स्क०वे०-६।६१।८
२. *अनवपतितः,*
वे०सा०-१०।५६।२
३. *अकुटिल,*
सा०- ६।६१।८।, वे०सा०- ९।३४

अहुतप्सु

१. अहिंसितरूपाः,
स्क०वे०-१।५२।४
२. अनन्तरूपाः,
वे०-८।२०।७
३. अकुटिलरूपाः,
सा०-८।२०।७
४. अकुटिलरूपाः शोभनावयवाः,
सा०मु०-१।५२।४

*****





राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(मानितविश्वविद्यालयः)

गङ्गानाथझापरिसरः

चन्द्रशेखर-आजादोद्यानम्,

प्रयागः - 211002





राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
गङ्गानाथझापरिसरः
चन्द्रशेखर-आजादोद्यानम्,
प्रयागः - 211002